मियां उन में साफ़ नज़र आती हैं। इसका सबब यह है कि उन में ज़िन्दगी की सिफ़तें ज़ाहिर नहीं हैं बल्कि छिपी हैं।

वह जानदार चीज़ें जिनकी ज़िन्दगी की कूवतें ज़ाहिर हैं बेजान चीज़ों से इस तौर पर पहचानी जा सकती हैं। यह निहायत ज़रूर है कि जानदारों के अंदर बहुत सी खाने की चीज़ें हमेशा जाया करें और यह बदल कर ऐसी बन जाती हैं कि इनसे जानदार के बदन के हिस्से बढ़ते हैं या जो बदन के हिस्से जानवर से अलहिदा होते जाते हैं उन के बदले नये नये हिस्से बना करते हैं। इस तौर पर सब जानदार चीज़ें अपने पूरे क़द तक बढ़ती जाती हैं। कुछ अरसे तक यह पूरे क़द की बनी रहती हैं और आख़ीर में जानदार मर जाते हैं यानी उनमें ज़िन्दगी की कूवतें नहीं रह जाती हैं। यह बात सब को अच्छी तरह से मालूम है कि आदमी खाने पीने और हवा के बिना न तो जीसकता और न जीता रह-सकता है और दरख़्तों को भी बढ़ने और ज़िन्दा रहने के लिये ज़मीन से बहुत सी चीज़ों की और हवा की ज़रूरत रहती है। यह बात दर्याफ़्त हुई है कि जो कुछ हम लोग खाते हैं वह बदल कर ख़ून और कोई एक और चीज़ बन जाता है जिससे कि आदमी की बदन बनी है। आगे इस बात का बयान होगा कि किस तौर से जानवर और दरख़्त खाना पानी और हवा से बढ़ते हैं। पत्थर वगैरः बेजान चीज़ों का यह हाल नहीं है। इसमें कुछ शक नहीं कि वह भी अक्सर बढ़ती हैं। पर उनका बढ़ना बिल्कुल दूसरे तौर पर है। उनके बाहरी हिस्सों पर छोटे छोटे ज़र्रे इकट्ठा होते जाते हैं और इन ज़र्रों में इस चीज़ पर जमा होने के सबब से कुछ भी फ़र्क़ नहीं पड़ता जैसा जानदार चीज़ों के ख़ोराक का हाल है। इसमें कुछ शक नहीं है कि वह चीज़ें जिसे जानदार खाते हैं उनमें

अंदर इस तौर पर बदल जाती हैं कि उन से वह नई चीज़ें बनती हैं जिन की सबब से जानदार के बदन के हिस्से बढ़ते हैं और बदन के नये नये हिस्से बनते जाते हैं जैसे जब कोई आदमी खाता है तो रोटी बदल कर लहु गोश्त वग़ैरः बन जाती है और आदमी के बदन में जैसी रोटी खाई जाती है ठीक वैसी रहकर बदन के किसी हिस्से में नहीं मिल जाती ॥

जानदार चीज़ों के कुछ हिस्से हमेशा उनके बदन से अलहिदा हुआ करते हैं और उन के बदले नये नये हिस्से बना करते हैं। इस तौर पर उन के बदन के हिस्सों में ज़ाया होने और नई चीज़ों के बनने का तबादिला हर वक़्त लगा रहता है। यह बात बेजान चीज़ों में कुछ भी नहीं है। जानदार चीज़ों में एक और ख़ास बात यह है कि उनको इस तरह की क़ूवत रहती है कि वह अपनी तरह की और चीज़ों को पैदा कर सकती हैं। हर एक जानदार चीज़ में छोटे छोटे बीजों के पैदा करने की क़ूवत (शक्ति) रहती है। यह बीजें मुनासिब हालात में रहने से रफ़्ता २ बदल कर जानदार चीज़ की सूरत की बन जाती हैं। बहुत सी जानदार चीज़ों में जिन्हें हैवान कहते हैं एक जगह से दूसरी जगह तक चलने की ताक़त रहती है जैसे अगर किताब मेज़ पर रख दी जावे तो जब तक उसे कोई उठा कर दूसरी जगह न ले जावेगा तब तक वहीं रहेगी मगर अक्सर जानवर एक जगह से दूसरी जगह तक ख़ुदबख़ुद अपनी ख़्वाहिश से जा सकते हैं। ऊपर के बयान से साफ़ मालूम होता है कि जानदार और बेजान चीज़ों में बहुत ज़ियादा फ़रक़ है। ख़ास फ़रक़ इस सबब से है कि जानदार चीज़ों में वह खाना जो उन के बदन के अंदर जाता है इस तौर पर बदल जाता है कि जिस के सबब से वे क़द में बढ़ती हैं या कुछ दिन तक पूरे क़द की बनी रहती हैं और फिर

अपनी सूरत और ख़ासियत की चीज़ों को पैदा कर सकती हैं।

सब जानदार चीज़ों को दो हिस्सों में तक़सीम कर सकते हैं यानी जानवर और वनस्पति (पेड़ वग़ैरः)। जानदार चीज़ों की आम सिफ़तें (गुण) दोनों में पायी जाती हैं मगर अक्सर ऐसी भी जानदार चीज़ें नज़र आती हैं जिन की निसबत इस बात की तहक़ीक़ात करना कि उन्हें जानवर समझें या वनस्पति निहायत मुश्किल होता है। पेंचीदा बनावट के (जितने बड़े जानवर और दरख़्त हैं उनकी बनावट अक्सर पेंचीदा होती है) जानवर और वनस्पति को आसानी से पहचान सकते हैं। ऐसे जानवरों में इन्द्रियां होती हैं जिन के सबब से उन को दुन्या की चीज़ों का ज्ञान होता है। उन में चलने फिरने की क़ुवत रहती है और उन के बदन के अंदर एक ऐसी थैली रहती है जिस में खाना जाता है और पच कर ख़ून वग़ैरः बनता है। इन के खाने की चीज़ें ख़ास कर दृढ़ पदार्थ होती हैं और उन को पानी की भी ज़रूरत रहती है। पेड़ों के खाने की चीज़ें अक्सर द्रव और हवा की तरह होती हैं और उन के अंदर कोई ख़ास थैली नहीं रहती जिस में खाना पहले एक ही जगह जावे।

अक्सर जानवर अपने पूरे क़द के होने पर किसी चीज़ पर ह-
मेशा लगे रहते हैं और वहां से चल फिर नहीं सकते और ब-
हुत से दरख़्तों की बीज में एक तरह की चलने फिरने की
कूवत रहती है। उन में बहुत बारीक बारीक रोयें की तरह
की चीज़ें रहती हैं जो अक्सर छोटे२ जानवरों में भी ज़रूर
रहती हैं और जिन के सबब से यह बीजें कुछ चल फिर स-
कती हैं। अंगरेज़ी में इन बारीक चीज़ों को सिलिया कहते
हैं। बनस्पतियों में अक्सर एक हरे रंग की चीज़ रहती है
जिसे अंगरेजी में क्लोरोफ़िल कहते हैं। जिस जानदार चीज़
में यह दिखलाई दे वह अक्सर बनस्पति होती है पर कित-
ने हरे रंग के छोटे छोटे कीड़े भी ऐसे हैं जिन के बदन में य-
ह चीज़ रहती है। इस लिये इस चीज़ का रहना भी दरख़्त
होने का सबूत नहीं है॥

यह बात सब किसी को अच्छी तरह से मालूम है कि पेड़
उगने के बाद दिन दिन बढ़ते जाते हैं और जिन चीज़ों के सब-
ब से बढ़ते हैं वह ज़मीन से और हवा से उन को मिलती हैं।
उन चीज़ों में जो ज़मीन और हवा में से पेड़ों में जाती हैं
तब्दीलात हुआ करती हैं और इस तौर पर नये नये मिश्र
द्रव्य बनते जाते हैं। इस बात का पहले बयान हो चुका है कि
जिन चीज़ों के सबब से पेड़ बढ़ते हैं वह उनके बाहरी हिस्सों
पर नहीं जमा होती जाती हैं बल्कि उन के अन्दर जाती हैं
और वहां पर तब्दीलात होती हैं। इस ज़मीन की चारो त-
रफ़ जो हवा है उस में ख़ास करके दो चीज़ें हैं जिन्हें अंग-
रेज़ी में आक्सिजन (Oxygen) और नैट्रोजन (Nitrogen) कहते
हैं। आक्सिजन एक तत्त्व है यानी न तो यह दो या ज़्यादे
चीज़ों से मिलकर बना है और न इस में से सिवाय आक्सि-
जन के और कोई चीज़ किसी तौर पर अलहिदा कर सकते

हैं । इसे प्राणप्रदवायु कह सकते हैं क्योंकि जानवरों की ज़िन्दगी के लिये यह निहायत ज़रूर है । इस में न तो रंग है न ज़ाइक़ा । इस में अक्सर चीज़ें बड़ी रोशनी से जलती हैं । नैट्रोजन एक दूसरा तत्त्व है इस में अगर जलती बत्ती डालें तो वह बुझ जाती है और इस में कोई जानवर जी नहीं सकता । इसे प्राणान्तकवायु कह सकते हैं । सिवाय इन के हवा में कुछ हिस्सा कार्बोनिक एसिड (Carbonic acid) , अमोनिया (Ammonia) और पानी की भाफ का भी रहता है । कार्बोनिक एसिड एक मिश्र द्रव्य है जो कुयले और आक्सिजन के रसायनिक संयोग* से बनता है । हवा के कार्बोनिक एसिड के हिस्से अलग २ हो जाते हैं इस तौर पर आक्सिजन और कुयला बन जाता है इन में से कुयले के हिस्से पेड़ में रहजाते हैं और आक्सिजन बाहर निकल आता है । जो चीज़ें कि ज़मीन से पेड़ों के अन्दर जाती हैं वह द्रवदशा में जाती हैं इस लिये अगर पेड़ों के बढ़ने के लिये किसी चीज़ को ज़मीन में मिलावें तो यह ज़रूर है कि वह पानी में घुल जावे नहीं तो पानी के साथ वह पेड़ों के अन्दर न जा सकेगी ॥

यह बात हम लोगों को अच्छी तरह से मालूम है कि सब जानवर बढ़ते हैं और इस लिये उन को खाने की ज़रूरत पड़ती है । इस में कुछ भी शक नहीं कि खाने के बग़ैर वह किसी तरह से नहीं जी सकते । इन के खाने की निस्बत एक बड़ी बात यह है कि वह अलग २ तत्त्वों के रूप में चीज़ों

* जब दो या ज़्यादे तत्त्व गर्मी या और किसी सबब से इस तरह पर मिल जावें कि एक ऐसी नयी चीज़ बन जावे जिस की ख़ासियत उन चीज़ों की ख़ासियत से बिल्कुल मुख़्तलिफ़ हो जिन से वह बनी है तो ऐसे मिलने को रसायनिकसंयोग कहते हैं ।

को नहीं खाते हैं बल्कि उन मिश्र द्रव्यों को खाते हैं जो पेड़ों से और किसी किसी हालतों में और दूसरे जानवरों से बनती हैं। देखना चाहिये कि आदमी के खाने की चीज़ें क्या हैं। इस मुल्क में हम लोग अक्सर अनाज और तरकारियों पर गुज़रान करते हैं और इस में कुछ भी शक नहीं कि यह चीज़ें जो मिश्र द्रव्य हैं ज़मीन,'पानी और हवा में जो तत्त्व हैं उनसे पेड़ों के सबब से बनती हैं। दूध भी एक मिश्र द्रव्य है जो जानवरों में बनता है। इस बयान से मालूम हुआ कि जानवरों के खाने की चीज़ें ख़ास कर ऐसी होती हैं जो पेड़ों और दूसरे जानवरों से बनती हैं पर आदमी को सिवाय इन के और सिवाय हवा के जिसे सांस लेते हैं और पानी जिसे पीते हैं नमक खाने की बड़ी ज़रूरत रहती है। जो कुछ कि जानवर खाते हैं वह उन के पेट में जाता है। वह चीज़ें पेट में बदन की दो एक चीज़ों से मिल कर पचती हैं और अख़ीर में इस तौर पर बदल जाती हैं कि वह बदन के सब हिस्सों में फैल जाती हैं और इस के सबब से खानेवाला बढ़ता है या अपने क़द का बना रहता है। इस तौर पर यह बात साफ़ मालूम होती है कि वह चीज़ें जिन्हें पेड़ बनाते हैं जानवर खाते हैं। जैसा कि असर पेड़ों पर हवा का होता है (जिस का बयान पहले हो चुका है) ठीक उस के बख़िलाफ़ हवा का असर जानवरों पर है। दम लेने में हवा का आक्सिजन इन के बदन के अन्दर रह जाता है और कार्बोनिक एसिड बाहर निकलता जाता है॥

जानदार चीज़ें जब पूरे क़द की हो चुकती हैं तब अक्सर उन के बदन का एक हिस्सा अलहिदा हो जाता है जिस में ऐसी क़ूवत रहती है कि वह उसी पेड़ या जानवर की शक्ल और ख़ासियत का बन जाता है जिस से जुदा हुआ। यह बात

सब को अच्छी तरह से मालूम है कि जब गेहूं या जौ का बीज पक जाता है तो पेड़ से जुदा हो जाता है। फिर जब वह ज़मीन में बोया जाता है तो वह रफ़्ता रफ़्ता बढ़ता है और अख़ीर में वैसा ही पेड़ बन जाता है जिस से कि वह बीज पैदा हुए थे। ऐसा ही हाल जानवरों का भी है जैसे किसी चिड़िये का अंडा उस के बदन के अन्दर पहले बनता है और अख़ीर में उस के बदन से अलहिदा हो जाता है। इस अंडे के अंदर चिड़िये के कुल बदन के बनने का सामान तैयार रहता है और चन्द रोज़ के बाद मुनासिब तौर पर सेये जाने से इसी अंडे में से एक छोटी सी चिड़िया निकलती है जो अपनी मा के क़िस्म की होती है। आदमी का बच्चा भी शुरू में इनसान के बदन में बनता है और फिर उस से अलहिदा हो जाता है॥

जानदार चीज़ों की पैदाइश मुख़्तलिफ़ तौर पर होती है मगर इस में शक नहीं कि उन की पैदाइश दो तौर में से एक के बमूजिब होती है या तो दो जानदार चीज़ों के जोड़ा लगने से पैदाइश हो या बग़ैर जोड़े के। पहली हालत में दो ख़ास चीज़ों के मिलने से जानवर की पैदाइश होती है। इन में से एक चीज़ जिसे अंगरेज़ी में ओवम (Ovum) कहते हैं मादा में रहती है और दूसरी जिसे बीज कहते हैं नर में रहती है इन दोनों चीज़ों के मिलने से एक नये जानदार चीज़ की पैदाइश शुरू होती है। छोटे छोटे जानवरों में बग़ैर जोड़े के भी पैदाइश होती है। ऐसी हालत में उन के बदन की बाहरी जिल्दों पर पेड़ की कलियों की तरह छोटी छोटी चीज़ें उभर आती हैं और बढ़ बढ़ कर उन जानवर की सूरत की हो जाती हैं जिस में से निकलती हैं। वह कभी कभी बढ़ने पर जानवरों से अलहिदा हो जाती

हैं पर कितने जानवरों में हमेशा लगी रहती हैं। अक्सर पेड़ों की पैदाइश दोनों तौर पर जिन का बयान अभी हुआ है होती है। पेड़ों में या तो क़लम काटने से नये पेड़ तैयार होते हैं या फूलों के नर और मादा उसूल के मिलने से पेड़ के बीज पैदा होते हैं जिनके ज़मीन में बोने से दरख़ उगते हैं॥

दूसरा अध्याय

जानवर

इस बात का बयान अच्छी तौर पर हुआ है कि जानवर और दरख़ में क्या फ़रक़ है और किस तरह एक दूसरे से पहचाने जाते हैं। अब इस बात का बयान ज़रूर है कि मुख़्तलिफ़ क़िस्म के जानवरों में वह कौन कौन ख़ास बातें हैं जिन से एक दूसरे से पहचाने जा सकते हैं। अगर किसी जानवर को ग़ौर करके देखें तो दो तौर पर उस की निस्बत तहक़ीक़ात कर सकते हैं। या तो यह सोचें कि उस जानवर के बदन की बनावट कैसी है और किन किन क़ाइदों के बमूजिब यह बना है और बदन के मुख़्तलिफ़ हिस्से किस सिल्सिले से एक दूसरे के साथ मिले हैं या इस बात की तहक़ीक़ात पर ग़ौर करें कि जानवर के बदन के मुख़्तलिफ़ हिस्सों से क्या क्या काम निकलते हैं और उस जानवर की ज़िन्दगी की क़ूवतें किस सबब से और किस तौर पर बनी रहती हैं। मुख़्तलिफ़ क़िस्म के जानवरों में या तो उन के बदन के बाहरी और भीतरी हिस्सों की बनावट में फ़रक़ होता है या उन की ज़िन्दगी की क़ूवतों के बरताव के तरीक़ों में फ़रक़ रहता है। यह भी मुम्किन है कि किसी दो क़िस्म के जानवरों में दोनों तरह का फ़रक़ हो। इस तौर पर

निहायत ख़बर्दारी से इन फ़रक़ों की तहक़ीक़ात करने से जानवरों की बहुत सी अक़साम की जाती हैं। इन की फिर फिर तक़सीम की जाती हैं यहां तक कि अख़ीर में एक क़िस्म के जानवरों में सिर्फ़ ऐसे जानवर रह जाते हैं जो कि बनावट वग़ैरः में हक़ीक़त में एक ही तरह के हैं। सब जानवरों की तक़सीम पहले इस तौर पर की जाती है। रीढ़दार जानवर और बेरीढ़ के जानवर। बेरीढ़ के जानवरों की ख़ास सिफ़तें यह हैं कि अगर ऐसे जानवर को उस की लम्बाई के आर पार काट कर दो टुकड़ा कर डालें तो इस टुकड़े में एक ही नली की निशानी मिलेगी। यह नली जानवर के अंदर उस की लम्बाई की तरफ़ चली गई है और इसी नली में ज़िन्दगी के ख़ास आलात रहते हैं। ज़िन्दगी के ख़ास आलात यह हैं— एक खाना पचने की नली या थैली जिस में खाना पचता है—ख़ून चलने की तद्बीरें जिन के सबब से ज़िन्दगी की निहायत ज़रूरी चीज़ यानी ख़ून बदन के सब हिस्सों में फैल सकता है—पट्ठों का बदन में फैलाव जिस से जानवर अपनी चारों तरफ़ की बाहरी चीज़ों से वाक़िफ़ होता है। यह ज़रूर नहीं है कि सब बेरीढ़ के जानवरों में यह सब आलात और तद्बीरें हों क्योंकि अक्सर क़िस्म के ऐसे जानवरों में ऊपर बयान किये हुए आलात में से कितने रहते ही नहीं और और कितने ठीक तौर पर पूरे काम के लाइक़ नहीं बने रहते॥

रीढ़दार जानवरों में एक नली की जगह दो नली होती हैं इन में से एक में पट्ठे रहते हैं यानी मग़ज़ और रीढ़ के अंदर एक पतली रस्सी की तरह की चीज़। दूसरी नली जैसी कि बेरीढ़ के जानवरों में होती है वैसी ही इन में भी है यानी इस में खाना पचने और ख़ून चलने के आलात और थोड़ा सा पट्ठों का हिस्सा रहता है। पहिली और दूसरी

तसवीरों से जो इस किताब के अख़ीर में हैं रीढ़दार और बे-रीढ़ के जानवरों का फ़रक़ साफ़ मालूम देगा। अगर किसी बड़े बेरीढ़ के जानवर को बेंड़े काटें तो उसमें पहली शकल की तरह नली वग़ैरः होगी और दूसरी तसवीर से रीढ़दार जानवरों का हाल ज़ाहिर होता है। पहिली शकल में (क) बदन का वह घेरा है जिसके अन्दर वह नली है जिसमें सब ज़िन्दगी के ख़ास आलात है (ख) खाना जाने की नली है (ग) खून के चलने की तदबीरें हैं (घ) पट्ठों का मजमूआ है। दूसरी शकल में (क) (ख) (ग) (घ) से पहिली शकल की तरह समझना चाहिये पर (च) दूसरी नली है जिसमें मग़्ज़ है और रीढ़ की पतली रस्सी है। रीढ़दार और बेरीढ़ के जानवरों की ठटरियों की बनावट में भी बड़ा फ़रक़ होता है। बेरीढ़ के जानवरों में अगर ठटरी रहती हैं तो यह बदन के बाहर होती हैं हक़ीक़त में उन के चमड़ों पर चूने की तरह की चीज़ें इकट्ठा होकर सख़्त हो जाती हैं और तब बाहरी ठटरी बन जाती है। सिर्फ़ एक तौर के मूंगे में जो बेरीढ़ के जानवर हैं एक ख़ास क़िस्म की अन्दरूनी (भीतरी) ठटरी होती है। मगर रीढ़दार जानवरों में हमेशा एक भीतरी ठटरी रहती है अक्सर इस ठटरी के बीच का हिस्सा रीढ़ होता है। बेरीढ़ के जानवरों में जब कभी अज़ो (हाथ पैर) होते हैं तो वह बदन के उस हिस्से की तरफ़ फिरे रहते हैं जिधर पट्ठों का मजमूआ रहता है। पर रीढ़दार जानवरों में इस के ठीक बख़िलाफ़ होता है और रीढ़दार जानवरों में चार से ज़ियादा अज़ो कभी नहीं रहते। रीढ़दार जानवरों में नाभी यानी वह जगह जहां पेट में बच्चे या अंडे लगे रहते हैं बदन के आगे के हिस्से में रहती है और बेरीढ़ के उन जानवरों में जिन की पैदाइश अंडे बच्चे से है यह बदन के पीछे की तरफ़ होती

है। वेरीढ़ के जानवरों के ख़ास अक़साम यह हैं (१) प्रोटोज़ोआ (Protozoa) (२) सिलेन्टरेटा (Cœlenterata) (३) एन्यूलाइडा (Annuloida) (४) एन्यूलोसा (Anulosa) और (५) मोलस्का (Mollusca)। अब इन में से हर एक की ख़ासियतें मय मिसालों के बयान की जावेंगी॥

१—प्रोटोज़ोआ

यह सब से सहल बनावट के जानवर हैं। इस तौर के जानवरों में बहुत से ऐसे छोटे होते हैं कि उन को सिर्फ़ ख़ुर्दबीन के ज़रीए से देख सकते हैं। वह एक गोंद की थैली की सूरत में पाए जाते हैं। इस थैली के सिकुड़ने और फैलने के सबब से वह एक जगह से दूसरी जगह तक चल सकते हैं। अक्सर प्रोटोज़ोआ निहायत छोटे जानवर होते हैं और एक थैली सी उन के बदन की बनावट रहती है। मैले पानी के छोटे छोटे कीड़े अक्सर इसी क़िस्म के जानवर हैं और इन्हें अंगरेज़ी में इन्फ़्युज़ोरिया कहते हैं। यह मैले पानी में बहुत मिलते हैं। इन की एक छोटा सा मुंह रहता है। इन्हें कोई इन्द्रियां नहीं होतीं और न तो खाना पचने के लिये अलाहिदा कोई थैली होती है। स्पंज इसी क़िस्म के जानवर हैं। उन गोंद ऐसी चीज़ को जिस से ऐसे जानवरों की बदन बनी है अंगरेज़ी में सारकोड कहते हैं। इन में ज़िन्दगी की सब निहायत ज़रूरी ख़ासियतें पाई जाती हैं यानी खाने की चीज़ें अंदर जाती हैं और उन का कुछ हिस्सा बदन में रह जाता है जिस से जानवर के बदन के हिस्से बनते हैं और खाने के फ़ुज़ूल हिस्से बदन से बाहर निकल जाते हैं। सिवाय इन बातों के ऐसे जानवरों के बदन में फैलने और सिकुड़ने की ताक़त रहती है॥

२—सिलेन्टरेटा

इन जानवरों की यह ख़ासियत है कि उन के बदन के अंदर एक नली की राह से खाना जाता है मगर उन में खून की गर्दिश का इन्तिज़ाम नहीं है और अक्सर ऐसे जानवरों में पट्ठे भी नहीं रहते। इन का बदन दो झिल्लियों से बनता है एक बाहरी और दूसरी भीतरी। झिल्ली के अंदर की जगह थैली सी होती है जिस में खाना जाता है । उन को मुंह रहता है और मुंह के चारों तरफ़ छोटे छोटे सितारों की सूरत के आलात लगे रहते हैं। ऐसे जानवर पानी के रहने वाले होते हैं यह अक्सर तालाबों में नज़र आते हैं। मूंगे इसी क़िस्म के जानवर हैं॥

३—एन्यूलाइडा

इस क़िस्म के जानवरों में अक्सर एक अलहिदा खाने की नली होती है जिस के अक्सर दोनों सिरे खुले रहते हैं । इस का एक सिरा मुंह है। पर इस तरह के बहुत से जानवरों में जो अंतड़ियों में रहते हैं खाने की नली नहीं पाई जाती है मगर उन के अंदर चमड़े में होकर खाने की द्रव चीज़ें जाती हैं और इसी से उन की परवरिश होती है। इन सब जानवरों में पट्ठे रहते हैं और इन में एक ख़ास तौर की नलियों का मज्मूआ होता है जिन में पानी की तरह कुछ चीज़ें चला करती हैं। आदमी या और जानवरों के पेट में जो कीड़े अक्सर मिलते हैं इस क़िस्म के जानवर हैं॥

४—एन्यूलोसा

इस क़िस्म के जानवरों का बदन अंगूठी की तरह की चीज़ों के सिल्सिलेवार इकट्ठा होने से बनता है। इन में खाना जाने

की नली अलहिदा रहती है। जब कभी ऐसे जानवरों में दिल यानी खून चलने का खास आला रहता है तो वह बदन के पीछे की तरफ़ होता है। उन में आगे की तरफ़ पट्ठों की क़तार रहती है। जब ऐसे जानवरों में अज़ो यानी हाथ पैर रहते हैं तो वह बदन के उस तरफ़ फिरे रहते हैं जिधर पट्ठे हैं। तीसरी शकल देखने से ऐसे जानवरों की बनावट साफ़ मालूम होगी। उस में (क) खून की गर्दिश का इन्तिज़ाम है (ख) खाने की नली है और (ग) पट्ठों का क़तार है जो एक जंजीर की तरह फैला चला गया है॥

मकड़े, बिच्छू, कनखजुरे और कीड़े इस तरह के जानवर हैं। पर इन में से खास कीड़े हैं। कीड़ों के बदन में तीन खास हिस्से होते हैं यानी सिर, धड़ और नीचे का हिस्सा। ऐसे पूरे क़द के जानवरों में यह तीनों अलहिदा अलहिदा साफ़ मालूम होते हैं। इन के छ से ज़ियादा पैर नहीं होते और यह पैर धड़ की अंगूठियों में लगे रहते हैं। नीचे के हिस्से में कभी पैर नहीं लगा रहता। यह छोटी छोटी नलियों के वसीले से सांस लेते हैं और अकसर कीड़ों को धड़ में पर भी लगे हुए नज़र आते हैं। ऐसे जानवरों में नर और मादे का फ़रक़ होता है और अकसर वह अंडे से पैदा होते हैं। मक्खी, भड़ और गुबरीले वग़ैरः इस क़िस्म के जानवर हैं॥

पैदाइश बदन पर एक काली सी चीज़ के उभड़ आने से होती है और तब ऐसे जानवरों की जमाअत बन जाती है। घोंघे इस क़िस्म के जानवर हैं॥

रीढ़दार जानवर

ऐसे जानवरों की ख़ासियतों का कुछ बयान पहले हो चुका है। इन में सिल्सिलेवार छोटी छोटी हड्डियों की क़तार रहती है जिन में से हर एक छोटी हड्डी को मुहरा कहते हैं और सब मिला कर रीढ़ कहलाती हैं। इस में कुछ शक नहीं कि कितने ऐसे जानवरों में हड्डी की रीढ़ नहीं होती पर उन में नर्म हड्डी की तरह एक चीज़ की रीढ़ रहती है। और कितनों में रीढ़ की एवज़ सिर्फ़ एक छड़ की तरह नर्म हड्डी होती है। इसे नोटोकार्ड (Notochord) कहते हैं॥

रीढ़दार जानवरों के क़िस्म बयान करने के पहले कुछ हाल उन के बदन की बनावट का जानना ज़ुरूर है। अगर किसी आला दर्जे के ऐसे जानवर को अच्छी तरह से देखें तो उस में हड्डियों का मज्मूआ दो तौर का मिलेगा। पहले मज्मूए में सिर और धड़ की हड्डियां हैं और दूसरे में हाथ पैर की। पहले मज्मूए की हड्डियों की यह ख़ासियत है कि वह हल्क़े की सूरत में एक दूसरे के बाद सिल्सिलेवार हैं। सिर में यह हल्क़े या छल्ले निहायत चौड़े हैं और इन्हीं से खोपड़ी बनती है जिस के अंदर मग़ज़ रहता है। सिर के नीचे इन्हीं छल्लों से रीढ़ की हड्डियां (मुहरे) बनती हैं। छाती में ख़मदार हड्डियां हैं जो पीछे रीढ़ की हड्डियों में लगी रहती हैं। इन्हें पसली कहते हैं और आगे की तरफ़ यह सब सीने की हड्डी में जा मिली हैं॥

आला दर्जे के रीढ़दार जानवरों में हाथ और पैर एक

ही ढंग पर बने रहते हैं। ऊपर अज़ो यानी हाथ दो हड्डियों के ज़रीए से धड़ में लगे रहते हैं यानी पीछे की तरफ़ कंधे की हड्डी से और आगे की तरफ़ हंसली से। वह हड्डियां जिन से नीचे के अज़ो धड़ से मिले हैं हर एक तरफ़ सिर्फ़ एक एक हैं यानी दाहनी तरफ़ एक और बाईं तरफ़ एक। हाथ पैर में बहुत सी हड्डिया हैं जो एक दूसरे से लगी हैं। हाथ के ऊपरी हिस्से में एक हड्डी है जो कंधे से कुहनी तक है और इसे बाज़ू की हड्डी कहते हैं। इस के नीचे हाथ में कुहनी से कलाई यानी क़ब्ज़े तक दो हिड्डयां हैं एक को अंगरेज़ी में रेडियस(Radius) और दूसरी को अलना (Ulna) कहते हैं। इस के बाद कई एक छोटी छोटी हड्डियों से कलाई बनी हैं। इन हड्डियों को क़ब्ज़े की हड्डियां कहते हैं। इस के बाद गोल और लम्बी हड्डियों से हथेली बनी है। इन सब के बाद उंगली की हड्डियां हैं। ठीक ऐसे ही हिस्से नीचे या पीछे के अज़ो [पैरों] में हैं। पहले एक बड़ी रान की हड्डी है उस के बाद दो हड्डियां हैं एक पिंडली की हड्डी मोटी और उसी के नज़दीक दूसरी पतली। इन के बाद पांव की हड्डियों का दो मजमूआ है एक जोड़ पर और दूसरा उस के नीचे। सब के आख़िर में उंगलियों की हड्डियां हैं॥

ड़ियों में जा मिला है जिन का दूसरा सिरा बढ़ कर खुला रहता है इस राह से खाने के वह हिस्से जो हज़्म नहीं होते जानवर के बदन के बाहर निकल जाते हैं। जब खाना हज़्म होता है तब खून बनता है। सिवाय एक छोटी सी मछली के जिसे लान्सेलेट कहते हैं और सब रीढ़दार जानवरों में खून का रंग सुर्ख़ होता है। खून बदन के सब हिस्सों में दिल के ज़रिए से फैल जाता है। दिल अज़्लों* से बना है जो फैल सकते और सिमट सकते हैं। आला दर्जे के रीढ़दार जानवरों में खून फिफड़ों† में होकर गुज़रने से साफ़ हो जाता है मगर छोटे रीढ़दार जानवरों में (जैसे मछलियां) गल्फरे होते हैं जिन से वह पानी में सांस ले सकते हैं। सब रीढ़दार जानवरों में नर और मादे का फ़रक़ होता है और इसी फ़रक़ के लिहाज़ से ऐसे जानवरों में मादा से पैदाइश होती है। इन में कितने अंडे से पैदा होते हैं जब अंडा सेया जाता है तब उस में से बच्चा निकलता है। मगर आला दर्जे के रीढ़दार जानवरों को बग़ैर अंडे के बच्चे पैदा होते हैं। रीढ़दार जानवरों की खास क़िस्में यह हैं।

१. मछलियां, २. ज़मीन और पानी दोनों के रहने वाले, ३. रेंगनेवाले जानवर, ४. पच्ची और ५. दूधपीनेवाले।

प्रोफ़ेसर हक्सली साहिब रीढ़दार जानवरों की सिर्फ़ तीन क़िस्म करते हैं पहली में मछलियां और ज़मीन और पानी दोनों

* अगर किसी जानवर के बदन का चमड़ा काटें तो उस के नीचे कुछ सुर्ख़ी लिये जो गोश्त नज़र आता है उसे अज़्ला कहते हैं॥

† फिफड़े पंसुलियों के नीचे रहते हैं जिन से उन की हिफ़ाज़त होती है॥

के रहने वाले शामिल हैं। इन की यह ख़ासियत है कि इन्हें ज़िन्दगी भर में किसी वक़्त गल्फरे रहते हैं। दूसरी क़िस्म में रेंगनेवाले जानवर और पक्षी हैं। तीसरी क़िस्म दूध पीनेवालों की है॥

मछलियां।

मछलियां ख़ास करके गल्फरे के सबब से पहचानी जाती हैं। गल्फरों के ज़रीए से वह सांस लेती हैं। जिन्हें दिल यानी खून चलने का ख़ास आला होता है उन के दिल में दो ख़ाने रहते हैं उन का खून ठंढा होता है। अज़ो की जगह मछलियों को पर रहते हैं मगर यह सब मछलियों में नहीं होते जैसे बाम में यह नहीं दिखाई देते। सिर्फ़ एक मछली में जिसे लान्सिलेट कहते हैं दिल नहीं होता। मछलियों का मग़ज़ अक्सर बहुत छोटा होता है। सुनने की इन्द्रिय के ख़ास हिस्से मछलियों में पाये जाते हैं। उन की नाक की बनावट और जगह ऐसी है कि इस से मालूम होता है कि सूंघने की ताक़त उन्हें बहुत तेज़ रहती है॥

ज़मीन और पानी दोनों पर रहनेवाले जानवर।

इस क़िस्म के जानवर जब बचपन की हालत से जवानी पर आते हैं तो एक ख़ास तौर पर बदल जाते हैं। अक्सर यह जानवर जब बहुत छोटे रहते हैं तब पानी में रहते हैं और मछलियों की तरह सांस लेते हैं। उन की ऐसी हालत में मछलियों की तरह एक छोटी सी दुम रहती है और गल्फरे रखते हैं। कुछ अर्से के बाद उन के बदन के अन्दर ठीक ठीक फेफड़े बन जाते हैं और तब यह ज़मीन पर रहने के लायक़ होते हैं। इस क़िस्म के चन्द जानवरों में गल्फरे और दुम उ-

मेशा बने रहते हैं पर चन्द में जवानी की हालत में यह ग़ाइब हो जाते हैं। मेंडक इस क़िस्म के जानवर हैं उन्हें बचपन में गल्फरे और दुम होती है पर बड़े होने पर यह नहीं नज़र आते। ऐसे जानवरों के दिल में तीन ख़ाने होते हैं और उन का खून सर्द होता है।

ऐसे जानवरों में और मछलियों में इस बात की मुशाबिहत है कि इन जानवरों को ज़िन्दगी भर में किसी एक वक़्त गल्फरे होते हैं पर जब ऐसे जानवर जवान होते हैं तो उन्हें असली फेफड़े रहते हैं जो मछलियों में नहीं होते॥

रेंगनेवाले जानवर।

ऐसे जानवरों को गल्फरे नहीं होते और अक्सर उन का खून सर्द होता है। इस में कुछ शक नहीं कि इस क़िस्म के चन्द जानवर जो अगले ज़माने में थे पर अब नहीं हैं चिड़ियों की तरह गर्म खून वाले थे। ऐसे जानवरों में हमेशा साफ़ सुर्ख़ खून नहीं रहता जो कि शिरियान में चलता है और इसी लिये यह जानवर सुस्त रहते हैं। उन के दिल की बनावट ऐसी होती है कि रग का मैला खून और शिरियान* का ताज़ा खून मिल कर बदन में फैलता है। इन के बाहर सख़्त चमड़ा बन जाता है मगर इन के पर नहीं होते। ऐसे बाज़ जानवरों को (जैसे सांप) हाथ पांव नहीं होते पर चन्द औरों को निहायत बुरे तौर पर बने रहते हैं। घड़ियाल और मगर में दोनों हाथ पैर ठीक रहते हैं। इस तरह के जानवरों

---

* बदन की उन पतली नाड़ियों का नाम शिरियान है जिन में साफ़ सुर्ख़ खून बराबर चला करता है। कुछ नीले रंग का मैला खून जिन नलियों में चलता है उन्हें रग कहते हैं॥

की चार ख़ास क़िस्में हैं पहली में कछुए और दूसरी में सांप शामिल हैं। मकानों की छिपकलियां तीसरी क़िस्म में हैं और सिर्फ़ घड़ियाल चौथी क़िस्म में है॥

पक्षी।

ओवेन साहिब ने चिड़ियों का लक्षण इस तौर पर लिखा है—"वह अंडा देनेवाली रीढ़दार जानवर हैं जिन का ख़ून गरम होता है और दुबारा गर्दिश से साफ़ हो जाता है। उन के बदन में पर होते हैं"। चिड़ियों के जबड़ों में दांत नहीं रहते और उन के ऊपर के अज़ो बदल कर डैनों की शक्ल के हो गये हैं। बाहरी चमड़े की बनावट में एक ख़ास तौर की तब्दील होने से चिड़ियों के पर बन गये हैं। पर के तीन हिस्से होते हैं। अगर तुम ग़ौर कर के किसी पर को देखोगे तो यह हिस्से साफ़ अलग अलग नज़र आवेंगे। सब से नीचे एक सख़्त नली सी चीज़ रहती है उस के ऊपर एक नर्म लम्बी चीज़ होती है जिस में बहुत से निहायत बारीक छोटे छोटे बाल के मानिन्द हिस्से बढ़े रहते हैं। चिड़ियों के सीने की हड्डी नाव के नीचे के हिस्से की तरह होती है और इसी में अज़ु-ओं से डैने लगे रहते हैं। ऐसी बनावट के सबब से उन को उड़ने में बहुत आसानी होती है। उन चिड़ियों में जो उड़ती नहीं बल्कि सिर्फ़ दौड़ती हैं सीने की हड्डी की शक्ल ऐसी नहीं रहती है जैसे शुतरमुर्ग में। अभी कह चुके हैं कि चिड़ियों को दांत नहीं होते मगर उन के जबड़े का बाहरी हिस्सा सख़्त सींग के तौर पर होता है और उसे चोंच कहते हैं। उन की ज़बान भी अक्सर सख़्त रहती है। तोते की ज़बान नर्म होती है। फेफड़ों के क़रीब से चिड़ियें सांस लेती हैं और उन के बदन में बहुत सी छोटी छोटी हवा से भरी हुई थैलियां भी

रहती हैं। यह थैलियां बदन के सब हिस्सों में हैं और सब फेफड़े से मिली हैं। इनके सबब से वह आसानी से उड़ सकती हैं क्योंकि इन के होने से वह हल्की हो जाती हैं। इन के दिल में चार ख़ाने रहते हैं और खून की दुहरी गर्दिश होती है यानी दिल के एक तरफ़ से साफ़ सुर्ख़ खून बदन के सब हिस्सों में शिरियान के ज़रीए से जाता है और दूसरी तरफ़ से मैला नीले रंग का खून साफ़ होने के लिये फेफड़ों में गुज़र कर चलता है। अक्सर चिड़ियों को देखने की कूवत बहुत तेज़ होती है पर छूने और सूंघने की कूवतें बहुत कमज़ोर रहती हैं। चिड़ियां हमेशा अंडे से पैदा होती हैं। सेने के बाइस अंड़ों से बच्चे निकलते हैं। चिड़ियों की सात क़िस्में हैं।

१— तैरनेवाले पच्छी। इन की बनावट ऐसी होती है कि यह आसानी से तैर सकते हैं। उन की उंगलियां एक झिल्ली से मिली रहती हैं बत और हंस वग़ैरः इस क़िस्म के जानवर हैं।

२—हलने वाले पच्छी। ऐसे जानवर अक्सर झील या ताल या नदी के कनारे कम पानी में ज़िन्दगी बसर करते हैं। वह मछली और कीड़ों को खाते हैं उन के पैर अक्सर लम्बे और बेपर के होते हैं। उन की चोंच भी लम्बी होती हैं। पानी की मुर्ग़ियां, बगले, सारस, ढेक और चाहे इस क़िस्म में शामिल हैं।

३—दौड़नेवाले पच्छी। इन के पैर निहायत मज़बूत और डैने बहुत छोटे होते हैं और इस सबब से वह तेज़ी के साथ दौड़ सकते हैं पर उड़ नहीं सकते। इस क़िस्म का ख़ास जानवर शुतरमुर्ग़ है। यह अफ़रीक़ा के रेगिस्तानों में रहता है और सब चिड़ियों से बड़ा है।

४—खोदनेवाले पच्छी। इन के चोंच का ऊपरी हिस्सा गोल

रहता है और नीचे के हिस्से में एक झिल्ली सी चीज़ रहती है जिस में नथनों के सूराख़ दिखाई देते हैं । मुर्ग़, बटेर, कबूतर और कुलरी इस क़िस्म के जानवर हैं ।

५—चढ़नेवाले पक्षी । इन की ख़ासियत यह है कि इन के हर एक पैर में चार उंगलियां होती हैं जिन में से दो भीतर की तरफ़ और दो बाहर की तरफ़ फिरी रहती हैं । इस सबब से वह आसानी से दरख़्तों पर चढ़ सकते हैं । कोयल, कठफुड़-वा, तोता और काकातुआ इस क़िस्म के जानवर हैं ।

६—लटकनेवाले पक्षी । इन के पैर की एक ख़ास तौर की बनावट होती है । उन की उंगलियां पतली, लचकदार और कुछ लम्बी होती हैं और उन के पंजे लम्बे नुकीले और कुछ झुके हुए रहते हैं । कौवे इस क़िस्म में शामिल हैं ।

७—शिकारी पक्षी । इन की चोंच की बनावट एक ख़ास तौर की होती है जिसके सबब से वह गोश्त को आसानी से फाड़ सकते हैं । वह गोश्त पर गुज़रान करते हैं और निहा-यत मज़बूत होते हैं । उल्लू, गिद्ध, चील और बाज़ वग़ैरः इस क़िस्म के पक्षी हैं ॥

दूध पीनेवाले जानवर ।

ऐसे जानवरों के बदन के किसी हिस्से में बाल ज़रूर रहते हैं । इन के बच्चे मा का दूध पीकर पर्वरिश पाते हैं । इन के बदन की बनावट का हाल पहले बयान हो चुका है क्योंकि यही आला दर्जे के रीढ़दार जानवर हैं । अक्सर बच्चे कुछ दिन तक मा के पेट के अन्दर पर्वरिश पाते हैं । मा के पेट में छोटी छोटी ख़ून की रगें बच्चे के बदन से मिली रहती हैं जिन के सबब से उन में ख़ून वग़ैरः जा सकता है । दूध

पीनेवाले जानवरों की चौदह क़िस्में हैं। पहली क़िस्म में सिर्फ़ चन्द जानवर हैं जो न्यूहालेन्ड के सिवाय और कहीं नहीं मिलते। दूसरी क़िस्म थैलीवाले जानवरों की है। ऐसे जानवरों के पेट के बाहर एक थैली होती है जिस में छुटपन में बच्चे रहते हैं और वहीं पर्वरिश पाते हैं। इस क़िस्म में कंगारू जो हिन्दुस्तान में नहीं मिलते शामिल हैं। तीसरी क़िस्म के वह जानवर हैं जिन को अक्सर दांत नहीं होते। चींटी खानेवाले जानवर इस क़िस्म के हैं। चौथी क़िस्म में सिर्फ़ चन्द समुद्र के जानवर शामिल हैं जिन के देखने का हिन्दुस्तान के लोगों को बहुत ही कम मौक़ा मिलेगा। पांचवीं क़िस्म में ह्वेल शामिल हैं। इन जानवरों की शकल मछली की तरह होती है और यह गोश्त पर गुज़रान करते हैं। गंगा नदी में जो अक्सर सूंस नज़र आती हैं इसी क़िस्म में दाख़िल हैं। छठी क़िस्म खुरवाले जानवरों की है। यह चौपाये हैं जिन को खुर होते हैं। गैंडे, घोड़े, गधे, ऊंट, हिरन, बैल, भेड़ और बकरी इस क़िस्म के जानवर हैं। सातवीं क़िस्म में सिर्फ़ चन्द ऐसे जानवर हैं जिन का बयान करना कुछ ज़रूर नहीं है। आठवीं क़िस्म सूंडवाले जानवरों की है। इस क़िस्म में इस ज़माने के जानवरों में सिर्फ़ हाथी है। नवीं क़िस्म गोश्त खानेवाले जानवरों की है। इन के दांतों की बनावट ऐसी होती है कि वह आसानी से गोश्त फाड़ सकते हैं। इन के पंजे टेढ़े होते हैं। रीछ, शेर, चीते, तेंदुए, कुत्ते और बिल्ली इस क़िस्म में शामिल हैं। दसवीं क़िस्म में वह जानवर हैं जो आसानी से चबा सकते हैं और वह अक्सर दरख़्त के सख़्त हिस्सों पर गुज़रान करते हैं। वह अकसर छोटे क़द के होते हैं। ख़रगोश, चूहे, साही और गिलहरी इस क़िस्म के जानवर हैं। ग्यारहवीं क़िस्म के जानवरों की यह ख़ासियत है

कि उन की उंगलियां बहुत लम्बी होती हैं और वह झिल्ली से आपस में मिली रहती हैं। इसी झिल्ली से उन के आगे के अज़ो पीछे के अज़ो से मिले रहते हैं और झिल्ली का एक सिरा उन की बग़ल में लगा रहता है। चमगादुर इस क़िस्म में शामिल हैं। बारहवीं क़िस्म कीड़े खानेवाले जानवरों की है। यह जानवर क़द में छोटे होते हैं और कीड़ों पर गुज़रान करते हैं। छछूंदर इस क़िस्म में शामिल हैं। तेरहवीं क़िस्म चार हाथ वाले जानवरों की है। इन के सब अज़ो हाथ की तरह काम में आते हैं। बन्दर और लंगूर इस क़िस्म में शामिल हैं। चौदहवीं क़िस्म में सिर्फ़ आदमी हैं॥

तीसरा अध्याय
वनस्पति (दरख़्त)

इस के पहले यह कह चुके हैं कि दरख़्त भी जानदार चीज़ों में शामिल हैं। उन को खुराक की ज़रूरत होती है वह बढ़ते हैं और अपने ऐसे दरख़्तों को पैदा करते हैं। दरख़्तों के ज़िन्दा रहने का वक़्त कुछ ठीक नहीं है कितने ऐसे दरख़्त हैं जो सिर्फ़ एक घंटे या दो घंटे तक ज़िन्दा रह कर मर जाते हैं और बहुत से ऐसे हैं जो कई साल तक बने रहते हैं। ज़मीन के क़रीब क़रीब सब हिस्सों में दरख़्त मिलते हैं मगर कसरत से उन्हीं मुल्कों में पाये जाते हैं जहां की आब व हवा गरम और नम होती है। पैदाइश की जगह और आब व हवा के बमूजिब उन की शक्ल और तासीरों में कुछ फ़रक़ पड़ता है। दरख़्तों की बहुत सी क़िस्में हैं और हम सब लोग घास, लता, झाड़ी और बड़े बड़े पेड़ों को अक्सर पहचान लेते हैं॥

दरख़्तों की ज़िन्दगी के लिये चंद चीज़ें निहायत ज़ुरूर हैं। हवा, रोशनी, गरमी, पानी और कई एक मिट्टी के हिस्से जो पानी में घुल सकते हैं उन के बढ़ने और उन की पर्वरिश के लिये निहायत ज़ुरूर हैं। सिर्फ़ एक क़िस्म के दरख़्त जिन्हें ग-रज़ुआ कहते है अंधेरे में जी सकते हैं। इस क़िस्म के दरख़्तों में फूल नहीं होते और यह निहायत अदना दर्जे की बनस्पति है। जब तक दरख़्त जीते रहते हैं तब तक उन में हमेशा कई तब्दीलियां होती जाती हैं जिन के सबब से वह बढ़ते और ज़िन्दा रहते हैं। नये दरख़्त बीज या क़लम से पैदा होते हैं मगर अक्सर उन में न तो इन्द्रियां होती हैं और न वह एक जगह से दूसरी जगह तक जाने के आलात रखते हैं। इस में कुछ शक नहीं कि ऐसे भी दरख़्त हैं जिन की पत्तियां सिकुड़ जाती हैं और बहुत से पानी में ऐसे दरख़्त होते हैं जो बचपन में पानी पर तैरते रहते हैं॥

सब दरख़्तों को दो हिस्सों में तक़्सीम कर सकते हैं एक तो वह जिन में फूल होते हैं और दूसरे वह जिन में फूल न-हीं होते। फूलदार पेड़ों के फूलों से बीज पैदा होते हैं। बे-फूल के दरख़्तों की शाख़ों में कुछ कली सी चीज़ बढ़ आती है जिन से नये दरख़्त पैदा होते हैं। क़ाई बेफूल के दरख़्त हैं॥

दरख़्तों के मुख़्तलिफ़ हिस्से उन के बढ़ने और पैदाइश के ख़ास कामों के लिये बने हैं। यह हिस्से उन के आलात कह-लाते हैं। फूलदार दरख़्तों के ख़ास आलात यह हैं — (१) जड़, (२) शाख़, (३) पत्ती, (४) फूल। जड़ और पत्ति-यों के ज़रीए से दरख़्तों में उन की पर्वरिश की चीज़ें जाती हैं। उन्हे जानवरों की तरह पेट नहीं होता जिस में खाना जमा हो और न उन को दिल यानी ख़ून के चलने का ख़ास

आला होता है। यह पहले बयान हो चुका है कि दरख़ों के खाने की चीज़ें द्रव और हवा की तरह होती हैं। द्रव पदार्थ जड़ों से जज़्ब हो जाते हैं और धीरे धीरे यह पत्तियों तक जा रहते हैं। हवा का कार्बोनिक एसिड पत्तियों में जाता है। जब पानी और कार्बोनिक एसिड पत्ती की सब्ज़ी (क्लोरोफ़िल) के साथ रहते हैं तो रोशनी पड़ने से लेई सी एक चीज़ पैदा हो जाती है। सिर्फ़ हरे रंग के दरख़ों में यह लेई बनती है। लेई को आंटे से भी बना सकते हैं। आंटे में थोड़ा पानी मिला कर उसे एक कपड़े में बांध दो। तब इसे पानी में रख कर खूब गूंधो। थोड़ी देर में पानी में सुफ़ेदी आजायगी अगर कुछ अर्से तक यह पानी रक्खा रहे तो बरतन में जो चीज़ नीचे जमा हो जायगी वही लेई है। दरख़ों के जड़ के ज़रीए से उन के अंदर वह चीज़ें जाती हैं जिन में नैट्रोजन * मिला रहता है। इन से जब लेई मिलती है तो एक नई चीज़ बन जाती है जिसे ज़िन्दगी का सुफ़ेद माद्दा कहते हैं। और सब चीज़ें जिन से दरख़ बनते हैं जड़ों में होकर द्रव पदार्थों के साथ उन के अंदर जाती हैं। इस तौर पर जब दरख़ बनते हैं तब उन में बहुत सी निहायत छोटी छोटी थैली या खाने की सी चीज़ें बन जाती हैं। इन्हें सेल (cell) कहते हैं। इन के सिवाय बहुत सी छोटी छोटी नलियां भी बनती हैं। सेल बहुत पतली झिल्लियों की थैली हैं जो भरी रहती हैं। द्रव पदार्थ एक सेल से दूसरे में झिल्ली के सबब से

* नैट्रोजन एक तत्त्व है जो हवा में मिला है इसकी यह ख़ासियत है कि न तो इस में कोई चीज़ जल सकती और न कोई जानवर इस में दम ले सकते हैं। यह जब आक्सिजन से मिला रहता है तब दम लेने के लाइक़ होता है॥

जा सकते हैं। ज्यों ज्यों नये नये बहुत से सेल पैदा होते जाते हैं और ज्यों २ उन में तब्दीलियां होती जाती हैं त्यों त्यों दरख़ बढ़ता जाता है क्योंकि इन्हीं से दरख़ बनते हैं। शुरू में सेल में एक लसदार चीज़ रहती है जिस में ज़िन्दगी की अस्ल कूवत छिपी रहती है। यही ज़िन्दगी का सुफ़ेद माद्दा है। यही चीज़ जानवरों के अंडों में भी रहती है और यही सब जानदार चीज़ों की ज़िन्दगी की बाइस और बुनयाद है। जानवरों में इसी से हड्डियां बनती हैं और इसी से चर्बी बनने से जानवर की पर्वरिश का सामान उस में तैयार होकर इकट्ठा रहता है। इसी तौर पर दरख़ों में इस चीज़ से लकड़ियां बनती हैं और लेई बन कर उन में जमा रहती है और बाज़ पेड़ के बीजों में तेल भी बनता है। यह चीज़ आक्सिजन, हैड्रोजन, नैट्रोजन और कुयले के संयोग से बना है। जब यह सेल में रहता है तब अक्सर इसके जुदा २ हिस्से होते जाते हैं और इस तौर पर सेल बढ़ते जाते हैं॥

दरख़ के सब्ज़ हिस्सों में क्लोरोफ़िल के ज़र्रे रहते हैं यानी ज़िन्दगी का माद्दा क्लोरोफ़िल से सब्ज़ रंग का हो जाता है। यह बाहरी सेल में कसरत से होते हैं। क्लोरोफ़िल रोशनी के सबब से हरा रहता है और इसी लिये वह दरख़ जो अंधेरे में उगते हैं कभी सब्ज़ नहीं होते सिर्फ़ चंद गरजुए अंधेरे में उगते हैं और उन में लेई नहीं बनती। आलू का दरख़ कुछ दिन तक अंधेरे में उगेगा क्योंकि इस में पर्वरिश की चीज़ें पहले ही से इकट्ठी रहती हैं पर जो अंखुए अंधेरे में निकलेंगे वह सुफ़ेद होंगे। यह बयान कर चुके हैं कि दरख़ों में लेइ बनती है। यह आलू और उन दरख़ों में जिन से दाने पैदा होते हैं बहुत ज़ियादा होती है। बहुत से दरख़ों में लेई से तेल बन जाता है। तेल अक्सर बीजों में रहता है।

दरख़्तों में जो ज़िन्दगी का माद्दा है उस से एक और चीज़ जो आक्सिजन, हैड्रोजन और कुयले के संयोग से बनी है बनती है। यह शक्कर है। अक्सर ऐसा भी मालूम होता है कि कितने दरख़्तों में उन की खटाई से शक्कर बन जाती है मसलन् जब तक आम का फल कच्चा रहता है तब तक खट्टा होता है मगर पकने पर मीठा हो जाता है। दरख़्तों के सेल की बनावट में और बहुत से मिश्रित पदार्थों की ज़ुरूरत पड़ती है। दरख़्तों में सिवाय उन चीज़ों के जिनका बयान ऊपर हो चुका है गन्धक, लोहा, फ़ास्फ़रस* पोटाशियम† और केल्सियम‡ के संयुक्त पदार्थ भी मिलते हैं। दरख़्त के जो हिस्से बढ़ते हैं उन में पोटाशियम ज़ुरूर रहता है और सब पक्के बीजों में गन्धक और फ़ास्फ़रस मिलते हैं॥

अब तुम को यह बात जानना चाहिये कि दरख़्तों की ज़िन्दगी का माद्दा किस तौर पर पर्वरिश पाता है और किस तरह से यह पर्वरिश दरख़्त की ज़िन्दगी भर बनी रहती है। इस बात को कई बार कह चुके हैं कि दरख़्तों के खाने की चीज़ें द्रव और हवा की तरह हैं। सब द्रव पदार्थों में बहुत सी नमकीन और खानी चीज़ें घुली रहती हैं। उन द्रव पदार्थों को जो पेड़ों के अंदर जाते हैं दरख़्तों का रस कहते हैं। यह उन

---

* यह एक तत्त्व है जिसे हड्डी में से निकालते हैं। यह हवा में आने से जलने लगता है।

† यह एक तत्त्व है जो हवा में रखने से आक्सिजन से मिल जाता है। अगर इसे पानी में डालें तो पानी का हैड्रोजन अलग होता है।

‡ यह तत्त्व चूना खरी मिट्टी और हड्डियों में मिला रहता है। चूने में यह और आक्सिजन है।

के हर एक हिस्से में फैल जाता है और सब सेल में जाता है। जब यह रस उन हिस्सों तक पहुंचता है जिन की सतहें खुली हैं तो इस का बहुत सा पानी पत्तियों और बाहरी सेल के निहायत बारीक सूराख़ों के ज़रीए से भाफ बन कर निकल जाता है। पत्तियां हवा से कार्बोनिक एसिड जज़्ब कर लेती हैं और फिर धूप के सबब से यही क्लोराफ़िल में उन तत्वों में अलहिदा हो जाता है जिन से यह बना है यानी फिर कुयला और आक्सिजन बन जाते हैं। इन में से कुयला दरख़्तों में रह जाता है और आक्सिजन बाहर निकल आता है। इस तौर पर लेई और लकड़ी बनने के लिये कुयला मिलता है। लेई दरख़्त के सब हिस्सों में फैल जाती है और आख़ीर में या तो यह पेड़ों में जमा रहती है या इस से और संयुक्त चीज़ें बन जाती हैं जिनमें वह हिस्से रहते हैं जो दरख़्तों के अंदर जड़ के ज़रिये से जाते हैं। इस बयान से यह साफ़ मालूम होता है कि अगर बहुत दिन तक किसी खेत में एक ही क़िस्म के पेड़ लगाये जायं तो मिट्टी के बहुत से हिस्से दरख़्तों में जाने से कम हो जाते हैं या कुछ भी नहीं रह जाते और तब जो दरख़्त उगते हैं वह बहुत कमज़ोर होते हैं। इसी लिये खेतों में खाद देने की बड़ी ज़ुरूरत रहती है और हमेशा एकही क़िस्म के पेड़ों को एक खेत में न बोना चाहिये बल्कि मुख़्तलिफ़ फ़स्लों में अदल बदल करना चाहिये। यह बात अच्छी तरह से याद रखना चाहिये कि सब दरख़्तों को ज़मीन से एक ही तरह की चीज़ों की ज़ुरूरत नहीं रहती और इसी लिये मुख़्तलिफ़ दरख़्तों को मुख़्तलिफ़ तरह की खाद की ज़ुरूरत होती है। इसी वाइस से हर एक खेत में सब क़िस्म के पेड़ नहीं जम सकते। खेती में इस बात का ख़्याल निहायत ज़ुरूर है कि पेड़ों में खाद देने में वह चीज़ें

दियी जावें जिनसे उस ख़ास पेड़ के हिस्से ज्यादे बढ़ सकें॥

दो चार मटर के दानों को पानी से भिगा कर ऐसी ज़मीन में रक्खो जहां गरमी हवा और नमी पहुंच सके। तब दाने उगने लगेंगे। अब इस बात पर ग़ौर करो कि उगने से क्या मतलब है। अगर बीज को अच्छी तरह से देखोगे तो उस का एक बाहरी छिल्का नज़र आवेगा और इस के अंदर पेड़ की ज़िन्दगी का अस्ल हिस्सा यानी भ्रूण रहता है। मटर में दो दाल आपस में मिली हैं इन में से हर एक को बीजपत्र कहते हैं। जिस जगह यह मिली हैं वहां एक पतली गोल चीज़ है जो दोनों तरफ़ बढ़ सकती है। इस के बढ़ने से दरख़ के दो ख़ास हिस्से बनते हैं। नीचे की तरफ़ बढ़ने से रेडिकल बनता है और इसी से जड़ बन जाती है दूसरा सिरा ऊपर की तरफ़ बढ़ता है और तब भ्रूमूल बन जाता है इसी से पेड़ की डालियां वग़ैरह बनती हैं *। अभी कह चुके हैं कि मटर की दोनों दालों को बीजपत्र कहेंगे पर गेहूं के देखने से साफ़ मालूम होगा कि इस में दो बीजपत्र नहीं हैं तो गेहूं में एक ही बीजपत्र से दोनो तरफ़ बढ़ कर रेडिकल और भ्रूमूल बनते हैं। ऐसे पेड़ों को एकबीजपत्रक कहते हैं और मटर सरसों वग़ैरह को जिन में दो बीजपत्र होते हैं द्विबीजपत्रक कहेंगे॥

अभी बयान कर चुके हैं कि रेडिकल के बढ़ने से जड़ बनती है और जड़ ज़मीन में लगी रहती है जिस से पेड़ के सब हिस्से पर्वरिश पाते हैं। जड़ों में बहुत से पतले पतले तागे

---

* चौथी शकल देखो। इस से मटर के बीज का बयान साफ़ मालूम होगा।

* पांचवीं शकल से एक बीजपत्र वाले पेड़ों का हाल मालूम होगा।

रहते हैं जो मिट्टी के सूराखों में आसानी से चले जाते हैं। इन्हें जड़ के रेशे कहते हैं। सब दरख़्तों में जड़ एक ही तरह की नहीं होती। जड़ का ख़ास काम यह है कि इस के सबब से पेड़ ज़मीन में लगे रहते हैं और उस से पर्वरिश पाते हैं। पर बहुत से दरख़्तों में उन के पर्वरिश की चीज़ें जमा रहती हैं और इस लिये जड़ बड़ी और मोटी रहती है। गाजर की जड़ इस तरह की है। इस तौर पर जड़ों की दो क़िस्में हैं यानी एक क़िस्म वह है जिस से दरख़्त ज्यों ज्यों बढ़ते जाते हैं त्यों त्यों पर्वरिश पाते हैं और दूसरी क़िस्म वह है जिस में पर्वरिश की चीज़ें इकट्ठा रहती हैं और इन्हीं से दूसरे साल पेड़ के बढ़ने में मदद मिलती है। कभी कभी ऐसा भी होता है कि शाख़ों से जड़ लटक कर ज़मीन की तरफ़ जाती हैं जैसा कि बर के पेड़ में दिखाई देता है॥

प्लूमूल के बढ़ने से शाख़ें बनती हैं जिन पर कली पत्ती और फूल पैदा होते हैं। अक्सर शाख़ जड़ के बख़िलाफ़ और रोशनी के रुख़ बढ़ना चाहती हैं। पर कितने पेड़ों में यह ज़मीन के नीचे भी बढ़ती हैं। शाख़ों में दो ख़ास चीज़ें होती हैं जिन्हें अंगरेज़ी में नोड और इन्टरनोड कहते हैं। उन जगहों को जहां से पत्तियां निकलती हैं नोड कहते हैं और दो नोड के बीच की जगह इन्टरनोड कहलाती है। शाख़ों की सूरत अक्सर सीधी होती है पर कितने दरख़्तो में इधर उधर फिर भी जाती है यह बात लता में नज़र आती है जैसे श्यामघटा में। कितने पेड़ों में शाख़ें ज़मीन ही पर फैल जाती हैं जैसे मकोय। इन में नोड पर पत्तियां पैदा होने के सिवाय वहीं जड़ भी बन जाती है और इस तौर पर हर एक जोड़ पर नये नये दरख़्त लग जाते हैं। दूब घास का यही हाल है। प्याज़ वग़ैरह में शाख़ ज़मीन के नीचे रहती है॥

कलियां अक्सर शाखों पर बनती हैं या डालियों के सिरे पर या उस कोने पर जहां पत्तियां डालियों में लगी रहती हैं। दिखाई देने के पहले कुछ दिन तक वह छिपी हालत में रहती हैं पर वक़्त पाकर उन में पत्तियां बन जाती हैं या फूल बनते हैं या दोनों चीज़ें तैयार हो जाती हैं। जिस चीज़ से शाखें बनी हैं उन्हीं के फैलने से पत्तियां निकलती हैं। पत्तियों पर सूरज की रोशनी और गरमी आती है और इस लिये उन में से दरख़्त की बहुत सी खुराक उन के अंदर जाती है। पत्तियों में से पानी सी चीज़ें भाफ होकर निकल जाया करती हैं। और पत्तियां हवा के कार्बोनिक एसिड को सोखती हैं। अक्सर ख़ास वक़्त पर साल में पत्तियां दरख़्त से गिर जाती हैं और यह बात देखने में आई है कि गिरी हुई पत्तियों में वही चीज़ें रह जाती हैं जो दरख़्त की पर्वरिश के लिये बेकार हैं॥

सब दरख़्तों के फूल एक ही शकल रंग और क़द के नहीं होते। फूलों का ख़ास काम बीज पैदा करने का है जिस के सबब से नये दरख़्त पैदा होते हैं। फूलों में बहुत से आलात रहते हैं जिन में से ख़ास यह हैं।

(१) फूल की प्याली जिसे अंगरेज़ी में केलिक्स (calyx) कहते हैं। यह फूल का सब से बाहरी घेरा है और इसी के सबब से उस के अंदर की चीज़ें महफ़ूज़ रहती हैं। अक्सर दरख़्तों में इस की रंगत सब्ज़ और सूरत पत्ती की सी होती है पर बाज़ पेड़ों में जैसे कमल में रंगत और शक्ल इस के बाद के घेरे की होती है। केलिक्स की छोटी छोटी पत्तियों को अंगरेज़ी में सेपल (Sepal) कहते हैं। यह पत्तियां आपस में या तो मिली रहती हैं या जुदी होती हैं।

(२) फूल की रंगीन कली जिसे अंगरेज़ी में कोरोला (Corolla) कहते हैं। यह फूल का दूसरा घेरा है और अक्सर रंगीन और खुश्बूदार होता है और इसी वजह से चिड़ियां और कीड़े इस पर आते हैं। इस के बाज़ बाज़ हिस्सों से शहद भी निकलती है। इस की छोटी छोटी पत्तियों को पेटल (Petal) कहते हैं। यह पत्तियां अक्सर जुदी जुदी रहती हैं जैसे गुलाब के फूल में नज़र आती हैं पर कभी कभी एक ही में रहती हैं जैसे श्याम-घटा में होती हैं॥

(३) पुष्पकेशर जिसे अंगरेज़ी में स्टेमेन (Stamens) कहते हैं। यह निहायत पतले आलात हैं और इन में एक घुंडी बारीक सूत पर लगी रहती है। इस घुंडी में पुष्परज जिसे अंगरेज़ी में पोलेन (Pollen) कहते हैं भरा रहता है। स्टेमेन का ख़ास काम यह है कि इस में पुष्परज बनता और रहता है और ज़रूरत पड़ने पर बाहर निकलता है। पुष्परज निहायत बारीक पीले रंग की बुकनी है जो बीजों के बनाने के लिये बहुत ज़रूर है॥

(४) गर्भकेशर जिसे अंगरेज़ी में पिसिल (Pistil) कहते हैं। यह फूल में सब से बीच का आला है और इस की बनावट निहायत पेंचीदा है। इस की सब से सीधी बनावट यह है कि एक पत्ती बीच से इस तौर पर मुड़ी रहती है कि उस से ख़ाली डिबिये की सूरत बन जाती है। इस डिबिये के नीचे के हिस्से का अंगरेज़ी नाम ओवेरी (Ovary) है और इसी में दरख़्त का बीज रहता है। इस की एक बहुत साफ़ मिसाल मटर है क्योंकि जब फली बन चुकती है तो दोनों पत्तियों को खोलने से दाना यानी बीज निकल आता है। पिसिल की ख़ास ज़रूरत यह है कि उस के बाइस ओवेरी में

बहुत छोटी छोटी काली सी चीज़ें बनती हैं जो अख़ीर में बीज बन जाती हैं। इस आले के सिरे पर एक नोक बढ़ी रहती है और उस नोक के सिरे पर एक घुंडी बहुत छोटे बिन्दु की तरह रहती है। इस बिन्दु पर एक लसदार चीज़ लगी रहती है जिस के सबब से जो पुष्परज (पोलेन) इस पर गिरते हैं वह इस में सिमटे रहजाते हैं। तब पुष्परज का हर एक कण बढ़ने लगता है और एक पतला लम्बा बारीक तागा नीचे बढ़कर किसी ओवूल में मिल जाता है। ओवूल बहुत छोटे छोटे कण हैं जो ओवेरी में रहते हैं और जो पुष्परज से मिलने के सबब से बीज बन जाते हैं और जिन में दरख़ की सब सूरत बहुत छोटे में (यानी भ्रूण) रहती है। अभी बयान कर चुके हैं कि पुष्परज स्टेमिन में रहता है और ओवूल पिसिल में और पुष्परज और ओवूल के मिलने से बीज बनता है। अक्सर ऐसा होता है कि एक ही फूल में बीज पैदा करने के दोनों आलात मौजूद रहते हैं पर यह ज़रूर नहीं है कि किसी फूल के पिसिल में उसी फूल के पुष्परज से बीज पैदा हो। अक्सर ऐसा होता है कि किसी फूल के पिसिल में उसी दरख़ के दूसरे फूल से या दूसरे दरख़ के फूल से पुष्परज आता है। इस तौर पर किसी दरख़ में कुछ फूलों में स्टेमिन रहते हैं और चंद में पिसिल। यह हाल मकई के फूलों में है। और कितने पेड़ों में सिर्फ़ स्टेमिन रहता है या सिर्फ़ पिसिल जैसे खजूर और पपीते में। ऊपर के बयान से यह मालूम हुआ कि यह मुमकिन है कि एक ही फूल में बीज पैदा करने के दोनों आलात मौजूद हों पर यह बात हमेशा ज़रूर नहीं है। यह आम क़ाइदा है कि जिस फूल के पिसिल में उसी या दूसरे पेड़ के दूसरे फूल का पुष्परज आता है उस में बड़े बीज पैदा होते हैं। अब यह जानना ज़रूर है कि एक फूल का पुष्परज दूसरे में किस

तौर पर जा सकता है। यह बात दो तरह से होती है। या तो हवा के ज़रीए से जा सकता है या कीड़े और छोटी चिड़ियों के सबब से। यह अक्सर देखने में आया है कि जिन दरख़्तों में हवा से पुष्परज जाता है उन के फूलों में न तो अच्छे रंग होते हैं और न उन में खुशबू रहती है। उन के पिसिल के लम्बे सिरे की घुंडी पर रोएं रहते हैं जिन के सबब से पुष्परज उन में लिपट जाता है। ऐसे दरख़्तों की मिसाल केला है। जिन दरख़्तों में पुष्परज जानवरों के ज़रीए से जाता है उन में ऐसी स्वाभाविक तद्बीरें मौजूद हैं जिन के सबब से कीड़े और छोटी चिड़ियां उन पर बैठती हैं और उसी क़िस्म के और दरख़्त के फूलों पर जब जाती हैं तो उन के साथ पुष्परज भी चला जाता है और पिसिल के सिरे के रोएं में जा लगता है। जब ओवूल पुष्परज के मिलने के बाद बढ़ कर बीज बन चुकता है तब बीज पेड़ से जुदा हो जाता है। पिसिल की पत्ती यानी वह पत्ती सी चीज़ जो बीज के चारों तरफ़ रहती है बढ़ने पर फल हो जाती है। इस बयान से साफ़ ज़ाहिर है कि फल के अंदर बीज रहता है। कितने फल खाये जाते हैं और कितनों में गुठली भी रहती है जैसे आम। पर कितने दरख़्तों के फल में खाली छिल्के होते हैं और उन के बीज खाने के काम में आते हैं जैसे मटर का हाल है॥

पेड़ों के बाहरी हिस्सों में मुख़्तलिफ़ तौर के छिल्के वग़ैरः रहते हैं जिन के सबब से दरख़्त की पर्वरिश के बहुत से काम निकलते हैं। जिन पेड़ों पर रोएं और बाल की तरह की चीज़ें होती हैं उनसे दरख़्त के भीतरी हिस्से महफ़ूज़ रहते हैं। जैसे कि कपास में रोएं और बाल होते हैं इनसे सर्दी नमी और हवा का बचाव होता है। कितने दरख़्तों में ज़हरीले

कांटे रहते हैं। ऐसे कांटों में एक द्रव चीज़ रहती है। जब यह आदमी के बदन में चुभते हैं तब कांटे का पतला सिरा टूट जाता है और ज़हरदार द्रव चीज़ बदन में जा रहता है। इससे दर्द और खजुली पैदा होती है। अक्सर दरख़्तों के रोओं में से मीठी और खुशबूदार चीज़ें भी निकलती हैं जिन के सबब से कीड़े और चिड़ियां उनपर जाती हैं॥

दरख़्त इस ग़रज़ से तक़सीम किये जाते हैं कि उन का मुख़्तलिफ़ मज्मूआ बना कर यह देखें कि उन में आपस में किस तौर का इलाक़ा रहता है। बड़ी इह्तियात के साथ इस बात की तहक़ीक़ात करने से कि दरख़्तों की पर्वरिश और पैदाइश के आलात किस तौर से बने हैं और यह देखने से कि उन की नस्ल कैसे बदलती है दरख़्त तक़सीम किये जाते हैं अभी तक सब दरख़्तों के सब हालात अच्छी तौर पर नहीं दर्याफ़्त हुये हैं इस लिये उन की तक़सीम ठीक मुक़र्रर न समझना चाहिये और इस वजह से अक्सर तब्दीलियां करनी पड़ती हैं। पहले सब वनस्पतियों को चंद ख़ास जमाअत में तक़सीम करते हैं और हर एक मज्मूए में वैसे ही दरख़्त रहते हैं जिन में आम सिफ़तें एकसी हैं। फिर हर एक मज्मूए की और तक़सीम की जाती है। वनस्पतियों की ख़ास क़िस्में यह हैं।

(१) थैलोफ़ैटा—निहायत सहल बनावट के दरख़्त इस क़िस्म में शामिल हैं। उन को असली जड़ कभी नहीं रहती और शाख़ और पत्तियां जुदी नहीं होतीं। गरजुए इस क़िस्म में शामिल हैं॥

(२) मुसीनी—ऐसे पौधे अक्सर बग़ैर फूल के एक ख़ास कली की सी चीज़ के बढ़ने से पैदा होते हैं। इन में शाख़ और पत्तियां जुदा रहती हैं और इन में नर और मादे के आ-

लात रहते हैं। बीज की सेल बढ़ कर काली की सी चीज़ हो जाती है। काई इस क़िस्म में दाख़िल है॥

(३) टेरिडोफ़ैटा—इन में एक छोटी पत्ती की सी चीज़ पैदाइश वाली काली से बढ़ आती है और तब बीज के सेल से पौधे पैदा हो जाते हैं जिन में शाख़ पत्ती और जड़ रहते हैं॥

(४) फ़ेनेरोगेमिया—ऐसे दरख़ों में जड़ शाख़ और पत्तियां होती हैं और इन के फूलों में ओवूल पैदा होते हैं। जब यह ओवूल पोलेन से मिलते हैं तब बीज पैदा होते हैं। इन बीजों के बोने से दरख़ उगते हैं। इस क़िस्म में वह सब दरख़ शामिल हैं जिन में बीज होते हैं। ऐसे दरख़ों की दो ख़ास क़िस्में हैं। पहली क़िस्म में वह दरख़ हैं जिनके ओवूल में ग़िलाफ़ नहीं होती और दूसरी क़िस्म के पेड़ों के ओवूल में ग़िलाफ़ होती है। पहली क़िस्म के दरख़ों के बीज में कई बीजपत्र होते हैं। सरो इस क़िस्म का दरख़ है। दूसरी क़िस्म के दरख़ों में ओवूल और पोलेन के मिलने से बीज पैदा होते हैं और ओवूल एक ग़िलाफ़ में रहती है जिसे ओवेरी कहते हैं। ऐसे दरख़ों की दो ख़ास क़िस्में हैं।

(१) एकबीजपत्रक (२) द्विबीजपत्रक। जिन में एक बीजपत्र रहता है उन की जड़ का यह हाल है कि अंखुआ फूटने के बाद अस्ल जड़ नहीं बढ़ती पर उस में से हर तरफ़ छोटी छोटी जड़ें निकल कर फैलती हैं। मगर दो बीजपत्र वाले दरख़ों में ख़ास जड़ अक्सर बहुत बढ़ती है और बीजपत्र या ज़मीन के नीचे ही रह जाते हैं या ऊपर बढ़ आते हैं तब उन से दरख़ की सब्ज़ी पैदा होती है। गेहूं एकबीजपत्रक दरख़ है। गेहूं के किसी दाने में बहुत ही छोटा भ्रूण रहता है और बाक़ी जो कुछ उस में है वह पर्वरिश की ग़र-

ज़ से है। मटर द्विबीजपत्रक दरख़्तों में है। इसमें दोनों बीज की पत्तियां बहुत मोटी होती हैं और उन्हीं में पर्वरिश की चीज़ें रहती हैं। इस बात को अच्छी तौर पर समझने के लिये यह ज़ुरूर है कि तुम चंद मटर और गेहूं वग़ैरः के बीजों को जब उन में से अंखुए निकलने लगें काट कर देखो। तब जो बयान ऊपर हुआ है वह तुम्हें साफ़ मालूम होगा॥

चौथा अध्याय

आदमी

यह बात सब को अच्छी तरह से मालूम है कि हम लोगों को भूख और प्यास लगती है और तब खाने और पीने की ज़ुरूरत पड़ती है। अगर किसी शख़्स को चन्द रोज़ तक कुछ भी खाना न मिले तो इस में कुछ शक नहीं कि या तो वह बहुत दुबला हो जायगा या भूख से मर जायगा। मुनासिब खाने की पूरी मीतादृ से आदमी का वज़्न बढ़ता है और कम खाने से इस के बर्ख़िलाफ़ होता है। हक़ीक़त बात यह है कि आदमी के बदन से हमेशा कुछ निकल कर बाहर जाता है और हमेशा कुछ चीज़ें बदन के अन्दर जाया करती हैं। ज़िन्दा तनदुरुस्त आदमी के बदन को हमेशा ज़ोर किसी तौर पर करना पड़ता है क्योंकि बदन का कोई पर कोई हिस्सा हर वक़्त गतिदशा में रहता है। सोने में भी जब कि बदन के सब हिस्से स्थिर (ठहरे) मालूम होते हैं हम लोग साफ़ देखते हैं कि छाती बराबर ऊपर उठती रहती है और फिर नीचे जाती है। जब तक आदमी जीता रहता है तब तक वह मुख़्तलिफ़ क़िस्म के कामों को करता है और हर वक़्त

उसे ज़ोर लगाना पड़ता है। बदन के अंदर से गरमी, पानी और कार्बोनिक एसिड हमेशा बाहर निकाला करते हैं। इस के पहले इस बात का बयान हो चुका है कि दम लेने में कार्बोनिक एसिड बदन के बाहर निकलता है पर यह भी जानना चाहिये कि दम लेने में फेफड़ों में से कुछ पानी की भाफ भी बाहर निकलती है। पानी पसीना बन कर भी निकलता है और पेशाब में बहुत ज्यदा पानी का हिस्सा रहता है। बहुत सी और चीज़ें गलीज़ की सूरत में बदन से बाहर निकल जाती हैं। ऐसी चीज़ों में ख़ास कर खाने के वह हिस्से रहते हैं जो कि बदन में लहू वगैरः बन कर नहीं मिल जाते और जिन में बहुत कम तब्दीलियां होती हैं। उन में ख़ास कर नमक की चीज़ें रहती हैं॥

यह निहायत ज़रूर है कि हमेशा बदन के हिस्से कुछ पर कुछ काम करते रहें और बदन से गरमी, पानी और कार्बोनिक एसिड और खाने के कुछ हिस्से एक बंधी हुई तादाद के बमूजिब बाहर निकलते रहें। यह सब बातें उसी हालत में दुरुस्त तौर पर हो सकती हैं जब कि हम लोगों को ताज़ी हवा दम लेने के लिये मिले, कोई ऐसी चीज़ पीने के लिये मिले जिस में किसी तरह पर पानी हो और खाने की चीज़ें मिलें। खाने की चीज़ों में उस चीज़ का रहना निहायत ज़रूर है जिसे अंगरेज़ी में प्रोटीड (Proteid) कहते हैं। यह चार तत्वों यानी कुयला, हैड्रोजन आक्सिजन और नैट्रोजन के रसायनिक संयोग से बनता है। इस का और बयान आगे होगा। इस चीज़ के सिवाय खाने में तेल या घी की, लेई और शक्कर की भी ज़रूरत रहती है। जितना खाना खाया जाता है वह सब बदन के हिस्सों के बनाने में नहीं काम आता पर उस का कुछ हिस्सा जो फुजूल है बदन से बाहर निकल जाता है।

वह खाने का हिस्सा जो बदन से बाहर जाता है या तो पानी या कार्बोनिक एसिड या यूरिया (जो पेशाब की खारी चीज़ है) या उन मिश्र द्रव्यों की सूरत में होकर बदन से निकलता है जिन में नमक की चीज़ें ज्यादा रहती हैं। जो चीज़ें बदन के बाहर निकलती हैं उन में बनिस्बत उन चीज़ों के जो खाई पिई जाती हैं ज्यादा आक्सिजन रहता है और यह आक्सिजन हवा से जो सब किसी के चारों तरफ़ है मिलता है। अगर किसी आदमी को रोज़ तोलें और उस के वज़न में कुछ भी न घटे बढ़े तो यह साफ़ है कि नई चीज़ों का जितना हिस्सा बदन में रह जाता है वज़न में उतनी ही फ़ुजूल चीज़ें बाहर निकल जाती हैं॥

यह बात समझने के लिये कि किस तौर पर खाना हम लोगों के बदन का हिस्सा बन जाता है और हमलोगों को चलने फिरने की ताक़त कैसे मिलती है तुम्हें यह जानना निहायत जुरूर है कि बदन की बनावट कैसी है वह किन किन हिस्सों से बना है और किस तौर से यह हिस्से आपस में एक दूसरे से मिले हैं। आदमी के बदन में सिर धड़ अज़ो साफ़ जुदा जुदा मालूम देते हैं। इन्हें हम लोग आसानी से पहचान सकते हैं। धड़ के दो ख़ास हिस्से हैं यानी छाती और पेडू। अज़ो चार हैं यानी दो हाथ और दो पैर। हाथ के हिस्से यह हैं बाज़ू नीचे का हाथ कलाई और उंगलियां। इन्हीं के मुक़ाबिल पैर में रान पिंडुली टखना और उंगलियां हैं। हाथ और पांव की उंगलियों में बहुत से जोड़ रहते हैं इन में से हर एक को अंगरेज़ी में फेलेन्ज (Phalange) कहते हैं। बदन के पीछे की तरफ़ छल्ले सी हड्डियों का एक सिलसिला है जो मोहरे कहलाती हैं। इनके सबब से रीढ़ की नली छाती और पेट के ख़ाने से अलहिदा

रहती है। इस नली में एक लम्बी सुफ़ेद रस्सी की सी चीज़ होती है जो पट्ठों के मज्मूए का एक हिस्सा है। छाती और पेंडू के बीच में एक झिल्ली फैली है जिस से वह एक दूसरे से जुदा रहते हैं। खाने की नली छाती और पेंडू दोनों के अंदर होकर एक सिरे से दूसरे सिरे तक चली गयी है। पेंडू में गुरदे, जिगर, पेनक्रिअस और तिल्ली होती है। छाती में दिल और दोनों फ़िफड़े हैं। खोपरी के अंदर मग़ज़ रहता है॥

यह बात साफ़ ज़ाहिर है कि बदन के चारों तरफ़ चमड़ा है। इस की दो सतहें होती हैं। ऊपरी सतह सख़ छोटे छोटे कणों से बनी रहती है जो हमेशा गिरा करते हैं और जिन की एवज़ नये नये बना करते हैं। नीचे की सतह में बने रेशे होते हैं। अगर सिर्फ़ ऊपर की सतह कट जावे तो कुछ भी दर्द नहीं मालूम होती मगर जो नीचे की सतह कटे तो खून निकलने लगता है और बहुत दर्द होती है। हजामत बनाने में सिर्फ़ ऊपर का चमड़ा कटता है और इसी लिये दर्द नहीं मालूम देती। चमड़े के नीचे गोश्त है और गोश्त में कुछ चर्बी भी रहती है। चमड़े के नीचे जो सुर्ख़ रंग का गोश्त रहता है वही अज़्ला कहलाता है। अज़्ले फैल सकते हैं और फिर सिमट जाते हैं और इस लिये उन के सबब से बदन के हिस्सों में हरकत होती है। अज़्ले हड्डियों में कुछ कुछ नीले रंग की पतली रस्सी ऐसी चीज़ से मिले रहते हैं। अज़्लों के बीच में सुफ़ेद नर्म तागे सी चीजें फैली रहती हैं। यह चांदी के से तागे पट्ठे कहलाते हैं जिनका ख़ास हिस्सा मग़ज़ है और रीढ़ की रस्सी है। अज़्लों के बीच बीच में छोटी छोटी नलियां रहती हैं जिन में सुर्ख़ी लिये हुए नीले रंग का खून चलता है। यही रगें हैं। इन्हीं की तरह और बहुत सी नलियां हैं जिन में साफ़ सुर्ख़ रंग का खून

रहता है। इन को शिरियान कहते हैं। रग और शिरियान में बहुत सी खून भरी निहायत बारीक तागे या बाल सी नलियां मिलती हैं जिन्हें अंगरेज़ी में केपिलरी (capillary) कहते हैं। इन सब चीज़ों के सिवाय और भी ऐसी तद्बीरें बदन में बनी हैं जिन्हें इन्द्रिय कहते हैं और जिन के सबब से देखने, सुनने और सूंघने वग़ैरः का ज्ञान होता है॥

आदमी के बदन की बनावट का बयान जैसा अभी किया है क़रीब वैसाही बयान इस के पहले आला दर्जे के रीढ़दार जानवरों की बनावट का कर चुके हैं। दो बारा बहुत सी बातें इस लिये लिखा है कि बदन की बनावट का आम हाल अच्छी तरह से याद हो जावे। अब यह भी जानना चाहिये कि आदमी और दूसरे दूध पीनेवाले रीढ़दार जानवरों में कौन २ ख़ास फ़रक़ की बातें हैं। आदमी पैरों के ज़रिए से सीधे खड़ा होता है और चलता है जैसा कि और जानवरों का हाल नहीं है। आदमी के हाथ बहुत अच्छी तौर से बने हैं जिस वजह से निहायत सफ़ाई के काम हाथों से हो सकते हैं। और जानवरों की तरह चलने फिरने में हाथ की ज़रूरत नहीं पड़ती। आदमी की खोपरी बड़ी होती है और उसके अंदर ज्यादे मग़ज़ रहता है ख़ास करके मग़ज़ के आगे के हिस्से बड़े रहते हैं। आदमी में अंतड़ियों की लम्बाई उस के क़द के हिसाब से कम रहती है॥

इस बात का बयान पहले हो चुका है कि आदमी का बदन हर वक़्त काम दिया करता है और कुछ बदन के हिस्से हर वक़्त उस से जुदा हुआ करते हैं। इन हिस्सों के एवज़ नये नये हिस्से बना करते हैं। इन हिस्सों के बनने के लिये ग़िज़ाकी ज़रूरत पड़ती है। वह आलात जिनके ज़रिए से खाने की

चीज़ें बदल कर ऐसी बन जाती हैं जिन से बदन की पर्वरिश होती है खाना पचाने के आलात कहलाते हैं। जिन आलात के सबब से खून बदन भर में फैल जाता है खून की गर्दिश के आलात कहलाते हैं और जिन आलात के ज़रिए से बेकाम चीज़ें बदन के बाहर निकल जाती हैं वह ग़लीज़ निकालने के आलात कहलाते हैं। खाना पचाने के ख़ास आलात मुंह थूक की गिल्टियां गले के भीतर के कुछ आलात पेट और अंतड़ियां हैं। फेफड़ों के सबब से भी बदन के अंदर आक्सि-जन जो निहायत ज़रूरी चीज़ है जाता है। खाना पिस कर पेट में जाता है और कई एक चीज़ों के मिलने से पर्वरिश के लायक़ चीज़ और बेपर्वरिश की चीज़ें जुदा हो जाती हैं। पर्वरिश की चीज़ों में ख़ास करके खून है जो कि बदन के हर एक हिस्से में शिरियान और रग और केपिलरी के ज़रिए से फैल जाता है। सब शिरियान और रगें अ-ख़ीर में जाकर दिल से मिली हैं। दिल के सिकुड़ने से खून उसमें से निकल कर शिरियान में जा रहता है और तब के-पिलरी में। दिल एक दमकले या भाथी की तरह इस तदबीर से बना है कि जब यह काम देता रहता है तो खून सिर्फ़ एकही तरफ़ (शिरियान में) इसमें से जा सकता है। यही खून फिर रगों के ज़रिए से दिल में आता है। यही खून का चलना यानी गर्दिश है। यह याद रखना चाहिये कि हम लोगों का दिल हक़ीक़त में दो है यानी उसके दो ऐसे हिस्से हैं कि एक से खून फेफड़ों में जाता है और दूसरे से बदन के और हिस्सों में। जब खून बदन के सब हिस्सों में चलता रहता है तब इसी से उन को पर्वरिश मिलती है और इसी खून से बेकाम चीज़ें मुख़्तलिफ़ आलात से निकलते जाते हैं। यह बेकाम चीज़ें अख़ीर में ख़ास करके पानी या कार्बोनिक एसिड

या यूरिया की सूरत के बन कर बदन में से निकल जाती हैं। चमड़े फेफड़े और गुरदे * के सबब से यह चीजें बदन के बाहर निकलती हैं। फेफड़ों के ज़रिए से ख़ास करके कार्बोनिक एसिड बाहर निकलता है पर कुछ पानी के हिस्से भी बाहर जाते हैं। गुरदों के सबब से यूरिया और पानी और चंद निमकीन चीजें खून से जुदा होकर पेशाब बन कर बदन से बाहर निकल जाती हैं। इन निमकीन चीजों में ख़ास करके खाने का निमक रहता है और केल्सियम और फ़ास्फ़रस से संयुक्त एक चीज़ रहती है। कभी कभी बीमारी की हालत में या बुरे खाने और पानी के सबब से ऐसी निमकीन चीजें पेशाब में बन जाती हैं जो जम कर बढ़ती जाती हैं और अख़ीर में जिन से पथरी की बीमारी हो जाती है। चमड़ों के ज़रिए से पानी चंद निमकीन चीजों से मिला हुआ पसीना बन कर निकलता है॥

हम लोगों के बदन में जब तक ज़िन्दगी के ख़ास आलात बराबर काम देते जाते हैं तब तक हम लोग जीते रहते हैं और जब उनका काम देना बंद हो जाता है तब जीना भी बंद हो जाता है और मौत आजाती है। तुम्हें यह अच्छी तरह से मालूम है कि आदमी कई तरह से मरते हैं मगर जब कोई शख्स मरता है तब उस के मरने का बाइस तीन आ-

* बहुत सी लम्बी नली की सूरत की गिल्टियों के मजमूए से जो इकट्ठा होकर गोल शकल के हो जाती हैं गुरदे बनते हैं। इन के सबब से खून से पेशाब जुदा हो जाती है। दोनों गुरदों से दो नली लगी रहती हैं जिन में होकर पेशाब फुंकनी में जाकर जमा होती है और अख़ीर में बदन से बाहर निकल जाती है।

लात में से किसी के काम का बंद हो जाना होता है। यह आलात दिल फेफड़ा और पट्ठों का अस्ल बुनयाद है । अगर किसी आदमी के मग़्ज़ में बड़ा सदमा किसी तरह से पड़े तो वह मर जाता है। अगर किसी के फेफड़े काम देना बंद करदें तब भी वह मर जायगा। यह बात गला घुट के मरने या पानी में डूब मरने से भी होता है। जब दिल में से खून का चलना किसी तौर से बन्द होजाता है तब भी आदमी मर जाता है॥

आदमी का बदन करोड़ों जिन्दा सेल का मजमूआ है जिन सब को खून से पर्वरिश मिलती है। जो कुछ हम लोग खाते हैं उससे खून पैदा होकर बदन के सब हिस्सों में जाता है और जब अज़्लों और पट्ठों में गुज़रता है तो उन्हें खूनही से पर्वरिश मिलती है और खूनही के ज़रीए से उन में की बेकाम चीज़ें निकल जाती हैं। चूंकि खून ही बदन के सब हिस्सों को जिन्दा रखता है इसलिये तुम को अच्छी तौर पर यह जानना ज़रूर है कि खून क्या चीज़ है और किस तौर पर यह बदन में चलता है और किस तरह से खून उसी हवा से साफ़ होजाता है जिसे कि हम दम लेते हैं और कैसे खाने से खून बनता है। खून द्रव पदार्थ है और अगर किसी अच्छी खुर्दबीन से खून देखा जाय तो बहुत सी छोटी छोटी गोल चीज़ें नज़र आवेंगी। इन में से बहुत सी सुर्ख़ रंग की होती हैं और बहुत सी सुफ़ेद रंग की। जो सुफ़ेद रंग की चीज़ें हैं उन की सूरत हर वक़्त बदला करती है। सिवाय इन सब सुर्ख़ और सुफ़ेद कणों के खून में और चीज़ें भी हैं । यह बात सब किसी को मालूम है कि जब किसी आदमी के बदन से खून बाहर निकलता है तब वह जम जाता है

यानी दृढ़ हो जाता है। मगर जो खून को किसी पतली डाली से मारते और हिलाते जावें तो वह न जमेगा। जब डाली पर सुर्ख़ रंग जमा मालूम दे तो उसे पानी से धो डालो तब भी उसमें कुछ सुफ़ेद नरम लसदार तागे ऐसी चीज़ लगी रह जायगी। वह चीज़ बहुत से रेशों से बनी है जिसे फ़ैब्रिन (Fibrin) कहते हैं। इसी के सबब से खून जम जाता है। अगर जमा हुआ खून किसी बरतन में कुछ देर तक रखा रहे तो बीच मे एक सुर्ख़ ऐसी चीज़ रह जायगी और उस के चारों तरफ़ साफ़ पानी की सी चीज़ दिखाई देगी। इस द्रव पदार्थ का नाम सीरम (Serum) है। सीरम में वह चीज़ भी रहती है जो अंडे की सुफ़ेदी में होती है। इस सुफ़ेदी की बनावट फ़ैब्रिन से बहुत मिलती है और सुफ़ेदी भी गरमी से या किसी तेज़ाब में जैसे सिरके में डालने से जम जाती है। दही की बनावट और ख़ासियत भी ऐसी ही होती है। खून के कण बहुत से तत्त्वों के संयोग से बने हैं। इन में ख़ास यह हैं नैट्रोजन हैड्रोजन आक्सिजन कोयला गंधक लोहा॥

खून छोटी छोटी कैपिलरि में चलता रहता है जो शिरियान और रगों से मिली हैं और जो बदन के सब हिस्सों में जाल की तरह फैली हैं। सिवाय उन शिरियान के जो फेफड़ों में से होकर जाती हैं और सब एक बड़ी शिरियान में जिसे एओर्टा (aorta) कहते हैं जा मिली हैं। यह दिल से मिली है। जितनी बदन की रगें हैं वह सब दो बड़ी रगों में जिन्हें वीना केवा (vena cava) कहते हैं मिलती हैं। यह दोनों रगें दिल से लगी हैं। आदमी का दिल बाईं तरफ़ रहता है इसके नज़दीक कान लगाने से आवाज़ सुनाई देती है। कभी ऐसे भी आदमी मिल जाते हैं जिन का दिल दाहिनी तरफ़

हो मगर यह बात बहुत ही कम दिखलाई देती है। दिल में से जो आवाज़ सुनाई देती है वह दिल के फैलने और सिकुड़ने से पैदा होती है जब कि दिल में ख़ून आता है और फिर उस के बाहर जाता है। हर एक आदमी का दिल क़रीब उस की मुट्ठी के क़द का होता है। दिल का चौड़ा हिस्सा ऊपर की तरफ़ रहता है और उस का नोकदार सिरा नीचे होता है। यह एक झिल्ली की थैली में रहता है। दिल के अंदर दो बड़े ख़ाने हैं जो एक दूसरे से बिल्कुल अलहिदा हैं। जिस पर्दे के सबब से यह जुदा रहते हैं वह ऊपर से नीचे की तरफ़ चला गया है। इन दोनों बड़े ख़ानों के दो दो हिस्से हैं। इन हिस्सों के बीच ऐसे पर्दे रहते है जो कुछ हट सकते हैं। ऊपर के हिस्सों को आरिकल (auricle) कहते हैं और नीचे के हिस्सों को वेन्ट्रिकल (ventricle) कहते हैं। आरिकल और वेन्ट्रिकल के बीच के पर्दे ऐसे बने हैं कि आरिकल से वेन्ट्रिकल में खून आसानी से जा सकता है मगर वेन्ट्रिकल से आरिकल में किसी तौर पर खून नही आ सकता। दिल अज़लों से बना है और इस लिये यह सिकुड़ सकता है। पहले दोनों आरिकल एक साथ सिकुड़ते हैं तब फ़ौरन दोनो वेन्ट्रिकल सिकुड़ते हैं तब ज़रा सा ठहर कर फिर यही सिल्सिला चलता है॥

अब यह बयान किया जायगा कि खून किस राह से चलता है। पहले दाहिने आरिकल से शुरू करेंगे। जब यह सिकुड़ता है तब इस में का खून दाहिने वेन्ट्रिकल में जा रहता है। यह वेन्ट्रिकल उन शिरियान से मिला है जो फेफड़ों में जाती हैं। इस तौर से दाहिने वेन्ट्रिकल से खून फेफड़ों की शिरियान और केपिलरी में जाता है। तब यह फेफड़ों की

रगों से जाता है। यह फेफड़ों की चार रगें हैं जो बायें आरिकल में लगी हैं। इन के ज़रीए से ख़ून बायें आरिकल में जाता है। जब यह आरिकल सिकुड़ता है तब ख़ून बायें वेन्ट्रिकल में जा रहता है। इस वेन्ट्रिकल से एओर्टा लगी है इस लिये जब बायां वेन्ट्रिकल सिकुड़ता है तो ख़ून एओर्टा में जाता है। इस में से शिरियान के ज़रिए से सेवाय फेफड़ों के बदन के और सब हिस्सों में फैल जाता है। तब ख़ून केपिलरियों में होकर रगों में जाता है और अख़ीर में वीना केवा में जाने से फिर दाहिने आरिकल में जाता है। इस तौर पर जहां से ख़ून का चलना शुरू किया फिर वहीं आ पहुंचे * ॥

जब कि ख़ून इस तौर पर बदन के एक हिस्से से दूसरे में चलता रहता है तब इसमें तबदीलियां हुआ करती हैं। जब केपिलरियों में से रगों में ख़ून जाता है तब ख़ून में का आक्सिजन कम होता जाता है और उस में कार्बोनिक एसिड बढ़ता जाता है। गोश्त के रेशे और साफ़ ख़ून के आक्सिजन के रसायनिक संयोग से इस कार्बोनिक एसिड की ज़्यादती होती है। यह रसायनिक संयोग ख़ास करके अज़्लों में होता है जो कि हर वक़्त काम देते रहते हैं। इसी संयोग से काम देने की ताक़त और गरमी पैदा होती है जैसे रेल गाड़ी के एंजिन में कोयले के जलने से काम देने की ताक़त पैदा होती है। अगर कोई आदमी चलता फिरता या कोई कसरत न करता रहे तो सिर्फ़ दम लेने के और ख़ून चलने के आलात के अज़्ले काम करते रहते हैं

* छठवीं नक़्शा देखो—इस से दिल के हिस्से और ख़ून चलने की राह साफ़ मालूम होगी ॥

और इस लिये बदन के काम हिस्से ज़ाया होते हैं और वह आदमी बहुत देर तक बग़ैर खाने के रह सकता है जैसे कि जब रेल की एंजिन ठहरी रहती है और सिर्फ़ उसमें से भाफ निकलती जाती है तो बहुत कम कोयले की ज़रूरत पड़ती है। यह बात कई बार कह चुके हैं कि शिरियान का खून निहायत सुर्ख़ होता है और रगों में कुछ नीले रंग का खून रहता है मगर जो शिरियान और रगें फेफड़ों में हैं उन के खून का यह हाल नहीं है। इस का यह सबब है कि फेफड़े के खून से कार्बोनिक एसिड निकलता रहता है और उस में आक्सिजन आता रहता है। फेफड़े बतौर भाथी के हैं। वह कुछ फैल सकते हैं और एक झिल्ली की थैली के भीतर हैं। फेफड़ों में बहुत से छोटे छोटे हवा भरे सेल और बहुत सी ख़ाली नली सी चीज़ें रहती हैं जिनके चारो तरफ़ शिरियान रगें और केपिलरी बतौर जाल के फैली हैं। जब नीले रंग का रग का खून जाल की सी केपिलरी में चलता है तब खून का कार्बोनिक एसिड निकल कर हवा में जा रहता है और हवा में का आक्सिजन खून में चला जाता है। इस तौर पर फेफड़ों में जाने से रग का मैला खून बदल कर साफ़ हो जाता है। इस तरह खून की सफ़ाई आदमी की ज़िन्दगी भर हुआ करती है। फेफड़ों के सिकुड़ने और फैलने से हवा उन से बाहर आती है और भीतर जाती है। इसी को दम लेना कहते हैं और यह खून की सफ़ाई के लिये निहायत ज़रूर है॥

अभी इस बात का बयान हुआ है कि खून कैसे साफ़ होता है मगर जिस तौर से खून खाने की चीज़ों से पैदा होता है उस का मुफ़स्सल बयान नहीं हुआ है। हम लोग

खाने की चीज़ों को पहले मुंह में डालते हैं और दांतों से कूंचते हैं तब वह थूक में मिल कर पेट में जाती हैं। वह पेट में एक अरक़ से मिल कर जिसे गेस्ट्रिक जूस कहते हैं अंतड़ियों में जाती हैं। यहां पर और अरक़ों से मिलने से पर्वरिश की चीज़ें जुदा हो जाती हैं और बेकाम की चीज़ें बदन के बाहर निकल जाती हैं। थूक के मिलने से खाने में जो कुछ लेई रहती है वह बदल कर शक्कर हो जाती है और तब पानी में घुल सकती है और आक्सिजन से मिल सकती है। थूक में जो पानी रहता है उस में कुछ घुल कर खाना पेट में जाता है। पेट में बहुत सी छोटी छोटी गिल्टियां हैं जिन से एक पतला तेज़ाब गेस्ट्रिक जूस निकला करता है। यह प्रोटीड चीज़ों के घुलाने के लिये सब से अच्छी चीज़ है। इस तेज़ाब का खाने की चीज़ों पर असर अच्छी तौर से समझने के पहिले तुम को इस बात का कुछ और बयान जानना चाहिये कि हम लोगों के खाने की चीज़ें ख़ास कर के किन चीज़ों से बनी हैं। पर्वरिश के लिये जो कुछ खाया जाता है उस में इन चीज़ों में से एक या ज्यादे ज़रूर रहती है (१) प्रोटीड (२) एमिलाइड (३) चर्वी। कई एक निमकीन और खानी चीज़ें भी रहती हैं। जैसा कि पहले बयान हो चुका है प्रोटीड चीज़ कोयले हैड्रोजन आक्सिजन और नैट्रोजन से बनती है। गेहूं के आटे में प्रोटीड है और अंडे की सुफ़ेदी प्रोटीड है। चर्वी में सिर्फ़ कोयला हैड्रोजन और आक्सिजन रहता है। तेल और घी इस क़िस्म की चीज़ें हैं। एमिलाइड में भी सिर्फ़ कोयला आक्सिजन और हैड्रोजन रहता है। इन में हैड्रोजन कम रहता है। लेई शक्कर और गोंद इस तरह की चीज़ें हैं। जिस चीज़ में प्रोटीड या एमिलाइड या चर्वी हो वह खाने

के लायक़ है। एमिलाइड और चर्बी पर गेसट्रिक जूस का ज्यादे असर नहीं होता मगर इस में प्रोटीड चीज़ें फ़ौरन घुल जाती हैं। इन के घुलने से जो अरक़ बनता है वह झिल्ली के पर्दे में एक पार से दूसरी पार जासकता है और इस लिये खून में जाने के लायक़ हो जाता है। अब दो और जूस का खाना पचने में ज़रूरत पड़ती है। पेनक्रिअस का जूस और पित्त। पित्त जिगर से पैदा होता है। पेनक्रिअस और अंतड़ियों के जूस से लेई पर असर होता है। पित्त और पेनक्रिअस के जूस से चर्बी (घी तेल) इस तौर पर उन में मिल जाती है कि चर्बी के बहुत ही छोटे छोटे कण हो कर उन में मिलते हैं और इस वजह से सुफ़ेद रंग का अरक़ बन जाता है जैसे कि मक्खन के छोटे छोटे कणों के सबब से दूध का रंग सुफ़ेद है। अख़ीर में यह चर्बी मिला अरक़ वीनाकेवा में जाता है। लेई से जो शक्कर बनती है वह भी झिल्ली के पार जा सकती है और इस लिये खून में मिलती है। इस तौर पर खाने के सब पर्वरिश देने वाले हिस्से बदल कर और मिल कर खून बन जाते हैं और बेकाम चीज़ें बदन के बाहर निकल जाती हैं॥

जो खाना आदमी लोग खाते हैं उन में पर्वरिश की चीज़ें ज़रूर रहती हैं। कितने खाने की चीज़ों से ज्यादे गोश्त बनता है और कितनी गरमी पैदा करती हैं। घी तेल (चर्बी) से बदन में बहुत गरमी बनी रहती है और इस लिये उन मुल्कों के लोग जहां बहुत ही सर्दी पड़ती है ज्यादे चर्बी और तेल खा सकते हैं। एसकीमो जो बर्फ़ के मुल्क के रहनेवाले हैं सेरों तेल पीजाते हैं और बग़ैर बहुत मोटे हुए तन्दुरुस्त बने रहते हैं। हिन्दुस्तान में देखते हैं कि बड़े बड़े बंगाली बाबू और दूसरे अमीर लोग जो अक्सर

बैठे बैठे दिन काटते हैं थोड़ाही घी खाने से कैसे मोटे हो जाते हैं। यह मोटाई चर्बी की ज्यादती से है। जो घी यह लोग खाते हैं वह चर्बी की सूरत में बदन में जमा होता जाता है। कसरत करने से घी या चर्बी के हिस्से आक्सिजन से मिलते जाते हैं और बदन में ज्यादे गरमी पैदा होती है। यह बात देखने में आई है कि हर क़ौम ने बहुत दिन के तजरुबे से अपने खाने के लिये ऐसी चीज़ें तजवीज़ कर-ली हैं कि उन में पर्वरिश के सब ख़ास हिस्से यानी (१) प्रोटीड (२) एमिलाइड (३) चर्बी (४) निमक वग़ैरः र-हते हैं। जैसे अच्छे हिन्दुस्तानियों का खाना अक्सर इन चीजों से बनता है

गेहूं की रोटी = प्रोटीड, एमिलाइड (लेई), फ़ास्फ़रस से संयुक्त कुछ चीज़ें

घी = चर्बी

दूध = चारो पर्वरिश की चीज़ें

या वह लोग इन चीज़ों को भी खाते हैं

भात = लेई (एमिलाइड) और निमकीन चीज़ें

दाल = प्रोटीड और निमकीन चीज़ें

बंगालियों का खाना यह है।

भात = लेई वग़ैरः

मछली = प्रोटीड और फ़ास्फ़रस से मिली चीज़ें

घी = चर्बी

अंगरेज़ लोग जो विलायत के गांव में रहते हैं नीचे लि-खा खाना खाते हैं। यह पर्वरिश के लिये निहायत उम्दा है

रोटी (सुफ़ेद) = लेई, निमक की चीज़ें

मक्खन = चर्बी
पनीर = प्रोटीड

अंगरेज़ों में मज़दूरों का खाना यह है

सुफ़ेद रोटी }
आलू } = लेई निमक वग़ैरः

बीन = प्रोटीड और निमक
बेकन = चर्बी

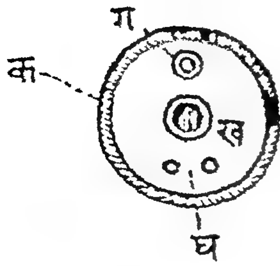
ऊपर के बयान से तुम्हें साफ़ मालूम होगा कि जिन चीज़ों को हिन्दुस्तान के लोग अक्सर खाते हैं वह पर्वरिश के लिये निहायत उम्दा हैं और बिना गोश्त खाने के भी यहां के लोग अच्छे तन्दुरुस्त और मज़बूत बने रह सकते हैं। दूध निहायत फ़ायदे की चीज़ है और इस में सब पर्वरिश की चीज़ें मौजूद हैं। सिर्फ़ दूध पीकर भी आदमी अच्छी तरह जी सकता है॥

इस के पहले अज़लों और पट्ठों का कुछ बयान किया गया है। अज़्ले सिकुड़ते हैं और फैल सकते हैं। पट्ठे सुफ़ेद तागों की तरह बदन के हर हिस्से में फैले हैं। यह सब पट्ठे अख़ीर में जाकर मग़ज़ या रीढ़ की नली में मिले हैं। पट्ठे दो क़िस्म के होते हैं एक इन्द्रियों के पट्ठे और दूसरे गति पैदा करने वाले पट्ठे। जिन पट्ठों के सबब से गति पैदा होती है वह अज़लों से लगे हैं और जब हम चाहते हैं तो इन के सबब से अज़ले सिकुड़ जाते हैं और हम लोग चल फिर सकते हैं या हाथ पैर को चला सकते हैं। इन्द्रियों के पट्ठे सब एकही तरह के नहीं होते और इन्हीं के सबब से हम लोगों को छूने स्वादलेने सुनने सूंघने और देखने का ज्ञान होता है। बदन के सब चमड़ों में ओठों में और जीभ के कुछ हिस्सों में ज-

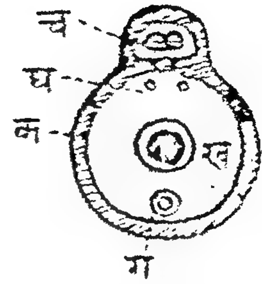
हां इन पट्ठों के सिरे रहते हैं जिन से छूने का ज्ञान होता है। इस तौर से यह मालूम होता है कि कोई चीज़ चिकनी है या नहीं या गरम है या सर्द है। जो पट्ठे जीभ में आकर मिले हैं उन से स्वाद मालूम देता है और जो नाक के भीतर मिले हैं उन से सूंघने का ज्ञान होता है। नाक और जीभ में छूने के ज्ञान पैदा करने वाले पट्ठे भी हैं। जिन पट्ठों के सबब से सुनने और देखने का ज्ञान होता है वह कान और आंख में मिले हैं। कान और आंख की बनावट निहायत पेंचीदा है॥

॥ इति ॥

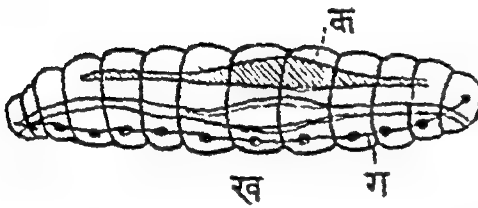
(१)



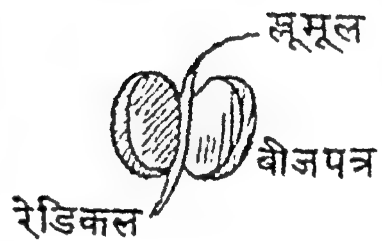
(२)



(३)



(४)



(५)



(६)



फे·र· = फेफड़े की रग		वी·के· = वीनीकेवा
बा·आ· = बायां आरिकल		दा·आ· = दहिना आरिकल
ए· = एओर्टा		फे·शि· = फेफड़े की शिरियान
बा·वे· = बायां वेन्ट्रिकल		दा·वे· = दहिना वेन्ट्रिकल

SCIENTIFIC WORKS

BY PANDIT LAKSHMI SANKAR MISRA.

ENGLISH.

Rudiments of Physical Geography ... ... 10 As.

HINDI.

Elementary Plane Trigonometry ... ... 1 Re. 4 „

Scientific Lectures :—

Meteorology No. I. ... ... 4 „

Meteorology No. II. ... ... 4 „

Science Primers :—

Primer of Physical Science ... ... 6 „

Primer of Physical Geography ... ... 6 „

Primer of Biology ... ... 6 „

Arithmetic Part I. [In the Press] ... ... 4 „

... ... Part II. [In the Press] ... ... 4 „

... ... Part III. [In the Press] ... ... 4 „

Elementary Statics [Shortly]

Elementary Dynamics [Shortly]

पण्डित लक्ष्मीशङ्कर मिश्र की बनाई किताबें।

सरलत्रिकोणमिति की उपक्रमणिका ... ... दाम १।)

वायुमण्डलविज्ञान पहला भाग ... ... ।)

वायुमण्डलविज्ञान दूसरा भाग ... ... ।)

प्राकृतिकभूगोलचन्द्रिका ... ... ।=)

पदार्थविज्ञानविटप ... ... ।=)

जीवविज्ञानविटप ... ... ।=)

गणितकौमुदी पहला भाग (छप रही है) ... ।)

गणितकौमुदी दूसरा भाग (छप रही है) ... ।)

गणितकौमुदी तीसरा भाग (छप रही है) ... ।)

स्थितिविद्या (जल्द छपेगी)

गतिविद्या (जल्द छपेगी)

Printed by B. S. Misra at Chandraprabha Press, Benares.

इतिहासतिमिरनाशक
ITIHAS-TIMIRNASHAK.

HISTORY OF INDIA

IN THREE PARTS.

BY LATE RAJA SHIVA PRASAD, C.S.I.,

Fellow of the University of Calcutta, and late Inspector of the Second Circle, Department Public Instruction, North-Western Provinces and Oudh.

तीन हिस्सों में

मुताबिक़ हुक्म जनाब नव्वाब आनरेबुल लेफ़्टिनेंट गवर्नर बहादुर मुमालिक शिमाली व मग़रिबी और चीफ़ कमिश्नर अवध

राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द (३) ने बनाया

दूसरा हिस्सा

PART II.

इलाहाबाद—सरकारी छापेखाने में छापा गया था ॥

विद्यार्थियों के लाभ के लिये

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी.ए., के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर (सी. आई. ई.,) के छापेखाने में छपा

सन् १९१० ई०

13th Edition, 1,500 copies.
Price per copy, 3 annas.

तेरहवीं बार १५०० पुस्तकें
मोल फ़ी पुस्तक ≡) आने

निवेदन

पुस्तक के अवलोकन करनेवाले महाशयोंसे विनयहै कि इस किताब में यदि कोई अशुद्धता छपने आदि में होगईहो तो नीचे लिखेहुये नक़्शेके अनुसार खाना-पुरी करके सूचितकरदेवें जिसमें दुबारा छपने में जो अशुद्धता हो बनादीजावे ॥

नामकिताब	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध

नीचे लिखीहुई पुस्तकोंका कापीराइट मुसन्निफ़ राजा शिवप्रसाद सितारैहिन्दने अपने मित्र मुंशीनवलकिशोर साहब (सी. आई. ई.,) को देदिया है जिन महाशयों को किसी किताबकी आवश्यकताहो वे मतवा अवध अख़बार लखनऊ से मँगवालेवें ॥

किताबें उर्दू

१ जामजहाँनुमा पहला हिस्सा ।≈)
२ तथा दूसरा „ ॥)॥
३ तथा तीसरा „ ॥≈)
४ तथा चौथा „ ।–)
५ छोटाजामजहाँनुमा ≡)
६ आईने तारीख़नुमा पहला हिस्सा ≡)
७ तथा दूसरा „ ।–)॥
८ तथा तीसरा „ ॥)
९ सर्फ़ व नह्व उर्दू ।)

इतिहासतिमिरनाशक
ITIHAS-TIMIRNASAK.

HISTORY OF INDIA
IN THREE PARTS.

BY RAJA SIVA PARSAD, C.S.I.,
Fellow of the University of Calcutta, and late Inspector of the Second Circle Department Public Instruction, North-Western Provinces and Oudh.

तीन हिस्सों में

मुताबिक़ हुक्म जनाब नव्वाब आनरबल लेफ़्टिनेंट गवर्नर बहादुर ममालिक शिमाल व मग़रिब और चीफ़ कमिश्नर अवध

राजा शिवप्रसाद सितारै हिन्द (३) ने बनाया

दूसरा हिस्सा

PART II.

इलाहाबाद सरकारी छापेख़ाने में छापा गया था
विद्यार्थियों के लाभ के लिये

लखनऊ
सुपरिण्टेण्डेण्ट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी.ए., के प्रबन्ध से
मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपा
जून सन् १९१० ई०

PREFACE.

In this I have endeavoured (a thing nearly impossible) to unite fullness of information with brevity of narrative, and I trust, that from it may be derived a tolerably clear idea of the origin and progress of the British Empire in India.

S. P.

इत्तिला ॥

जो लफ़्ज़ फ़ारसी हर्फ़ों के सबब आइने तारीख़नुमा में दूसरी तरह पर लिखे हैं उनके नीचे लकीर खींच दी है और फ़िहरिस्त आगे लिखी है :—

इतिहासतिमिरनाशक में	आइनेतारीख़नुमा में
महाद्वीप	बर्रिआज़म
भगवान्	मालिक
ईश्वर	मालिक
राजधानी........................	दारुल् हुकूमत
ईश्वरकी कृपा........................	मालिक की मिहर्बानी
स्त्रियां........................	औरतें
अर्थ	मानी
परलोक	इन्तिक़ाल
परमेश्वर........................	मालिक पैदा करनेवाला
कृपानिधान दयावान क्षमासागर जगत उजागर श्रीमती महारानी इम्प्रेस विक्टोरिया	मादिनि करम मख़्ज़नि रहम अफ़्मैंताक़ शुहरे आफ़ाक़ आली जनाब करम रक़ाब शाहंशाह फ़लक बारगाह मलिकैसुअज़्ज़मा क़ैसरहिन्द विक्टोरिया दाम इक़्बालहा

महाद्वीप के चारों तरफ़ समुद्र है किनारे किनारे उत्तर को लेजाता और वहां उत्तर समुद्रके जमे हुये बर्फ़ में फँसरहता॥ और कोई + यह समझकर कि अफ्री-काके पूरब हिंदुस्तानहै उसके गिर्द घूमनेको निकलता पर आधीदूर जाके मारे तूफ़ान के पीछे मुड़ आता। और उस जगहका नाम तूफ़ानी अंतरीप रखता॥ यहां तक कि सन् १४९७ में पुर्तगाल के बादशाह इमानुअलने वास्कोडिगामाको तीन जहाज़ लेकर दखन की राह हिंदुस्तान जाने का हुक्म दिया उस ने न कुछ तूफ़ानका ख़याल किया न तूफ़ानी अंतरी-पका। चलते चलते ग्यारह महीने के लगभग अर्से में अफ्रीका घूमकर मलीबार के किनारे कल्लीकोट में लंगर आडाला॥ उस वक़्त वहां के राजाका नाम पुर्तगालवालों ने शामोरिम् लिखा है वह तो इनकी ख़ातिर्दारी करना चाहता था लेकिन अरब वालोंने डाहखाके उसका दिल इन से फेरदिया। वास्कोडिगामाने जब यह मालूम किया तुर्त लंगर उठा के पाल अपने मुल्क की तरफ़ उड़ाया। दूसरे साल पुर्तगाल के बादशाहने १३ जहाज़ रवानाकिये। और उन पर आठ पादरी और १२०० सिपाही भी भेजे अलूवारिज् काब्रल उनका अफ़सरथा। छः जहाज़ इनमें से कल्लीकोट पहुँचे राजा इनकी भीड़

+ बार्थलोम्युडियाज़॥

झाड़ देखकर दख़्ल में आगया॥ जिन हिंदुओंको वास्को-डिगामा जातेवक्त यहां से पकड़ ले गया था और अब अल्वारिज़ काब्रल वापस लाया था उन्होंने पुर्तगाल का बहुत बढ़ावे के साथ बयान किया निदान राजाने पुर्तगालवालों को कल्लीकोट में कोठी खोलने की परवानगी दी। और फिर धीरे धीरे इन्होंने और भी जगह कोठी खोलनी शुरू की सन् १५१० में विजयपुरवालों से गोवा छीन लिया। और तबसे वहीं बराबर उनका यहां दारुलहुकूमत बनारहा॥

पुर्तगालवालोंकी देखादेखी डच और फ़रासीसवाले भी अपने जहाज़ इधर लाने लगे। फिर यह कब होसक्ताथा कि अंगरेज़ चुपचाप बैठे रहते॥ सन् १५९९ में इंगलिस्तानकेकुछआदमियोंने साझाकरके तीसलाख रुपये पूंजी के तौरपर इकट्ठा किये। और उस वक्तकी मलिका क्वीन अलीज़बथसे इस मज़मूनकी एक सनद लेली कि पंदरह बरसतक वे उनकी परवानगी कोई दूसरा आदमी उनके मुल्कका पूरबमें तिजारत न करने पावे। साझियोंको अंगरेज़ीमें कम्पनी कहतेहैं इसीलिये इन साझियोंका नाम ईस्टइंडिया कम्पनी ❀ पड़गया इनका जलसा जो सालमें चार बार यानी सिमाहीवार हुआ करताथा कोर्टआफ़ प्रोप्राइटर्स यानी मालिकों की कचहरी कहलाया॥ उसमें जो पांचहज़ार रुपये

❀ मशरिक़ी हिन्दुस्तान के साथी॥

और उसके ऊपरके हिस्सेदार थे उन्हें रायदेनेका इख़्तियार था। और आईन क़ानून बनाना और नफ़ेका बांटना भी इन्हीं के हाथ था॥ बाक़ी सब कामके लिये यह अपने दर्मियानसे सालके साल चौबीस आदमी कारबारी मुक़र्रर करदेतेथे इस चौबीसी का नाम कोर्ट-आफ़ डैरेक्टर्स रहा बीसहज़ार से कमका हिस्सेदार डैरेक्टर नहीं हो सक्ता था। और उनका मीर मजलिस चेअरमैन कहलाता था॥ हिंदुस्तान में होते होते तीन इहाते होगये। यानी कलकत्ता बम्बई मंदराज और तीनों में तीनप्रेसिडेंट वा गवर्नर अपनी अपनी कौंसल समेतरहनेलगे॥ उसवक्त मुलकी साहिब लोगों के चार दर्जेथे। पांच बरसतक मुतसद्दी पांचसे आठतक कोठी-वाले आठसे ग्यारह तक छोटे सौदागर और ग्यारह बरस हिंदुस्तान में रहनेके बाद बड़े सौदागर कहलाते थे इन्हीं बड़े सौदागरों में से पुराने साहिबों को चुनकर कौंसलका मेम्बर बनाते थे॥

निदान सन् १६०६ में सर हिनरी मिडलटन इस कम्पनी का भेजा हुआ तीन जहाज़ लेकर सूरत में आया लेकिन खरीद फ़रोख़्त के बाबमें हाकिम से त-करार होजाने के सबब उस वक्त वहां कोठी खोलनेकी परवानगी नहीं मिली। सन् १६१३ में जहांगीरने इन्हें सूरत घोघा खंभात और अहमदाबादमें और फिर थोड़े ही दिनों बाद शाहजहां ने सिन्ध और बंगाले में भी

कोठियां खोलने की परवानगीदी ॥ महसूल साढ़े तीन रुपया सैकड़ा ठहरा यह उसवक़्त किसके ख़याल में था कि इसी कम्पनीके नौकर उसकी औलाद और उसके जानशीन को क़ैद करके रंगून लेजावेंगे । और सारेहिंदुस्तानमें अपना सिक्का चलावेंगे ॥

सन् १६३९ में इन्होंने चन्द्रागिरि के राजा से जो विजयनगरवालों की औलादमें से था परवानगी लेकर मन्दराज बसाया और वहां सेंटजार्ज क़िला बनाया ॥ सन् १६६८ में इंगलिस्तान के बादशाह दूसरे चार्ल्सने बम्बई का टापू जो उसने पुर्तगालवालों से जहेज़में पाया था सौ रुपये साल ख़राज पर कम्पनी को दे डाला ॥ कलकत्ता भी उन दिनों निरा एक गांव सा था । छोटानटी और गोविंदपुर इनदोनों गाँवोंके साथ उसकी सनद दिल्लीके बादशाह से लेकर वहां इन्होंने फ़ोर्ट विलियम क़िलाबनाया ॥

सन् १७१५ में कलकत्तेके प्रेसिडेंटने कुछ तुहफ़ातहाइफ़ के साथ दो साहिबों को एल्चियों के तौरपर फ़र्रुख़सियरके दर्बारमें भेजा । बादशाह उनदिनों बीमारथा ॥ मर्ज़ी भगवानकी इन्हीं एल्चियों के साथ हमिल्टन नाम जो डाक्टर था । उसी के इलाज से चंगाहुआ ॥ हुक्मदिया इनाम मांग जो मांगेगा । मुँह मांगा पावेगा ॥ इस ने अपने लिये तो कुछ न मांगा पर अर्ज़ किया कि अगर जहांपनाह खुशहैं तो कम्पनी

को बंगाले में अड़तीस गांव की ज़मींदारी ख़रीदने की परवानगी मिले। और कलकत्ते के प्रेसिडेंटकी दस्तकसे जो माल रवानाहो महसूलके लिये उसकी तलाशी न लीजावे॥ सच पूछो तो डाक्टर हमिल्टनने बड़ी हिम्मत का काम किया। अपना नुक़सान सहके अपने मुल्कवालोंकाफ़ायदा चाहना हक़ीक़त में बड़ी हिम्मत का काम है बादशाहने उसकी दोनों बातों को मान लिया॥ उनदिनों में हिंदुस्तानसे छीट और सूती कपड़ा इंगलिस्तानको बहुतजाताथा अंगरेज़ोंका इरादा था कि कलकत्ते के गिर्द ज़मींदारी लेकर इतने जुलाहे बसावें कि फिर कपड़ोंकी तलाश गांव गांव न करनी पड़े। क्या अपरम्पार महिमाहै सर्व शक्तिमान् जगदीश्वरकी कि यहां के जुलाहे तो जुलाहेही बनेरहे और इंगलिस्तानवाले जहाज़भरभरकर अबयहां सूतीकपड़े पहुंचानेलगे॥ निदान ज़मींदारी तो उसवक़्त बंगाले के सूबेदारने अंगरेज़ों के हाथ नहीं लगने दी ज़मींदारों को बेचनेकी मनाही करदी लेकिन इनके मालपर महसूल मुआफ़ होजानेसे उसे बहुत नुक़सान पहुंचा। प्रेसिडेंटने सारा माल अपनी दस्तकसे मंगाना और रवाना करना शुरू किया यानी जो माल कम्पनीका नहीं था उसको भी अपने और दूसरे साहिबों को फ़ायदे के लिये दस्तक देकर महसूलकी तलाशी से बचाने लगा॥

इस अर्से में फ़रासीसियोंने पटुचेरीको मज़बूत कर-

लिया था। जब सन् १७४४ में इंगलिस्तान और फ़रा- १७४४
सीस के दर्मियान दुश्मनी पैदा हुई तो उन्होंने हज़ार
दोहज़ार सिपाही भेजकर मंदराज घेर लिया॥ अंग-
रेज़ वहां उस वक्त ३०० से ज़ियादा न थे पांच दिन
घिरे रहकर फ़रासीसियों के क़ौल क़रारपर दर्वाज़ा खो-
लादिया। और जो कुछ था उनके हवाले किया॥ ले-
किन थोड़ेही दिनों बाद कुछ अंगरेज़ी जंगी जहाज़
आगये तो इन्हों ने मंदराजमेंभी क़ब्ज़ा किया और
पटुच्चेरी जा घेरा। पर महीनेभर बाद बरसात आजाने
के सबब घेरा उठा लेना पड़ा॥

तंजौर का राजा प्रतापसिंह नाबालिग़ था उसके
भाई साहूजी ने अंगरेज़ों से कहा कि तंजौरवाले
प्रतापसिंह से नाराज़ और मुझसे राज़ी हैं अगर गद्दी
दिलादो देवीकोटेका क़िला और ज़िला तुम्हारे हवाले
करूं अंगरेज़ी फ़ौज चढ़गई। क्लाइव तब लेफ़्टिनेंट था
धावा इसी के नाम से हुआ क़िला टूटने पर प्रतापसिंह
ने देवीकोटा अंगरेज़ों को दे दिया और साहूजी के खाने
को कुछ सालाना मुक़र्रर करादिया अंगरेज़ी सर्कार इस
बात से राज़ी होगयी॥

पटुच्चेरी का फ़रासीसी गवर्नर डूप्ले अंगरेज़ों से बड़ी
लाग रखता था। जो बात इस मुल्क में अब अंगरेज़ों
कोहै वह उसे फ़रासीसियोंके लिये हासिल कियाचाह-
ताथा॥ १७४८ में दखनके सूबेदार आसिफ़जाह के १७४८

मरनेपर ⊛ जब उसके बेटे पोतों में तकरारहुई डूप्लेने उसके पोते मुज़फ़्फ़रजंग को मददद़ी। इसलिये जब मुज़फ़्फ़रजंग गद्दीपर बैठा डूप्ले को कृष्णासे कुमारी अंतरीप तककी हुकूमत देदी॥ और कर्नाटक का नव्वाब भी अर्काट में उसीके दोस्त चंदा साहिबको जो पहले नव्वाबों से कुछ रिश्ता रखता था बना दिया। आसिफ़जाहके बनाये नव्वाब अनवरुद्दीनका बेटा मुहम्मद अली तिरुच्चिनापल्ली का हाकिम बना रहा अंगरेज़ मुहम्मदअली के तरफ़दार थे जब चंदासाहिबनेफ़रासीसियों से मदद लेकर तिरुच्चिनापल्लीपर चढ़ाई की क्लाइव ने २०० गोरे और ३०० सिपाहियों से जाकर अर्काट लेलिया चंदासाहिब के आदमियों ने क्लाइव को ५० दिन तक अर्काट में घेर रक्खा। और उसे वहांसे निकालने की तदबीर में कुछ बाक़ी न छोड़ा॥ यह १०००० सवार पियादों की भीड़ भाड़ रखते थे। और १५० फ़रासीसी इनके साथ थे॥ लेकिनक्लाइवने ऐसी बहादुरी दिखलाई और उनके दांत खट्टेकिये कि सबके सब नाकाम फिरे॥ कहते हैं कि क़िलेमें जब रसद कम होनेपर आई सिपाहियों ने क्लाइव से कहा कि साहिब भातगोरों के लिये लेलो हम हिंदुस्तानी उसके माड़से गुज़ारा करलेंगे इसी एक बातसे समझ लो कि क्लाइव कैसा सिहर्बान अफ़सर था। और अपने

⊛ यह १०४ बरसका होकर मरा॥

आदमियों को कैसा राज़ी और खुश रखता था॥ सच है जब ऐसा था। तभी उससे काम भी बनता था॥

अगर्चि चंदा साहिब एक तंजौरी जरनैल मानकजी के हाथ से जो मुहम्मदअली का मददगार था मारागया पर जबतक डूप्ले पटुचेरीकागवर्नर रहा अंगरेज़ और फ़रासीसियों की तकरार न मिटी। कहीं न कहीं किसी न किसी बहाने से लड़ाई होती रही॥ अगर डूप्ले रहता। न मालूम फ़रासीसियोंकी अमलदारी इस मुल्कमें कहांतक पहुँचाता॥ पर फ़रासीसियोंने उसकी कुछभी क़दर न की बदलदिया। और अंगरेज़ों से दबकर चारों सर्कार की हुकूमत छोड़कर जो उनके एक उहदेदार बस्सी ने दखनके सूबेदार सलाबतजंग से हासिलकीथी सन् १७५४ में सुलहका अहद पैमानकरलिया॥ मुहम्म- १७५४ दअली बड़ी धूम धामसे अर्काट में गद्दीपर बैठा। अंगरेज़ों की बदौलत सारे करनाटक का नव्वाब बनगया॥ अगर्चि सलाबतजंग को दखनकी सूबेदारी हासिल करनेमें बस्सी से बहुत बड़ी मदद मिली। लेकिन इन दिनों कई सबब से वह उससे नाखुश हो गया था और फ़रासीसियों के बदले अंगरेज़ोंको अपने यहां रखना चाहता था ख़ाली बंगाले में बखेड़ा होजानेके सबब उसे उसवक़्त मंदराज से अंगरेज़ी सिपाह न मिल सकी॥

सन् १७५६ में नेकनाम अलीवर्दीख़ांके मरने पर १७५६ उसके भतीजेका बेटा और उसका नाती सिराजुद्दौला

बंगाले बिहार और उड़ीसे का सूबेदार हुआ। वह नि-
हायत तुंदमिज़ाज बदनीयत और ज़ालिम था अंगरेज़ों
से दिली नफ़रत रखता था॥ जब सुना कि उसके चचा
के दीवानने अपना सब माल मता और घरबार के
लोगोंको उसके पंजे से बचाने के लिये अपने लड़के
किशनदास के साथ अंगरेज़ों की हिमायत में कलकत्ते
भेज दिया तुर्त एक आदमी रवाना किया कि उसको
अंगरेज़ों से मांगलावे वह आदमी कलकत्ते बिलातियोंके
भेसमें पहुँचा। सेठ अमीचंद के मकान पर ठहरा॥
अमीचंद ने उसे अंगरेज़ों से मिलाया अंगरेज़ों ने इसमें
अमीचंद की साज़िश समझी और उसकी बातपर कुछ
ख़याल न किया। फिर सिराजुद्दौला ने एक आदमी से
यह कहलाभेजा कि तुम कलकत्ते में क़िलेकी मज़बूती
मतकरो इस बातपर भी अंगरेज़ों ने कुछ ध्यान न दिया
तबतो सिराजुद्दौला का ख़ून जोशमें आया। और उस
के जीमें गुस्सेकी आग भड़की लड़ाई का बहाना बहुत
अच्छा पाया॥ पहले तो क़ासिम बाज़ारमें जो अंगरेज़ों
की कोठी थी ज़ब्तकरली। और फिर उन्हें कलकत्ते के
क़िलेमें जाघेरा गोरे सिपाही जंगी उस वक्त वहां सौ
भी मौजूद न थे क़िलेके बचनेकी कोई भी उम्मेद दि-
खलाई न दी। बहुतसे अंगरेज़ तो ड्रेक साहिब गवर्नरके
साथ जहाज़ और किश्तियों पर सवार होके वहांसे टल-
गये और जो बेचारे बेख़बरी में क़िले के अन्दर रहे वह

दूसरे दिन सिराजुद्दौला की क़ैदमें आये ॥ जब उनके अफ़सर हालवेल साहिब को मुश्कें बांधकर उसके साम्हने लाये उसने तुर्त उसकी मुश्कें खुलवादीं और कहा कि खातिरजमा रक्खो तुम्हारा कुछ नुक्सान न होने पावेगा । लेकिन रातको जब क़ैदियों के रखने के लिये कोई मकान न मिला तो सिराजुद्दौलाके आदमियोंने १४६ अंगरेजोंको एक कोठरी में जो कुल १८ फ़ुट लंबी और १४ फ़ुट चौड़ी थी बंदकरदिया ॥ इस कोठरी का नाम अंगरेजोंमें "ब्लैकहोल" यानी कालीबिल रक्खागया है जो कुछ उन क़ैदियों के जी पर रातको बीती उन्हीं का जी जानता होगा बहुतेरे घायल थे बहुतेरे शराब के नशेमें गर्मी की शिद्दत थी प्यास निहायत थी । सुबहको जब दर्वाजा खुला कुल २३ जीते निकले सो शकल उनकी भी मुर्दों कीसी बनगयी थी ॥ हालवेल साहिबको सिराजुद्दौला के साम्हने लेगये उसने इसकी कुछभी दाद फ़र्याद न सुनी यही पूछतारहा कि बतलाओ अंगरेजोंने खजाना कहां गाड़ाहै और उसके और दो और अंगरेज़ों के पैरों में बेड़ियां डलवाकर इन तीनोंको तो एकखुली किश्तीपर क़ैदरहनेकेलिये मुर्शिदाबाद भेजा और बाक़ीको छोड़दिया । मुर्शिदाबाद में अलीवर्दीखां की बेगमने इन तीनोंको भी सिराजुद्दौला से सिफ़ारिश करके छुड़वा दिया ॥ जब यह खबर मन्द्राजमें पहुंची वहांवालोंने ९०० गोरे और १५००

सिपाही देकर क्लाइवको जो अब इंगलिस्तानसे लेफ्टिनेंट कर्नल हो आयाथा १० जहाज़ों पर कलकत्ते रवाना किया। दूसरी जनवरी सन् १७५७ को क्लाइवने कलकत्ता लिया॥ तीसरी फ़रवरीको सिराजुद्दौला ४०००० आदमियों की भीड़भाड़ लेकर कलकत्ते के पास पहुंचा लेकिन क्लाइवने क़िले से निकल कर उसपर एक ऐसा हल्लाकिया कि अगर्चि उसहल्ले में क्लाइव को १२० गोरे १०० सिपाही और दो तोपें खोकर फिर क़िले में पनाह लेनीपड़ी। पर सिराजुद्दौलाने २२ अफ़सर और ६०० आदमियों के मारे जाने से घबरा कर इस शर्त पर सुलह करली॥ कि जोकुछ कम्पनीका माल असबाब लूट और ज़ब्ती में आया था सब लौटा दिया जावै कम्पनी के आदमी कलकत्ते में क़िला चाहै जैसा मज़बूत बनावें। टकसाल अपनी जारी करें॥ अड़तीसों गांव पर जिन की सनद १७१७ से उन्होंने पायी थी अपना क़ब्ज़ा रक्खें। और महसूल की मुआफ़ी के लिये उनकी दस्तक काफ़ी समझीजावें॥ इसमें शक नहीं कि यह शर्त सिराजुद्दौलाने खाली भुलावा देने और क़ाबू पानेके लिये कीथी। जी में उसके दग़ा थी॥ वह अंगरेज़ों से दिली नफ़रत रखता था और फ़रासीसियों की पच्छकरता था। बल्कि उन्हें नौकर भी रखने लगाथा॥ क्लाइव ने खूब समझ लिया था कि इस मुल्क में या तो अंगरेज़ही रहेंगे और या फ़रासीसी

दोनोंका हर्गिज़ गुज़ारा नहीं ॥ एक मियानमें दो तल-
वारोंका रहना कभी होता नहीं ॥ पस जब सिराजुद्दौला
ने फ़रासीसियों का सहारा ढूंढ़ा। तो क्लाइव को ख़ाम-
ख़ाह उसका इलाज करना पड़ा ॥ सिराजुद्दौला से सब
नाखुश थे। उसके ज़ुल्म से लोग तंग आगये थे॥ हर
एक को उसके हाथ से अपनी इज़्ज़तका ख़ौफ़ था॥ हर
एक अपने जी में उसका ज़वाल चाहता था॥ निदान
उसके बख़्शीअलीवर्दीख़ांके दामाद मीरजाफ़र और उस
के दीवान राय दुल्लभ और + जगत्सेठ महताबराय ने
अपनी जान माल और इज़्ज़त आबरू उस ज़ालिम
के हाथसे बचाने को मुर्शिदाबाद के रज़ीडंट वाट्स सा-
हिब की मारिफ़त क्लाइवके पास यह पयाम भेजा कि
अगर आप सिराजुद्दौला की जगह पर मीरजाफ़र को
सूबेदार बनाओ तो हम सब आपकी मदद करते हैं
क्लाइवने कहला भेजा कि "ख़ातिरजमारक्खो मैं ५०००
आदमी लेकर आताहूं जिन्होंने आजतक कभी पीठ
नहीं दिखलाई अगर तुम सिराजुद्दौला को गिरफ्तार न
करसको हमलोग ज़रूर उसे मुल्कसे निकाल सक्तेहैं"॥
और फिर साथही उन शर्तोंपर जो सिराजुद्दौला के साथ
ठहरीथीं मीरजाफ़र से एक अहदनामा लिखवालिया ले-
किन उसमेंइतना और बढ़ायागया कि कलकत्तेसे दक्खन
कालपी तक कम्पनी की ज़मींदारी समझी जाये फ़रा-

+ इसकिताब बनानेवालेके परदादा के चचेरे भाई॥

सीसियोंका जो कुछहो वह अंगरेज़ोंका और फ़रासीसी हमेशा के लिये बंगाले से निकालदिये जावें। और मीरजाफ़रकी तरफ़से करोड़ रुपये कम्पनी को पचासलाख कलकत्ते के अंगरेज़ोंको बीस लाख हिन्दुस्तानियों को सातलाख अर्मनियोंको पचासलाखसिपाही और जहाज़ियों को और दशलाखकौंसल के मेम्बरोंको नुक्सानी के तौरपर मिलें॥

सेठ अमीचंद का कलकत्ते में चार लाख रुपया लूटा गयाथा। और कुछ औरभी नुक़्सान हुआ था वह सिराजुद्दौला के ज़रा मुँह लगगया था। और इस सबब से वाट्स साहिब का भी उससे बहुत काम निकलता था वाट्स साहिबने अमीचंदको भी इस मश्वरे में शरीक किया। लेकिन अमीचंदको लालचने घेरा॥ कहा कि जो कुछ अंगरेज़ोंको ख़ज़ाने से मिले ५) सैकड़ा मुझे दो नहीं तो मैं अभी सिराजुद्दौला से यह सारा भेद खोल दूंगा वाट्स ने क्लाइव को लिखा क्लाइव ने देखा कि अमीचंद तो हम सबको आफ़तमें डाला चाहताहै नाचार दो काग़ज़ोंपर दो तरह का अहदनामा लिखा लाल काग़ज़ पर जो अहदनामा लिखा उसमें तो अमीचंद को ५) सैकड़ा देनेका इक़रार था। और सफ़ेद काग़ज़ पर जो लिखा उसमें उसका नामही न था॥ इनदोनों काग़ज़ोंपर जब कौंसलवालों के दस्तख़त होनेलगे अडमिरल यानी अमीरुलबहर वाट्सन ने लाल काग़ज़ पर

दस्तख़त करने से इन्कार किया लेकिन कौंसलवालों ने उसका दस्तख़त आप बनालिया गोया फ़ारसी मसल पर "गर ज़रूरत बुवद रवा बाशद" कामकिया ॥

निदान क्लाइव तीनहज़ार आदमी और ६ तोप लेकर कलकत्ते से निकला। सिराजुद्दौलाभी पचास हज़ार सवार पियादे और ४० से ऊपर तोपें लेकर पलासीतक आया॥ चालीस पचास फ़रासीसीभी उसके साथ थे तेईसवीं मईको उसी जगह लड़ाई हुई। सिराजुद्दौला ने पगड़ी उतारकर मीरजाफ़र के पैरोंपर रखदी॥ और कहा कि अब मुआफ़ कीजिये। लेकिन उसने यही सलाहदी कि आज लड़ाई मौकूफ़ रखिये॥ फ़ौज पीछे हटा लीजिये कल लड़ेंगे और राय दुल्लभने अर्ज़की कि हज़ूर का मुर्शिदाबाद ही तशरीफ़ ले चलना बिहतर है। बस इसी में ख़ैर है॥

निदान सिराजुद्दौला की फ़ौज का मुड़ना था। और अंगरेज़ों का चीतोंकी तरह हिरनोंपर लपकना॥ सिराजुद्दौला की फ़ौज भागी अंगरेज़ों ने छ मील तक पीछा किया यही पलासी की फ़तह गोया हिंदुस्तान में अंगरेज़ी अमलदारीकी नेव जमी॥

सिराजुद्दौला के पैर मुर्शिदाबाद में भी न जमे भरोसा तो उसे किसीका थाही नहीं और भरोसा उसे तब होसकता जब उसने किसी के साथ कुछ भलाई की होती। एक बेगम और एक खोजा साथ लेकर

भागा लेकिन राजमहल के पास एक फ़क़ीर ने उसे पहचानलिया सिराजुद्दौला ने किसी ज़माने में उसके नाक कान कटवाये थे फ़क़ीरने तुर्त वहां के हाकिमसे ख़बर करदी। वह मीरजाफ़रका भाई था सिराजुद्दौला को बांधकर मुर्शिदाबाद भेज दिया मीरजाफ़र को कुछ किसी क़दर रहम आया। लेकिन उसका बेटा मीरन निरा पत्थर था॥ वे अपने बाप की इत्तिला के उसकी जान ले डाली सिराजुद्दौला की उमर तबतक बीस बरस की भी नहीं हुई थी॥

ख़ज़ाने की जब मौजूदात लीगयी डेढ़करोड़ रुपया शुमार में आया। तौ भी अहदनामे के बमूजिब सबके देनेको काफ़ी न था॥ तब यह ठहरा कि आधा तो चुका दियाजावे। और आधा तीन क़िस्तों में तीन सालके दर्मियान दियाजावे क्लाइवको मीरजाफ़र ने अहदनामे के सिवाय सोलहलाख रुपया और दिया अमीचंद जी फूलेहुये थे। उन्होंने अपने हिसाब से अपने हिस्से का रुपया तीस पैंतीसलाख जोड़रक्खा था जब अहदनामा पढ़ागया और इन्होंने अपना नाम न सुना घबराये॥ और बोल उठे कि साहिब वह तो लाल काग़ज़पर था। क्लाइवने जबाबदिया कि ठीक लेकिन यह सफ़ेद काग़ज़ पर है वह लाल काग़ज़ ख़ाली आपको सब्ज़बाग़ दिखलाने के लिये था आपको इसमें से एक पैसा भी नहीं मिलेगा॥ अमीचंद ग़श खाके ज़मीनपर गिरपड़ा।

नौकर पालकी में डालके घर लेगये डेढ़ बरसके अन्दर पागल होके मरगया ❀ ॥

उधर दखनमें अंगरेज़ और फ़रासीसियों की लड़ाई नैं मिटी। कौंटलालीने भी जो १७५८ में फरासीसियों की तरफ़से यहां का गवर्नर जेनरल होकर आया था डूप्ले की तरह अंगरेज़ों को उखाड़ना और फ़रासीसियों की अमल्दारी को फैलाना चाहा यहां तक कि अंगरेज़ों ने मौसलीपट्टन उनसे छीन कर दखन के सूबेदार सलाबतजंग से उसकी और कई और ज़िलोंकी अपने नाम्न सनद लिखवाली॥ और यह भी उससे इक़रार लेलिया कि वह फरासीसियों से कभी कुछ सरोकार न रक्खे और सन् १७६१ में सिवाय कल्लीकोट और सूरत की कोठियों के और कुछभी फ़रासीसियों के क़ब्ज़े में न छोड़ा कहते हैं कि जब अंगरेज़ोंने पटुच्चेरी लिया और उसपर अंगरेज़ी निशान चढ़ाया क़िले और जहाज़ों पर की तोपें सलामी से गोया कान बहरे करती थीं। हज़ार तोपों की सलामी कुछ हँसी ठट्ठा न थी॥ लाली बुरीतरह से फ़रासीस में क़त्ल कियागया और फिर तभी से फ़रासीसियों ने निराश होकर यहां

१७५

❀ अफ़सोस है कि क्लाइव ऐसे मर्दसे ऐसी बातज़हूरमें आवे। पर क्या करें ईश्वरको मंज़ूर है कि आदमीका कोई काम बेऐब न रहे॥ इसमुल्कमें अंगरेज़ी अमलदारी शुरूसे आज तक मुआमले की सफ़ाई और क़ौल क़रारकी सचाई में गोया धोबी का धोया हुआ सफेद कपड़ा रहा है! खाली इसी अमीचंद ने उसमें यह एक छींटा सा लगा दिया है॥

अपनी अमल्दारी जमाने का ख़याल बिल्कुल छोड़ दिया॥ हिन्दुस्तान के दिन अच्छे थे क्योंकि अंगरेज़ी अमल्दारी में अगर हज़ार ऐब हों तो भी फ़रासीसी अमल्दारी से करोड़ दर्जे हम उसको बिहतर कहेंगे फ़रासीसियों की जहां कहीं ग़ैर मुल्क में अमल्दारी हुई सिवाय लूट क़त्ल और रअय्यत की तबाही के और कुछ भी सुननेमें नहीं आया और अंगरेज़ों ने जिस जगह क़ब्ज़ा किया दिन पर दिन उसकी तरक़्क़ी होती गयी जिनलोगोंने फ़रासीसकी तवारीख़ पढ़ी है और वहांवालोंके सुभावसे अच्छे वाक़िफ़ हैं कभी हमारे इस लिखने पर अंगरेज़ों की ख़ुशामद का शुबहा न करेंगे॥

सन् १७५९ में दिल्ली के वलीअहद आलीगुहर ने अपने बाप बादशाह आलमगीरसानी से नाराज़ होकर अवध के सूबेदार की बहकावट से बिहारपर चढ़ाई की लेकिन क्लाइव मीरजाफ़र की मददको पहुंच गया। इसलिये वलीअहदको भागना पड़ा॥ बादशाह ने जो ज़मींदारी कम्पनी को दी थी उसकी मालगुज़ारी तीस लाख रुपये के क़रीब जगतसेठकी सिफ़ारिशसे जागीरके तौरपर ख़िलाबके साथ देकर क्लाइवको अपने अमीरों में शुमार कर लिया। और वलीअहद की गिरफ़्तारी के लिये रुक़्क़ा भी लिख दिया॥

सन् १७६० में क्लाइव इंगलिस्तान को गया और वहां अपने बादशाह से बड़ी इज़्ज़त के साथ लार्ड का

ख़िताब पाया। ऐसा दौलतमन्द होकर आजतक कभी कोई यहां से फ़रंगिस्तान को नहीं लौटा॥ वलीअहद अपने बाप के मारेजाने पर जब बादशाह हुआ। शाह आलम अपना लक़ब रक्खा॥ फ़ौज लेकर बिहार पर चढ़ा। पटने के सामने आ पड़ा॥ अंगरेज़ोंने उसे फिर शिकस्तदी और पीछा किया। मीरन भी साथ था डेरे पर बिजली गिरने से मरगया। मीरजाफ़र के दामाद क़ासिमअलीख़ां की नीयत बिगड़ी उसने वर्दवान मेदनीपुर और चटगांव ये तीन ज़िले और पांच लाख रुपये कम्पनी को और बीस लाख कौंसलवालों को देने का क़रार करके अंगरेज़ों को इस बात पर राज़ी कर लिया कि मीरजाफ़र को तो वह सूबेदारी से मौक़ूफ़ करें। और क़ासिमअलीख़ांको उसकी जगह मसनद पर बिठायें॥ बादशाह से भी चौबीस लाख रुपया साल अदा करने के इक़रार पर सनद हासिल होगयी क़ासिमअलीख़ांका इरादा मीरजाफ़रकी जान लेनेकाथा। लेकिन वह कलकत्ते में जारहा इससे बचगया॥ वहाने अंगरेज़ों के पास मीरजाफ़रकी मौक़ूफ़ीके बहुतथे पहले वह क़िस्तों का रुपया बिल्कुल अदा नहीं करसका था। दूसरे बादशाह से लिखा पढ़ी करता था तीसरे डच लोगों से साज़िश रखता था॥

उनदिनों में कम्पनी के नौकरों को तिजारतकी कुछ मनाही न थी तनख़्वाह से बढ़कर तिजारत में फ़ाइदा

उठातेथे । पान सुपारी तमाकू वग़ैरः सब चीज़की तिजारत करते थे जब कम्पनी की तरह कम्पनी के नौकरों ने भी मालपर महसूल देना बंदकिया बल्कि जो लोग कम्पनी के नौकर नहीं थे उनके मालको भी अपने नाम, से वे महसूल चलानेलगे क़ासिमअलीख़ां घबराया । अपनी आमदनी का एक बड़ासा हिस्सा उड़ जाता देखा ॥ कौंसलवालों को लिखा लेकिन कौंसलवाले भी तो तिजारत करतेथे । अपने मालपर महसूल देना किसे अच्छा लगताहै क़ासिमअलीख़ां का लिखना कुछ भी ख़यालमें न लाये ॥ क़ासिमअलीख़ां ने गुस्से में आकर परमिट बिल्कुल मौक़ूफ़ कर दी यहबात सुनकर कि अब किसी के माल पर कुछ महसूल न लिया जायगा अंगरेज़ों के छक्के छूटगये क्योंकि फिर फ़र्क़ क्या बाक़ी रहा । जिस भाव इनका माल पड़ता था उसी भाव औरोंका भी पड़ गया ॥ अंगरेज़ोंने क़ासिमअली ख़ां से कहा कि तुम सिवाय हमलोगोंके और किसीका माल बेमहसूल मत जाने दो और जब उसने इन का यह ग़ैर वाजिब कहना न मानकर मुक़ाबले पर कमर बांधी इन्होंने उसकी मौक़ूफ़ी और मीरजाफ़र की बहाली का इश्तिहार दे दिया । मीरजाफ़र ने इन्हें तीस लाख रुपया नक़द देने और बारह हज़ार सवार और बारह हज़ार पियादोंका ख़र्च चलाने के लिये इक़रारनामा लिखदिया ॥ चौबीसवीं जुलाईको अंगरेज़ी

फ़ौज मुर्शिदाबाद में दाख़िलहुई और क़ासिमअलीख़ां वहां से पटने की तरफ़ भागा। रास्ते में उसकी फ़ौजसे और अंगरेज़ों से गढ़िया और उधवा नाले में दो लड़ाइयां हुईं क़ासिमअलीख़ां की तरफ़से समरू + जो साबिक़ फ़रासीसियों के यहां सार्जन्ट था ख़ूब लड़ा॥ लेकिन फ़तह अंगरेज़ों की रही इस ख़ौफ़से कि जगतसेठ अंगरेज़ों का मददगार है क़ासिमअलीख़ां ने उसे हवालात में अपनेसाथ रक्खा। जब मुंगेरसे आगे बढ़ा जगतसेठ महताबराय और उसके भाई स्वरूपचन्दको रास्ते में अपने हाथसे क़त्ल करडाला॥ साम्हने खड़ा करके तीरोंसे मारा। उनके साथ एक उनका नमकहलाल ख़िदमतगार चुन्नी रहगयाथा॥ बहुतेरा समझाया। लेकिन साथ न छोड़ा॥ जब क़ासिमअलीख़ां तीर चलाता। वह साम्हने आकर खड़ा होजाता॥ जब वह मरकर गिरगयाहै तब दोनों भाइयों के तीर लगाहै॥ पटने पहुँचकर उस ज़ालिमने दोसौ के लगभग अंगरेज़ों को जिन्हें उसने क़ैदकर रक्खा था। कटवाडाला॥

अंगरेज़ोंने कर्मनासा नदीतक उसका पीछा किया निदान वह इलाहाबादमें बादशाहके पास जाकर नव्वाब वज़ीरशुजाउद्दौला अवध के सूबेदारको कुल फ़ौज के साथ चढ़ालाया और पटने में अंगरेज़ों से लड़कर और शिकस्त खाकर फिर भागा। अंगरेज़ोंने फिर पीछा

+ Sombre

किया। बक्सरमें शुजाउद्दौला से एक अच्छी लड़ाई हुई उसके साथ पचास साठ हज़ार सिपाह की भीड़भाड़थी और अंगरेज़ों के साथ कुल ८५७ गोरे ७२१५ हिन्दुस्तानी सवार और पियादे लेकिन शुजाउद्दौलाको शिकस्त खाकर भागनापड़ा॥ उसके दो हज़ार आदमी इस लड़ाई में काम आये बादशाहने अंगरेज़ों को इस फ़तहकी मुबारकबाद दी और लिखा कि खूब हुआ जो मैं अपने वज़ीर की क़ैद से छूटा और फिर वह उस तारीख़से अंगरेज़ों की हिमायत में चलाआया। अंगरेज़ी फ़ौज इलाहाबाद की तरफ़ बढ़ी। रास्तेमें चनारगढ़ का क़िला घेरा ज़ियादा बनारस में रहगयी॥

सन् १७६५ के शुरूमें मीरजाफ़र इस दुन्यासे कूच करगया॥ और उसके भाई नज्मुद्दौला को अंगरेज़ों ने मस्नदपर बिठाया॥ इससे यह क़रार होगया कि नाइब सूबेदार अंगरेज़ों की सलाह से मुक़र्रर हुआ करे और वे उनकी मंजूरी के मौक़ूफ़ न कियाजावे॥

लार्डक्लाइव

तीसरी मईको लार्डक्लाइव गवर्नर और कमांडर-इनचीफ़ होकर फिर कलकत्ते में पहुँचा। और इन्तिज़ाम की दुरुस्ती के लिये रायदुल्लभ और जगतसेठ खुशहालचन्दको मुहम्मदरज़ाख़ां नाइब सूबेदार के शामिलकिया॥ जिसरोज़ लार्डक्लाइव कलकत्ते में पहुँचा।

उसीरोज़ शुजाउद्दौला कोड़ेमें अंगरेज़ों से शिकस्त खाकर और सिवाय अंगरेज़ोंपर भरोसा रखने के और कुछ इलाज न देखकर जेनरल कार्नाक के पास चला आया॥ अंगरेज़ोंने उसकी बहुत ख़ातिरदारी की। और पचास लाख रुपया लड़ाई का ख़र्च लेकर और इलाहाबाद और कोड़ा बादशाहको दिलवाकर सुलहकरली॥ बनारस का राजा बलवंतसिंह बक्सरकी लड़ाई में अंगरेज़ों से मिलगया था। बल्कि कहते हैं कि नव्वाब वज़ीरका जो मोरचा इसके सुपुर्दथा इसने उसमें अंगरेज़ीलश्कर चलाआनेदिया और यहीनव्वाबवज़ीरकी शिकस्तका बड़ा सबब हुआ॥ इसीलिये इन्होंने सुलहनामे में यह भी लिखवा लिया कि शुजाउद्दौला बलवन्तसिंह को किसी तरहपर न छेड़े। और कुछ नुक्सान न पहुंचावे॥

बादशाह से इस वादेपर कि छब्बीस लाख रुपया सालाना जिसका क़ौलक़रार मीरजाफ़र से हुआ था अब बराबर पहुंचा चलाजायगा लार्ड क्लाइवने कम्पनी के लिये बंगाला बिहार और उड़ेसा तीनों सूबोंकी दीवानीका फ़र्मान लिखवालिया। नाज़िम नामको नजमुद्दौला बनारहा॥ लेकिन उनसे यह अहद पैमान होगया कि सिवाय पचास लाख रुपया सालाना लेनेके और कुछ सरोकार मुल्क से न रक्खे मुल्कका काम सब अंगरेज़ों के हाथ में रहे लार्डक्लाइव लिखताहै कि

नजमुद्दौला इसबात से निहायत खुशहुआ और रुख़सत के वक्त कहनेलगा "अल्हम्दुलिल्लाह अब तो जितने चाहेंगे महल बनावेंगे"॥ सन् १७६६ में नजमुद्दौला मरगया और उसका भाई सैफ़ुद्दौला उसकी जगह बैठा। सन् १७६७ में लार्डक्लाइव इंगलिस्तान को चलागया॥

सन् १७६३ में जब इंगलिस्तान और फ़रासीसके दर्मियान सुलहहुई यह भी शर्त ठहरगयी कि सन् १७४६ में यहां जो सब फ़रासीसियोंकी कोठियां थीं उनके हवाले करदीजावें लेकिन बंगालेकी सूबेदारी के इलाक़े में न वह कुछ फ़ौज रक्खें और न कोई क़िला बनावें॥ हिन्दुस्तान इस गयी बलाको फिर जगह देना कुछ इंगलिस्तानवालों की दानाईका काम न था। सन् १७६५ में दखन के सूबेदार निज़ामअली ने जो सन् १७६१ में अपने भाई सलाबतजंगको क़ैद करके मस्नद पर बैठा था कर्नाटक के मुल्कपर चढ़ाई की लेकिन मुहम्मदअली की मददपर अंगरेज़ी फ़ौज को मैदान में देखकर पीछे हटा॥ लार्ड क्लाइव ने मुहम्मदअलीको बादशाहसे कर्नाटककी जुदासनद दिलवादी और गंतूर छोड़कर शिमाली सर्कार + की वैसेही एक सनद कम्पनी के नाम लेली पर मंदराजकी गव-

+ गंजाम विज़िगापटन राजमहन्द्री मछलीबंदर और गंतूर यह पांच ज़िले शिमाली सर्कार कहलाते हैं॥

नर्मेंटने ख़ौफ़ में आकर निज़ामअली को सालाना ख़राज देनेका क़रार करलिया और यह भी लिखदिया कि अंगरेज़ी फ़ौज निज़ामअलीकी मदद करेगी॥ इस ज़मानेमें मैसूरके राज पर हैदरअली का इख्तियार होगया था। इसका बाप सिरे के नव्वाबकी चाकरी में पियादेसे फ़ौजदार बनगया था॥ और यह खुद मैसूर के दीवान नन्जीराजकी फ़ौज में रहते रहते और बहादुरी और जिगरे के काम करते करते ऐसा बढ़ा कि वहां के राजाके लिये तो खानेको पिंशन मुक़र्रर करदिया और आप सारे मुल्कका मालिक होगया॥ बिदनौरमें गड़ा खज़ाना यानी दफ़ीना भी पाया। चारों तरफ़ अपनी अमल्दारी बढ़ानेलगा॥ सन् १७६७ में निज़ामअली ने मैसूरपर चढ़ाई की। अंगरेज़ी फ़ौजभी इक़रारके मुवाफ़िक़ उसके साथहुई॥ तीसरी सितम्बरको हैदरअलीने अंगरेज़ी फ़ौजसे लड़कर शिकस्तखाई हैदरअली निज़ामअली से मिलगया। दोनों ने अंगरेज़ों का मुक़ाबलाकिया॥ उनकी भीड़भाड़ सत्तरहज़ार आदमियोंकी थी और इनकी तरफ़ कुल बारह हज़ार लेकिन दुश्मनोंने शिकस्तखायी और उनकी ६४ तोप अंगरेज़ों के हाथ आयीं निदान निज़ामअलीने तो कुछ दे दिलाकर अंगरेज़ोंसे सुलह करली और हैदरअली लड़तारहा। कभी उसका कुछ नुक़सान होजाता कभी अंगरेज़ों का कभी इनका कोई क़िला उसके हाथचला

जाता और कभी उसका इनके हाथ आजाता॥ यहां
१७६८ तक कि सन् १७६८ में हैदरअलीने भी अंगरेज़ों से
मेल करलिया। इन्होंने उसकी जगहें उसे लौटा दीं
उसने इनकी इन्हें देदीं दोनोंने आपसमें बचावके लिये
एक दूसरेकी मददकरने का क़रारकिया॥

१७७० सन् १७७० में सैफुद्दौलाके मरनेपर उसका भाई
मुबारकुद्दौला बंगालेका सूबेदारहुआ। नाबालिग़ था
कम्पनीने कहा कि इसके लिये खाली सोलह लाख
रुपया साल देना काफ़ी है इससे जियादहदेना कुछ
१७७३ ज़रूरनहीं चौंतीसलाख किफ़ायत में आया॥सन् १७७३
में इंगिलिस्तान की पार्लीमेंटवालों ने देखा कि कम्पनी
लालच में आकर और अपने नौकरोंको कम तनख़्वाहें
देकर मुल्कका इंतिज़ाम बिगाड़तीहै और क़र्ज़भी बढ़ाती
जाती है एकक़ानून ऐसा जारीकिया कि जिससे अढ़ाई
लाखरुपये सालपर एक गवर्नर जेनरल मुक़र्ररहो और
उसकी कौंसल में चार मिम्बर अस्सीअस्सी हज़ाररुपये
सालाने के रहें। कम्पनीको गवर्नर जेनरल के मुक़र्रर
करनेका इख़्तियार मिले लेकिन मंजूरी उसकी बादशाह
के हाथरहे पांचवें साल गवर्नर जेनरल बदलाजाय और
कलकत्ते में एकसुप्रिमकोर्ट क़ाइम कीजाय उसके तीनों
जज बादशाह के हज़ूरसे मुक़र्रर हुआकरें॥

वारन हेस्टिंगज़ पहला गवर्नर जेनरल

पहला गवर्नर जेनरल जो यहां मुक़र्ररहुआ वारन

हेस्टिंग्ज़ था । यह सन् १७५० में नौकर होकर आया था और इस वक्त बंगालेकी गवर्नरी के उहदेपरथा ॥

वारन्हेस्टिंग्ज़ने जब देखा कि क्लाइव की तजवीज़ बमूजिब नव्वाब और कम्पनीकीशराकतमें हुकूमतरहने से कभी इन्तिज़ाम दुरुस्त न होगा जिलेज़िलेमें अंगरेज़ी हाकिम भेजकर कलकत्ते में सदर बोर्डआफ़ रेवन्यू और सदर निज़ामत और सदर दीवानी की अदालतें मुक़र्रर करदीं इसमें शक नहीं कि हिंदुस्तानी फिर भी अंगरेज़ी उहदेदारों के शरीक रहे । लेकिन नौकर सब कम्पनी के होगये ॥ कलक्टरी और दीवानी के हाकिमका शरीक एक दीवान रहताथा फ़ौजदारीके हाकिमकेसाथ ज़िलेका काज़ी मुफ़्ती और मौलवी बैठता था । बोर्ड आफ़ रेवन्यूमें एक हिंदुस्तानी रायरायांके ख़िताबसेथा ॥

अब ज़रा हाल शाहआलम बादशाहका सुनो इसके दिलमें फिर दिल्लीके दर्मियान तख़्तपर बैठनेकी हविस समाई । अंगरेज़ोंने कुछ मदद न की ॥ इसने तुकाजी हुलकर और महाजी सेंधिया के पास पयाम भेजा उन मरहठोंने सन् १७७१ में इसे दिल्ली लेजाकर तख़्त पर बैठादिया । और इलाहाबाद और कोड़ेका इलाक़ा उससे ज़बरदस्ती अपने नाम लिखवा लिया अंगरेज़ोंने इस बहाने कि अब तो आप हमारे दुश्मनों से यानी मरहठों से मिलगये इलाहाबाद और कोड़ा दोनों ज़ब्त करके पचास लाख पर शुजाउद्दौलाके हाथ

वेचडाला। और लार्डक्लाइवने जो तीनों सूबोंकीदीवानी के बावत छब्बीस लाखरुपया साल देनेका क़रारलिख दिया था वह बिल्कुल गोया पानीसे धोडाला॥

शुजाउद्दौला मुद्दतसे फ़िक्र में था कि रुहेलखण्ड १७७४ रुहेलोंसे छीनले क़ाबू न पाताथा। अब लड़ाईकाख़र्च और चालीस लाख रुपया नक़्द देना क़बूल करके अंगरेज़ोंको उनपर चढ़ालेगया॥ बेचारे रुहेले शिकस्त खाकर तीन तेरह होगये सिर्फ़ फ़ैज़ुल्लाहख़ां उनकेसरदारोंमेंसे बचरहा। शुजाउद्दौला ने उसे भी तंग किया और निचोड़ा लेकिन फिर रुहेलखण्डमें उसे पन्दरह लाख का इलाक़ा (रामपुर) जागीरके तौरपर देदिया॥

१७७५ सन् १७७५ के शुरूमें शुजाउद्दौला दूसरी दुन्याको सिधारा। और उसकी मस्नद पर उसका बेटा आसिफ़ुद्दौला बैठा॥ कौंसलवालों की यह रायठहरी कि शुजाउद्दौला से जो अहद पैमान हुये थे वह उसी की ज़िंदगीभर के लियेथे। आसिफ़ुद्दौला के साथ तब बहाल रहेंगे जब वह बनारसका इलाक़ा कम्पनी को नज़रकरे और अंगरेज़ी फ़ौजका ख़र्च बढ़ाकर दो लाख साठहज़ार रुपया महीना कर दे॥ मसल मशहूर है जबर्दस्तका ठेंगा सिरपर आसिफ़ुद्दौलाको नाचार बनारसका इलाक़ा भी देनापड़ा और फ़ौजका ख़र्च भी बढ़ाना पड़ा॥

सन् १७६१ में बालाजीराव पेशवाके मरनेपर और

फिर सन् १७७२ में उसके बड़े लड़के माधवराव पेशवाके मरने पर उसका भाई रघुनाथराव जिसे राघोवा भी कहते हैं उसके छोटे लड़के नारायणराव पेशवाको मारकर आप पेशवा बन बैठा था। पर जब सुना कि नारायणराव की रानी के लड़का हुआ और सेंधिया और हुलकर उसकी पच्छपर हैं डरकर गुजरातकी तरफ़ भागगया॥ और बम्बई में अंगरेज़ों से मददचाही बम्बईवालों ने सालसिटका टापू और उसके पास बस्सीनकाबंदरजो उसवक्तमरहठोंके क़ब्ज़ेमेंथा कम्पनी के नाम लिखवाकर कुछ फ़ौज देदी॥ पर कलकत्तेकी कौंसलवालोंने यहबात मंजूर न की। और अपनाअजण्ट भेजकर पुरंदरके दरमियान सन् १७७६ ई० में नारायणरावके लड़केसे जो रघुनाथरावके भागने पर पेशवा होगयाथा ख़ाली सालसिट का टापू लेकर और बस्सीनका दावा छोड़कर सुलह करली॥ १७७६

सन् १७७८ में पेशवा के मंत्रियों में यानी अहलकारों में फूटपड़ी। नान्हा फडनवीस ने तो पेशवाकी तरफ़ रहकर सेंधिया से मदद ली और बाबू सखाराम ने रघुनाथरावकी तरफ़ होकर अंगरेज़ोंसे मदद मांगी॥ जब अंगरेज़ी फ़ौज से पूना कुलआठ कोस रहगया। कर्नेल इजर्टन और कर्नेल कोबर्न उसके अफसरों ने तोपें तालाबमें डालकर फ़ौज को पीछे हटनेका हुक्म दिया॥ और जब दूसरे दिन वरगांव मेंपेशवा की फ़ौज १७७८

ने आघेरा। सालसिट पेशवा को और भड़ौंच सेंधिया को देकर कम्पनीकी तरफ़ से अहदनामा लिखादिया॥ कोर्टआफ़ डाइरेक्टर्स ने दोनों अफ़सरों को इस क़सूर में मौक़ूफ़ किया बम्बई के गवर्नर ने उस अहदनामेको जो उन्होंने वरगांवमें लिखाथा बिल्कुल नामंज़ूर किया और गवर्नर जेनरल ने भी यही मुनासिब समझा॥ क्योंकि उन अफ़सरों ने अहदनामा लिखते वक़्त यह भी साफ़ ज़ाहिर करादिया था कि हमको अहदनामा लिखनेका पूरा इख़्तियार हासिल नहीं है निदान इसी बात़पर फिर लड़ाई शुरू हुई उस अंगरेज़ी फ़ौजने जो जेनरल गोडार्ड के तहतमें कलकत्ते से मदद के लिये बम्बई गईथी अहमदाबादमें दख़लकरलिया और सेंधिया और हुलकर ने उससे ऐसी शिकस्त खायी कि १७८० अपना सारा डेरा डंडा अंगरेज़ी बहादुरों के लिये छोड़ भागे कुछ न बनआयी॥

गोहद के राना+का कम्पनी के साथ अहदनामाहो गया था। अब सेंधिया उसके इलाक़ेकी तरफ़झुका॥ तो उसनेभी अंगरेज़ों से मदद चाही कप्तान पोफ़म ने जो कुछ थोड़ी सी सिपाह लिये जेनरल गोडार्ड की फ़ौज से शामिलहोनेको जाताथा। गवर्नमेंट का हुक्म पाकर तुर्त मरहठों को गोहद के इलाक़ेसे मार हटाया और फिर उनका लहार का क़िला फ़तह करता हुआ

+ जो अब धौलपुर बाड़ीका राना कहलाताहै॥

ग्वालियर का क़िला जा घेरा॥ यह क़िला मज़बूती में मशहूर है खड़े पहाड़पर बना है॥ वहां वाले समझेहुये थे कि अगर दस आदमी भी क़िले में ख़ाली पत्थर लुढ़कानेको हों हमला करके दुश्मन कभी उस तक न पहुंच सकेगा चाहे वह लाखों फ़ौज क्यों न लावे। और अब तो (सन् १७७६) सेंधिया के एकहज़ार सिपाही चुनेहुये लड़ाईके सब सामानसमेत उसके अंदर मौजूद थे पोफ़म हैरान था किस ढब उसपहाड़परचढ़े॥ इत्तिफ़ाक़से एक चोर उसे ऐसा मिलगया कि जो क़िले में चोरी करनेकेलिये एकछुपीहुई पगडंडीसे उसपहाड़पर चढ़ जाया करताथा। पोफ़मने यह रास्ता उससे मालूम करलिया। दूसरे दिन सूरज निकलने से पहले आगे आप हुआ और पीछे फ़ौज सीढ़ियां लगाकर रस्से लटकाकर खूंटियां गाड़कर घासकी जड़ें पकड़कर यह उसवक़्त नहीं मालूम होताथा कि आदमी हैं या बंदर सबके सब बातकी बातमें उसी राह पहाड़ों पर पहुँच दीवारों को डांक क़िले के अन्दर दाख़िल होगये। मरहठोंने जो यकायक आंख मलते हुए अपने बिस्तरों से उठकर दुश्मनों को क़िले के अन्दर मौत की तरह सिरपर पाया छक्के छूटगये उसीदम क़िला छोड़भागे॥ उधर गोडार्ड ने बस्सीन लिया और बम्बई की फ़ौजने कङ्कनमें पेशवाके सिपाहियों को भगाया इधर बंगाले की फ़ौजने सिरौंजमें सेंधिया के लश्करको एक और

शिकस्त देदी लेकिन दखनमें बखेड़ा बढ़ता देखकर और कौंसलवालों को अपने खिलाफ़ पाकर गवर्नर जेनरलने सेंधियासे तो इस शर्तपर सुलह करली कि सिवाय उस इलाक़ेके जो गोहदके रानाको दियागया था बाक़ी जो कुछ जमुनापार अंगरेज़ों के हाथ लगा था सेंधियाको लौटा दियाजाय और पेशवासे इसशर्तपर सुलह करली कि बस्सीन समेत जो कुछ अंगरेज़ों ने पुरंदर में सुलहनामा लिखे जाने के बाद फ़तह किया सब पेशवा को लौटा दियाजाय॥ और पेशवा कर्नाटकमें उनसब इलाक़ों को जो हैदरअली ने दबालिये थे उससे अंगरेज़ों को दिलवा देवै। और सिवाय पुर्टगीजों के यानी पर्तगालवालों के और किसी फ़रंगीको अपने मुल्क में कुछ कारबार न करने दे॥ क्योंकि अंगरेज़ों को खटका फ़रासीसियोंका था भड़ौंच सेंधिया के क़ब्ज़े में रहने दे। और अगर रघुनाथराव सेंधिया की अमल्दारी में रहे तीन लाख रुपया साल उसे पेशवा के यहां से गुज़ारे को मिला करे॥

सन् १७७८ में फ़रासीस और इंगलिस्तान के दर्मियान लड़ाई शुरू हो जाने के सबब अंगरेज़ोंने यहांसे फ़रासीसियोंको बिल्कुल बेदख़ल करादिया। बंगालेकी फ़ौजने चंदर नगरपर क़ब्ज़ाकिया॥ मन्दराजकी फ़ौज ने पटुचेरी लेकर उसका क़िला ढाह डाला। और कारीकाल और मछलीबन्दर और माही भी छीनालिया॥

हैदरअली से अंगरेज़ोंका जो सुलहनामा हुआथा उसमें शर्त थी कि बचाव के लिये दोनों एक दूसरे की मदद करें लेकिन जब मरहठोंने (१७७१) हैदरअली पर चढ़ाई की । तो अंगरेज़ोंने उसे कुछ भी मदद न दी ॥ इसबातकी उसके जीमें बड़ी लाग थी । सन् १७८० में एक लाख फ़ौज लेकर चढ़आया और अंगरेज़ी अमलदारीमें हरतरफ़ लूटमार मचादी ॥ जो सब फ़रासीसी वग़ैरः फ़रंगी और जगहोंसे निकालेगये थे । अक्सर इसने अपनी फ़ौजमें भरती करालियेथे ॥ उन्हीं का बड़ा भरोसा था । और तोपख़ाना भी उसकासौ तोपों का अच्छा सिजिलथा ॥ अंगरेज़ी फ़ौज जो मन्दराजके पास इकट्ठा हुई कुल पांच हज़ार थी पहलीही लड़ाई में फ़ास शिकस्तखाथी ॥ जो बचे मन्दराज चले आये वड़ी घबराहट पड़ी । लेकिन कलकत्ते से रुपये और सिपाहकी मदद बहुत जल्द पहुँची ॥ तबतक हिन्दू सिपाही जहाज़पर नहीं चढ़तेथे । इसीलिये सारीराह खुशकी गये ॥ इनके पहुँचनेपर सातहज़ारकी जमाअत होगयी । कुछ फ़ौज मददके लिये बम्बई से भी आयी । अंगरेज़ोंको अपने क़िले और शहर बचानेकी फ़िक्रथी और दुश्मनको उनके लेनेकी ॥ ग़रज़ ख़ूब लड़ाइयां हुईं । दोनोंतरफ़के बहादुरोंने अपनी अपनी बहादुरियां दिखलाईं ॥ कभी एकका कोई क़िला या शहर या गांव दूसरे के क़ब्ज़े में चला जाता । कभी वह उसीको अपने

क़ब्ज़े में ले आता या दूसरे का क़िला शहर और गांव जा दबाता॥ कभी एक की फ़ौज देखकर या उसकी आमद सुनकर या रसद चुक जाने पर दूसरेकी फ़ौज आपसे आप हट जाती। कभी थोड़ी होने पर भी जी खोलकर ऐसी लड़ती कि या तो फ़तहपाती या उसी जगह कट जाती॥ सन् १७८१ में पहली जुलाई को कड़ालूर की राहमें आठहज़ार अंगरेज़ी फ़ौज ने अस्सी हज़ार दुश्मन की फ़ौज को ऐसी शिकस्त दी कि उस के दशहज़ार आदमी खेत रहे। इनके घायल मिला कर भी तीन सौ आदमी काम न आये॥ सत्ताईसवीं सितम्बर की लड़ाई में हैदरअली ने अपना तोपख़ाना बचाने को जान बूझकर अपने पांचहज़ार सवारकटवा दिये। गोया किसी खेतकी मूली थे॥

दिसम्बर में अस्सी बरस के ऊपर पहुँचकर हैदर-अली इस दुनिया से उठगया। और उसका बेटा टीपू १७८३ उसकी जगह मसनद पर बैठा॥ टीपूकेमानी उसमुल्क की ज़ुबान में शेर है लड़ाई कुछदिन और भी हुआकी। लेकिन ग्यारहवींमई को सुलह होगयी॥ जिसने जिस का जो कुछ लिया था उसे वापस दे दिया। आगे के लिये अहदनामा लिख गया॥

इस अर्से में फ़रासीस और इंगलिस्तानके दर्मिया-न भी सुलह हो गयी थी। कहीं कुछ लड़ाई बाक़ी नहीं थी॥

सन् १७७५ से यानी जबसे आसिफुद्दौलाने बनारसका इलाक़ा कम्पनीको देदिया। राजा चेतसिंह बनारसका राजा सर्कार कम्पनी अंगरेज़ बहादुरके ताबे हुआ॥ यहराजा बलवंतसिंह का बेटाथा। पर ब्याही हुई रानीसे नथा। अंगरेज़ोंने बाईस लाख रुपया साल ख़राज मुक़र्रर करके उसइलाक़ेकी बहालीका अहदनामा राजा चेतसिंह के नाम लिखदिया। सन् १७७८ तक राजा चेतसिंहने बराबर वह रुपया अदा किया॥ वारनर हेस्टिंगज़ के दिलमें राजा चेतसिंह की तरफ़ से रंज आगयाथा। और उसका सबब यह था कि जिन दिनोंमें वारन हेस्टिंगज़ को कौंसलके कई मिम्बरों ने यहां से निकालना चाहा था और आप कुल मुख्तार होगये थे राजा चेतसिंह का वकील उन मिम्बरों के पास जाया करताथा॥ निदान हेस्टिंगज़ ने लड़ाइयां पेश होने के सबब फ़ौज ख़र्च के लिये राजा से पांच लाख रुपया साल तलब किया। राजाने बहुतेरा कहा कि बाईस लाखका अहदनामा होगया है लेकिन कमज़ोरकी कौन सुनताहै राजा को उस साल पांचलाख देनाही पड़ा॥ दूसरे साल इसकी तलबी के लिये सर्कारी सिपाह आयी राजाको पांचलाख रुपयेके सिवाय सिपाह का ख़र्च भी देना पड़ा। तीसरे साल राजाने इसकी मुआफ़ीके लिये दो लाख रुपया हेस्टिंगज़ को कलकत्ते में अपने वकील के हाथ तुहफ़ा के तौरपर

भेजा॥ हेस्टिंग्ज़ने वहभी रक्खा पांच लाखभी लिया। और लाख रुपया ज़ुर्माने के नामसे वसूल किया॥ सन् १७८१ में पांच लाख के सिवाय पहले तो दो हज़ार लेकिन फिर एकहीहज़ारसवार तलब किये। राजा ने आधे सवार आधे बन्दूकची पियादे तय्यार किये॥ पर जब हेस्टिंग्ज़ इसपरभी राज़ी न हुआ। राजा ने बीसलाख नज़राना दाख़िल करनेका पैग़ाम भेजा॥ हेस्टिंग्ज़ने पचास लाख तलब किया और बनारसकी तरफ़ तरीकी राहसे रवानाहुआ। राजाने बक्सर में पहुंचकर पैरोंपर पगड़ी रखदी लेकिन हेस्टिंग्ज़ का दिल इसपर भी न पसीजा॥ बनारस पहुंचकर शिवाले पर यानी जहां राजा ठहराथा दो कम्पनी तिलंगों का पहरा भेजदिया। राजाने इसपर भी कुछ सिर न उठाया॥ लेकिन राजाके नौकर अपने मालिकका क़ैदहोना सुनकर शिवाले के गिर्द घिरआये इस हुजूम की ख़बरपाकर हेस्टिंग्ज़ने दो कम्पनी तिलंगों की और भेजदीं। राजाके आदमियों ने इनको अन्दरजाने से रोका कप्तान ने तोप सर की, बलवा होगया तलवारें चलनेलगीं॥ एक सर्कारी चोबदार चेतरामने राजासे बड़ी बेअदबीकी कहनेलगा कि यहां एकएक सिपाही गवर्नर जेनरलहै अगर तुम्हारा कोई आदमी ज़राभी चूं करेगा तुम्हारे और तुम्हारी रानियों के पैरों में रस्सियां बांधकर सरेबाज़ार खींचताहुआ लार्डसाहिब के

साम्हने लेजाऊंगा राजाने पैर फैला दिया कि भाई ला रस्सी और बांध देर क्यों करता है। राजा के चचेरे भाई बाबू मनियारसिंह के मुँहसे यह निकल गया कि किसका मक़दूर है जो राजाके पैर में रस्सी बांधे चेतराम बोला कि चेतसिंह और चेतराम की गुफ़्तगू में दूसरा कौन मसखरा दखल देताहै॥ मनियारसिंह होंठ काटकर चुप होरहा जब बाहर बलवा हुआ। चेतराम अपनी मौत से अचेत उछलकर राजासे जालिपटा और तिलंगोंको पुकारा॥ जब तिलंगे तलवार लेकर राजाकी तरफ़दौड़े। राजा के साथियों ने झट पहरे में से अपने हथियार उठालिये॥ बाबूमनियारसिंहके बेटे नन्हकूसिंहने एकही तलवार में चेतरामका काम तमाम किया भीतर भी लड़ाई शुरूहोगयी तिलंगों के पास कारतूस न था सबके सब मारे गये अगर राजा मनियारसिंह की सलाह मानता और अपनी सिपाह समेत उस वक़्त माधोदासके बाग़ में जहां हेस्टिंग्ज़का डेराथा और बेफ़ौज वह अकेला रहगयाथा जाकर उसे अपने क़ाबू में करलेता और फिर सिक्त समाजत से पेशआता। अपनी दिली मुराद को पाता॥ लेकिन राजा ने सदानंद बख़्शी की सलाह पसंदकी और खिड़कीकी राह पगड़ियोंके वसीले से उतर किश्ती पर सवारहो गंगापार रामनगर चला गया। और फिर वहांसे कुछ दिन अपने किलोंमें ठहर

कर जब सर्कार की हरतरफ़ फ़तह और अपने सिपाहियों की शिकस्त सुनी ग्वालियरको भाग गया। हेस्टिंग्ज़ ने बलवंतसिंह के नवासे राजा महीपनरायनसिंह को बनारसके राजपर बिठाया। गोया हक़्क़हक़्क़दारको पहुँचाया॥ लेकिन बेचारे चेतसिंह के निकालने से जैसा बिचारा था। वैसा कुछ ख़ज़ाना हाथ न लगा॥ कहते हैं कि राजा चेतसिंहका दीवान बाबूऔसानसिंह अपने मालिकसे बिगड़कर हेस्टिंग्ज़ से जामिला था। और उसीने उसके कान भरे थे कि राजा के पास करोड़ों रुपयेका ख़ज़ानाहै ज़रासी धमकी में देदेगा।

७८५ सन् १७८५ में हेस्टिंग्ज़ इस्तीफ़ादेकर इंगलिस्तान को चलागया। और मेक्फ़र्सन*जो कौंसलका बड़ा मेम्बरथा गवर्नरजेनरलके उहदेकाकाम अंजामदेनेलगा॥

उधर इंगलिस्तान में सन् १७८४ के दर्मियान पार्लीमेंट के हुक्म से एक महकमा बोर्ड आफ़ कंट्रोलका मुक़र्रर होगया था उसमें बादशाही कौंसलके छः वज़ीर बैठते थे। और वह कोर्टआफ़ डैरेक्टर्स से बालादस्त थे। तिजारत के सिवाय हिंदुस्तान के सारे कामों पर उन को पूरा इख़्तियार था। और कोर्टआफ़ डैरेक्टर्स को सब काम उनकी मर्ज़ी के बमूजिब करना पड़ता था॥ गवर्नर और गवर्नर जेनरल भी उन्हीं की मंज़ूरी

* यह साहिब हिन्दुस्तान में रोज़गारकी तलाशको अर्काट के नव्वाब के मुख़्तार बनके आये थे॥

से मुक़र्रर होताथा । निदान बोर्ड आफ़ कंट्रोलके मुक़र्रर होनेसे यहांके कामों में बड़ा फ़र्क आगया ॥ अबतक यहां वालों को निरी कम्पनी यानी सौदागरोंकी एक जमाअतसे कामथा । और अब इंगलिस्तानके बादशाही वज़ीरों से कामपड़ा दुश्मनों का ज़ोर घटा । और रअय्यत का भरोसा बढ़ा ॥

लार्ड कार्नवालिस

सन् १७८६ में लार्ड कार्नवालिस गवर्नर जेनरल मुक़र्रर हुआ । और यहां आया ॥ १७८६

त्रिवांकोडू के राजा से अंगरेज़ोंका अहदनामा होगया था इसीलिये जब सन् १७८९ में टीपूने नाहक़ तकरार बढ़ाकर त्रिवांकोडू पर चढ़ाई की । अंगरेज़ों को राजाके बचाव के लिये टीपूपर चढ़ाई करनीपड़ी ॥ लार्ड कार्नवालिस हैदराबादके नव्वाब निज़ामुल्मुल्क और पेशवा से आपसकी मददका कौल क़रारलेकर खुद मंदराज गया और टीपू के मुल्क मैसूरपर चढ़ाई करदी । बम्बई से भी कुछ अंगरेज़ी फ़ौज आयी थी ज़िले ज़िले घाटे घाटे और क़िले क़िले लड़ाई होने लगी ॥ १७८९

जब टीपूके कई मजबूती में मशहूर पहाड़ी क़िले सर्कारके क़ब्ज़ेमें आगये । सर्कारी फ़ौज लड़ती भिड़ती फ़तहके निशान उड़ाती सन् १७६२ में टीपूकी राजधानी श्रीरंगपट्टन के अंदर जापहुँची और करीबथा कि क़िलेपर जिस में टीपू घुसा हुआ था हमलाकरे ॥ टीपू १७६२

ने अपने दोनों लड़कों को ओलमें लार्ड कार्नवालिसके पास भेज दिया और तीन करोड़ तीसलाख रुपया लड़ाईका खर्च और आधा मुल्क अंगरेज़ नव्वाब और मरहठों को देकर आपस में सबके साथ सुलह रखनेका अहदनामा लिख दिया ॥ उस आधे मुल्क से जो टीपू ने दिया। अंगरेज़ों के हिस्से में मलीबार कुड़ग दिंदीगल और बारह महाल आया ॥

१७९३ सन् १७९३ में अंगरेज़ों की फ़रासीसियों से फिर लड़ाई छिड़जानेके सबब पटुच्चेरी वग़ैरः उनके इलाक़ों में सर्कारने अपना कब्ज़ाकरलिया। लार्डकार्नवालिस इंगलिस्तानको सिधारा बङ्गाले और बनारसमें ज़मीदारोंकेसाथ इस्तिमरारी बंदोबस्त इसीनेकिया ॥ जबतक रहेगा उसकानाम इस देश में नेकीके साथ बनारखेगा। लार्डकार्नवालिसकी जगहपर सरजानशोर जो कौंसलका अव्वल मिम्बरथा गवर्नर जेनरलहुआ ॥

१७९५ सन् १७९५ में कर्नाटकका नव्वाब मुहम्मदअली मरगया। उसका बड़ा बेटा उमदतुलउमरा उसकी जगह पर बैठा ॥

१७९७ सन् १७९७ में नव्वाब वज़ीर आसिफुद्दौला मरगया। वज़ीरअली उसकी जगहपर बैठा। लेकिन पीछे से सर्कारको मालूम हुआ कि वह उसका असली लड़का नहीं है तब वज़ीरअलीको मस्नदसे उठाकर आसिफुद्दौला के भाई सआदतअलीखां को मस्नदपर

बिठाया। सआदतअलीख़ांने अंगरेज़ों को अवधमें दस-हज़ार फ़ौज रखनेके लिये छिहत्तर लाख रुपया साल खर्च देनेका अहदनामा लिखदिया और इलाहाबादका क़िलाभी उनके हवाले किया॥

अर्ल आफ़ मार्निंगटन यानी मार्किस आफ़ विलिज़ली

सन् १७९८ में सरजानशोरने इंगलिस्तान जाकर लार्ड टेनमौथका ख़िताब पाया। और यहां उसकी जगहपर अर्ल आफ़ मार्निंगटन जो फिर पीछेसे ख़िताव पाकर मार्किसआफ़ विलिज़ली कहलाया गवर्नर जेन-रलहोकर आया॥ १७९८

अगर्चि टीपूने मुश्किलके वक़्त अंगरेज़ों से सुलह करली थी। पर लागकी आगसे उसकी छाती बराबर जलती रही॥ मार्निंगटनको साबित होगया कि वह फ़रासीसियोंसे ख़त किताबत रखता है। और उनके मुल्कसे मदद मँगानेकी फ़िक्र करता है। यह बड़ा ज़बर्दस्त गवर्नरजेनरल था। झटपट मंदराजमें फ़ौज जमा होनेका हुक्म देदिया॥ और टीपूको लिख भेजा कि यातो मलीबारकी तरफ़ समुद्र कनारेके सब इलाक़े देकर और फ़ौज जमा होनेमें जो ख़र्च पड़े उसे चुका-कर आगेको अहदनामा लिखदो कि फ़रासीसियों से कभी किसी तरहका कुछ सरोकार न रक्खोगे जो फ़रासीसी तुम्हारी अमलदारी में हों तुर्त निकाल बाहर करो और सर्कारी रजीडंटको अपने यहां रहनेकी जगह

दो। नहीं तो सर्कारको अपना दुश्मन समझो॥ जब टीपूने इसका कुछ जवाब न दिया मंदराज और बम्बई दोनों तरफ़ से अंगरेज़ी फ़ौजने उसके मुल्कपर चढ़ाई की। हैदराबादके नव्वाबकी फ़ौज भी अंगरेज़ोंके साथ की॥ पेशवा सेंधियाकी बहकावटसे अलग रहा। श्रीरंगपट्टन से बीसकोस इधर अंगरेज़ोंकी टीपूसे लड़ाई हुई टीपू शिकस्त खाकर पीछेहटा॥ और यह शोचकर कि अंगरेज़ी फ़ौज उसी राहसे आवेगी जिस से पहले आयी थी बिल्कुल घास और चारा जो उसमें था नाश करवा दिया। लेकिन जब सुना कि अंगरेज़ोंने दूसरी राहली उसका जी बिल्कुल टूटगया॥ और अपने सिपाहियों से साफ़ कहा कि अब मेरे दिन आन पहुँचे उन्होंने यही जवाब दिया कि आपके साथ हमभी कट मरैंगे॥ निदान अंगरेज़ोंनेजाकर श्रीरंगपट्टन घेरलिया नव्वाब और पेशवाकीफ़ौज तो तमाशा देखतीथी लेकिन गवर्नर जेनरल्ल सिपाहियोंका काम करता था॥ चौथी १७९९ मईको क़िलेपर हमला हुआ। और अंगरेज़ी निशान फहराया॥ टीपूकी लाश हाथलगी लड़केउसके हाज़िर होगये ९२९ तोप एकलाख बंदूक़साज सामान समेत और एककरोड़ एकलाखके क़रीब नक़द और जवाहिर अंगरेज़ोंके हाथलगा। क़ायदे के बमूजिब टीपूका सारा मुल्क सर्कार और नव्वाबके दर्मियान बटजाना चाहिये था। लेकिन गवर्नर जेनरलने मुनासिब न समझा कि

नव्वाबकी अमलदारी ज़ियादा बढ़ाई जाय इसीलिये कुछतो आपससें बांटलिया। और बाक़ी मैसूरके पुराने राजाके वारिसों में से जिसे हैदरअलीने वहांसे बेदख़ल करदिया था चुनकर उसके हवाले किया। और शर्त यह करली कि हिफ़ाज़तके लिये फ़ौज उसमें सर्कारी रहेगी खर्च सातलाख साल ज़िम्मे राजाके। और जब ज़रूरत पड़े तो इन्तिज़ामभी मुल्कका सर्कार अपने तौर पर करे॥

तंजौर का राजा तुलजाजी लावल्द होने के सबब एक दस बरस के लड़के सर्वोंजीको गोद लेकर मरगया था उसके भाई अमरसिंहने गद्दीका दावा किया। सर्कार ने बहुत तहक़ीक़ातके बाद गद्दी सर्वोंजीको दी लेकिन मुल्ककी आमदनी से उसके लिये एक अच्छा सा पिंशन मुक़र्रर करके दीवानी फ़ौजदारी का इख्तियार आप लेलिया॥ १८०

सूरतके नव्वाब के मरने पर यही हाल वहांका भी हुआ और कर्नाटकके नव्वाव उमदतुलउमराके मरने पर जब उसके बेटे अलीहुसेन ने इन शर्तों से इन्कार किया। तो उसके चचेरे भाई अज़ीमुद्दौला को इन्हीं शर्तोंपर नव्वाव बनादिया॥ १८०१

वज़ीरअली अवध से निकालकर बनारसमें रक्खा गयाथा। जब मालूमहुआ कि काबुलके बादशाह ज़मांशाहसे ख़त किताबत रखता है और फ़साद उठाया चा-

हताहै तो उसे कलकत्ते जानेका हुक्म मिला॥ वह इस बातसे जलकर एकदिन सुबह को चेरी साहिब अजंट के यहां जब चाय पीने को गया॥ बातोंही बातोंमें उन्हें काट डाला॥ कप्तान कानवे साहिब और ग्रेहम साहिब को भी क़त्ल किया। फिर वहां से झपटकर डेविस साहिब जज की कोठी * पर पहुँचा॥ यह कोठी दुमंज़िली है साहिब एक बर्छी लेकर इस जवांमर्दी से सीढ़ीपर आ खड़ेहुये कि कोई क़दम न बढ़ासका॥ इसी अर्से में फ़ौज आगयी डेविस साहिब बचगये वज़ीरअली भागा जयपुर चला गया। वहां के राजा ने उसे पकड़ कर अंगरेज़ों के हवाले करदिया। लेकिन इतना क़रार करलिया॥ कि न वह मारा जावे न उसके पैरमें बेड़ी डाली जावे अंगरेज़ों ने उसे कलकत्ते लेजाकर क़िले में ऐसी एक कोठरी के अंदर क़ैद किया कि उसको पिंजरा ही कहना चाहिये +॥

सआदतअलीख़ां फ़ौज ख़र्च न अदाकर सका इसी लिये सर्कार ने फ़ौज ख़र्चके बदले दुआबेका मुल्क और रुहेलखण्ड उससे लेलिया। नया अहदनामा लिखा गया कि नव्वाब रज़ीडंटकी सलाह मुताबिक़ अपने

---

* यह वही कोठी है जो अब महाराजाधिराज काशीनरेश बहादुरकी है और नदेसर की कहलाती है॥

+ सन् १८५२ ई० में हमने देखी थी लेकिन अब कुछ तोड़ फोड़ होकर नयी इमारत बनजानेके सबब पता जातारहा हम जो क़िले में गये कोई बतला न सका॥

मुल्कका इन्तिज़ाम दुरुस्त करें और इस इन्तिज़ाम से फ़र्रुख़ाबाद का नव्वाब भी सर्कारी पिंसनख़्वार बनगया।

टीपू पर फ़तह पाने के इनआम में गवर्नर जेनरल को मार्क्विसका ख़िताब मिला इसी अर्सेमें फ़रासीसियों के हमले से मिसरको बचाने के लिये गोरोंके साथ कुछ हिन्दुस्तानी फ़ौजभी यहां से जहाज़ों पर भेजीगयी। और बड़ानाम पैदाकर आयी॥

पेशवा अबतक गवर्नर जेनरलके कहनेसे बाहर रहा था लेकिन जब जसवंतराव हुलकर ने बड़ी धूम धाम से उसपर चढ़ाई की तो उसने घबराकर गवर्नर जेनरल के कहने बमूजिब इस बातका अहदनामा लिख दिया कि किसी क़दर (६०००) सर्कारी फ़ौज उसके मुल्कमें रहाकरे। और उसका ख़र्च उसी के मुल्क से लिया जावे। इधर तो यह अहदनामा लिखा गया। उधर पूनाके बाहर हुलकर से शिकस्त खाकर पेशवाको समुद्रकी तरफ़ भागना पड़ा॥ अंगरेज़ोंने उसे अपने जहाज में पनाह दी और फिर बहुत सी फ़ौज इकट्ठा करके पूनामें पहुंचाया। हुलकरने सरकारी सिपाहका मुक़ाबिला न किया अपने मुल्कको चला आया॥ गवर्नर जेनरलने बहुतेरा चाहा कि पेशवा की तरह सेंधिया और बराड़ यानी नागपुर के राजा से भी अहदनामे हो जावें लेकिन जब देखा कि यह लोग सीधी तरहसे न मानेंगे तो अपने भाई जेनरल विल्लिज्लीको जो फिर

पीछे से ऐसा नामी इंगलिस्तान का कमांडर इन्‌चीफ़ ड्यूक आफ़ वलिंगटन हुआ दखन से और लार्ड लेक कमांडर इन्‌चीफ को उत्तर से इन दोनों के मुल्क पर चढ़ाई करने का हुक्मदिया दखनमें अहमद-नगर सर्कारी फ़ौज के हाथ आज़ाने से गोदावरी पार सेंधिया का बिल्कुल अमल जातारहा और उसीमहीने में भड़ौंच भी सर्कार के क़ब्ज़े में आगया॥ इधर लार्ड लेक ने कन्नौज से कूचकरके अलीगढ़ में सेंधियाकी फ़ौज को जो पीरनसाहिब फ़रासीसी के तहत में थी शिकस्त देकर दिल्ली की तरफ़ कदम बढ़ाया॥ पीरन सेंधिया की नौकरी छोड़कर अंगरेज़ों की हिमायत में चलाआया॥ दिल्ली में भी सेंधिया की फ़ौज फ़रा-सीसी के तहत में लड़ी। और तीनहज़ार आदमी काम आनेके बाद खेत छोड़ भागी॥ यहां लार्डलेकने नाम के बादशाह अंधे शाहआलम से मुलाक़ातकी वह एक फटेपुराने छोटेसे शामियाने के नीचे बैठाथा। लार्डलेक को बहुत लम्बा चौड़ा खिताब इनायत किया और उस बेचारे के पास देने को बाक़ी क्या रहाथा॥ निदानकर्नेल अटकर लोनी साहिब को जिन्हें अक्सर यहांवाले लोनी अखतरभी कहते हैं कुछ सिपाहियोंके साथ दिल्ली में छोड़कर लार्डलेक ने आगरा मरहठों से जा लिया और फिर लसवारी * में पहुंचकर मरहठोंकी फ़ौजको

* या, लेसवाड़ी आगरे से ७२ मील बायुकोन है॥

ऐसी भारी शिकस्त दी। कि सात हज़ार मारेगये और दो हज़ार क़ैदमें आये गोया सेंधियाकी कमर तोड़-डाली ॥ उधर दखनमें सर्कारी फ़ौज ने अहमदनगर लेने के बाद असाई की लड़ाई में मरहठोंको बड़ी भारी शिकस्त देकर बुर्हानपुर और असीरगढ़ का मशहूर क़िला लेलिया। और फिर अरगांव की लड़ाई जीतकर और गाविलगढ़का मज़बूत क़िला क़ब्ज़ेमें लाकर नागपुर के राजा की बाईको पचादिया निदान नागपुर के राजाने कटक का इलाक़ा देकर सर्कारसे सुलह करली और साथही सेंधियाने भी अहमदनगर और भड़ौंच से दस्तबर्दार होकर अहदनामा लिखदिया कि फिर कभी किसी फ़रांसीस या [illegible] नौकर न रक्खे पेशवाको बुंदेल-खण्ड पर दावा था इसलिये सर्कार ने वह इलाक़े जो दखन और गुजरात में उससे पायेथे बुंदेलखण्डके बदले उसे लौटादिये ॥

अब खाली एक जसवंतराव हुल्कर इंदौरका राजा १८०[illegible] बाक़ी रहगया। कि जिसने सर्कार के साम्हने सिर नहीं झुकाया ॥ वह अक्सर सर्कारी इलाक़ों को लूटाकिया। और कोई वकील भी अपनी तरफ़ से नहीं भेजा ॥ इसलिये उसपर चढ़ाई हुई पहले कुछ थोड़े से सिपाही कर्नेल मानसन साहिब के तहत में उसके मुक़ाबलेको गये और टोंकका क़िला दर्वाज़ा उड़ाकर फ़तह कर लिया लेकिन मुकंदरे के घाटे में यह सर्कारी फ़ौजका

टुकड़ा धोखे में आकर बेतरह हुल्कर की फ़ौजसे घिर
गया । और बड़ीबड़ी मुश्किलों से वहांसे निकलकर
लड़ता भिड़ता गर्मी और बरसात के सबब सैकड़ों तक-
लीफ़ें उठाता और नुक़्सान सहता तीन तेरह होकर
आगरे पहुँचा ॥ हुल्कर ख़ूब फूला । अब उसकी शेख़ीका
क्या ठिकाना था ॥ समझा कि जो हूं मैं ही हूं ॥ बीस
हज़ार सिपाह और एकसौ तीस तोपोंसे दिल्लीका शहर
जा घेरा वहां सर्कारी फ़ौज कुल आठसौ थी और तोप
ग्यारह पर दिल्ली के रज़ीडंट अक्टरलोनीने इसी मुट्ठी
भर फ़ौजसे ख़ूब मरहठों के दांत खट्टे किये । नौदिन
सिर पटककर आख़िर चल दिये ॥

हुल्करकी बहादुरी भागनेमें थी या कहीं [illegible]का मर-
हठाहै । यानी मारना और हटजाना किसीने हुल्करसे पूंछा
था कि आपका राज कहांहै जिसके छीननेका हम
उपाय करें उसने जवाब दिया कि उतनी ज़मीन जिस
पर मेरे घोड़ेका साया पड़ताहै ॥ अगर मक़दूर हो आओ
छीनलो ॥ निदान लेक तो इस आर्ज़ू में था कि किसी
तरह उससे दो चार हो तो फिर तमाशा दिखलादे ।
और वह इसके नाम से हवा होताथा यहांवाले अक्सर
अपनी बेवकूफ़ी से इस भगोड़े लुटेरेको वीर सम-
झकर जीते जी सल्तनतकी ढोड़ियां चढ़ाने लगे थे ॥
एक दिन लेकने चौबीस घंटे में तीस कोसका धावा
मारकर फ़र्रुख़ाबाद के पास इसे जा दबाया । और

उस लड़ाई में कम से कम तीन हज़ार आदमी उस के मारे गये लेकिन वह हाथ न लगा डीग की तरफ़ भाग गया ॥ डीग भरतपुरकी अमल्दारीमें है भरतपुर के जाट राजा सूरजमल के बेटे रंजीतसिंह ने हुल्कर को पनाह दी । इस क़सूरकी उसे भी सज़ा दीजानी मुनासिब समझी गयी ॥ डीग का क़िला लेकने फ़तह कर लिया । और जो कुछ उसमें था अपनी फ़ौजको बांटदिया ॥

तीसरी जन्वरीको लेकने भरतपुर घेरा नवीं को हमला किया लेकिन जब खंदकके कनारे पहुँचे । तो मालूम हुआ कि पानी छातीभर गहराहै आदमी बहुत काम आये । इक्कीसवीं को दूसरी तरफ़से हमला किया लेकिन वहाँ खंदक चौड़ी इतनी थी कि पुल जो बना लायेथे छोटा पड़ा । और जब सीढ़ी जोड़कर बढ़ाना चाहा पानीमें गिरपड़ा ॥ इसमें भी बहुत आदमी काम आये बाईसवींको तीसरी तरफ़से हमला किया हिंदुस्तानी सिपाही खंदक पार होकर दीवारपर चढ़गये । लेकिन गोरोंने उसवक्त साथदेनेसे इन्कार किया इस लिये उन्हें भी लौट आना पड़ा ८६४ आदमी खेतरहे ॥ दूसरे दिन लेकने उन गोरोंको जिन्होंने उदूल हुक्मीकी थी बहुत शर्मिंदा किया उन्होंने गैरत में आकर बड़ेजोर शोरसे चौथा हमला किया लेकिन इस अर्सेमें क़िलेवालों ने बुर्ज और दीवारकी मरम्मत करलीथी । राह न मिली ॥

१८०५

हज़ारसे ऊपर आदमी मारेगये। निदान इन चारहमलों में तीन हज़ार से ऊपर सर्कारी फ़ौजका नुक्सानहुआ लोग थके मांदे और वेदिल होगये॥ गोला वारूत भी वाकी न रहा। रसद का सामान ख़र्चमें आगया॥ नाचार लेक को फ़ौज हटानी पड़ी। यह इस मुल्क में एकही क़िलाहै कि जिसके साम्हने किसी सववसे भी कभी सर्कारी फ़ौज हटी॥ हमने भरतपुरवालों की ज़ुवानी सुनाहै कि लड़ाई के वक़्त यह राजा रंजीतसिंह दोहर ओढ़े और हाथ में लट्ट लिये क़िलेकी दीवारों पर घूमता था और गूलंदाज़ और सिपाहियों से यही कहता रहता कि भाई "क़िला तिहारोही है" और तव वे कहते थे कि आप यहाँसे हट जायें गोले ओले की तरह वरस रहे हैं जव जवाव देता कि "भय्याजाके नामकी चीठी भगवान के घर तैं वामें वँधी आवतु है वाहीको गोला लगतुहै" और जव सुना कि लेक ने फ़ौज हटाली। घड़ी दूरंदेशी की अपने सव सर्दारों को जमा करके कहा कि भाइयो यह हम सव की ताक़त न थी कि अंगरेज़ोंको हटासकें यह निरी ईश्वरकी कृपा है कि मेरी वात रहगयी॥ पर अव मुनासिव यहहै कि हुल्करसे कहदो किसी तरफ़की राह ले मेरा वूता नहीं कि अंगरेज़ोंके दुश्मनको पनाह दूं और अपने लड़के कुँवर रणधीरसिंह को क़िलेकी कुंजी देकर लेकके पास भेज दिया लेकने भरतपुरवालों की वड़ी ख़ातिर्दारीकी राजा

ने बीस लाख रुपया लड़ाईका खर्च अदाकरने का वादा किया। लेकने सुलहनामेपर दस्तखत करदिया॥

लार्ड विलिज्ली के इस भारी मंसूबे की क़दर कि हिन्दुस्तानी फ़सादी रईसों को जेर करके यकबारगी झगड़े फ़सादकी जड़ मिटादे और सारेमुल्क में अमन चैन जमादे इंगलिस्तान में न हुई कम्पनी के शरीक़ आख़िर सौदागर थे। लड़ाई के ख़र्चसे घवरा गये॥ इस बड़े नामी गवर्नर जेनरलका इस्तीफ़ा मंजूर करलिया। और लार्ड कार्नवालिसको जो सन् १७९३ में इस उहदेसे इस्तीफ़ा देकर गयाथा फिर गवर्नर जेनरल मुक़र्रर करके कलकत्ते को रवाना किया॥ लार्ड कार्नवालिसकी राय मार्क्विस विलिज्ली से बिल्कुल बख़िलाफ़ थी। बल्कि हम तो यही कहेंगे कि उस मालिक पैदाकरनेवाले की रायके भी वख़िलाफ़ थी॥ क्योंकि मार्क्विस विलिज्ली तो यहांके इन फ़सादी रईसों को जेर करके अखण्ड राज अपनी सर्कारका जमाना चाहता था। और लार्ड कार्नवालिस इन्हें बचाना बल्कि अक्सर इलाक़े जो सर्कारी तहत में आगये थे उनको भी लौटा देना॥ कौन जाने यही सबब था कि तीसवीं जुलाई को वह तो कलकत्ते में पहुंचा। और पांचवीं अक्तूबर को गाजीपुर में इस दुनियां से चलबसा॥ मक़बरा इसका वहां देखने लाइक़है सरजार्ज वालों जो उस वक़्त कौंसल के अव्वल मिम्बर थे गवर्नर

जेनरल के उहदे का काम अंजाम देने लगे। और वही फिर उस उहदे पर बोर्ड आफ़ कंट्रोल की मंजूरी से मुकर्रर हुए॥

सेंधिया से फ़ौरन सुलह होगयी और हुल्करसे पंजाब में ब्यासा के किनारे जहां वह सिक्खों से मदद लेने को गया था अहदनामा लिखवा लिया। जयपुर और बूंदी पर से कि वहां के राजा सर्कार के वफ़ादार दोस्त थे हिफ़ाज़त का हाथ बिल्कुल खींच लिया और मरहठों का गोया इन्हें शिकार बना दिया॥ जयपुरके वकील ने खूब कहाथा। कि "सर्कार ने अपना ईमान अपनी ज़ुरूरतके ताबे करलिया"॥

२०६ इसी अर्से में कहीं मन्दराज के कमांडर इन्चीफ़ने कोई हुक्म इस ढबका जारी करदिया था कि पल्टनके सिपाही परेडपर कानमें बाली पहनकर या माथे में तिलक लगाकर न जाया करें। और पोशाक भी कुछ नये क़िस्म की पहने॥ सिपाहियोंने यह झूठा शुबहा करके कि सर्कारको हमारे धर्म्म में दख़ल देना मंजूरहै बिल्लूर के क़िले में जहां टीपूका घरबार नज़रबन्द रक्खा गया था। अंगरेज़ी अफ्सर और गोरोंपर यकायक हमला करदिया॥ लेकिन जब कर्नल जिलस्पी अरकाटसे हिन्दुस्तानी और अंगरेज़ी रिसालोंके सवार और तोपें लेकर बिल्लूर में पहुंचा सिपाही कोई ४०० तो मारे गये। और बाक़ी कुछ क़ैद हुये और कुछ मुआफ़ कर

दिये गये ॥ दोनों पल्टनों का नाम जिनके सिपाहियों ने यह बलवा कियाथा फ़ौज की फिहरिस्त से कटगया। बाजे ऐसा भी गुमान करते हैं कि इसमें टीपू सुलतान के घरवालोंकी साजिश थी पर सुबूत नहीं मिला ॥ जो हो टीपूके घरवाले नज़रबन्द रहने को कलकत्ते भेजे गये और उनके पिंशन घटाये गये । मन्दराज के गवर्नर लार्ड विलियम बेंटिक जिसे यहांवाले लार्डबिंटिक कहते हैं और कमांडर इन्चीफ़की बदनामी हुई दोनों विलायत चलेगये + ॥ लार्डमिन्टो

आखिर जुलाई सन् १८०७ में लार्डमिन्टो गवर्नर जेनरल मुकर्रर होकर आया ॥ और सरजार्जबार्लो लार्डबेंटिकके उहदेपर मंदराज चला गया ॥ लार्डमिन्टो को पांच बरसतक कुछ फ़ौज बुंदेलखंडमें रखनी पड़ी सन् १८१२ में कालिंजर का क़िला हाथ लगा। और वहांका बखेड़ा तै हुआ ॥ १८०

सर्कारको फ़रासीसके मशहूर शाहन्शाह ने पोलियन बोनापार्ट की तरफ़से हिन्दुस्तान पर हमला होने का खटका था और इनदिनों में उसका एक वकील भी बड़ी धूमधाम से ईरान के बादशाहके पास आया था॥ इसलिये लार्डमिन्टोने बीचके मुल्कवाले यानी पंजाब और अफ़गानिस्तान और ईरानके मालिकों से क़ौल क़रार करलेना मुनासिब समझा ॥

+ विलायतसे इसकिताबमें सबजगह इंगलिस्तानको विलायत समझना चाहिये ॥

पंजाबमें रंजीतसिंह सिक्खोंका राजा बनबैठा था। और हरतरफ़से मुल्क दबाता चला जाता था॥ यहांतक कि सतलज इसपार अपनी फ़ौजें उतारलाया। और १८०८ जमनाको अपने राजकी सरहद्द बनाना चाहा॥ जब लार्डमिन्टोकी तरफ़से चार्लसमिटकाफ़ उसके पास पहुंचा वह इसके समझानेको पहले तो कुछ ख़याल में नहीं लाया॥ लेकिन अक्टरलोनीका फ़ौज समेत लुधियाने में पहुंचना सुनकर इसतरफ़ से बिल्कुल निरास होगया। और सतलजको सरहद्द मानकर १८०९ पचीसवीं अप्रैल सन् १८०९ में दोस्तीके अहदनामे पर दस्तख़त करादिया॥

अफ़गानिस्तान के तख़्तपर अहमदशाह दुर्रानी का पोता सुजाउल्मुल्क था। उसके पास लार्डमिन्टो की तरफ़से मौंटिस्टुअर्ट एलफ़िन्स्टन पहुंचा॥ सुजाउल्-मुल्क ने बड़ी ख़ातिर्दारी की लेकिन दोस्ती के लिये सर्कारसे मददके तौर पर कुछ रुपया मांगा वह लार्ड-मिन्टो ने मंजूर नहीं किया। ईरान में इंगलिस्तान के ख़ुद बादशाह की तरफ़ से वकील आया और वहां से भी सरजान मालकम भेजा गया॥

मंदराज की फ़ौजमें सिपाहियों के डेरोंके ख़र्च का अफ्सरों को ठीकेके तौरपर कुछ मुक़र्रर चला आताथा। सरजार्जबालोंने इस तरीक़े को मौक़ूफ़ करना चाहा॥ इसमें और कई और भी बातों में फ़ौजी और मुल्की

साहिबों के दिलों के दर्मियान फ़र्क़ आगया। गवर्नरको बादशाही फ़ौज और हिन्दुस्तानी सिपाहियों पर भरोसा था॥ हुक्म दिया कि कम्पनी की पल्टनों में जिनकी तरफ़ से खटका पैदाहुआ था गोरे और सिपाही अपने अफ्सरों से जुदाकर दिये जायें इसपर श्रीरंगपट्टन में अफ्सरों ने बलवा किया बादशाही फ़ौजको क़िलेसे बाहर निकालदिया। और बाहर छावनी पर गोला चलाना शुरू किया॥ चितलदुर्गकी सर्कारी फ़ौजभी इन के शामिल होनेको आतीथी। लेकिन बादशाही ड्रागून के रिसाले ने रास्तेही में छितर बितर करदी॥ हैदराबादमें भी सर्कारी फ़ौज सर्कशीपर मुस्तइद हुईथी और जलना और मौसलीपट्टनकी फ़ौजको शामिल होने के लिये चिट्ठी भेजी थी। लेकिन फिर कुछ समझ गयी॥ कुसूर मुआफ़ चाहा। लार्डमिन्टो उसवक़्त मन्दराज में था॥ बीस अफ्सरों को मौकूफ़ किया बाक़ी का कुसूर मुआफ़ करादिया॥

सन् १८१३ में सर्कार कम्पनी को पार्लीमेंट इस मुल्ककी नयी सनद मिली। और उसकी शर्तोंके बमूजिब इंगलिस्तान के तमाम सौदागरों को इस मुल्कमें तिजारत करने की इजाज़त हासिल होगयी॥ उसी साल के आख़िरमें लार्डमिन्टो अपने कामसे मुस्ताफ़ी हुआ। और अर्लआफ़माइरा गवर्नर जेनरल मुक़र्रर होकर आया॥

१८१

अर्ल आफ़माइरा

नयपालवाले बहुत दिनोंसे अपना राज बढ़ाते चले आते थे। यहां तक कि अंगरेज़ी अमलदारीपर हाथ फैलाने लगे। जब समझाने बुझाने से कुछ काम नहीं निकला सर्कार ने लड़ाई की तयारी की राजा बालक था काम राजका क़ाज़ी भीमसेन करता था। फ़ौज जंगी बारहहीं हज़ारथी पर उसकी मज़बूती और बहादुरीपर पूरा एतिबार था॥ ३५०० आदमी जेनरल जिलस्पी के साथ सहारनपूर से देहरादून गये और वहां से अढ़ाई कोस के तफ़ावत पर नयपालियों के कलंगा नाम क़िले पर हमला किया क़िले में कुल छसौ नयपाली थे लेकिन जेनरल जिलस्पी मारा गया और सर्कारी फ़ौज को पीछे हटना पड़ा॥ बीस पच्चीस दिनमें जब दिल्लीसे भारी तोपें आन पहुंचीं तीनदिनके गोले बरसने में क़िलेके अन्दर कुल सत्तर आदमी जीते बाक़ी रहगये। पर सर्कारी फ़ौज के हाथ वे भी नहीं लगे क़िलेदारके साथ किसी तरफ़ को निकलगये॥ इनकी इसजवांमर्दी से नयपालियों का दिल बहुत बढ़ा और सर्कारी फ़ौज को नुक़सान उठाना पड़ा। कलंगासे सर्कारी फ़ौज पच्छिम शिरमोर की राजधानी नाहनके पास जैतकका क़िला लेनेको गयी। लेकिन वहां इसकी कोशिश बे फ़ाइदा हुई॥ क़िलेपर झण्डा नयपालियों का फहराता रहा ४५०० आदमी जेनरल उडके साथ गोरखपुरकी सरहद्दसे पालपा

१८१४

का क़िला लेनेको रवानाहुये। लेकिन रास्ता जंगल झाड़ी और तराईमें ऐसा ख़राब पाया कि जब बीमार पड़ने लगे बुटवल से लौटकर गोरखपुर की छावनीमें चलेआये॥ आठ हज़ार आदमी जेनरल मार्लोके साथ दानापुर से बेतिया होकर नयपालकी राजधानी काठ-मांडू लेनेको चले लेकिन सरहदपर पहुंचतेही कुछ सिपाही कटजाने के सबब जेनरलमार्लो ऐसा बेदिल हो गया। कि सरहदकी हिफ़ाज़तके लिये कुछ थोड़ी सी फ़ौज छोड़कर बेतिया हटआया और जब इतनी मदद पहुंची कि १३००० आदमी इसके तहत में होगये तब क्या जाने इसके मनमें क्या समाई बे कहे सुने अचानक एकदिन सूरज निकलने से पहले फ़ौज से निकलकर किसी तरफ़को चलदिया। इस अर्सेमें कर्नल गार्डनर ने रुहेलखण्ड से कमाऊंमें घुसकर अलमोरे का क़िला नयपालियों से ख़ाली करवालिया॥ लेकिन कप्तान हिअर्सी जो उससे शामिल होने को जाताथा। शिकस्त खाकर नयपालियों की क़ैदमें पड़गया निदान यह को जिलस्पी और मार्लो सरीखों की उतावली और बेदिली थी। अब जेनरल अक्टरलोनी की बहादुरी सुनो इसने छहज़ार आदमी लेकर हंडूरकी राजधानी नालागढ़ ⊛ नयपालियों से ख़ाली कराली॥ नयपा-लियोंका राज इसवक्त कोटकांगड़े तक पहुंचगया था

⊛ शिमलाकी अजंटी के तावे है॥

बिल्कुल पहाड़ी राजाओं को उनके राजसे बेदख़लकर दिया था। या उनसे भारी कर यानी ख़राज ठहराकर उन्हें अपना ज़ैलदार बनालिया था॥ बहुतेरे राजा इन नयपालियोंके निकाले सर्कारी फ़ौजके साथ ख़िदमतके लिये हाज़िरथे हमने इस लड़ाईका हाल खुद राजा रामसिंहानालागढ़वालेकी ज़ुबानसे सुनाहै वह उसवक्त जेनरल अक्टरलोनी के साथथा नालागढ़से सर्कारी फ़ौज रामगढ़ की तरफ़ गयी नयपालियों का नामी जेनरल अमरसिंह थापा तीन हज़ार सिपाही लेकर उसके बचाने को आया॥ जेनरल अक्टरलोनीने भी अपनी मदद के लिये कुछ और सर्कारी फ़ौज के आजाने का इन्तिज़ार करना मुनासिब जाना। और फिर बड़ी अक़्लमंदीके साथ मलौन के मज़बूत क़िले की तरफ़ कूच-
१८१५ किया जब नयपाली रामगढ़ से मलौन के बचाने को चले रामगढ़ सहजमें सर्कारके क़ब्ज़े में आगया॥ निदान सर्कारी फ़ौज तो उस पहाड़के नीचे जिस पर मलौनका क़िलाहै एक नदीके कनारे पड़ीथी और नयपालियोंने मलौन से सूरजगढ़तक पहाड़ पर मोरचे जमाये थे। रैला और देवथल इसके बीचमें थे दोनों कमज़ोर थे॥ अक्टरलोनी ने मेजर इनिस के तहतमें तो कुछ फ़ौज रैलापर भेजी और कर्नलटाम्सन को देवथल पर हमला करनेका हुक्म दिया। इसी तरह कप्तान शावर्स को क़िले के नीचे नयपालियोंकी छावनी

लेने को रवाना किया ॥ कप्तान शवर्स मारागया । लेकिन रैला और देवथल सर्कारी फ़ौज के क़ब्ज़े में आया ॥ दूसरे दिन अमरसिंहने भक्तिसिंहको इन्हें वहां से निकालने के लिये बढ़ाया । और आप निशान के साथ बचीहुई फ़ौज लेकर मदद को मुस्तइद रहा ॥ नयपाली कमान की शकल भक्तिसिंहके पीछे अंगरेज़ी फ़ौजका दोनों कनारा दबाये शेरोंकी तरह इसतरहपर सीधे बढ़े आतेथे कि अगर्चि सर्कारी तोपख़ानेसे ज़ंजीरी गोले झाड़ूकी तरह मैदानको दुश्मनों से साफ़ कररहे थे इन नयपालियोंके निशानों से सर्कारी तमाम तोपों पर कुल तीन अफ्सर और तीनही गोलन्दाज़ बाक़ीरह गये । बाक़ी सबकाम आये या घायलहोकर बेकाम होगये ॥ दोघंटेतक कामिल लड़ाई होतीरही । आख़िर अंगरेज़ी जवानोंने संगीनें चढ़ाईं और नयपालियों पर हमलाकरदिया पांव न ठहरसके पीठदिखाई । भक्तिसिंहकी लोथ खेतरही अमरसिंह क़िलेमें घुसगया वीर और बहादुर दुश्मन भी इज़्ज़तके लायक़ है जेनरल अक्टरलोनीने भक्तिसिंहकी लाश दुशाले में लपेटकर अमरसिंहके पास भिजवादी ॥ उसकी दो स्त्रियां उसके साथ सती हुईं सर्कारी फ़ौज रोजबरोज़ क़िला लेने की तदबीरें करती जाती थी । यहांतक कि आठवीं मईको हमला करदेनेकी तय्यारी हुई ॥ अमरसिंहने अब अपनी ताक़त मुक़ाबले की न देखकर इस क़रार पर कि

सर्कार उसके आदमियोंको और जैतकके क़िलेवालों को भी अपने हथियार और माल असबाव समेत नयपाल चला जाने दे क़िलोंको ख़ाली करके जमनाके पच्छिम बिल्कुल इलाक़े छोड़ दिये। अमरसिंहके शिकस्तखानेसे नयपाली सुस्त पड़गये॥ पयाम सुलहका भेजा। लेकिन जब सर्कारने देखा कि वह खाली दिन बिताना चाहते हैं और दूसरे साल फिर लड़नेका सामान तय्यार करते जाते हैं सत्तरह हज़ार फ़ौज देकर जेनरल अक्टरलोनीको कि अब ख़िताब मिलकर सर डेविड अक्टरलोनी होगयाथा नयपालपर चढ़ाई करने का हुक्म दिया॥ इसने अपना लश्कर ऐसे २ घाटेसे और नाले खोलोंसे कि जहां घने जंगलों के सबब सूरज की किरण भी नहीं पहुंचती थी निकालकर मकावनपुरसे कोसभर के अंदर जा डाला। और एक अच्छी लड़ाई लड़ा॥ ५०० आदमी नयपालियोंके मारेगये क़िलेदार ने कि क़ाज़ी भीमसेन का भाई था कहला भेजा आप क्यों लड़ते हैं महाराजने आपके कहने बमूजिब सुलहनामे पर दस्तख़त करदिया निदान इस सुलहनामे के बमूजिब काली नदी नयपालकी पच्छिम सर्हद ठहरी। और शिक्कमके राजाकी ज़मीन जो नयपालियोंने दबा ली थी पूरबमें उसे लौटवा दी गयी॥ और काठमांडू में एक सर्कारी रज़ीडंट का रहना क़रार पाया। गवर्नर जेनरल को बादशाहके यहां से मार्किस आफ़ हेस्टिंग्ज़

का ख़िताब मिला और सरडेविड अक्टरलोनीके नाम से शुकराना आया॥

इसमें शक नहीं कि मरहठोंका ज़ोर घटा दिया गया था। पर उनका हौसिला भूभलमें दबेहुए अंगारे की तरह सुलगता रहा पेशवा फिर भी इनका पेशवा बननेकी आर्ज़ू रखता था छुप छुपके नागपुर ग्वालियर और इन्दौर यानी भोंसला सेंधिया और हुल्करके पास पयाम भेजता रहताथा॥ बड़ोदेवाला गायकवाड़ सर्कार के कहने में था। इसीलिये पेशवा उससे ख़ार खाता था॥ आपसकी किसी तकरारके तस्फ़िये के लिये जब सर्कारने जानकी ज़िम्मेवरी लेकर गायकवाड़की तरफ़ से गंगाधरशास्त्री को पेशवाके पास भिजवाथा। पेशवा पंडरपुरमें था उसके मन्त्री यानी दीवान त्रिम्ब-कजीने उसे पंडरनाथ के दर्शन को बुलाया॥ जब यह दर्शन करके मन्दिर से डेरेकी तरफ़ लौटा। पांच आद-मियोंने पीछेसे झपटकर उसका काम तमाम करडाला। सर्कार जानगयी कि यह पेशवाके इशारेसे हुआ। ले-किन उससे कुछ न कहकर त्रिम्बकको वम्बई के पास ठाणा के किलेमें क़ैद करदिया॥ पेशवाको यह बहुत बुरा लगा। पर इलाज क्या था॥ इस असेंमें पिंडारोंने बड़ा ज़ुल्म मचादिया था यह निरे लुटेरे थे। हिन्दू मुसलमान सब क़ौमके आदमी इनमें शामिलथे॥ सवारी उनकी घोड़े से टट्टू तक। और हथियार उनके बंदूक़से निरे सोंटे

तक॥ हज़ारोंही गिनतीमें थे मंज़िलोंका धावा मारते थे जहां जातेथे ठीकरे तक नहीं छोड़तेथे हुल्कर और सेंधियाने इनको नर्मदा किनारे इलाक़े दे रक्खेथे। और दुश्मनोंका इलाक़ा तबाह करनेको इन्हें बहुत अच्छा वसीला समझते थे॥ अबतक तो इन्होंने पेशवा और हैदराबाद और नागपुरवालेके इलाक़ोंको लूटा लेकिन अब सर्कारी अमल्दारी में भी धावा मारना शुरू किया। किसी साल बिहारका सूबा लूटा किसी साल सूरत जा घेरा किसी साल गंतूर और कड़पमें सिरजा निकाला॥ गवर्नर जेनरलको मालूम होगया कि जबतक यह पिंडारे नेस्तनाबूद न किये जायँगे इस मुल्क में १८१७ अमन चैनकी सूरत पैदा न होगी निदान गवर्नर जेनरल ने हरतरफ़ फ़ौजोंकी रवानगीका हुक्म जारीकिया। और इस हुक्मसे यहां और दखन दोनों जगह मिलाकर एकलाख तेरहहज़ार आदमीका लश्कर ३०० तोपों के साथ रवाना हुआ॥ बंगालेकी इकसठहज़ार सिपाह में से बड़ा हिस्सा गवर्नर जेनरलके साथ कानपुर में था। दहना बाज़ू आगरे में रहा॥ बायां बुंदेलखण्ड में उसके बायें और भी दो टुकड़े मिरज़ापुरके पास और बिहारकी सर्हद्दपर थे बचीहुई फ़ौज सर डेविड अक्टरलोनी के तहत में दिल्लीकी हिफ़ाज़तको रही। दखन की बावनहज़ार सिपाह मंदराजके कमांडरइन्चीफ़सर टी॰ हिस्लप ने पांच हिस्सों में बांटी लेकिन मसल

मशहूरहै। बैल न कूदा कूदी गोन पिंडारोंसे तो अभी लड़ाई शुरूभी नहीं हुई थी। पेशवाने मुक़ावले पर कमर बांधी॥ त्रिम्बक ठाणाके क़िलेसे भाग आयाथा। पेशवा सर्कार के दिखलाने को तो उसके गिरफ्तारी की कोशिश करता था और छुप छुप कर उसे हरतरह की मदद पहुंचाताथा॥ जब नयी सिपाह भरती करने लगा और सर्कारी सिपाह को इधरसे फोड़कर अपनी तरफ़ मिलाने की उसकी पैरवी ज़ाहिर हो गयी रज़ीडंट एलफ़िंस्टन साहिब ने अपनी फ़ौज को पूना के पूरब की छावनी छोड़कर उत्तर किरकी में रज़ीडएट के पास आजाने का हुक्म दिया पेशवा को यह बुरा लगा रज़ीडंट से कहला भेजा कि आप इस हर्कत से बाज़ रहिये रज़ीडंट ने साफ़ जवाब दिया और जब देखा कि पेशवा के सिपाही रज़ीडंटी और छावनी के बीचमें जमा होने लगे रज़ीडंटी छोड़कर किरकी की छावनी में चला आया॥ पेशवाके सिपाहियों ने रज़ीडंटी लूटकर जलादी। पेशवा की फ़ौज में तख़मीनन् दस हज़ार सवार और दसही हज़ार पैदल होंगे और सर्कारी सिर्फ़ पैदल सिपाही सोभी तीन हज़ारसे कम लेकिन सर्कारी सिपाहियों ने हमला किया और पेशवा की सारी फ़ौज को भगा दिया पेशवा ने पुरन्दरकी राहली॥ वहां भी पैर न जमे सितारे गया। जब वहां भी न ठहर सका सेवाजी के जानशीन यानी सितारे

के राजा को उसके कुनबेसमेत साथ लेकर पहले दखनकी तरफ़ वढ़ा॥ फिर मालवेको फिरा। फिर पूना की जानिव मुड़ आया। निदान आगे आगे तो पेशवा⊛ अपने नाम के अर्थ वमूजिव भागा चला जाता था और पीछे पीछे सर्कारी फ़ौज उसके रगेदनेको परछाईं की तरह पीछा किये हुये थी। पूना के पास भीमा किनारे कोरा गांव में एक छोटी सी लड़ाई भी होगयी॥ खेत सर्कारी फ़ौज के हाथ रहा सितारे के क़िले पर सर्कार ने राजा का निशान चढ़ा दिया। और पेशवा की माज़ूलीका उसके उहदे से इश्तिहार जारी किया॥ अष्टी की लड़ाई में पेशवा का वफ़ादार जेनरल गोकला मारा गया। और सितारे का राजा अपने कुनवे समेत सर्कारकी हिमायत में चला आया॥ निदान पेशवा इसक़दर हैरान और परेशान हुआ कि आख़िर

१८१८ थककर और हार मानकर सन् १८१८ में आठ लाख सालका पिंशन क़बूल करलिया। और मुल्क से दस्तवर्दार होकर गंगासेवनके लिये बिठूरमें आरहा त्रिम्बक को सर्कारने गिरफ्तार करके जन्मभरके लिये चनार के क़िले में क़ैद करदिया॥

इस पेशवा की उखाड़ पछाड़ में नागपुर के राजा आपासाहिब की नटखटी सर्कारको वख़ूवी साबित

⊛ फ़ारसी में पेश आगे को कहते हैं पेशवा का अर्थ जो आगे रहे इसका नाम वाजीराव था॥

होगयी वह पेशवा और पिंडारोंसे साज़िश रखता था। और पूना की रज़ीडंटी फूंकने के बाद उसने पेशवाका दिया हुआ ख़िताब सेनापति का इख़्तियार किया था और अपने झंडेपर पेशवा का निशान यानी ज़रीपटका चढ़ा दिया था॥ जेनकिंस साहिब रज़ीडंट अपनी रज़ी-डंटीकी हिफ़ाज़त का उपाय करनेलगे रज़ीडंट के पास उस वक़्त कुल तेरहसौ सिपाही थे और राजा के पास बीस हज़ार सवार पैदल रज़ीडंटी और शहरके बीचमें एक पहाड़ीसी है नाम उसका सीताबलदी उसीपर सर्कारी सिपाहियों ने मोरचा जमाया। सत्ताईसवीं नवम्बर सन् १८१७ को राजा की फ़ौज ने इनपर हमला किया इस लड़ाई में सर्कारी सिपाहियों ने निहा-यत बहादुरी दिखलायी यहां तक कि चौथाई कटगये पर खेत न छोड़ा॥ राजा की सारी फ़ौज को जो दल बादल की तरह उमड़ आयी थी तीन तेरह करके भगा दिया जब राजा ने यह हाल देखा। कहला भेजा कि फ़ौज बेपरवानगी लड़ी मुझे बड़ा अफ़सोस है मैं सर्कार का ताबेहूं रज़ीडंट ने जवाब दिया कि अगर तू सच्चा है फ़ौज छोड़कर हमारे पास चला आ। राजा रज़ीडंटी में चला आया। रज़ीडंट ने उसे फिर नयेसिरसे नागपुर की गद्दीपर बिठाया॥ लेकिन यह नादान इसपरभी अपनी हरकत से बाज़ न आया। सर्कारको दुश्मन और पेशवा को दोस्त समझा रहा॥ तब नाचार सर्कारने उसे

नज़रबंद करके इलाहाबाद को रवाना किया। और उस की जगह नागपुरकी गद्दीपर रघुजी भोंसलाके पोतेको बिठाया॥ लेकिन आप रास्ते से भागकर नागपुरसे ८० कोसपर नर्मदा के दखन एक पहाड़ी गोंद सर्दार की पनाह में चलागया॥ और वहां फ़ौज जमा करके बखेड़ा उठाने लगा॥ निदान सन् १८१६ में जब सर्कार ने उसके इलाज की तदबीर की वह उन जंगल पहाड़ों को छोड़कर सेंधिया के क़िले असीरगढ़में जा घुसा और फिर फ़कीरी भेसमें पंजाबकी तरफ़ चलागया। सर्कार ने जोधपुरके राजा की फ़ेल ज़ामिनीपर इसे वहां रहनेकी इजाज़त दी और एक मुद्दतबाद उसीजगह इसका मरना हुआ॥ सर्कार ने इसकसूर पर कि असीरगढ़के क़िलेदार नें आपा साहिब को पनाह दी थी और क़िलेदार को सेंधिया की पोशीदा पर्वानगी थी सेंधिया को सज़ा देने के लिये उस मशहूर मज़बूत क़िले को घेर कर अपने दख़लमें करलिया। अब रहगया हुल्कर सो जस्वन्तराव का तो परलोक होगया था उसकी रानी तुलसीबाई ने एक लड़का गोद लेकर गद्दीपर बिठाया। तुलसीबाईने अपनी फ़ौजके डर से अपने यार गनपत राव समेत सर्कारीपनाह में चला आना चाहा। लेकिन फ़ौज ने इसमें अपनी तबाही समझकर तुर्त उसका सिर काटडाला और लड़केने राजा के नाम से सर्कार के साथ लड़ने का सामान किया॥ मंदराज़का

१८१६

कमांडरइन्चीफ़ जो पास ही मौजूद था बिजली की तरह फ़ौज लेकर इनके सिर पर पहुंचा। और सिप्रा पार महीदपुरमें इन्हें ऐसा काटा मारा और भगाया कि तबसे वह राज बिल्कुल सुस्त पड़गया॥ सन् १८१८ में सुलहनामा लिख गया। क्या महिमाहै सर्व शक्तिमान् जगदीश्वर की कि सर्कार ने तो खाली लुटेरों और डाकू यानी पिंडारों का इस फ़ौज से नाश करना चाहा था लेकिन वहां उनके हिमायती बल्कि बानी मबानी यानी मूलकारण मरहठों ही का नाश होगया॥ गोया बिल्कुल हिंदुस्तान बेख़लिशहुआ और आपसे आप सर्कारके सायेमें चलाआया॥ सिवाय सितारेके तमाम इलाके पेशवाके और अक्सर इलाके नागपुर के दखल में आजाने से सर्कारी अमलदारी बहुत बढ़गयी अजमेर भी इनके क़ब्ज़े में आया। और कच्छ गुजरात और राजपूताने के सब राजाओं ने बल्कि उदयपुर के रानाओं ने भी जिन्होंने न मुसल्मानोंके साम्हने और न मरहठोंके आगे कभी सिर झुकाया था बड़ी खुशीसे सर्कार का हिफ़ाजत का हाथ अपने ऊपर क़बूल किया॥ जब पेशवा ऐसे सर्दार की जो नबलाख घोड़ों का धनी कहलाता था बाई पचगयी तो अब पिंडारों का हम क्या हाल लिखें इतनाही लिखना काफ़ी है कि उमान की सर्कारी फ़ौज ने नर्मदा पार होतेही पिंडारों के बिल्कुल इलाक़ों में क़ब्ज़ा करके उन्हें तीनतेरहकरदिया।

और बंगाले की सर्कारीफ़ौजने भी खूब उनका शिकार किया ॥ अमीरख़ां ने जिसके जानशीन अब टोंक के नव्वाब कहलाते हैं अपनी लुटेरीफ़ौज दूर करके सर्कार को अहदनामा लिखदिया। करीमख़ां और वासिल-मुहम्मद पिंडारों के सर्दारों ने जो महीदपुर में हुल्कर की फ़ौजके साथ सर्कार से लड़े थे अपनेतईं सर्कार के हवाले कर दिया ॥ सर्कारने उन्हें खाने को गोरख-पुरमें जागीरें दीं वासिल मुहम्मद ने भागना चाहाथा और जब भाग न सका ज़हर खाकर मर गया। इन पिंडारों का नामी सर्दार चीतू जो आपा साहिब के साथ असीरगढ़ तक गया था जंगल में शेरका लुक़मा हुआ ॥

लखनऊ का नव्वाब वज़ीर सआदतअलीख़ां सन् १८१४ में मर गया था। उसके बेटे और जानशीन ग़ाज़ियुद्दीन हैदर ने अब सर्कार की इजाज़त से लक़ब बादशाह का इख़्तियार किया ॥

१८२३ मार्किस आफ़हेस्टिंग्ज़ सन् १८२३ में गवर्नर जेन-रलके उहदे से मुस्ताफ़ी होकर विलायत गया। और वहां उसे इन ख़िदमतों के इनाम में छ लाख रुपये की क़ीमत का सर्कार से इलाक़ा मिला ॥ इसके उहदे पर जार्ज केनिंग + मुक़र्रर हुआ था लेकिन पीछे से जब

+ इसी के बेटे लार्ड केनिंगने सन् १८५७ का बलवा दबाया और इस मुल्क को तबाह होने से बचाया ॥

उसने उससे इन्कार किया लार्ड एम्हर्स्ट गवर्नर जेनरल मुक़र्रर होकर पहिली अगस्त को कलकत्ते में दाख़िल हुआ ॥ लार्ड एम्हर्स्ट

नयपालियों की तरह बर्म्हावालों का भी सिर खुजलाया । मुल्क बढ़ाने का शौक़ पैदा हुआ ॥ अराकान मनीपुर और आसाम फ़तह करके कचार पर चढ़ाई की । कचार के राजाने सर्कारकी पनाहली सर्कार ने उसकी मदद को फ़ौज भेजी ॥ लेकिन बर्म्हावालों का तो सिर आसमान पर चढ़ा हुआथा गवर्नर जेनरलसे कहला भेजा कि चटगांव ढाका और मुर्शिदाबाद भी किसी ज़माने में हमारे मुल्क का हिस्सा था भला चाहते हो तो अबभी छोड़दो गवर्नर जेनरल तो हँसकर चुप रहे लेकिन इन पागलों ने सर्कारी इलाक़ों को अपनी नानी जीकी मीरास समझकर चटगांव के किनारेपर जो शाहपुरिया के टापू में सर्कारी चौकी के तरह जवान थे तीन उनमें से काट डाले बाक़ी बेचारे जान लेकर भागे ॥ निदान पांचवींमार्च सन् १८२४ को सर्कार ने लड़ाई का इश्तिहार दिया । कुछ थोड़ी सी फ़ौज ने तो ब्रह्मपुत्र के कनारे कनारे जाकर बिल्कुल आसाम में दख़लकिया ॥ और दूसरीने अराकान ले लिया । और बाक़ी ११००० फ़ौजने जहाज़ों † में सवार १८२४

† इनमें डायनानाम पहलाही धुर्एं का जहाज़ था जो लड़ाई के लिये भेजागया ॥

होकर रंगूनपर निशान चढ़ाया॥ जब सर्कारी फ़ौज वहांकी राजधानी आवा लेने के इरादे वहां से आगे बढ़ी। हरलड़ाई में वहांवालों पर फ़तह पाती गयी॥ लेकिन आबहवा की ख़राबी और बेगाना मुल्क होने के सबब आदमी और रुपया दोनों का बड़ा नुक़्सान हुआ। बड़े बड़े विकट जंगल और दलदलों में लड़ना पड़ा अंधे के हाथ जैसे बटेर लगे सेनापति महाबंदूला के आदमियों ने कहीं चटगांवके ज़िलेमें रामू के दर्मियान ३५० सर्कारी सिपाही काटडाले थे राजा ने इसे दूसरा रुस्तम समझा। सेनापति मुक़र्रर करके सर्कारी फ़ौज के मुक़ाबले को भेजा॥ इसने भी बीड़ा उठाया कि वे फ़रंगियों के निकाले दर्बार में मुंह नहीं दिखलाऊंगा लेकिन सच उसने मुंह नहीं दिखलाया। कई लड़ाइयों के बाद डुनाव्यू के क़िले में बान लगकर मर गया॥ निदान जब सर्कारी फ़ौज इन्हें शिकस्त देती इनकेक़िले और तोपख़ाने लेती फ़तह के निशान उड़ाती आवा से कुल चार मंज़िल इधर यंडाबूमें जापहुंची राजाने घबराकर सुलहकरली॥ चारक़िस्तों में एक करोड़रुपया लड़ाईके ख़र्च बाबत दिया। + और

१८२६

+ लेकिन अपनी तवारीख़ों में यही लिखा कि किसी टापूके जंगली आदमी भूलकर इस मुल्क पर चढ़ आये थे जब भूखों मरनेलगे दयावान् महाराज ने करोड़ रुपया राहख़र्च देकर अपने वतन को लौटजाने की इजाज़त मरहमत फ़र्माई यह हाल है एशियाकी तवारीख़ों का॥

आसाम अराकान और मर्तबानके दखन का बिल्कुल मुल्क छोड़ दिया॥

इसीलड़ाई के शुरूमें सैंतालीसवीं पलटनको और दो पलटनों के साथ जो बारकपुरकी छावनीमेंथीं रंगून जानेका हुक्म हुआथा। सिपाही समुद्र का नाम और बर्म्हाकी आबहवा और रामूकी क़तलकाहाल सुनकर हिचकिचा गये जाने से इन्कार किया॥ परेड़पर दो गोरोंकी पलटनें कलकत्ते से बुलायी गयीं सैंतालीसवीं के बहुतेरे सिपाही तोपसे उड़ादिये गये बहुतेरे फांसी पड़े बहुतेरोंने क़ैदमें मिट्टी काटी बाक़ीके नामकटगये॥

भरतपुर में (सन् १८२३) राजा रंजीतसिंह के बेटे रणधीरसिंह के लाव्लद मरनेपर रणधीरसिंह का भाई बलदेवसिंह गद्दीपर बैठा। उसके भतीजे दुर्जनसालने इस झूठीबात पर कि मुझे रणधीरसिंहने गोद लिया था गद्दीका दावाकिया॥ वलदेवसिंहने अपने लड़के बलवन्तसिंहको राजपूतानेके रज़ीडंट सर डेविड अक्टरलोनी की गोदमें रखदिया। और कहा कि दुर्जनसाल ज़रूर मेरेबाद बखेड़ा करेगा मैं चाहता हूं कि आप मेरे रहते मेरे लड़के को सर्कार की तरफ़ से गद्दी पर बैठा दें रज़ीडंट ने खुशी से यहबात क़बूलकी और बलवन्त सिंहको गद्दीपर बैठा दिया॥ सन् १८२५ में बलदेवसिंह का परलोक हुआ। दुर्जनसाल ने बलवंत सिंह के मामूको मारडाला और बलवन्तसिंह को क़ैद

करके राजगद्दीपर आप बैठा ॥ सर डेविड अक्टरलोनी ने लड़ाई की तयारी की। लेकिन सर्कार ने उसकी यह तजवीज़ पसंद और मंज़ूर न की। सर डेविड अक्टरलोनी ने उसीदम इस्तीफ़ा भेजा। और मेरठ के मुक़ाममें मरगया ॥ भरतपुरवालों का गुमान है कि उसने ज़हर खाया। उसके उहदे पर सर चार्लस् मेटकाफ़ मुक़र्रर हुआ ॥ इस अर्से में दुर्जनलालका भाई माधवसिंह उससे बिगड़गया। और डीगमें जाकर सिपाह भरती करने लगा सर्कार ने देखा कि पिंडारों की तरह यह लोग फिर लूट मार का बाज़ार गर्म करेंगे और होते होते सर्कारी अमलदारी में फ़साद उठावेंगे दुर्जनलालको बहुतसमझाया। जब उसने कुछ न माना लार्डकम्बरमिअर कमांडर इन्चीफ़को बीस हज़ार फ़ौज देकर दुर्जनलालके निकालनेके लियेभेजा दसवीं दिसम्बरको सर्कारीलश्कर भरतपुरके साम्हने पहुंचा। और अठारहवीं जनवरी को सुरंगें उड़ाकर क़िला तोड़ा ॥ दुर्जनलाल + पकड़ा गया बलवन्तसिंह को सर्कारने नये सिरसे गद्दीपर बिठाया ॥

इन्हीं दिनोंमें यानी सन् १८२४ में सर्कार ने डच लोगोंको सुमित्राके टापूमें बनकूल न देकर उनसे मलाका और सिंहपुरका टापू लेलिया ॥ और यहीं स्ट्रेट सेट्लमेन्ट कहलाया ॥

+ बनारस भेजागया और उसी जगह मरा ॥

* लार्ड एम्हर्स्ट के जानेपर वही लार्ड बेंटिंक जो १८२८ साबिक़में मंदराज का गवर्नर था वसीले के ज़ोर से गवर्नर जेनरल मुक़र्रर होआया॥ इसके वक़्तमें लड़ाई भिड़ाई कोई नहीं हुई। बड़ी भारी बात यह हुई कि सती होनेकीबड़ीबुरी रस्म यक़क़लम मौक़ूफ़ कीगयी॥

कुडगका राजा अपने ज़ुल्मके बाइस दखन से बनारस क़ैद हो आया। और उसका इलाक़ा उसकी रअय्यतकी ख़्वाहिश मुताबिक़ सर्कारी अमलदारी में शामिल होगया॥

लार्ड बेंटिंकने सर्कारी ख़र्चकी बहुत तख़फ़ीफ़की। और हिन्दुस्तानियोंको सर्कारी बड़े उहदोंके मिलनेकी नेव डाली॥

सन् १८३३ में कम्पनीको २० बरसके लिये फिर १८३३ सनद मिली। हिन्दुस्तानकी तिजारत तो पहिलेही इसके हाथ से निकलगयी थी अब इस सनदकी रू से चीनकी भी बाक़ी न रही॥

लार्ड अकलैंड

अगस्त सन् १८३५ में लार्ड बेंटिंकने कामछोड़ा। १८३५

---

* इसने पीछे विलायत जाकर अपनी लड़की को अंगरेज़ी पढ़ाया और उस लड़की ने वहां एक अंगरेज़ से शादी की॥

मार्च सन् १८३६ तक यानी लार्ड अकलैंडके पहुंचने तक सरचार्लस् मेटकाफ़ ने गवर्नर जेनरलका काम किया॥

१८३७ लखनऊ का बादशाह नसीरुद्दीनहैदर † मरगया पहले तो इसने दो लड़कों को अपना माना था लेकिन फिर इन्कार किया इसी सबब कर्नल लो रज़ीडंट ने उसकेमरनेपर उसके चचा नसीरुद्दौला को जो सआदतअलीख़ांका तीसराबेटाथा और मुसल्मानोंकी शरा मुताबिक़ वारिसहोसक्ताथा मस्नदपर बिठाना चाहा। बिल्कुल तयारी होचुकीथी। सिर्फ़ मस्नद पर बैठने की देरथी॥ कि यकायक बादशाहबेगम यानी ग़ाज़ियुद्दीनहैदर की बेगम ने कुछ सिपाही महलमें घुसाकर नसीरुद्दौला और रज़ीडंट दोनों को घेरलिया। और आप आकर उन दोनों लड़कोंमें से एकको जिसका नाम मुन्नाजानथा मस्नदपर बिठादिया रज़ीडंटने बेगमको बहुतेरा समझाया कि यह क्या पागलपनाहै लेकिन जब देखा कि उसकी अक़्ल बिल्कुल जाती रहीहै किसी ढब महल से बाहर निकल आया। और कुछ सर्कारी फ़ौज ले जाकर बेगम और उसके पोतेको तो पकड़कर क़ैदरहने को चनारके क़िले में भेजदिया और नसीरुद्दौला को मुहम्मदअलीशाह के नामसे मस्नदपर बिठाया इसमें बेगमके तीस चालीस आदमी मारेगये। और घायल

† ग़ाज़िउद्दीनहैदर का बेटाथा॥

हुये॥ इक्बालुद्दौला नसीरुद्दौलाके बड़े भाईका बेटा था। लेकिन उसने बेगमकी तरह बेवकूफ़ी न करके दूसरी तरहकी बेवकूफ़ी की कोर्ट आफ डैरेक्टर्सके सा-म्हने अपना दावा पेश करनेको खुद विलायत गया॥ और जब वहांसे साफ़ जवाब पाया। बग़दाद में रहना इख्तियार करलिया उसका बड़ा भाई यमीनुद्दौला बनारस में रहगया॥

इसी के थोड़े दिन बाद सितारेके राजाकी भी कुछ अक्ल मारीगई। यह न समझा कि उसने वह अपने पुरखाओं की गद्दी सिर्फ़ सर्कारकी मिहर्वानीसे पाया॥ आख़िर मरहठा था गोवेमें पुर्टगीजोंसे जोड़ तोड़ लगा ने लगा कि उनकी फ़ौज अंगरेज़ों को निकालकर इसे मुल्कका मालिककरे। और यह उन्हें धन और धरती दे॥ नागपुरवाले आपासाहिबसे भी चिट्ठी पत्री जारी की। सर्कारी फ़ौजके सिपाहियोंके बहकानेकी कोशिश होने लगी॥ सर्कार ने बहुत समझाया॥ आख़िर जब किसीतरह अपनी हर्कतों से बाज़ न आया क़ैद करके बनारस भेजदिया और उसके भाई को (सन् १८३९ ई०) गद्दीपर बिठाया॥

इसअर्सेमें अहमदशाहदुर्रानीके पोते शाहशुजाउल्-मुल्कको जो अफ़ग़ानिस्तान का बादशाह था। उसके भाई महमूदने वहांसे निकाल दियाथा॥ शाहशुजा नो

कुछदिन रंजीतसिंहकी क़ैदमेंरहकर और कोहनूरहीरा⊛ खोकरपनाहके लिये अंगरेज़ी अमल्दारीमें चलाआया और महमूदको इसलिये कि उसने अपने वज़ीर फतह ख़ां बारकजईको जिसकी मददसे तख्त पाया अंधाकरके मारडाला था फ़तहख़ां के बेटे दोस्तमुहम्मदख़ां ने तख्त से उतारकर काबुलपर अपना क़ब्ज़ाकरलिया॥ कंदहार दोस्तमुहम्मदके भाइयों के दख़ल में रहा। महमूद हिरातको चला गया और उसके बाद उस का बेटा कामरां वहांका बादशाह हुआ॥ कौंटसिमोनिचने जो ईरानमें रूसका एल्ची था। यह मौक़ा अपने मालिक का इसतरफ़ इख्तियार बढ़ानेका बहुत गनीमत समझा॥ ईरानके बादशाहको उभारा कि अफ़गानिस्तान पर दावा करे और उसका लश्कर हिरात के मुहासरेको भिजवाया। बल्कि फ़ौज ख़र्च के लिये कुछ रुपया भी अपने यहांसे दिलाया॥ अगर्चि ईरान का लश्कर हिरातसे हारकर लौटगया और जब इंगलिस्तानने रूससे जवाब तलब किया। रूसके शाहंशाहने असली बात छपाकर कौंटसिमोनिचके बिल्कुल कामों

⊛ कोहनूर हीरा शाहजहां ने अपने तख्त ताऊस में लगाया तख्त ताऊस दिल्ली से नादिरशाह लेगया नादिरशाहसे यह हीरा अहमदशाह के हाथ लगा उसके पोते शाहशुजा से रंजीतसिंहने बहुत बुरी तरह से लिया वह बेचारा इसके पास मदद और पनाह मांगने आया था इसने कोहनूर के लालचमें पकड़कर उसपर पहरे बैठादिये और जबतक उसने कोहनूर न हवाले किया खाना पीना बंद करदिया॥

से इन्कार करादिया॥ लेकिन सर्कार कम्पनी को बखूबी साबित होगया कि रूसका हिन्दुस्तानपर दांतहै जब काबू पावेगा। इधर पैर फैलावेगा॥ और अलकजंडर बर्निस साहिबने भी जो सन् १८३७में एल्ची होकर काबुल गयेथे यही बयान किया कि दोस्तमुहम्मद बिल्कुल रूसवालोंकी सलाहमें है और रूसवालोंने उससे पक्कावादा कियाहै कि हम पिशावर रंजीतसिंहसे वापस लेदेंगे। सर्कारने ज़राभी इसबातपर ग़ौर न किया कि भला रूसवाले इधर क्योंकर आसकेंगे॥ अगर कहें कि क्या वह ईरान तूरान तातार और अफ़ग़ानिस्तानवालोंको बहकाकर और लालच दिखलाकर उन्हें हिंदुस्तान पर नहीं चढ़ासकते हैं तो टुक सोचना चाहिये कि अब वह महमूद ग़ज़नवी और चंगेजखांका ज़माना नहीं है कि जब नंगे पांव और नंगे सिर गक्कर * लोग महमूदके रिसालों को काटते थे। और एक हाथी के भागजानेसे अनन्दपाल सरीखे राजा लड़ाई हारजाते थे। जब जंगल से सोंटे काट काटकर बैलोंपर सवार जलालुद्दीन ख़ारज़्म्वाले के आदमी सिंध सागर दुआब में चंगेजखां की फ़ौजसे लड़ते थे। और बड़े बड़े बादशाह बिल्कुल मदार लड़ाईका अपना तीरंदाजों पर रखते थे॥ बराबर देखते चले आते हो कि कैसी कैसी दलबादल सेना शाहसुल्तान नव्वाब मरहठे नयपाली

---

* अनन्दपाल की लड़ाई में गक्करों ने महमूदग़ज़नवी का बराबर लूटा था॥

और ब्रह्मावालोंकी सरकारी ज़राज़रासी फ़ौज के सा-
म्हने पीठ दिखागयी। बात तो यह है कि डूप्ले और
बसी सरीखे फ़रासीसियोंकी सिखलाई सिपाह भी
अंगरेज़ी तोपखानेके साम्हने रुईके फ़ाहोंकी तरह उड़
गई॥ अगर कहें कि रूसवाले क्या अपनी फ़ौजें पंजाब
तक नहींलासक्तेहैं तो टुकसोचना चाहिये कि रूस और
पंजाब के दर्मियान कैसे कैसे जंगल उजाड़ और पहाड़
पड़े हैं पहले तो रूसमें इतना रुपया नहीं कि पचास
हज़ार भी अच्छी क़वाइदवाली फ़ौज ज़रूरी तोपखाने
के साथ इस राहलानेका ख़र्च देसके दूसरे जितनेदिन
उस फ़ौजको एक हिन्दूकुश पहाड़के घाटे पारहोने में
लगेंगे हमारी सर्कार उससे दूनी फ़ौज धुवेंके जहाज़
और रेलगाड़ियों पर इंगलिस्तान से सिन्धुकनारे पहुँचा
सक्ती है और फिर रूसवाले तो वहां रस्ते की सख्ती
से थके थकाये और अफ़ग़ानिस्तान में रसदकी कमी
और वहां की आब हवा नयी होनेके सबब सूखे मांदे
पहुँचेंगे। और अंगरेज़ सर्हदपर गोया अपने घर
में होंगे पंजाबकी ज़रखेज़ी मशहूर है कैसी कुछ
रसद पहुँचेगी। इसमें किसी तरहका शक नहीं कि उन
पचास हज़ार रूसियोंके तबाह करनेको सर्कारी एक
पल्टन गोरोंकी खैबरके मुहानेपर काफ़ी होगी॥ निदान
सर्कारने ज़राभी इसबातपर ग़ौर न किया और काबुल
१८३९ में फ़ौज लेजाकर शाहशुजा को तख़्त पर बैठाने का

मंसूबा बांधा रंजीतसिंह को भी उसमें शामिलकरलिया और आपसमें अहद पैमान होगया कि पिशावर वग़ैरः जो कुछ इलाक़े सिन्ध उसपार ख़्वाह इसपार रंजीतसिंह ने दबालिये थे शाहशुजा या उसका कोई जानशीन कभी उनपर कुछ दावा न करे। सिन्धके अमीरों से भी क़ौल क़रारहोगया कि उस राह सर्कारी फ़ौजके जाने आने में कुछ रोक टोक न होवे॥ निदान ७५०० सर्कारी फ़ौज बंगाले और बम्बई की ११० तोपोंके साथ सरजानकीन साहिब बम्बईके कमांडर इन्चीफ़के तहत में सिन्ध और बलूचिस्तान की राह सिन्ध नदी और बोलानघाटा पारहोकर क़न्दहारमें पहुँची। और आठवीं मईको शाहशुजा वहां तख़्तपर बैठा बड़ी धूमधाम से उसकी सलामी हुई॥ सरविलियम मेकनाटन साहिब सर्कारकी तरफ़से एल्चीके तौरपर शाह के साथ थे। अलक्जंडर बर्निस साहिब भी हमराह थे॥ इनको उम्मेदथी कि अफ़ग़ानिस्तानमें दाख़िलहोतेही रअय्यत शाहकी तरफ़ रुजूहो जायगी। लेकिन वह बात बिल्कुल ज़ुहूर में नहीं आई॥ यहां तक कि शाहने जब वहां के दस्तूर बमूजिब दशहज़ार रुपया नालबंदी को और कुरान क़सम खानेको ग़िलज़ई सर्दारोंके पासभेजा। उन्होंने रुपया तो लेलिया और कुरान वैसेका वैसा वापसकिया॥ तेईसवीं जुलाईको बारूतसे फाटकउड़ाकर सर्कारी फ़ौजने गढ़ ग़ज़नी लिया। और सातवीं

१८३९

अगस्तको फ़तहका निशान उड़ाती काबुल में दाख़िल हुई दोस्तमुहम्मद तुर्किस्तान की तरफ़ भागगया॥ शुजाके बेटे शाहज़ादा तैमूर के साथ जो पांच हज़ार सिपाही पिशावरसे काबुलको रवाना हुयेथे और जिन की मददके लिये खड़्गजीतसिंह ने छः हज़ार सिख जेनरल वंतूराके तहतमें तैनात कियेगयेथे। वहभी खैबर घाटेकीराह अलीमसजिदमें लड़ते और जलालाबाद का क़िला लेते तीसरी सितम्बर को काबुल में आन पहुँचे॥ जब सर्कार ने देखा कि शुजा काबुल में अपने बाप दादाके तख्त पर बैठगया। उस तख्त की सुस्त बुन्यादीपर मुतलक़ लिहाज़ न करके कुछ थोड़ीसी बंगाले की फ़ौज वहां इन्तिज़ामके लिये छोड़दी और बाक़ी सब को हिन्दुस्तान में वापस तलब करलिया॥ क़न्दहार जाते वक़्त बलूचिस्तान के हाकिम मिहराब ख़ांने कुछ छेड़ छाड़ की थी इसीलिये बम्बई की फ़ौज ने लौटते वक़्त उस का क़िला क़िलात तोड़ डाला। और वह भी उस लड़ाई में बहादुरी के साथ मारागया॥ लार्ड आकलेंडको काबुल फ़तह होने की खुशीमें विलायतसे अर्लकाख़िताबआया। सरजानकीनबेरनहुआ औरभी बहुतोंका उनकी ख़िदमत मुताबिक दर्जाबढ़ा॥ १८४० चौथी नवम्बरको जब सरविलियम् मेकनाटन साहिब हवा खाकर अपनी कोठीको आतेथे रास्ते में एक सवारने ख़बरदी कि दोस्तमुहम्मद हाज़िर है और फि

दोस्तमुहम्मद ने बढ़कर और घोड़ेसे उतरकर तलवार नज़रदी। मेकनाटन साहिबने उसकी बड़ी ख़ातिर्दारी की॥ नज़रबन्द रहनेके लिये हिन्दुस्तान में भेज दिया इस अर्सेमें छोटे छोटे लड़ाई झगड़े बेशक हर तरफ़ होते रहे। लेकिन वह किसी गिनतीमें न थे॥ कभी कोई सर्दार मालगुज़ारी अदा करनेमें देर करता सर्कारी सिपाही उसका गढ़ क़िला तोड़ फोड़कर उसे होशमें लादेते। कभी कोई दोस्तमुहम्मदके बेटे अकबरख़ांकी मददके लिये सिर उठाना चाहता वहां यह फ़ौरन् पहुँचकर उसे उसी जगह दबादेते॥ यहां तक कि सर विलियम् मेकनाटन साहिब ने समझा कि अबमुल्कका इन्तिज़ाम बख़ूबी होगया और क़स्द किया कि अलक्जंडर बर्निस को अपने उहदे पर मुक़र्रर करके आप गवर्नरी के उहदे पर जो सर्कारसे मिलाथा बम्बई चले आवें। और जो कुछ सर्कारीफ़ौज काबुल में रह गयी थी उसे भी हिन्दुस्तान की तरफ़ रवाना कर दें॥ यह न शोचे कि अफ़ग़ानिस्तान मुसल्मानों का मुल्क है। हिन्दू और मुसल्मान में ज़मीन और आस्मानका फ़र्क़है॥ वहांवाले ख़ूब समझे हुए थे कि शाह शुजा अंगरेज़ोंका कठपुतली है और तमाशा यह कि अंगरेज़ों की बदौलत उसे अपने बाप दादाका तख़्त नसीब हुआ तौ भी वह इनसे नाराज़था। अपने मुल्क में इन का रहना हर्गिज पसंद नहीं करता था॥ १८४१

उधर ईश्वर को भी मंज़ूरथा कि चाहे जैसा कोई बड़ा ताक़तवाला अक़्लमन्द क्यों न हो एक दिन ठोकर खा-जावे बल्कि यह उसकी बड़ी मिहर्बानीहै क्योंकि ऐसी ही ठोकरें खानेसे आदमी अपनी अक़्ल और अपनी ता-क़तका भरोसा न रखकर सदा परमेश्वरका सहारा ढूंढ़ताहै और उसके डरसे ज़ुल्म और ग़ैरवाजिबकाम न करके पूरीतरक़्क़ी को पहुँचताहै। जो ठोकर न खाय घमंड में डूबकर फिर औन* की तरह यकबारगी नाश हो जाताहै॥ निदान अब आगे अंगरेज़ी अफसरोंके जो जो काम काबुलमें सुनोगे बस यही कहोगे "विनाश काले विपरीत बुद्धिः" निदान वहां बलवा होनेकीअसल यों बयान करते हैं कि किसी अफ़्ग़ान सर्दार ने किसी अंगरेज़ी उहदेदार की कुछ शिकायत † उसके अफसर से की। अफसर ने कुछ भी नहीं सुनी॥ सख़्त सुस्त कहके निकलवा दिया और यह बात कुछ उसीके वास्ते या नयी न थी। उस अफ़्ग़ानने इसबात की शिकायत शुजासे की॥ शुजाके मुंहसे उस वक़्त दर्बार में बे इ-ख़्तियार यह निकलगया कि "अज़शुमाहेच नमेआयद" यानी तुमलोगों से कुछ भी नहीं बन पड़ताहै बस इ-तना कहना गोया अफ़्ग़ानों के बिगड़े हुये दिलोंकी भरी

* मिसरका बादशाह था मूसाके ज़मानेमें ख़ुदाईका दावा किया था आख़िर दर्या में डुबाया गया॥

† यह शिकायत शायद किसी औरतके निकाल लेजानेके बाब में थी॥

हुई तोप पर रंजक में पलीता पहुँचनाथा सवेरेही दूसरी नवम्बर को क़ाबुलवालों ने बलवा किया। दूकानें सब बंद होगयीं दो तीन सौ बदमआशों ने बर्निस साहिबकी कोठी में जाकर उन्हें और तमाम साहिब लोग मेम लड़के और हिन्दुस्तानी नौकरों को जो वहां उस वक़्त मौजूदथे मारडाला और तमाम माल असबाब लूटकर मकानों को फूंकदिया॥ बर्निस साहिब शहर में रहते थे जब उनके मारेजाने की ख़बर छावनी में पहुँची इसबातके बदल कि तुर्त सब जवान कमर कसकर शहर में चले आते और बलवाइयों को जैसा उन्होंने कियाथा उसका मज़ा चखाते। उनके अफ्सर नाहक़ सिपाहियों को इधर उधर भेजने बुलाने और बे-फ़ाइदा जोड़ तोड़ जमाने में अपना क़ीमती वक़्त खोने लगे॥ अगर बालाहिसारमें भी चलेजाते जहां शाहशुजा रहता था और शहरसे लगाहुआथा। मक़्दूर न था कि कभी कोई उनको उसक़िलेसे निकालसक्ता॥ लेकिन जेनरल एलफिंस्टनके दिमाग़में खलल आगयाथा। और ब्रिगेडियरशिलटन जो उसकामददगार मुक़र्रर हुआ था हिन्दुस्तान लौटनेकी आर्ज़ूमें जी देता था॥ दोनोंने सर विलियम मेकनाटन से यही कहा कि अब काबुल में रहना नामुम्किन् जिसतरह बने जलालाबाद पहुँचने का बन्दोबस्त करो। और वहां से हिन्दुस्तानको चल दो॥ बलवाइयों का जोर इस अर्से में बहुत बढ़ा सारा

काबुल पहाड़ी अफ़्ग़ानोंसे भरगया। शहरके बाहर भी जिधर देखो यही दिखलाई देतेथे गोया सारे मुल्कमें बलवा हुआ बाईसवीं नवम्बर को अकबरख़ां भी काबुलमें आकर उनमें शामिल होगया॥ निदान जब सर विलियम मेक नाटन ने देखा कि सर्कारी फ़ौज का हर तरफ़ नुक्सान होता जाताहै और उसके अफ़सर सिवाय हिन्दुस्तान लौटचलने के और किसी बात पर मुत्तफ़िक़ नहीं होते अकबरख़ां से काबुल छोड़नेकी बात चीत शुरूकी और यह ठहरी कि दोनों की मुलाक़ात हो उसमें सारी शर्तें तैपाजावें लोगों ने मेकनाटन साहिब से कहा कि अकबरख़ां का इतबार करना अक़्लमन्दी नहीं है। उन्हों ने इतनाही जवाब दिया कि हम खूब जानतेहैं लेकिन ऐसी ज़िंदगी से मौतफ़ासरना बिहतरहै॥ निदान तेईसवीं दिसम्बर को करीब दोपहरके सर विलियम मेक नाटन साहिब कप्तान लारेंस + ट्रेवर और मिकंज़ीको साथ लेकर छावनी से अकबरख़ांकी मुलाक़ातको बाहर निकले अकबरख़ां इस्तिक़बालकरके उन्हें अपने डेरे पर लेगया। लेकिन वहां इनचारों से पिस्तौल और तलवारें छिनवाकर तीनको तो अपने सवारों के पीछे बिठला किसी क़िलेमें भिजवा दिया (कप्तानट्रेवर घोड़े से गिर जाने के बाइस रास्ते में मारागया) और सर विलियम मेकनाटन पर जब उन्होंने अकबरख़ांके क़ाबू

+ यही सर हेनरी लारेन्स सन् १८५७ के बलवेमें लखनऊके बीच

से निकलना चाहा उसने तपंचा चलाया और फिर उस के साथियों ने इन्हें टुकड़े टुकड़े करडाला॥ फ़ौजवालों की इसपरभी आंख न खुली फिर अकबरख़ां से सुलह की बातचीतकी॥ उस दगाबाज ने यहशर्त ठहराई कि सर्कारी फ़ौज तमामख़ज़ाना और तोपख़ाना उसीजगह छोड़दे। सिर्फ छःतोपों के साथ हिंदुस्तान की राहले॥ बर्फ पांच इंचसे ज़ियादा पड़गयीथी। सर्कारी फ़ौजसाढ़े चार हज़ार सवार सिपाही और बारह हज़ार बहीर लड़के लुगाइयों की गिनती नहीं छठी जनवरी को पहर दिन चढ़े बृहस्पति के दिन छावनी छोड़कर जलालाबाद रवानाहुई। बीमारोंको अकबरख़ां के सपुर्दकिया सातवीं को काबुलसे पांचकोसपर बुतख़ाक में डेरा पड़ा अफ़ग़ानों ने हर तरफ से हमला करना शुरूकरदिया॥ सर्कारी फ़ौजको अपनी तोपें आपही कीलनी पड़ीं अकबरख़ां साथथा वेईमान हिफ़ाज़तकेलिये आयाथा॥ जब उससेकहा कि यह क्याहै। जवाबदिया कि बेक़ाबू हूं यह लोग मेराकहना नहीं मानते फ़ारसीमें सर्कारीआदमियों को सुनाकर उन्हें धमकाता था कि ख़बरदार सर्कारीफ़ौजकोहर्गिज न छेड़ोपस्तो[1] में उन्हें कहदेताथाकि हां एकको भी इन में से जीता न छोड़ो मुआमलादीन का है। आठवींको ख़ुर्दकाबुल का घाटा पार होना था यह पांच मील लम्बा है दोनों तरफ़ अकसर पांच

[1] अफ़ग़ानों की ज़ुबान॥

पांच सौ फुट तक सीधे ऊंचे पहाड़ खड़ेहैं तफावत दोनों किनारोंमें ५० गज़से ज़ियादा नहीं है॥ नदी जो उसमें ज़ोर शोर से बहती है। अट्ठाईसबार उतरनी पड़तीहै॥ गिलज़ई अफ़ग़ान उन पहाड़ोंके ऊपर से गोलियोंका मेह बरसाते थे। सर्कारी फ़ौज के हथियार निरे बेकाम थे॥ ये ज़मीनपर। और वे आसमानपर॥ कहतेहैं कि उस रोज़ तीन हज़ार से ज़ियादा आदमी इस घाटे में मारे गये नवीं को नाहक खुर्दकाबुल में मुक़ामरहा अकबरख़ांने कहला भेजा कि मेम साहब और बाबा लोगोंकी तकलीफ़ मैं नहीं देख सकताहूं अगर इनको मेरे हवाले करदो तो मैं बहुत आराम और हिफ़ाज़तसे पहुँचवादूंगा। फ़ौजके अफ़सर तो उसके बसमें होगयेथे अपनीमेम और बच्चोंकोभी उसके हवाले करदिया॥ दसवीं को तंगतारीक घाटेमें जो शायद दश फुटभी चौड़ा नहीं है। नामही उसका तंग और तारीकहै ॥ इतने आदमी मारेगये। कि अब कुल दोसौ सत्तर सवार सिपाही और गोलंदाज़ और चार हज़ार बहीरके आदमी बाक़ी रहगये॥ सो यह बारहवीं और तेरहवीं को जगदलक और गंदमक के घाटों में तमाम हुये। क़िस्सा कोताह साढ़े सोलह हज़ार आदमियोंमें जो काबुलसे चले थे सिर्फ़ एकडाकतरब्रेडन साहिब जीते जागते जलालाबाद पहुँचे गोया इस तबाहीकी ख़बर पहुँचानेके लिये बचरहे॥ जलालाबाद

में औरही क़िस्मका अफ़्सर था। वह असली सिपाही सररावर्टसेल बहादुर था ॥ रुपयारसद गोला बारूत सिपाह जो कुछ लड़ाईका सामान है सब कम था मगर दिलका वह बहुत दिलेर था ॥ काबुलवाले अफ़्सरोंका हुक्म जो क़िला खाली करदेनेका पहुँचा था कुछ भी ख़याल में न लाया। और अकबरख़ांसे मुक़ाबिला करनेका मंसूबा ठाना ॥ भूचालसे क़िलेकी दीवार भी गिरगयी। तो उसने देखतेही देखते फिर बना ली ॥ रसदघटगयी तो घोड़ोंके गोश्तसे लोगोंकी भूख बुझायी ॥ पर क़िला न छोड़ा। अकबरख़ांने छःहज़ार फ़ौज लेकर इसक़िले पर हल्लाकिया पर सररावर्टसेल बराबर उसका दांत खट्टा करतारहा ॥ उधर कंदहारको जेनरल नाट दबायेरहा। बहुतेरे बलवाई उसके गिर्द जमाहुये वह सबको फटकारता रहा ॥ गजनीमें कर्नेल पामरथा अगर वह शहरमें किसीको रहने न देता कुछ न होता ॥ लेकिन वह शहरवालों पर रहम करगया। वर्फके मौसिममें उन्हें वाहर निकालना इन्साफ़ न समझा ॥ और यही उसके हक़में जहर हुआ। शहर वालोंने शहरपनाह तोड़कर वलवाइयोंको भीतरघुसा लिया कर्नेल पामर क़िलेमें वन्दहुआ ॥ क़िलेमें रसद की तंगी थी ईंधन भी मौजूद न था। वर्फ दो दो फुट पड़ गईथी नाचार कर्नेल पामरने वहांके तमाम सर्दारोंसे इस वातकी कसम लेकर कि जबतक वर्फ से

अफ़्ग़ानों को हरतरफ़ मारता भगाता रास्ते में ग़ज़नी का क़िला तोड़ता फोड़ता महमूदग़ज़नवी के मक़बरेसे सोमनाथ के संदलीकिवाड़ लेता सत्रहवीं सितम्बरको काबुलमें आ दाख़िलहुआ। अकबरख़ांने तमाम अंगरेज़ मेम और बाबालोगों को जो उसके क़ाबूमें थे एक अफ़ग़ान सालिहमुहम्मदख़ां के साथ बामियान की तरफ़ भेजदिया था उसका इरादा था कि इन्हें तुहफ़ा के तौरपर गुलामी के लिये तूरानी सर्दारोंको बांट दे। लेकिन सालिहमुहम्मद इनसेमिलगया बीसहज़ार नक़द और हज़ार रुपये माहवारी पिंशनकेवादेपरसही सालिम सर्कारी फ़ौजमें पहुँचा दिया जेनरल एलफिंस्टन मरगया था तौ भी सिवाय साहिब लोगों के लेडी मेकनाटन और लेडी सेल समेत तेरह मेम और उन्नीस लड़के इनक़ैदियों में थे॥ निदान इनक़ैदियों को लेकर सर्कारीफ़ौज फ़तह फ़ीरोज़ी के निशानउड़ाती फ़ीरोज़पुर चलीआयी गवर्नर जेनरलने दोस्तमुहम्मद को भी छोड़दिया। सर्कार का इस लड़ाई में कम से कम सत्तरहकरोड़ रुपया ख़र्चपड़ा॥

सिन्ध के अमीरों से सन् १८३२ में सर्कार का यह अहदपैमान होगयाथा कि सिन्धनदीकी राह बेशक सर्कारी आदमी आवें जावें। लेकिन न कोई जंगी जहाज उसमें लावें और न लड़ाई का सामान उधर से कहीं को लेजावें॥ सन् १८३८ में यह भी ठहरगया कि एक

सर्कारी रज़ीडंट वहां रहा करे । लेकिन जब सर्कार को मालूम हुआ कि ये अमीर ईरान के बादशाह से ख़त किताबत करते हैं लार्ड अकलैंड ने सर्कारी फ़ौजकाबुल जाने के वक़्त उनसे एक अहदनामा इसमज़मून का लिखवालिया कि कुछ किसी क़दर सर्कारी फ़ौज उनके इलाक़े में रहाकरे और उसका खर्च उन्हीं के ज़िम्मे रहे ॥ अमीर इसपर भी अपनी हर्कतसे बाज़ न आये । काबुलकी लड़ाइयों में सर्कार के दुश्मनों से साज़िश करने लगे ॥ और सर्कार को यह भी ख़बर पहुँची कि सिन्धुनदीपर अहदनामे के ख़िलाफ़ महसूल लगाते हैं निदान सन् १८४२ में लार्डएलनबराने उनसे इसमज़मूनका अहदनामा तलब किया कि फ़ौजख़र्च के बदले वह कुछ मुल्क सर्कार की नज़रकरें सिक्का सर्कारका जारी करें । और जो धुएंकी नाव सिन्धु नदी में चलें उनकेलिये जलाने को लकड़ीदें न दें तो नाववाले जहां जो पेड़पावें काटलें ॥ अमीरोंने इस अहदनामे पर भी मुहरकरदी लेकिन उनके बलूची सर्दार इस बात से बहुत नाखुशहुए मेजरऊटरम वहां रज़ीडंट था । और सरचार्लस नेपिअर वहांके इन्तिज़ाम के लिये कुछफ़ौज लेकर सिन्धकी राजधानी हैदराबादके पास पहुँचचुका था ॥ अमीरोंने मेजरऊटरमसे साफ़ कहदिया कि सरचार्लस नेपिअर अगर हैदराबादकी तरफ़बढ़ेगा बलूची बलवा करेंगे सरचार्लस नेपिअर कब रुकनेवाला था ।

पन्द्रहवीं फेब्रुअरी को बलूचियों ने बलवा किया और
१८४३ रज़ीडंटीको जा घेरा ॥ रज़ीडंट तो अपने आदमियों
समेत नदी में धुएं की नाव पर चलागया। लेकिन
असबावका बहुत नुक्सान हुआ॥ जब सरचार्लस नेपिअर
हैदराबादसे तीन कोस पर मियानी में पहुँचा देखा कि
अमीरों की फ़ौज बीसहज़ार से ज़ियादा बहुत मज़बूती
के साथ पड़ी है इसकी सिपाह तीन हज़ारसे भी कम
थी लेकिन शेर क्या गीदड़ों की गिनतीसे हिचकता है
फ़ौरन् हमला करदिया सख्त लड़ाई हुई। अमीरोंकी
फ़ौजने शिकस्त खायी॥ पांचहज़ार खेतरहे बाक़ी भाग
गये। सर्कारी कुल बासठ आदमी काम आये॥ लड़ाई
के बाद छः अमीरों ने अपने तईं सरचार्लस नेपिअरके
हवाले करदिया॥ और वह फ़तह फ़ीरोज़ीके साथ हैद-
राबाद में दाखिलहुआ दूसरे महीने में सर चार्लस
नेपिअर ने इसी तरह डब्बाकी लड़ाई में मीरपुर
के अमीरको शिकस्त देकर मीरपुर में दख़ल किया।
और कुछ सवार सिपाही भेजकर अमरकोटका मज़बूत
क़िला लेलिया॥ जो कोई अमीरोंमें से इधर उधर बच
रहा था धीरे धीरे हरएक सर्कारकी क़ैदमें चलाआया।
और सिन्धबिल्कुलसर्कारीअमल्दारीमें शामिलहोगया॥

इसी सालके अन्दर ग्वालियरमें दौलतराव सेंधिया
काजानशीन जनकूजीरावसेंधिया बेऔलाद मरगया।
उसकी रानी ताराबाईने जो खुद तेरहबरसकी थी एक

अपना रिश्तेदार लड़का आठबरसका जयाजीराव गोद लेकर उसे गद्दीपर बिठादिया साहिब रजीडेंटकी सलाह से महाराजका मामू यानी मामासाहिब राजका काम अंजामदेनेलगा। लेकिन दादा खासगीवाले ने रानीसे मिलकर मामा साहिबको निकलवादिया और कामसब अपने हाथमें लिया। साहिब रजीडेंटने यह हाल देख-कर धौलपुरकी अमलदारी में डेरा जाकिया॥ सेंधिया की फ़ौजमें फूटपड़ी कुछ लोग तो दादा खासगीवाले की तरफ़ थे। और कुछ बापू सितोलिया की तरफ़ दो दिन तक आपस में गोले चलते रहे आखिर रानी ने फ़ौजको आपसकी लड़ाईसे रोका। दादा खासगीवाला क़ैदकरके आगरे भेजागया और बापूसितोलिया दीवान हुआ॥ इस अर्सेमें गवर्नरजेनरलका लश्कर ग्वालियरकी सर्हदपर पहुँचगया था। लार्ड एलनवराने ऐसा अच्छा मौक़ा इस ग्वालियरकी तरफ़काखटका मिटानेका हाथ से जाने देना मुनासिब न समझा क्योंकि उधर पंजाब में भी फ़साद उठनेवाला मालूम होताथा॥ ग्वालियर वालों से साफ़ कहला भेजा कि अगर सुलह रखनी मंजूरहै तो ग्वालियरमें सर्कारी कांटिंजेंटकी फ़ौज बढ़ा दो॥ और उसके खर्चके लिये कुछ इलाक़े सर्कार के हवाले करो और फिर साथही इस मजमूनका इश्ति-हार देकर कि सर्कारी फ़ौज महाराजकी हिफ़ाज़त के लिये आयी है ग्वालियरकी तरफ़ कूच किया॥ उन्तीसवीं

दिसम्बरको महाराजपुर और पनियरमें सेंधियाकी फ़ौज से मुक़ाबला हुआ॥ खूब सख्त लड़ाई हुई। १८४४ सेंधिया की फ़ौज ने हर तरफ़ से शिकस्तखायी॥ पांचवीं जनवरी को गवर्नरजेनरल ग्वालियरमें दाखिल हुये सेंधिया ने नया अहदनामा लिख दिया कि जब तक वह अठारह बरस का न हो काम राजका रज़ीडण्ट की सलाह मुताबिक़ अहलकार अंजाम दें। कांटिंजेंट की फ़ौज बढ़ा दी जाय उसके खर्च के लिये कुछ इलाक़े सर्कार जुदाकरले महाराज की सिपाह नौ हजार से कभी जियादह न होने पावे और तोप बारह जंगी और कुल बीस ऐसी वैसी रहें॥ लार्डएलनबरा ग्वालियर की मुहिम्म तै करके कलकत्ते मुड़गया लेकिन वहां विलायत से उस की बदली का हुक्म आया। उसकी जगहपर सरहेनरी हार्डिंग गवर्नर जेनरल मुक़र्रर हुआ॥

सरहेनरी हार्डिंग (लार्डहार्डिंग)

रंजीतसिंह लार्ड अकलेंडकी मुलाक़ात के बादही बीमार पड़ा। और सत्ताईसवीं जूनको (सन् १८३९) शामके वक्त होशहवासके साथ ५८ बरसकी उमर में परलोक को सिधारा॥ हक़ीक़त में इस आख़िरी ज़माने के दर्मियान इस मुल्कमें वह बहुत बड़ा और नामी आदमी हो गुज़रा इसकाबाबा चतरसिंह सूकरचक नाम गांवके रहनेवाले नोधसिंह सांसी जाटका बेटा गूजर

वाले में एक कच्ची गढ़ीसी बनाकर रहाकरता था। और काम पड़ने से पच्चीस सौ सवार जमा करसक्ता था॥ रंजीतसिंह ने अपना मुल्क सिंधकी सर्हद से चीन की अमल्दारी तक पहुँचादिया। और खैबरके घाटेसे सतलज तक बिल्कुल अपने क़ब्ज़ेमें करलिया॥ इसमें से कुछ ऊपर करोड़ रुपयेका लोगोंको जागीर और मुआफ़ी में देरक्खाथा। और बाक़ी की आमदनीका तख़मीनन् डेढ़ करोड़ रुपया उसके ख़ज़ानेमें आताथा॥ मरते वक्त उसने दान पुण्य भी खूब किया। करोड़ रुपये से ज़ियादा तो जिसरोज़ वह मरने को था उसी रोज़ खैरातहुआ॥ और तमाशा यह कि लिखना पढ़ना वह कुछ नहीं जानता था सिर्फ़ नामभर लिखसक्ता था॥ और आंख भी एकही रखता था एक शीतलामें जाती रही। लेकिन आदमी की पहंचान भगवान्ने इसे ऐसी दी॥ कि विक्रम भोज और अकबरके बाद शायद इसी के दर्बार में नवरत्न गिने जासकते थे। जब उसकी लाश को गंगाजल से नहलाकर चन्दनके विमान पर जो सोने के फूलों से सजाहुआ था जलानेको लेचले॥ चार रानियां अच्छी से अच्छी पोशाकें और जेवरपहने हुये उसके साथ गयीं। रानी कुन्दन रजपूत राजा संसारचन्द कांगड़ेवाले की बेटी महाराज का शिर गोदमें लेकर चितापर बैठगयी बाक़ी तीनों जिनमें दो सोलह सोलह बरसकी निहायत खूबसूरत

थीं पांच सात लौंडियों के साथ उसके चौगिर्द जा बैठीं॥ इनसबके चिहरोंपर रंजकानिशानकुछभी न था बल्कि खुशीका असर मालूम होता था। अजब एक समा देखनेवालोंके दिलको कलक दिलानेका था॥ निदान चितामें आग लगायी गयी। और देखतेही देखते वह राखकी ढेरी होगयी॥ कहतेहैं जब चिता जलती थी एक टुकड़ा बादल का नमूदार हुआ और कुछ बूंदें पानीकी बरस गया। गोया खुद आसमान महाराजके मरनेसे रोया रंजीतसिंहके बाद उसका बेटा खड़गसिंह उसकी गद्दीपर बैठा। खड़गसिंह अपने बाप के पुराने वजीर राजा ध्यानसिंहसे किसी सबब नाराज़ हो गया॥ ध्यानसिंहने उसकेबेटे नौनिहालसिंह को ऐसा उभारा। कि उसने खड़गसिंहको नज़रबन्द करलिया और राज काज सब आपकरने लगा॥ खड़गसिंह थोड़ेहीदिनोंबीमार होकरमरगया। कौनजानेजहरदिया था इलाजही बुराकिया॥ जो हो जबउसे जलाकर नौनिहालसिंह घरकीतरफ़ फिरा। रास्तेमें एक दर्वाज़ा टूटकर ऐसा उसपर गिरा कि वह भी अपने बापके पास सिधारा॥ उसके साथ राजाध्यानसिंहका भतीजा मीयां उत्तमसिंह भी वहां काम आया। कहतेहैं कि यह सारा करतूत ध्यानसिंह और उसके भाई गुलाबसिंहकाथा॥ लेकिन दर्वाज़ा गिरने का असली सबब आजतक किसीको नहीं मालूम हुआ। सिक्खोंने अपने दस्तूर बमू-

जिब खड्गसिंह की रानी चन्द्रकुंवरि को मुल्कका मालिक बनाया॥ और गुलाबसिंह भी उसी की जानिब रहा। लेकिन ध्यानसिंह ने फ़ौजको खड्गसिंहके भाई शेरसिंहसे मिलादिया॥ चन्द्रकुंवरि क़िले में बन्द हुई फ़ौजने चारों तरफ़से घेरलिया। पांच दिन तक दोनों तरफ़से खूब गोलाचला॥ गुलाबसिंह भीतर ध्यानसिंह बाहरथा। जीमें दोनों एकलोगोंके दिखलानेको यह सवांगरचाथा॥ आख़िर इसबातपर सुलहठहरी कि शेरसिंह गद्दीपर बैठे। चन्द्रकुंवरि को नौ लाखकी जागीरदे॥ उसे कभी अपनी रानी बनाने का इरादा न करे। और गुलाबसिंह अपनी फ़ौज समेत निशान उड़ाता क़िले से बाहर चला जावे कोई कुछ रोक टोक न करे॥ कहते हैं कि गुलाबसिंह ने अपनी सोलह तोपों की सोलह पेटियां एक एक तोपके लिये तीस तीस कारतूस रख कर बाक़ी बिल्कुल रुपयों से भरीं और पांचसौ तोड़े अशरफ़ियों के अपने पांचसौ जवानों के हाथमें थमादिये जवाहिर जिसक़दर हाथलगा अपनी अर्दली के घोड़चढ़ों को सुपुर्दकिया। और भी बहुतसा क़ीमती असबाबलिया॥ क़िले से निकलकर शाहदरे के नज़दीकडेरा किया। फिर कुछ दिनोंबाद शेरसिंह से रुख़सत लेकर अपनी जागीर जम्बू की तरफ़ चला गया॥ ध्यानसिंह ने यह समझा कि शेरसिंह को मैंनेही गद्दीपर बिठाया और शेरसिंहने यक़ीनजाना कि जब तक ध्यानसिंह

रहैगा मैं नामही का महाराजहूं यह बिल्कुल इख़्तियार अपने हाथमें रक्खेगा । मुझे हरतरह से धमकावे और दबावेगा ॥ दिलों में फ़र्क़ आया । एकको दूसरेकी तरफ़ से खटका पैदाहुआ ॥ सिंधांवालों ने इसक़ाबूको अपनी दिली मतलब पूरा करने के लिये बहुत ग़नीमत पाया रंजीतसिंह की औलाद के बाद गद्दीका हक़ ये अपना समझते थे । और शेरसिंह से नाराज़ भी होरहे थे ॥ एकरोज़ लहनासिंह और अजीतसिंह दोनों सिंधां-वाले भाइयोंने अकेले में महाराज के पास जाकर यह गुलकतरा कि पृथ्वीनाथ हमको ध्यानसिंह ने आपकी जानलेने के लिये भेजाहै । और इस ख़िदमतकी एवज़ साठलाख रुपये की जागीर देने का वादा किया है ॥ उसका इरादा है कि आपको मारकर दलीपसिंह * को गद्दीपर बिठावे । और जबतक वह बड़ा न हो रियासत का काम बेखटके आप कियाकरे ॥ लेकिन हमने अपने नमककी शर्तसे अदा होनेके लिये आपको इस बेवफ़ा वज़ीर के बद इरादों से अच्छीतरह चितादिया आगे आप मालिक हैं शेरसिंह इसबात के सुनने से ज़राभी न घबराया और अपनी तलवार दोनों सिंधांवाले स-र्दारों के सामने रखकर बोला कि अगर तुम मेरे मारने को आयेहो तो लो मैं अपनी तलवार देताहूं तुम बेशक मुझको मारडालो मगर यादरक्खो कि जिसतरह अब

* रानीजिन्दां से रंजीतसिंह का बेटा उस वक्त निरा बालक था ॥

यह तुमसे मुझे क़तल करवाताहै बहुतरोज़ न गुज़रेंगे कि तुम्हें भी क़तल करवा डालेगा ॥ सिंधांवालों ने अर्ज़ किया महाराज हम तो आपको मारनेके नहीं बल्कि बचाने को आये हैं लेकिन ऐसे नमकहराम वज़ीर को तो अब छोड़ना मुनासिब नहीं गरज़ सिंधांवालोंने शेरसिंह से ध्यानसिंहके मारने की इजाज़त लिखवाली और वहां से यह कहकर रुख़सत हुये कि अब हम अपनी जागीरपर जाते हैं वहां से अपने सिपाहियों को लेकर हाज़िरी देनेके बहाने आपके पास आवेंगे । आप उसवक्त ध्यानसिंह को हमारे सिपाहियों की मौजूदात लेने के लिये हुक्म दीजियेगा हमारे सिपाही उसको और उसके बेटे हीरासिंह दोनोंको गोली से मारदेंगे ॥ फिर ये लोग ध्यानसिंह के पास गये । और उसको वह काग़ज़ दिखलाया जो शेरसिंहने उसके मारने के लिये लिखदिया था ध्यानसिंह बहुत घबराया लेकिन जब सिन्धांवालोंने इक़रार किया कि तेरेलिये हम महाराज हीको मारडालेंगे तबतो उसने इनकेसाथ बहुतसेवादे किये ॥ इन्होंने यहां महाराज के मारने की भी वही जुगत ठहरायी । कि जो महाराज के सामने ध्यानसिंह को क़तल करने के लिये ठहरायी थी ॥ निदान दूसरे रोज़ सिन्धांवाले अपनी जागीर को गये । और थोड़ेही दिनों में वहांसे पांच छःसौ सवार अच्छे मुसल्लह हथियारों में डूबेहुये मरने मारनेवाले लेआये ॥ ध्यानसिंह

तो उनदिनोंमें बीमारीका बहानाकरकेअपनेघर बैठरहा था और महाराज बागोंकी सैरमें मश्गूलथे। यह तारीख़ महीने की पहली थी इसलिये दर्बार न था महाराज कुश्ती देखकर पहलवानों को इनआम और रुखसत देरहे थे॥ कि यकबारगी सिन्धांवालों ने आकर वाह गुरूजी की फ़तह बुलाई। महाराज बहुत मिहर्बानीसे उनकी तरफ़ मुतवज्जिह हुए अजीतसिंहने एक दुनाली बन्दूक़ जिसकी हरएक नलीमें दो दो गोलियां भरी थीं पेश करके हँसते हुये यह बात कही॥ कि महाराज देखो चौदह सौ रुपये में कैसी सस्ती एक उम्दा बन्दूक़ मैंने लीहै अब अगर कोई तीन हज़ार भी देवे तो मैं उसको नहीं देनेका। और जब महाराजने बन्दूक़ लेने के लिये हाथ बढ़ाया अजीतसिंह ने उसकी छाती पर ले जाकर उसे झोंक दिया॥ शेरसिंह गोलियोंके लगतेही बेदम होकर गिर पड़ा सिर्फ़ इतनाही ज़ुबान से निकलने पाया "एकी दग़ा"॥ × क़ातिल महाराज का सिर काटकर उस जगह पहुँचे जहां महाराजकाबड़ा बेटा तेरह चौदह बरसका कुँवरप्रतापसिंह था। लहनासिंह सिन्धांवाले ने तलवार उठायी कुँवर उसके पैरों पर गिरपड़ा॥ इस संगदिल ने एकही झटकेमें उसका काम तमाम किया अजीतसिंह तो उसीदम २०० सवार और ५५० पैदल लेकर लाहौर की तरफ़ दौड़ा।

और लहनासिंह बाक़ी दोसौ सवारों के साथ धीरे धीरे उसके पीछे रवाना हुआ॥ आधे रास्तेपर ध्यानसिंहभी जो शेरसिंहके पास जाताथा अजीतसिंहको मिलगया। अजीतसिंहने उसे रोका॥ और कहा कि काम बिल्कुल ख़ातिरख़ाह अंजाम हुआ अब आप क़िले में चलकर बन्दोबस्त फ़र्माइये। और अपने वादोंको पूराकीजिये जब ये लोग क़िलेके अन्दर पहुँचे अजीतसिंहका इशारा पाकर एक सिपाहीने राजा ध्यानसिंहको गोली मारदी अजीतसिंहने शहरमें मुनादी करायी कि दलीपसिंह महाराज है और लहनासिंह सिन्धांवाला उसका वज़ीर हुआ। ध्यानसिंह का बेटा राजा हीरासिंह सिन्धांवालों के क़ाबूमें न आया॥ फ़ौजको अपनी तरफ़करलिया सौ ज़र्ब तोपें लेकर क़िला जाघेरा। तमाम रात तोपें चलती रहीं सूरज निकलतेही हीरासिंहने क़सम खायी कि जबतक मैं अपने बापके मारनेवालोंको मराहुआ नहीं देखूंगा खाना पीना हराम है रानी भी ध्यानसिंह की लौंड़ियों समेत सती होनेके लिये इस अर्सेमें चितापर चढ़नेको तयारथी हीरासिंहने सिपाहियोंसे पुकार कर कहा कि रानी तब सती होवेगी जब उसके मालिकके मारनेवालोंका सिर काटकर उसके पैरोंमें रक्खाजावेगा॥ फ़ौज इस बातको सुनतेही जोशमें आयी। दीवार टूट गयी थी क़िले पर हमला कर दिया और बात की बात में अन्दर जा दाख़िल हुए अजीतसिंहका सिर

काटकर ध्यानसिंह की रानीके पैरोंमें रक्खा वह उसे देखकर निहायत खुश हुई और फिर ध्यानसिंह की कलँगी हीरासिंहकी पगड़ी में लगाकर आप तेरह औरतों समेत सती होगई॥ लहनासिंह सिन्धांवाला मारा गया फ़ौज लेनेको चलीगयी दलीपसिंह महाराज १८४३ और हीरासिंह वज़ीर के नामसे डौंड़ी फिरी॥ थोड़ेही दिनोंकेबाद राजा हीरासिंह और उसके मोतमद पंडित जल्लाकी बाज़ी बातें ऐसी ज़ाहिर होने लगीं कि फ़ौज का दिल उनसे हटगया। हीरासिंह नें विज़ारत छोड़कर जम्बूकी तरफ़ भागजानेका इरादा किया और फ़ौज की क़वाइद देखने के बहाने से शहरके बाहर निकला मगर शाहदरेसे पांचसौ क़दम भी आगे न बढ़ा होगा कि सिख सवारों ने पहुँचकर घेर लिया और यह कहा कि तू पंडित जल्लाको हमारे हवाले करदे लेकिन पंडित ने अपनी जान बचाने के लिये आगेही बढ़ने का इशारा किया और सिक्खोंका कहना कुछ भी न सुनने दिया॥ जब दसबारहकोस निकलगये और दिनक़रीब दोपहर के आया क़िस्मतका मारा पंडित जल्ला घोड़ेसे गिरपड़ा। सिक्खों ने उसीदम उसे टुकड़े २ करडाला॥ हीरासिंह प्यास की शिद्दत से पानी पीने के लिये एक गांवमें उतरा सिक्खोंने गांवमें आगलगादी और हीरासिंहको उसी जगहक़तल किया हीरासिंहका सिर लाहौरी दर्वाज़ेपर लटकाया गया। और पंडित जल्लाका सिर तमाम शहर

में फिराने के बाद कुत्तोंको खिलाया गया॥ निदान हीरा-
सिंह के मारे जानेपर दलीपसिंहका मामू जवाहिरसिंह
वज़ीर हुआ । लेकिन इसी अर्सेमें कुंवर पिशौरासिंह
ने बिगड़कर अटकका क़िला जादबाया ॥ जवाहिरसिंह
के आदमियों ने पहले तो दम दिलासादेकर उसे क़िले
से बाहर निकाला । और फिर रातके वक्त मारकर अटक
के दर्यामें डुबादिया ॥ कुंवर पिशौरासिंह महाराज रंजी-
तसिंह के लड़कों में से था । बहादुरी के बाइस फ़ौजका
प्याराथा ॥ इसके मारेजाने की ख़बर ज़ाहिर होतेही
तमाम सिपाह के दिलमें ग़ुस्से की आग भड़क उठी
इक्कीसवीं सितम्बर सन् १८४५ को सारालश्कर दिल्ली १८४५
दर्वाज़े के नज़दीक आपड़ा निदान जब जवाहिरसिंह ने
देखाकि जान नहीं बचती महाराज दलीपसिंह को
गोदमें लेकर हाथीपर सवारहुआ और अपनी बहन
यानी दलीपसिंह की मा रानीचंदा को भी जुदा हाथी
पर सवार कराकर अपने साथलिया ॥ लेकिन जब
सवारी फ़ौज के मुक़ाबिल पहुँची सिपाहियों ने उसके
हाथी को रोंका और फ़ीलवानको धमकाकर जबर्दस्ती
बैठया दिया ॥ महाराजको उसकी गोदसे छीनालिया ॥
और उसकाकाम गोली और संगीनों से उसी जगह
तमाम किया ॥ इस वज़ीर के मरने पर पंजाबके दर्मि-
यान पूरी बदअमली फैलगई और फिर वहां कोई
और वज़ीर मुक़र्रर न हुआ । रानी चंदाका सलाहकार

राजा लालसिंह रहा। बिल्कुल कामकाज उसीके कहने मुताबिक़ होनेलगा। पर इख़्तियार सब बात में फ़ौज का था॥ और फ़ौज को इस क़दर सामान लड़ाई का मौजूद होतेहुये बे शग़ल ख़ाली बैठे रहना पसंद न था। बैठे बिठाये जैसे किसी का सिर खुजलाता है ख़ाहमख़ाह सर्कार अंगरेज़ बहादुरसे लड़ना बिचारा॥ बहुत लोग यह भी कहते हैं कि मंसूबा इस लड़ाई का रानी और सर्दारोंने उठाया था। और फ़ाइदा उसमें यह सोचाथा॥ कि इसतरह तो फ़ौज लाहौर में कभी चुपचाप नहीं बैठी रहैगी। जैसे इतनेराजा और सर्दारों को मारडाला अब जो बाक़ी रह गयेहैं उनके ख़ून से दिल बहलावेगी॥ इससे बिह्तर यही है कि ये लोग अंगरेज़ों से लड़ें अगर सिक्खों की फ़तह हुई तो बेशक यह कलकत्तेतक अंगरेज़ोंका पीछा करतेहुए चलेजावेंगे जल्द लाहौरको न फिरेंगे। और जो इनकी शिकस्त हुई और अंगरेज़ोंके हाथसे मारेगये तो साहिबानआली शान किसी की जान के ख़ाहां नहीं सबके पिंशन मुक़र्रर होजावेंगे॥ ग्वालियर की नज़ीर बहुत दिलपिज़ीर थी बचे हुओंने अपनी जानका बचाव इसीमें देखाकि फ़ौज लाहौरसे निकलजावे। और अंगरेज़ों से लड़पड़े॥ निदान फ़ौजको अंगरेज़ों पर चढ़ाई करने का हुक्म जारी होगया। लार्डहार्डिंग इस भरोसेपर कि दोनों सर्कारों के दर्मियान सुलह और दोस्तीका अहदनामा बक़रार

और क़ायम था बिल्कुल ग़ाफ़िल रहा ॥ यहां तक कि राजा लालसिंह ने अपने बाईस हज़ार घुड़ चढ़े और चालीस तोपोंके साथ तेईसवीं नवम्बर को लाहौर से कूच किया । और सर्दार तेजासिंह भी सोलहवीं दिसम्बर को फ़ौज समेत वहां से चलकर उससे आ शामिल हुआ ॥ जब कि गवर्नर जेनरल को ख़बर पहुँची कि सिक्खोंकी फ़ौज फ़ीरोज़पुर के सामने आनपड़ी तो इधर से भी दौड़दौड़ पलटन और रिसालोंका कूचहोना शुरूहुआ। और कन्हा की सरा * के डेरोंसे गवर्नर जेनरल ने लड़ाई का इश्तिहार जारी कर दिया ॥ सिक्खों की फ़ौज जो इसपार उतरी थी । अस्सी हज़ार से कम न थी ॥ तेजासिंह और लालसिंह दोनों ने चाहा कि फ़ीरोज़पुर पर हमलाकरें लेकिन फ़ौज ने क़बूल न किया उनके दिलमें यह बात समा रही थी कि फ़ीरोज़पुर के क़िले में अंगरेज़ों ने सुरंगें खोद कर बारूत बिछा रक्खी है जिस वक़्त सिक्ख लोग हमला करेंगे। बारूत में आग लगा देवेंगे॥ ग़रज़ कई रोज़ तक इसी तरह चुपचाप फ़ीरोज़पुर के सामने डेरा डाले पड़ेरहे। पर जब सुना कि अंगरेज़ी फ़ौज का उनकी तरफ़ कूच हुआ तो वे भी वहां से अम्बाले की तरफ़ रवाना हुए॥ अठारहवीं दिसम्बर को तीसरे पहर जब कि राजा लालसिंह बारह हज़ार सवार और चालीस तोपों के

* अम्बाले के पास है ॥

साथ बढ़कर मुदकी से दो कोस के फ़ासिले पर आन पहुँचा अंगरेज़ी फ़ौज बड़ा लम्बा कूच तै करके मुदकी में पहुँची थी अभी डेरे भी खड़े नहीं हुये थे सिपाही लोग हाथ मुंह धोने और रोटी पकाने की फ़िकर में थे। गवर्नर जेनरल और कमांडर इन्चीफ़ दोनों यह ख़बर सुनतेही अपने अपने घोड़ोंपर होगये॥ और लश्करमें बिगुल लड़ाई का बजवा दिया। जिस दम अंगरेज़ी फ़ौज झपट कर सिक्खों से मुक़ाबिल हुई गर्द उड़ने के सबब अपना और बिगाना कोई भी नहीं सूझता था॥ सिक्ख लोग जो पहलेही से झाड़ियों की ओट में छुपरहे थे। फ़ुरसत के साथ अंगरेज़ी सवारों को अपनी बन्दूक़का निशाना बनाते थे॥ जेनरलसेल जलालाबादवाले और और कई बड़े अंगरेज़ इसलड़ाई में मारेगये। पर आख़िर अंगरेज़ों के सामने सिक्ख लोग कहां तक ठहर सकते थे गीदड़ों की तरह शेर के सामने से भागने लगे। और खेत साहिबान आलीशान के हाथ रहा। इक्कीसवीं दिसम्बर को अंगरेज़ीफ़ौज ने सिक्खों के मोरचों पर जो उन्हों ने फेरू* के पास जमाये थे हमला करादिया॥ उस रोज़ रात को भी लड़ाई होती रही। और मेजर ब्राडफ़ुट अम्बाले का अजंट उसी लड़ाई में काम आया। लेकिन सवेरा होने के पहलेही दुश्मनों में से वहां एक

---

* इस गांवका अस्ली नाम फ़ीरोज़ शहर बतलाते और इसीको अंगरेज़ फ़ीरोज़शाह कहते हैं॥

ो बाक़ी न रहा ॥ बहुत से तो उसी जगह अंगरेज़ी
सपाहियों के हाथ से कट मरकर मिट्टी में मिले और
ो बाक़ी रहे सब के सब सतलज की तरफ़ चले।
बरांव के पास हरी के पत्तन पर पहुंचकर डेरा डंडा
ो अपना सतलज के दहने कनारे रक्खा और आप
ड़ने के लिये सतलज के बायें कनारे रहे ॥ सतलज
ं नावों का पुल बना लिया था सर्कारी फ़ौजभी उसी
जगह उनके मुक़ाबिल जा पड़ी। और महीने भर
े ऊपर दोनों फ़ौज इसी तरह बेलड़ाई पड़ी रहीं ॥
अंगरेज़ लोग तो अपने बड़े क़िला शिकन तोपख़ाने के
जिसे अंगरेज़ी में सीज़ट्रेन कहते हैं पहुंचने के इन्ति-
ज़ार में थे। और सिक्ख लोग इस भरोसे पर थे कि
अब ये दबकर सुलह कर लेंगे ॥ इसी अर्से में जेनरल
सर हारीस्मिथ ने लुधियाने के नज़दीक अलीवाल में
सर्दार रंजोरसिंह को जिसने वहां कुछ सिक्ख जमा
किये थे मार हटाया। और राजा गुलाबसिंह तीन हज़ार
आदमियों के साथ जम्मूसे लाहौर में दाखिल होगया ॥
निदान दसवीं फ़ेब्रुअरी सन् १८४६ को नूर के तड़के १८४६
सर्कारी फ़ौजने सिक्खों पर जो अपने मोरचों के अन्दर†
ग़ाफ़िल पड़े हुये थे हमला किया। और थोड़ेही देर की
सख़्त लड़ाई में उनका पैर मैदान से उखाड़ दिया ॥

---

† इस किताब का बनानेवाला उस वक़्त सिक्खों के मोरचों में था सर्कार का भेजा हुआ गया था ॥

ऐसी घबराहट के साथ भागे। कि उनके हुजूमसे पुल भी टूटगया आधे से ज़ियादा आदमी सतलज में डूब कर मरे॥ गरज़ यह लड़ाई बड़ी भारी हुई। और इसी लड़ाई के हारने से सिक्खों की खुदमुख्तार सल्तनत जो रंजीतसिंह ने इस मिहनत से बनायी थी हमेशाके लिये ग़ारत होगई॥ सर्कारी फ़ौज उसी रोज़ दूसरे घाट पुल बांधकर सतलज पार उतरी। और फिर कोई ग़नीम सामने न रहने से बाफ़राग़त मंज़िल बमंज़िल लाहौर की तरफ़ कूच करने लगी॥ कसूर के डेरों में राजा गुलाबसिंह गवर्नर जेनरल की खिदमत में हाज़िर हुआ। और फिर लुनियानी के डेरों में महाराज दलीपसिंह को भी ले आया॥ बीसवीं फ़ेब्रुअरी को सर्कारी फ़ौज के साथ गवर्नर जेनरल लाहौर में दाखिल हुए। और नवीं मार्च को आम दर्बार में महाराजने अपने सब सर्दारों समेत आकर नये अहदनामे पर मुहरदस्तख़त किये॥ इस अहदनामे की रू से लाहौर के बिल्कुल इलाके जो सतलज इस पार थे। जलंधर दुआब समेत सर्कार की अमलदारी में आगये॥ ब्यास सतलज ठहरी पचासलाख रुपया लड़ाई के खर्च की बाबत महाराज ने नक़्द अदा किया। और एक करोड़ के बदले जम्बू और कश्मीर दे दिया कि वह सर्कार ने फिर रुपया लेकर महाराजगी के ख़िताब के साथ गुलाबसिंह को इनायत फ़र्माया॥ जो बात रानीचंदा

और उसके यार राजा लालसिंह ने गुलाबसिंह को ख़राब करने की सोची थी उसी से गुलाबसिंह की सारी बात बनगयी ! क्या महिमा है सर्वशक्तिमान जगदीश्वर की ॥ जिस क़दर तोपें लड़ाई में गयी थीं बिल्कुल सर्कार के हवाले करदी गयीं ॥ निदान गवर्नर जेनरलने महाराज और महारानी के कहने मुताबिक़ कुछ थोड़ीसी फ़ौज लाहौर में रहनेदी। और बाक़ी सब अपनी छावनियों को रवाना हुई ॥ और यह भी ठहर गयी कि सिक्खों की फ़ौज में बीस हजार से जियादा पैदल और बारह हजार से जियादा सवार न रहें। और गवर्नमेण्ट की इजाज़त बिदून ग़ैरमुल्कके आदमी अफ़सर न बनाये जावें॥ महाराज गुलाबसिंह ने जब कश्मीर में अपना क़ब्ज़ा करने के लिये आदमी और सिपाही भेजे वहां के सूबेदार शेख़इमामुद्दीन ने सबको मारकर निकाल दिया। और कश्मीर छोड़नेसे इन्कार किया। लेकिन लाहौर के अजंट हेनरी लारेंस साहिब जब कुछ थोड़ीसी अंगरेज़ी फ़ौज लेकर गुलाबसिंह को दख़ल दिलाने के लिये पीर पंचाल के घाटे के पास जा पहुँचे इमामुद्दीन उनके साथ लाहौर चलाआया। और कश्मीरमें बख़ूबी गुलाबसिंहका क़ब्ज़ा और दख़ल होगया ॥ इमामुद्दीनने गुलाबसिंहको कश्मीर न देनेका सबब यह बयान किया। कि राजा लालसिंह वज़ीरने कश्मीर छोड़नेके लिये मना लिखभेजा था बल्कि लाल-

सिंह का मुहरी ख़तभी इसमज़मूनका पेशकरादिया॥ लालसिंह इस क़ुसूरमें विज़ारतसे मौक़ूफ़ होकर नज़रबंद रहनेकेलिये पहले देहरे और फिर आगरे दोहज़ार पिंशनपर भेजागया। और कारवार रियासतका सर्दार तेजसिंह सर्दार शेरसिंह सर्दार शमशेरसिंह सर्दार नियानसिंह सर्दार अतरसिंह सर्दार रंजोरसिंह दीवान दीनानाथ और ख़लीफ़ानूरुद्दीनके सुपुर्द हुआ॥ इसअर्से में मीआदसर्कारी फ़ौजकी लाहौरमें रहनेकी पूरी होगयी थी। और नज़दीक था कि लाहौर छोड़कर सतलज इस पार चली आवै लेकिन सर्दारों ने यह बात न होने दी॥ और फ़ौज रहनेके लिये सर्कार से बहुत मिन्नतकी। तब नाचार सर्कार ने उनकी अर्ज़ क़बूल करके यह तजवीज़ ठहरायी॥ कि जबतक दलीपसिंह १६ बरसका न हो जितनी फ़ौज सर्कार मुल्ककी हिफ़ाज़तके लिये काफ़ी समझे लाहौर में रक्खे और उसका ख़र्च बाईस लाख रुपया साल लाहौर के ख़ज़ाने से मिला करे॥ और मुल्कका बन्दोबस्त और इन्तिज़ाम साहिब अजंट बहादुर की सलाह और हुक्म मुताबिक़ होता रहे। और रानी चन्दाके गुज़ारे को डेढ़ लाखरुपया साल नक़्द ठहरजावे॥ रानी चन्दा का इख़्तियार घटजानेके बाइस रोज़ बरोज़ हरतरहके फ़साद उठाने लगी। और दलीपसिंहको भी बहकाने और फुसलाने लगी॥ यहांतक कि जिसरोज़ सर्दार तेजसिंह को राजगी का ख़िताब

देना ठहरा था दलीपसिंहने साफ़ इन्कार करदिया कि हम इसको राजगी का तिलक नहीं करेंगे आखिर जब सर्दारों ने देखा कि रानी लाहौर में रह कर महाराज को भी खराब करेगी और मुल्क में फितूर डालेगी साहिब अजंट की सलाह के साथ गवर्नर जेनरल का हुक्म हासिल किया। और उसे पिंशन घटाकर शेखूपुरे में जो लाहौर से १६ कोसके फ़ासिले पर है नज़रबंद कर दिया॥

लार्ड डलहौसी।

लार्ड हार्डिंग अठारहवीं जनवरी सन् १८४८ को विलायत चलेगये। और उनकी जगहपर लार्ड डलहौसी गवर्नर जेनरल मुक़र्रर होकर आये॥

सन् १८४७ के आखिर में दीवान मूलराज मुलतान के नाज़िम ने लाहौर में आकर अपनी निज़ामतका इस्तेफ़ा दाखिल किया और सबब इसका यह बयानकिया कि जमाबढ़जाने और पर्मिटकाबन्दोबस्त दूसरी तरहपर होजाने से उसको नुक़सान पड़ा। और मुलतानियोंका मुराफ़ा यानी अपील लाहौर में सुनेजानेसे उनपर उसका पहलासा दबाव बाक़ी न रहा॥ निदान इस्तेफ़ा मंजूर हुआ और अगन्यू साहिब और लेफ्टिनेंट अंडर्सन साहिब इसमुरादसे मुल्तान भेजे गये कि उससूबेको मूलराजसे लेकर सर्दार कान्हासिंह नये नाज़िमके सुपुर्द करदें अढ़ाई हज़ार पियादे और सवार

१८४७

और ६ तोपें उनके हमराह थीं उन्नीसवीं अप्रैल सन्
१८४८ १८४८ को जब दोनों साहिबोंने क़िलेके अन्दर जाकर
बख़ूबी मुलाहज़ा कर लिया। मूलराज ने उसको उन
के सुपुर्द किया॥ वे गोरखाली पल्टन के दोकम्पनों को
क़िलेमें छोड़कर बाक़ी आदमियोंके साथ अपने डेरोंकी
तरफ़ लौटे। दीवान मूलराज + और सर्दार कान्हसिंह
दोनों साथथे॥ क़िलेके दर्वाज़ेसे बाहर निकलतेही किसी
सिपाहीने अगन्यू साहिबको बर्छी और तलवार से घाय-
ल किया। और फिर थोड़ीही दूर आगे अंडर्सनसाहिब
का भी यही हाल हुआ॥ मुजरिम भागगये। साहिबोंको
उसके आदमी उठाकर डेरेमें लाये॥ दूसरे दिन सुबह
को क़िले से अंगरेज़ी लश्करपर गोले चलनेलगे। शाम
तक अंगरेज़ीफ़ौज के सब लोग मूलराज से जामिले
कुल पचीसतीस आदमी दोनों साहिबोंकेपासरहगये॥
इक्कीसवीं को मूलराजकी फ़ौज ने निकलकर इन पर
हमला किया। और दोनों घायलसाहिबोंको उसी जगह
मारडाला॥ जब यह ख़बर लाहौर में पहुँची उसी दम
कुछ फ़ौज शेरसिंह के साथ मुल्तानको रवाना कीगई॥
और बहावलपुरके नव्वाबको और लेफ्टिनेंटएडवार्डिस

+ कहते हैं कि मूलराज साहिबके पास जानेको तयार था। लेकिन इसी अर्से में किसीने उस के रिसालेदार रंगराम को जिसने उसे साहि-बों के पास जाने की सलाह दी थी ज़ख्मी कर दिया इसवास्ते वह डरकर घबराकर अपने मकान को चलागया

को जो उन दिनों हजारे की कमानपर था और फ़ी-
रोज़ पुर की फ़ौज को हर तरफ़ से मदद के लिये कूच
करने की ताक़ीद हुई ॥ इसी अर्से में लाहौरके दर्मिया-
नरानीके आदमियोंने सर्कारी फ़ौजके कुछ सिपाहियों
से मिलकर इस तरह की साज़िश की कि एकही
दिन वहां सब साहिब लोगों को जहर दें और
क़तल कर डालें लेकिन भेद खुलजाने के सबब
रानीचन्दा तो चनारके क़िले में क़ैद रहने के लिये*
बनारस भेजीगयी। और उसके आदमी गंगारामखान-
सिंह और गुलाबसिंह फांसी दिये गये बाक़ी मुफ़सिदों
ने अपने अपने क़ुसूरके मुआफ़िक सजापाई गवर्नरजेन-
रलका इरादाथा कि जाड़ेतक यह मुहिम्म मुलतवीरहे।
लेकिनइकबाल जबर्दस्त क्यों ऐसा चट्टालगे ॥ लेफ्टि-
नेंट इडवार्डिस जो सरहद्द पर था बारहसौ जवान और
दो तोप लेकर सिन्धु इस पार उतर आया ॥ और
कर्नलकोर्टलैंडके साथ जो कुछ थोड़ीसी फ़ौज मुल्ता-
नकी तरफ़ जाती थी और नव्वाब बहावलपुर के यहां
से जो कुछ थोड़ीसी फ़ौज पहुँचगयीथी शामिलकर के
अठारहवीं जूनको किनेरी की लड़ाई में और पहली
जुलाई को सादूसैन की लड़ाई में मूलराज को मार

---

* चनार के क़िलेसे नयपाल भागी और वहां बहुत दिनोंतक महाराज
जंगबहादुर के पास रहकर दलीपसिंह के इंगलिस्तान गयी मरने पर
उसकी लाश दाह क्रिया के लिये गोदावरी के तीर पंचवटी में आयी ॥

भगाया ॥ मूलराज मुल्तान के क़िले में वंद हुआ। जेन-
रल ह्विश लाहौरसे सातहज़ार आदमी लेकर लेफ्टिनेंट
इडवार्डिस की मदद को पहुँचा और सर्दार शेरसिंहको
सिक्खों की फ़ौजके साथ मुल्तान जानेका हुक्म मिला-
इसअर्से में शेरसिंहका वाप सर्दार चत्तरसिंह जो हज़ारे
की कमानपर था मूलराज की जानिव होगया और
अटक का क़िला लेना चाहा चौदहवीं सिप्तम्बरको स-
र्दार शेरसिंहभी अपने पांचहज़ार सिक्खोंके साथ मूल-
राज की तरफ़ चला गया ॥ इधर गुरू महाराज सिंह
ने कुछ सिक्ख जमाकरके होशयारपुर के पास लूट-
मार मचादी उधर कांगड़े के पास कई छोटे २ राजा
वाग़ी होगये गोया तमाम पंजाव में ग़दरमचा। शेरसिंह
की जमाअत बढ़नेलगा लाहौरको कूचकिया ॥ काबुल
वालों से भी साज़िस होनेलगी अमीर दोस्तमुहम्मद
ख़ांने आकर पेशावरपर अपना क़ब्ज़ा किया। और वहां
के अजंट मेजर लारंसको इनमुफ़सिदों ने क़ैदकरलिया॥

उधर गवर्नर जेनरल बहादुरने बम्बई से सातहज़ार
आदमी को मुल्तान रवाना होनेका हुक्म दिया। और
अक्तूबर के आख़िरतक बंगाले का लश्कर भी फ़ीरोज़-
पुरमें जमा होने लगा। सोलहवीं नवम्बर को चार गोरे
की और ग्यारह हिन्दुस्तानी पल्टनें और तीन गोरे
के और दस हिन्दुस्तानी रिसाले और ७८ तोपें लेकर
कमांडर इनचीफ़ लार्डगफ़ रावी पार उतरे। बाईसवीं

को चनाबपर रामनगर में और तीसरी दिसम्बर को शाह दूल्हापुर में लड़ाई हुई शेरसिंह ने पीछे हटकर झेलमपर चेलियानवाले में मोरचे जमाये। वहां तेरहवीं जनवरी को बड़ी कड़ी लड़ाई हुई खेत सर्कार के हाथरहा लेकिन चारतोप खोई गयीं और ३२५७ आदमी और ८६ अफ़सरों का नुक़सान हुआ॥

बम्बई की फ़ौज पहुँचजानेसे जेनरल ह्विशने मुल्तान के क़िलेपर हम्ला करनेकी तयारीकी लेकिन २७ दिन लड़कर और थककर बाईसवीं जनवरी १८४९ को मूलराज ने क़िलाहवाले करदिया और जेनरल ह्विशके पास चला आया॥ जेनरल ह्विश कमांडरइन्चीफ़ से जामिला। और इसके शामिलहोनेसे कमांडरइन्चीफ़ के पास सौ तोपके साथ बीसहज़ार का लश्कर होगया॥ शेरसिंह के पास भी गुजरात में ६० तोप और पचास हज़ार आदमियों की भीड़ भाड़थी। बाईसवीं फेब्रुअरी को लड़ाई हुई॥ सिक्खों ने शिकस्तखायी। ५३ तोप सर्कार के हाथआयीं अंगरेज़ों ने सिंधतक पीछाकिया बारहवीं मार्च को शेरसिंह और चतरसिंह ने जो कुछ रहगया था सबसमेत अपने तईं जेनरल गिलबर्ट के हवाले करदिया॥ दोस्तमुहम्मद अपने आदमी लेकर काबुल चलागया। एक लड़का उसका वहांकैद रहा॥ गुरु महाराजसिंह पकड़ागया पहाड़ी राजाओं ने भी अपने कियेका फलपाया। उन्तीसवीं मार्च को गवर्नर जेन-

१८४९

रल लार्ड डलहौसी ने पंजाब की ज़ब्ती का इश्तिहार जारीफ़र्माया॥ ख़ज़ाना तोपख़ाना बिल्कुल सर्कार के क़ब्ज़े में आया। कोहनूर हीरा क़ैसरहिंद एम्प्रेसविक्टोरिया को नज़र भेजागया॥ दलीपसिंह पांचलाख रुपये सालपिंशन पर फ़तहगढ़ यानी फ़र्रुख़ाबाद गये। और वहां से ईसाई होकर इंगलिस्तान में जारहे॥ सर्दार चतरसिंह शेरसिंहके साथ नज़रबन्द रहनेको कलकत्ते भेजागया। मूलराज कालेपानी यानी अंडमान टापू को रवाना हुआ लेकिन रास्तेही में मरा॥

पंजाब की हुकूमत के लिये गवर्नर जेनरल ने बोर्ड आफ़अडमिनिस्ट्रेशन मुक़र्रर किया उस में सरहेनरी लारंस उनकेभाई जानलारंस और मांसल तीनमिम्बर रहे। थोड़ेही दिनोंबाद मांसल की सररावर्ट मांटगमरी आगये॥ जिसतरह लार्ड एलनबराने सिन्ध अंगरेज़ी अमलदारी में मिलाया था लार्ड डलहौसी ने पंजाब मिलाया। लेकिन लार्ड डलहौसी ने अपने बिलायत जानेपर इससे बढ़कर जियादा उमदा और बिहतर इन्तिज़ाम शायद हिन्दुस्तान के और किसीहिस्से में नहीं छोड़ा॥

१८५२ सन् १८५२ ई० में बर्म्हासे दुबारालड़ाई हुई। और अंगरेज़ी अमलदारी पेगूतकपहुंची॥ हाल इसका यह है किसन १८२६ के अहदनामे मुताबिक़ बर्म्हाके बंदरों में अंगरेज़ी सौदागरों की ख़ातिरदारी होनी चाहिये

थी। लेकिन अब रंगूनके हाकिमने उनपर जुल्म और सख़्ती करनी शुरूकी॥ लार्ड डलहौसी लड़ना न चाहता था लेकिन जब देखा कि बर्म्हावाले अक्ल से दूर और उनको राह बतलाना निहायत ज़रूर आठ हजारआदमी जेनरल गाडविनके साथ रवाना किये। अपरैल सन् १८५२ में इन्होंने बर्म्हावालों को शिकस्त देकर रंगून और मर्तबान उनसे छीन लिया और दिसम्बर में लड़ाई ख़र्च के बदले और आगे को ऐसी हर्कत से रोकनेकेलिये कोर्ट आफ़ डैरेक्टर्सके हुक्मके मुताबिक पैगूके सबइलाक़े अंगरेज़ी अमलदारीमें मिलगये गोया वहांवालों के दिन फिरे॥

याद होगा कि सन् १८१८ में अंगरेजोंने सितारा शिवाजी की औलादको देदिया था और सन् १८३९ में गद्दीनशीन राजा को ख़ारिज करके उसके भाई को बैठाना पड़ाथा॥ यह भाई सन् १८४८ में लावलद मरा। लेकिन उसने मरते वक्त एक लड़का गोद लिया था॥ कोर्टआफ़ डैरेक्टर्स की रायमें अहदनामे मुताबिक़ इसगोद लिये लड़के को गद्दीका हक़ नहीं पहुंचताथा। पस रअय्यतके फ़ाइदेकीनज़रसे लार्डडलहौसीने उस लड़केका अच्छापिंशन मुक़र्ररकरके सितारालेलिया॥

इसी तरह सन् १८५३ में राजाके मरने पर नागपूर ज़ब्ती में आया। इसने कोई लड़का गोद नहीं लियाथा तमाम इलाक़ेमें अंधेरखाता मचरहा था॥

झांसी की ज़ब्ती का भी ऐसाही सबब हुआ शिवराव भाऊके साथ जो वहां पेशवा की तरफ़से था सन् १८०४ में अहदनामा होगया था। सन् १८१८ में जब बुंदेलखंड पेशवासे अंगरेज़ोंने लेलिया झांसीका इलाक़ा भाऊके वारिसको बहाल रक्खा॥ उसके पोते राव रामचन्द्रको सन् १८३२ में राजा का ख़िताब दिया। और उसने सन् १८३५ में मरतेवक़्त एक लड़का गोद लिया॥ सर चार्लस मेटकाफ़ने गोद लेना नामंज़ूर करके भाऊके एक लड़के रावगंगाधरको जो जबतक जीता था गद्दीपर बिठाया। इसके वक़्त में ऐसी बेइन्तिज़ामी हुई कि अठारहकी जगह कुल तीनही लाख वसूल होने लगा॥ इसनेभी सन् १८५२ में मरतेवक़्त एक लड़का गोद लिया लेकिन सर्कारने मंज़ूर नहीं किया। और दूसरा कोई वारिस न रहनेके सबब सारा इलाक़ा ज़ब्त करलिया॥

उसी साल कर्नाटक भी मन्दराज हातेमें मिला सन् १८०१ में अज़ीमुद्दौलाको वहांका नव्वाब बनाया था लेकिन अहदनामे में "नस्लन् बाद नस्लन्" यानी औलादी होनेका कुछ ज़िक्र नहीं था॥ सन् १८५२ में जब उसका पोता लावल्द मरा आज़मजाह उस के चचाने दावा गद्दीका किया। सर्कारने नामंज़ूर करके उसी और उसके कुनबेके लिये अच्छा ख़ास पिंशन मुक़र्रर करदिया॥

सन् १८०१ के अहदनामे मुताबिक़ हैदराबाद के नव्वाब को ५००० पियादे २००० सवार और चार बाटरी तोपखानेकाख़र्च जो सर्कारकी तरफ़से कांटिंजंट के तौरपर वहां रहताथा अदा करना चाहिये था लेकिन इसमें हीलाहवाला होनेलगा। और रुपया बाक़ी पड़ा सन् १८४३ में नव्वाब को इत्तिला दीगयी कि अगर आगे रुपया बराबर अदा न होगा कुछइलाक़ा निकाल लिया जायगा॥ मुआमला और भी बदतर हुआ नाचार १८५१ में लार्डडलहौसीने कहला भेजा कि अब इलाक़ा लेना पड़ा गो नव्वाब के आदमियों ने रुपया अदा करनेकी कोशिशकी लेकिन जबज़ाहिरा नाउम्मेदी मालूमहुई सर्कारसे सन् १८५३ के अहदनामे मुताबिक़ फ़ौज ख़र्चके लिये बराड़ वग़ैरः इलाक़ों में अपना इन्तिज़ाम करलिया। और फिर सन् १८६० के अहदनामे मुताबिक़ सिर्फ़ बराड़ काफ़ीसमझकर बाक़ीसब इलाक़ों को छोड़दिया॥

सन् १७९९ में जब लार्ड विलिज़्ली ने मैसूर की रियासत फिर क़ाइम की अहदनामे में यह शर्त लिख गयी थी कि जब ज़रूरतहोगी सर्कार अपना इन्तिज़ाम करलेगी। सन् १८३० में जब राजाकी गफ़लत और ज़ियादती से रअय्यतने सर्कशी और बगावत इख्तियार की लार्ड बेंटिंक ने वहांकी हुकूमत अपने हाथसेंलेली॥ राजाको अहदनामे के मुताबिक़ आमदनी का रुपया

जो खर्चसे बचा हवाले किया। महसूल घटा रअय्यत को सुख चैन मिला॥ गरज़ ऐसा अच्छा इन्तिज़ाम हुआ। कि जहां ४४ लाख मुशकिल से वसूल होताथा ८२ लाखहोने लगा॥ लार्ड हार्डिङ्ग से राजा ने अपने इख्तियारकी बहाली चाही। लेकिन यह बात मंज़ूर न हुई। सन् १८५६ में उसने लार्डडलहौसीसे चाहा। उसने भी नामंज़ूरकी॥ लार्ड डलहौसी को भरोसा कोर्टआफ़ डैरेक्टर्सका था। और कोर्टआफ़ डैरेक्टर्स को निरा रअय्यतके फ़ाइदेका लिहाजथा +॥

उसी साल यानी जिससें नागपुर झांसी और कर्नाटकवाले लावलदमरे बाजीराव पेशवा भी बिठूर में ७५ बरसका होकर लावलदमरगया। उसके गोद लिये लड़के नान्हारावने आठलाखका पिंशन जो सन् १८१८ में बाजीराव को दिया गयाथा अपने नाम बहालचाहा॥ यह क्योंकर होसक्ताथा। पिंशन तो हीन हयात था॥ नान्हाने विलायत मुख्तार भेजा। यहां और विलायत दोनों जगहसे उसका दावा डिसमिस हुआ॥

अब कुछ हाल अवधकी ज़ब्तीका सुनो यह भारी काम लार्डडलहौसीका गोया आखिरीथा। सन् १७७६

+ राजा अपने इख्तियारकी बहाली चाहकर [illegible] और जो जो गवर्नर जेनरल हुये सबकी तरफ़से बराबर क्या लड़का गोद लेना और नामकी रियासत का वारिस बनाना नामंज़ूर होताआया लेकिन सन् १८५८ में मैजेस्टी [illegible] दोनों बातों को मंज़ूर [illegible] लड़का [illegible] नाबालिग है जब बालिग होकर इस के लायक़ समझा जावेगा इख्तियार बहाल होजावेगा॥

ही में वारनहेस्टिंगज़ने नव्वाब आसिफ़ुद्दौलाको रअय्यत की तबाही और बद इन्तिज़ामीसे चिताया था॥ लार्ड कार्नवालिस और सरजानशोर भी चिताता रहा। यहां तक कि जब अंगरेज़ोंकी मददसे सआदतअली खां नव्वाब हुआ लार्ड विलिज़लीने सन् १८०१ में इस बातका कि रज़ीडंट की सलाह मुताबिक़ इन्तिज़ाम दुरुस्त करे एक अहदनामा लिखवा लिया॥ तीस बरस बाद लार्ड वेंटिंक को बख़ूबी मालूम होगया कि बेमुदाख़लत काम न चलेगा। कोर्ट आफ़ डैरेक्टर्स से इजाज़त हासिल करके नसीरुद्दीनहैदरको धमकाया कि अब इख़्तियार छीन कर पिंशन मुक़र्रर होजायगा॥

इस धमकी से कुछ बहुत काम नहीं निकला। लार्ड अकलैंड और ज़ियादा ज़रूरी मुहिम्मों में फँसा रहा॥ सन् १८४६ में यानी पहली पंजाबकी लड़ाई ख़तम होने पर गवर्नमेंट ने फिर अवधकी तरफ़ तवज्जुह की॥ और रअय्यतकी तबाही और परेशानीको ख़बरली लार्ड हार्डिङ्ग खुद लखनऊ गये और बादशाह + को ज़ुबानी समझाया। और फिर जल्दही सन् १८५१ में लार्ड डलहौसी ने कर्नल स्लीमनको वहांका रज़ीडंट मुक़र्रर किया॥ और हुक्म दिया कि बिल्कुल इलाक़े में दौरा करके अपनी आंखों से रअय्यतकी हालत देखे। और वहां के इन्तिज़ामका रिपोर्ट करे॥ रिपोर्ट आया।

+ बादशाहका ख़िताब मिलनेका हाल ऊपर लिख आये हैं॥

लेकिन उससे वदतरहोना मुमकिन न था गोया दुन्याके ज़ुलम और ज़ियादतियोंकी फिहरिस्त थी रअय्यत की तवाही और परेशानी से भरीथी॥ वादशाह ऐश में डूवेहुये थे। अदालत के मालिक गवैये वजवैये थे॥ उहदेदार अपने उहदे नज़राना देकर मोल लेते थे। और फिर रअय्यतको लूटकर अपनी जेव भरते थे॥ तो भी लार्ड डलहौसीने ज़ब्ती मुल्तवी रक्खी। और सन् १८५४ में जेनरल ऊटरम को रज़ीडेंट मुक़र्रर करके नये सिरेसे तहक़ीक़ात का हुक्म दिया जिससे मालूमहो कि कर्नेल स्लीमन के रिपोर्ट पर वादशाह ने इन्तिज़ाम की क्या दुरुस्ती की॥ जेनरल ऊटरम ने ख़ूब तहक़ीक़ करके वहुत अफ्सोसकेसाथ लिखा कि दुरुस्ती कुछभी नहींहुई है। और न होने की कुछ उम्मेद है॥ लार्डडलहौसी ने देखा कि अब चुपरहना गुनाहमें दाख़िलहोगा कोर्ट आफ़ डेरेक्टर्स को लिख भेजा कि वादशाह वनारहे। लेकिन दीवानी फ़ौजदारीका इख़्तियार लेलिया जावे॥ जेनरललो जो कर्नेल स्लीमनसे पहले रज़ीडेंट थे। अब कौंसल में भरती होगये थे। मेम्बरों ने लार्ड डलहौसी की रायसे इत्तिफ़ाक़ किया लेकिन दो मिम्बरोंने सिवाय ज़ब्ती के और किसी तदबीर से कुछ फ़ायदा न देखा॥ वो सहीह थे। आख़िर कोर्ट आफ़ डेरेक्टर्स ने बोर्ड आफ़ कंट्रोल की मंज़ूरीके साथ ज़ब्ती का हुक्म लिख भेजा वादशाहको

पंदरहलाख पिंशनदिया। बादशाह ने अपना देरा कल-कत्ते में जा किया॥

कम्पनीकी सनद में जो मीआद गुज़रने पर सन् १८५३ में नयी मिली। नयी बातें तीन दर्ज हुईं॥ पहले यह कि कोर्ट आफ़ डैरेक्टर्स के मिम्बरों की तादाद तीससे अठारह होगयी। उसमें भी छः की मुक़र्ररी शाही अहलकारों के इख़्तियार में रही॥ दूसरे बंगाले और पंजाबका एक एक लेफ़्टिनेंट गवर्नर जुदा मुक़र्रर हुआ। तीसरे सिविल सर्विस के लिये इम्तहान का क़ायदा मुक़र्रर होकर उसपर से कोर्ट आफ़ डैरेक्टर्स का इख़्तियार उठगया॥

लार्ड केनिंग

ग़रज़ लार्ड डलहौसी अपनी मीआद ख़तम होने पर विलायत चलेगये। और यहां उनकी जगहपर लार्ड-केनिंगआये॥ अब मुख़्तसर सा कुछ हाल बलवे का लिखते हैं। अंगरेज़ लोग अब तक इसके असली सबब पर बहस करते हैं॥ उनको शायद इससे चढ़कर कभी कोई तअज्जुब न हुआ होगा और हुआही चाहे॥ जिनके मुल्क इंगलैंडमें ज़ियादा आदमी एकही क़ौम और एकही मज़हबके बसतेहैं क़ानून मुताबिक़ वकालतन बादशा-ही करतेहैं अपने मुल्कके लिये जानदेनेको तैयार रहते हैं औरतें भी मुल्कदारीके मुआमलों में दख़ल देती हैं गोया सौ स्याने एकमतकी मसल पर चलते हैं वह क्यों

न इसबातसे तअज्जुबमें आवें कि सिर्फ़ एक चिकनाई लगे कारतूस काममें लाने के हुक्मसे बंगालेकी सारी फ़ौज बिगड़जावे वह फ़ौज जो सैकड़ों लड़ाइयों में सर्कार के नमककी शर्त बजालायी और अपने अफ़सरों को मा बाप समझती रही अब उन्हीं अफ़सरों का गला काटे। फ़ौजके बिगड़तेही सारे हिंदुस्तान में खलबली पड़जावे बदमआश हरतरफ़ लूट मार मचा देवें। रईस अमीर जो अंगरेज़ों के बढ़ाये बढ़े और जिनके बुलाये अंगरेज़आये कुछ परवा न करें बल्कि जिनको ऐसेवक़्तमें सर्कार के लिये जानमाल सब निछावर करना चाहिये था बहुतेरे उनमें से अलग रहकर तमाशा देखाकरें॥ लेकिन हमलोगोंके लिये इसमें कोई तअज्जुबकी बात नहीं है फ़ौजमें तो सिपाहियों को यक़ीन होगया था कि इसतरह पर कारतूसों के काम में लाने का हुक्म जान बूझकर सिर्फ़ उनकी जात लेनेके लिये दियागया है। उन नये कारतूसोंमें इसलिये कि बंदूक़ की नली में फँस न रहें चर्बीकी चिकनाई लगायी जातीथी और चर्बी का छूना हिन्दुओं को मनाहै। ये बेख़बर सिपाही इतना कहां सोच सकते थे कि वह कारतूस दूसरी तरह पर भी काममें आसकताहै जिसमें उनकी जात न जावे। और ज़रूर कुछ तिदारुक होगा अगर अच्छी तरह इन मुश्किलों की ख़बर सर्कारतक पहुंचाई जावे॥ सिपाहियोंने समझा कि बड़ी बेइज़्ज़ती हुई ग़रज़मंद और

मतलबी यारों ने उनको और भी भड़काया कि यह उनकी बेइज्ज़ती जानबूझ के कीगयी॥ निदान देखतेही देखते यह बलवे की हवा सारे हिन्दुस्तान में फ़ैली बिरलीही छावनियां तो इस के ज़हर से बची रहीं बाक़ी सब में सिपाहियों ने आफ़त मचायी। जब सिपाही बिगड़े तो फिर बदमआशों का उभड़ना क्या तअज्जुब है॥ हाकिमका डर न रहने से लूटमार में कौनसा तरद्दुद है। जब ऊंचीज़ातवाले सिपाहियों ने मेरठ में अपने अफ़सरों पर गोली चलाकर जेलख़ाना खोलदिया॥ तो गूजरों का क्या क़सूर है "जिसकी लाठी उसकी भैंस" सबने इसीपर अमलकिया। और अगर पूछो कि शरीफ़ों ने रईसों ने बड़े आदमियों ने बलवा दबाने में सर्कार को मदद क्यों नहींदी॥ तो हम यही कहेंगे कि इनमें ऐसी हिम्मत और बहादुरी किस ने पायी। भला यह बनिये महाजन लाला बाबू हथियार चलाने लाइक़ हैं? बनज बेवपार रुपये पैसेका काम जो चाहो इनसे ले लो॥ राजा महाराजा अपने इलाक़ोंकी आमदनी ऐश आराम में ख़र्च करते हैं हिफ़ाज़तका भरोसा सर्कार पर रखते हैं जुलूसके लिये कुछ सवार पियादे रखलिये तो क्या वह सर्कार के क़वाइद सीखे सिपाहियों से लड़सकते हैं ज़रा ग़ौरकरो। ये लोग अपनी ही जान बचानेकी फ़िक्रमें पड़गयेथे॥ हां सर्कार की फिर सल्तनत जमने की दुआ दिल से मांगते थे।

सिवाय इसके "लायलटी" यानी सर्कार की खैरख़ाही के मानी में फ़रंगिस्तान और हिन्दुस्तान के दर्मियान बड़ा फ़र्क़ है जिसके नामकी डौंड़ी पिटे उसका हुक्म मानना यही यहांकी ख़ैरख़ाही है॥ सैकड़ों बरस से जो बादशाहियों का उलट पुलट देखा किये हैं अब उसकी परवाहही नहीं है। पठान मुग़ल मरहठों के ज़ुल्म ज़ियादती ने इनको ऐसा बिगाड़दिया। कि "पेट्रिआटिज़्म" के लिये हमको यहांकी बोली में कोई लफ़्ज़ नहीं मिला। इनकेख़यालहीमें वह आज़ादी नहीं आसकती जिसकेलिये अंगरेज़ों ने स्टुआर्ट के खानदान को तख़्त से उतारा॥ न वह इटालीवालों की ख़ुदमुख़्तार होनेकी ख़ुशी या जर्मनीवालों की क़ौमी हमदर्दी इनके ख़यालमें आसकतीहै जिससे वह मुल्क एकहोकर ऐसी बड़ी "इम्पायर" यानी शाहनशाही बनगया॥

ग़रज़ यह सन् १८५७ के बलवे की जड़ सिर्फ़ हिंदुस्तानी फ़ौज का बिगड़ जानाहै कि जिसका इलाज उसवक़्त विलायती यानी गोरों की फ़ौज यहां कम रहने के सबब जैसा चाहिये तुर्त न होसका और बग़ावत के मानी तो कुल इतनेही लगसकते हैं कि बदमआश और मुफ़्लिसों को जैसे अंधे के हाथ बटेर लगजाय मन मानता मौक़ा मिलजाने से ग़दर मचगया॥

अब कुछ थोड़ा थोड़ा सा हाल इस बलवे के बड़े २ हंगामों का लिखा जाताहै बाईसवीं जनवरी सन् १८५७

को कलकत्ते के पास दमदमे में जहां तोपखाना और फ़ौज रहती है सत्रहवीं हिन्दुस्तानी पल्टन के कमान अफ़सर (कमांडिंग आफ़िसर) को मालूमहुआ कि सिपाही लोग यह अफ़वाह सुनकर कि कारतूसों में गाय और सूअरकी चरबी लगी है निहायत घबरागये हैं और जड़ इस अफ़वाह की यह बतलाते हैं कि तोप-खानेके किसी खलासी ने वहां किसी सिपाहीसे पानी पीने को लोटा मांगा जब सिपाही ने अपना लोटा देने से इन्कारकिया तो खलासीने कहा "खैर हमको लोटा देने से तो तुम्हारी जात जाती है। लेकिन जब गाय और सूअरकी चरबी मले कारतूस दांतसे काटोगे तब देखेंगे तुम्हारी जात क्या होती है"॥ सिपाहियों से यह भी मालूम हुआ कि इस तरह की खबर तमाम हिन्दु-स्तान में फैलगयी है। और अब छुट्टी लेकर घरजाने पर घरवाले काहेको साथ खायें पीयेंगे यह बड़ी दहशत लगी है। इस बात की तहक़ीक़ात हुई और उसीमहीने की सत्ताईसवीं को गवर्नर जेनरल ने हुक्मदेदिया कि चरबी की जगह जो सर्कारी मेगज़ीनों में लगायीजा-तीथी सिपाही खुद बाज़ारसे तेल और मोम खरीदकर अपने हाथसे कारतूसोंमें लगालेवें पंजाब को भी यही हुक्म भेजा गया। लेकिन अफ़सोस है कि न गज़ट में छापा गया और न तमाम छावनियों में फ़ौज को सम-झाया गया॥

यह हवा दमदमे से बहरामपुर पहुंची। वहीं उन्नीसवीं हिन्दुस्तानी पल्टन थी॥ उन्नीसवीं फ़रवरी को रातकेवक़्त परेडपर जमाहुई। कमान अफ्सर १८० सवार और दो तोपें लेकर आया सिपाहियों ने कहा कि साहिब यह सुनकर कि हमलोगों से ज़बर्दस्ती कारतूस कटवानेको गोरे बुलवाये गये हैं बड़ा डर पैदाहुआहै कर्नल मिचिलने समझाया कि अब कारतूस दांतसे नहीं काटने पड़ेंगे हाथसे तोड़कर बंदूक़ में भरे जावेंगे पल्टन अपनी लैनको चलीगयी॥ लार्ड कानिंगने इस ख़याल से कि दूसरी पल्टनें भी उन्नीसवीं का तरीक़ा न इख़्तियारकरें उन्नीसवीं पल्टनको कलकत्ते के पास बारकपुरकी छावनी में बुलवाकर उसका नाम कटवादिया। इसीकेबाद वहां बारकपुर में चौंतीसवीं पल्टनके किसी सिपाहीने अपने किसी अफ़सरपर चोट चलायी उसके साथियों ने उसे गिरफ़्तार तक न किया॥ सज़ामें इस चौंतीसवीं पल्टनकीभी सात कम्पनियोंकानाम काटा गया। और दो आदमियोंके लिये फांसीका हुक्म हुआ॥ सत्तरहवींके दो आदमी कालेपानी भेजेगये। गवर्नमेंट का इरादा था कि इस तरहपर झटपट सज़ादे दिलाकर सरकशी दबादेवे लेकिन सिपाही उलटे और भी बिगड़गये॥ पांचवीं मई को मेरठ में तीसरे रिसालेके पचासी सवारोंने कारतूस काममेंलानेसे इन्कारकिया। और नवीं को कोर्टमार्शल में उन्हें सख़्त मिहनत के

साथ जुदा जुदा मीआदकी क़ैदका हुक्म मिला ॥ दूसरेही दिन तमाम हिंदुस्तानी फ़ौजने जो उसवक़्त वहां छावनी में थी यानी उस रिसालेके साथ दो पल्टनोंने मिलकर बलवा किया। क़ैदियोंको जेलख़ानेसे निकाल दिया॥ अपने अफ़सरोंपर गोली चलायी छावनी में आगलगादी फ़रंगी जो हाथलगे सबकोमारडाला। न औरत न बच्चा उन पापियोंके हाथ से बचा॥ और तअज्जुब यह कि बाईस सौ गोरों की फ़ौज वहां मौजूदथी लेकिन कमान अफ़सर ने कुछ हाथ पैर न हिलाया। तमाम बलवा-इयों को मज़ेसे दिल्ली चलेजाने दिया॥ इन्होंने दिल्ली में भी वही मेरठ का सा हाल किया। शाह आलमके पोते बहादुरशाह कोजो वहां क़िलेमें गवर्नमेंटसे पिंशन पाताथा बादशाह बनाया॥ बलवाई अपने जोश में बावले बन गये थे॥ भला बुरा या वाजिब ग़ैरवाजिब कुछ नहीं देखते थे॥ दिल्ली में गोरों की फ़ौज न थी॥ यही बड़ी आफ़तों की जड़हुई बहुतेरे मुसलमान दिल्ली की बादशाही फिर क़ाइम होना चाहतेथे वे ईसाइयों की हुकूमत से निकलकर फिर पुराने लंबे चौड़े ख़िताब और बड़ी बड़ी जागीरों के मिलने का ऐसे वक़्त में पूरा भरोसा रखते थे बाज़े अव्वल के पूरे हिन्दूभी उनके शा-मिल होगये॥ निदान देखतेही देखते यह बलवे की आग ऐसी फैली कि एक दफ़ा तो गोया दुआब अवध और रुहेलखण्ड से सिवाय मेरठकी छावनी लगुज़र

की रजीडेंटी और आगरे और इलाहाबाद के क़िले की बिल्कुल अंगरेज़ी अमल्दारीही उठगयी ॥ कानपुर में सिपाहियों ने पांचवीं जून को बलवा किया। और नान्हाराव को अपना सर्दार बनाया ॥ नान्हा को सर्कार से अपना एवज़ लेने का यह अच्छा मौक़ा मिला जेनरलह्वीलर बारकों में मोरचे लगाकर सात सौ अंगरेज़ों के साथ कि जिसमें ज़ियादा मेम बच्चे और न लड़नेवाले साहिब लोग थे बंदहुआ ॥ बाईस दिनतक बड़ी बहादुरी के साथ लड़कर जब खाने और लड़ने का सामान न रहा जान की अमान का क़ौल क़रार लेकर सबने अपने तईं नान्हाके हवाले कर दिया। उस कमबख़्तने सब को कटवा डाला मेम और बच्चों का भी कुछ ख़याल न किया ॥ नव्वाब तफ़ज़्ज़ुल हुसेन ख़ां की बग़ावत के सबब जो साहिब लोग फ़तहगढ़ (फ़र्रुख़ाबाद) से निकल आयेथे उनकी भी इस ने जानली। जो मेम और बच्चे बचरहे थे जुलाई में सर्कारी फ़ौज पास पहुंचने पर उन सब बेचारों की गर्दनमारी ॥ सिर्फ़ दोसाहिब इसकेहाथसे बचानिकले। गोया इस मुसीबतकी कहानी सुनाने को जीते रहे ॥

अवध की फ़ौज जूनके शुरूही में बिगड़गयी। और बादशाह बेगम और उसके लड़के बिर्जीसक़द्रके नाम से फिर पुरानी नव्वाबी चमकी ॥ तअल्लुक़ेदारों का ज़ोर जुल्म अंगरेज़ी अमल्दारी में दबारहा। अब बिर्जीस-

क़दरके डंडेतले फिर सिरउठाने का अच्छा मौक़ा पाया ॥ सरहेनरी लारंस रज़ीडंट यानी बेलीगारद में अंगरेज़ों के साथ बन्दहुए । कुछ उनमें लड़नेवाले थे और कुछ न लड़नेवाले ॥

रुहेलखण्ड को नव्वाबख़ां बहादुरख़ांने दबाया । मऊ नीमच नसीराबाद की फ़ौजें और हुल्कर और सेंधिया के कंटिंजेंटोंने भी बलवा मचाया ॥ झांसीकी रानी और बांदेके नव्वाबने बुंदेलखण्डपर क़ब्ज़ाकिया । दिल्ली तो गोया बलवेका मर्कज़ था जो फ़ौज जहां बिगड़ी सब ने सीधा दिल्ली का रास्ता लिया ॥

जैसा बड़ा बलवा हुआ । वैसाही लार्ड केनिंग भी बड़ा गवर्नर जेनरल था ॥ तुर्त मन्दराज और बम्बईसे फ़ौजें इधर को रवाना कराईं । जो गोरों की पलटनें चीनको जातीथीं रास्तेही से सब यहां मँगालीं ॥ लेकिन सर्कारका बड़ा सहारा पंजाबथा । सरहदहोने के सबब और जगहों से वहां गोरोंकी फ़ौज ज़ियादाथी सरजान लारंस*को जिन हिन्दुस्तानी पलटनोंकी नमकहलाली और वफ़ादारीका भरोसा न हुआ तुर्त सबसे हथियार रखवालिया ॥

---

* एकरोज़ शिमलामें मुझे कुछ काग़ज़ पढ़नेके लिये बुलाया जब काम होगया खुशीमें आकर फ़र्माने लगे तू जानताहै हमको ये अफ़ग़ानी क्या कहते हैं अर्ज़ किया हुज़ूर नहीं बोले ज़बर्दस्त जान लारंस? इसमें किसी तरह का शक नहीं कि वह सचमुच ज़बर्दस्त थे ॥

कमांडर इनचीफने सातहज़ार फ़ौज † से आठवीं जून्को दिल्ली की पहाड़ीपर मोरचा जाजमाया बल-वाइयोंका ज़ोर था धीरे २ मुहासरा बढ़ाके चौदहवीं सितम्बरको धावाकरादिया॥ क़दमक़दमपर लड़ाईहुई और लहू बहा। यहां तक कि उन्नीसवीं को क़िला भी हाथ आगया और दिल्लीमें फिर सर्कारी अमलहुआ॥ आदमी दोनोंतरफ़ के बहुत कामआये। शायद सन् १७३९ की नादिरशाहीमें भी शहरकेअन्दर इससे बढ़कर नहीं मारेगये॥ बहादुरशाह कुनबे समेत क़ैदकिये गये। और रंगून जाकर कुछदिनोंबाद उसीक़ैदमें मरे॥

जुलाई के शुरूमें जेनरल हैवलाक साहिब दोहज़ार आदमी और कुछ तोपेंलेकर कान्हपुर और लखनऊ लेने को चले। बारहवीं और पन्दरहवीं को नान्हा की फ़ौज फ़तहपुर और पांडू नदी से भगाकर सत्तरहवींको कान्हपुर में दाखिलहुये। लेकिन लखनऊ में बेलीगारद वालों को चौबीसवीं सितम्बर तक मदद न पहुँचा सके। नवीं नवम्बर को नये कमांडर इनचीफ़ सर कालिन कैम्बल तीन हज़ार आदमियों के साथ लखनऊ जाकर बेलीगारद वालों को कान्हपुर निकाललाये। बाग़ी और बलवाई सब देखते के देखतेही रह गये॥ जेनरल ऊटरमको कुछ फ़ौजके साथ लखनऊके बाहर

आलमबाग़ में छोड़आये थे। कान्हपुर में एक भारी लश्कर इकट्ठाकरके मार्च सन् १८५८ के शुरूमें फिर लखनऊ गये॥ एक हफ्ते की बड़ी कड़ी लड़ाई के बाद सोलहवीं को लखनऊ हाथआया। महाराज सर-जंग बहादुरने जो अपने गोरखों की फ़ौज लेकर नय-पाल से मददको आये थे अच्छा काम दिखलाया॥ बेगम और बिर्जीसक़दर नान्हा समेत तराई की तरफ़ भागे। और फिर न सुनाई दिये॥

निदान दिल्ली और लखनऊ के हाथ आनेसे बलवा खतम हुआ। और जब उधर रुहेलखण्ड भी लेलिया और इधर झांसीको सरह्यूरोज ने साफ़ किया सब जगह अमन चैन होगया॥

पर विलायतमें पार्लीमेंटवालोंकी यह राय ठहरी कि अबहिन्दुस्तान की हुकूमत कम्पनी से ले ली जाय सच है पैदा करनेवाले मालिक को जो कुछकाम इसकम्प-नी से लेनाथा वह पूरा होचुका। देखो पलासी की लड़ाई से इससौबरस के अन्दर सर्कार कम्पनीबहादुर ने क्या क्या कामकर दिखलाया और हमारेहिन्दुस्तान के मुल्क को कहां से कहां पहुंचाया॥ जिस ज़मीन में लोग गाय भी नहीं चराते थे वहां अब सुंदर खेतियां होती हैं जहां ज़मींदार नित बाक़ी मालगुज़ारीकी इ-ल्लत में पकड़े बांधे जातेथे वहां अब पक्के बन्दोबस्तकी बदौलत क़िस्त बक़िस्त मालगुज़ारी अदाकरके पांव

फैलाये सोते हैं॥ जिनरास्तों में बकरी का गुज़र न था वहां बग्घियां दौड़ती हैं। जहां अशरफ़ियों को बहली मयस्सर न थी वहां आनोंपर रेलगाड़ियां हाज़िर हैं॥ जहां क़ासिद नहीं चलसक्ता था वहां तारकी डाक लग गयी है। जहां क़ाफ़िलोंकी हिम्मत नहीं पड़तीथी वहां अब एकएक बुढ़िया सोनाउछालती चली जाती है॥ जहां हज़ारों की तिजारत होती थी वहां करोड़ों की नौबत पहुंचगयी है। जिन्हें दिनभर मज़दूरी करनेपर भी पावभर सत्तू या चना मिलना कठिनथा उनकी उजरत अब चारआने रोज़ और आठआने रोज़ से कम नहीं है॥ जिन किसानों की कमर में लँगोटी दिखलाची नहींदेती थी उनकी घरवालियां गहने झमकाती फिरती हैं क्या पुल्ल और क्या नहर क्या मुसाफ़िरख़ाने और क्या दारुश्शिफ़ा क्या पुलिस औ क्या कचहरी क्या इन्साफ़ और क्या क़ानून क्या इल्म और क्या हुनर क्या जिन्दगी का ज़रूरी असबाब और क्या ऐश का सामान जो कुछ इसकम्पनी के राज में देखागया न पहले किसी के ख़याल में आया था न आजतक कहीं सुना गया। गोया जंगल पहाड़ झाड़ झंखाड़ में इसदेश को बाग़ हमेशाबहार बनादिया॥ क्या महिमा है अपरम्पार सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर की कि इंगलिस्तान के जिनसौदागरोंने और दुकानदारों ने कम्पनी बनकर अपने बादशाह से हिन्दुस्तानमें तिजारत करने

की सनदली। आजउन्होंने इससारेहिन्दुस्तान "जन्नत निशान" खुलासै जहानकी पूरी सल्तनत अपने बादशाह शाहन्शाहक़ैसरहिंद एम्परेस विक्टोरियाको (ईश्वर दिनदिन बढ़ावे प्रताप उसका) नजरकी ॥ दूसरी अगस्त १८९८ को पार्लीमेंटने यहहुक्म दिया कि अब आगे को ईस्टइण्डिया कम्पनी के साझी हिंदुस्तान से कुछ इलाक़ा न रक्खें। जो कुछ उनका रुपया लगता है उसका सूद खज़ाने से लेलिया करें॥ बादशाही हिन्दुस्तान में बादशाहकी रहे। यह भी खुशनसीबी हिन्दुस्तान की थी सौदागरों के तहत से निकल कर खास बादशाह के तहतमें आगया काले आदमी भी एम्परेस विक्टोरियाकेखास रअय्यतकहलाये॥ कोई मुसलमान बादशाह होता इस बलवेके बाद यहां क़त्लआम और शहरों को ढाहकर गधेका हल चलाने के लिये हुक्म देता लेकिन। कृपानिधान दयावान क्षमासागर जगत उजागर श्रीमती महारानी एम्परेस विक्टोरिया ने जो इश्तिहारभेजा और पहली नवम्बरको लार्डकेनिंग गवर्नर जेनरल ने आप पढ़कर इलाहाबाद में सब लोगों को सुनाया उसके सुनने से सारी प्रजा का मन कमल की कलीसा खिलगया ॥ उसकी नक़ल नीचे लिखी जाती है ऐपढ़नेवालो अपने पैदा करनेवाले मालिकसे यही दुआ मांगो कि हमारी एम्परेस विक्टोरिया क़ैसरहिंदकी सल्तनत ला ज़वाल होवे। और ऐसी रअय्यत

परवर शाहन्शाह हमलोगों के शिरपर सदा बनीरहे॥

इश्तिहार।

जैसापहलीनवम्बर१८५८ई०के गवर्नमेंटगजटमेंछपाहै
श्रीमहारानीका कौंसलके इजलासमें हिन्दुस्तानके
रईस और सर्दार और सब लोगोंके लिये॥

श्रीमहारानी विक्टोरियाईश्वरकीकृपासेरानीग्रेटब्रिटेन और आयर्लेण्ड और उन सबदेशोंकी जो यूरुप और एशिया और अफ़रीका और अमरीका और आस्ट्रेलेशियामें उन के आधीन हैं और स्वमत प्रतिपालक॥

क्योंकि कई तरहके भारी सबबोंसे हमने धर्मसम्बन्धी और राजसम्बधीप्रधानों और प्रजाकेसुख़्तारोंकी जो पार्लीमेंटमें जमाहुये सलाह और मंज़ूरी के साथ इरादा कियाहै कि हिन्दुस्तान के मुल्क का बन्दोबस्त जो हमने आजतक आनरेबल ईस्ट इण्डिया कम्पनी को अमानत सौंपरक्खाथा अपने अधिकार में लावें॥

इसलिये अब हम इश्तिहार देतेहैं और प्रकट करते हैं कि ऊपर लिखी हुई सलाह और मंज़ूरी के बमूजिब उस अधिकार अपने हाथमें ले लिया और इस इश्तिहारकी रूसे अपनी सब प्रजाको जो उस मुल्क में है ताकीद फ़र्माते हैं कि हमारे और हमारे वारिस और जानशीनों के साथ वफ़ादारी और सच्ची ताबेदारी करें और जिस किसीको हम अपने नाम और अपनी तरफ़ से अपने उस मुल्क के बन्दोबस्तके लिये वक़्त बवक़्त

आगे मुक़र्रर करना मुनासिब समझें उसका हुक्म मानती रहे॥

और क्योंकि फर्ज़न्द अर्जमन्द और मोतबर सलाहकार चार्लस जान वैकौंट केनिंग साहिब बहादुर की वफ़ादारी लियाक़त और समझपर हमको खासकरके पूरा भरोसा और दिलजमई हासिल है इसलिये उक्त वैकौंट कैनिंग साहिब बहादुरको हमारे उस मुल्क का बन्दोबस्त हमारे नामसे और उमूमन सब काम हमारी ओर और हमारे नामसे करनेके लिये हमारे उन सब हुक्म और क़ानूनों के बमूजिब जो हमारे किसी बड़े वजीरकी मारफ़त उसके पास वक़्त बवक़्त पहुंचें हमने उस मुल्क का अपना पहला वैसराय अर्थात् क़ाइम मुक़ाम और गवर्नर जेनरल मुकर्रर फ़र्माया॥

और जो सब लोग कि अब किसी उहदे पर क्या मुल्की और क्या फ़ौजी सर्कार अनरेबल ईस्ट इण्डिया कम्पनी की नौकरीमें दाख़िलहैं इस इश्तिहारकी रूसे हम उन सबको अपने उहदोंपर बहाल और क़ाइम रखते हैं लेकिन वह सब लोग हमारी आयन्दा मर्ज़ी और उन सब आईन और क़ानूनों के ताबे रहेंगे जो इसके बाद जारी कियेजावें॥

और हिंदुस्तानके रईस और सर्दारोंको हम इत्तिला देतेहैं कि जो क़ौलक़रार और अहदनामे अनरेबल ईस्ट इण्डिया कम्पनीने उनके साथ कियेहैं या उसकी

इजाज़त से किये गयेहैं हम उन सबको क़बूल और मं-
ज़ूर फ़र्मातेहैं और बहुत इहतियातसे बहाल और बर्क़-
रार रक्खेंगे और उम्मेदहै कि उन सब रईस और सर्दारों
की ओरसे भी ऐसाही लिहाज़ रहेगा ॥

जो सब मुल्क कि अब हमारे क़ब्ज़ेमें हैं हम उन्हें
बढ़ाना नहीं चाहते और जब कि हम ऐसा न होने देवें-
गे कि दूसरे लोग हमारे मुल्क या अधिकारों पर निः-
शंक हाथ बढ़ावें तो हम भी दूसरोंके मुल्क या अधि-
कारोंपर हाथ बढ़ाये जानेकी इजाज़त न देवेंगे हम
हिंदुस्तानके रईस और सर्दारोंके अधिकार और दर्जे
और उनकी प्रतिष्ठा ऐसीही समझेंगे जैसी अपनी स-
मझतेहैं और हमारी इच्छाहै कि वे सब और हमारी
अपनी प्रजाभी उस बढ़ती और चालचलनकी दुरुस्ती
को हासिल करें कि जो केवल मुल्क में सुलह और
अच्छा बन्दोबस्त रहनेसे हो सकती है ॥

जो काम कि हमको अपनी और सब प्रजाके वास्ते
करने उचित और कर्तव्य हैं वही हिन्दुस्तानवालों के
लिये भी हम अपने ऊपर वाजिब समझेंगे और सर्व
शक्तिमान परमेश्वरकी कृपासे उन सब कामोंको वफ़ा-
दारी के साथ सच्चे दिलसे करते रहेंगे ॥

यद्यपि हमको ईसाई मतके सच्चे होनेका हक़ नि-
श्चयहै और उस मतसे जो तसल्ली कि हासिल होती
है उसको हम शुक्रगुज़ारी के साथ स्वीकार करते हैं

तथापि न अपनाहम इसबातमें अधिकारसमझतेहैं और न हमको इसबातकी इच्छाहै कि जबर्दस्ती अपनीप्रजा कोभी उसका निश्चयदिलावें यह हमाराबादशाही हुक्म और मर्जी है कि न किसीकी उसके मतके कारन पक्षकी-जावे और न किसीको उसकेकारन तकलीफ़दीजावे वर-न सबलोग बराबर एकही तौरपर बिना पक्षपात क़ानून के बमूजिब रक्षा पावें और जो लोग कि हमारेतहतमें इख्तियाररखतेहैं हम उनको बड़ी ताकीद से हुक्मदेते हैं कि वेहमारी किसी प्रजा के मतके निश्चय और पूजा में कभी कुछ दस्तन्दाजी न करें नहींतो उनपरहमारा अत्यन्त कोप होगा ॥

और यहभी हमारा हुक्म है कि जहांतक बनपड़े हमारी प्रजाको चाहे जिसजात और चाहे जिसमतकी क्यों न हो उनकी विद्या योग्यता और दियानतदारीके बमूजिब जिन उहदोंका काम कि वे हमारी नौकरी में अनजाम देसकें उन को वे रोक टोक और बिना पक्ष-पातके दिये जावें ॥

हिंदुस्तान के लोग धरतीके साथ जो उनके पुरखा-ओं से उनके अधिकार में चली आयीहै बड़ी मुहब्बत रखते हैं यहबात हमको बखूबी मालूम है और हमको इस बातका बड़ा लिहाज़ है और हमको मंजूर है कि वाजिबी मुतालबे सर्कारी अदा करने पर उनके उस धरती के सारे अधिकारों की रक्षा करें और हम हुक्म

देते हैं कि क़ानून वनाने और जारीकरने में हिंदुस्तान के पुराने अधिकार और दस्तूर और रीति रसमों का उमूमन् ठीक लिहाज़ रक्खाजावे॥

जो आफ़तें और ख़रावियां कि हिन्दुस्तान पर उन फ़सादी लोगोंके कर्तव से पड़ीहैं जिन्होंने झूठी झूठी अफ़वाहोंसे अपने देशवालों को वहकाकर उनसे खुले वन्दों वलवा करवादिया हमको उनका वड़ा अफ़सोस है हमारी शक्ति तो रणभूमि में उस वलवे के दवानेसे प्रगटहोगयी अव हम उनलोगोंके अपराध क्षमाकर के जो इस ढवसे वहकावट में आगये लेकिन फिर इताअतकी राहपर चलना चाहतेहैं अपनी दया प्रगट करते हैं॥

इस विचारसे कि अव अधिक खूंनरेज़ी न होवे और हमारे हिन्दुस्तानके देशोंमें झटपट अमन चैन होजावे हमारे वैसराय और गवर्नर जेनरल वहादुर ने एक इलाक़े में जिन सव लोगोंने कि इस दुखरूप वलवे में हमारी सर्कारके विरुद्ध अपराध कियेहैं वहुतोंको उन में से कईएक शर्तोंपर अपराध क्षमा होनेकी आसा दी है और जिनके अपराध कि क्षमा होनेकी प्रवंध से वाहरहैं उन्हें जो सज़ा दीजायगी वह भी ज़ाहिर करदी है हम अपने वैसराय और गवर्नर जेनरल का यहकाम मंज़ूर और मक़बूल करते हैं और उसके सिवाय नीचे और भी हुक्म ज़ाहिर फ़र्माते हैं॥

सिवाय उनलोगोंके जिनके वास्ते साबित हुआहै या अब साबितहो कि उन्होंने आप सर्कार अंगरेज़ की प्रजाके क़तलमें शराकतकी बाक़ी सारे अपराधियों पर हमारी दयाहोगी क्योंकि जिन्होंने आप सर्कार अंगरेज़ की प्रजाके क़तल में शराकत की उन पर दया करना इन्साफ़ की रूसे मनाहै॥

जिन लोगों ने क़तल करनेवालों को जानबूझकर पनाहदी या बलवाइयों के सर्दार और उनके बहकाने वाले बने उनके केवल जीवदान का वादा हो सकता है लेकिन ऐसे आदमियों को वाजिब सज़ा देने में उन सब बातोंका जिनके सबबसे बहक कर अपनी इत्ताअ-त से फिरगये पूरालिहाज़ कियाजायगा और उनलोगों के वास्ते जो बिना सोचे विचारे फ़सादियों की झूठी बातोंकोमानकर गुनहगारबनें बड़ीरिआयतकीजावेगी॥

बाक़ी और सभोंसे जो सर्कारके मुक़ाबले में हथि-यार बांधे हुए हैं इस इश्तिहारमें हम वादा करतेहैं कि जब वे अपने डेरोंको लौटजावें और सुलहके कामों में हाथलगावें उनके बिल्कुलकुसूर हमारी निस्बत और हमारीसल्तनत और हमारे मर्तबेकी निस्बत बेशर्त माफ़ और दरगुज़र और फ़रामोश कर दिये जावेंगे॥

और हमारी यह बादशाही मर्ज़ी है कि ये रहम और माफ़ करने की शर्तें उन सब लोगों के वास्ते हैं जो

पहिली तारीख जनवरी सन् १८५६ ई० से पहले उन की तामील करें॥

हमारी यह जी से अभिलाषा है कि जब परमेश्वर की कृपा से हिंदुस्तान में फिर अमन चैन हो जावे तो वहां सुलहके उद्यमों को उन्नति देवें और प्रजाके सुख की चीजें बनावें और ऐसा बंदोबस्त करें कि वहां की सारी हमारी प्रजाको लाभ हो उनकी वृद्धि से हमारी शक्ति है उनकी संतुष्टता से हमारी रक्षा है और उनकी शुकरगुजारी यही हमको बड़ी प्राप्ति है सर्वशक्तिमान परमेश्वर हमको और जो लोग कि हमारे तहत में इख्तियार रखते हैं सबको ऐसी शक्ति दे कि जिस से हमारी यह अभिलाषा हमारी प्रजाकी भलाई के लिये भली भांति परिपूर्ण हो॥

॥ इति॥

१० सर्फ़ व नह़्व फ़ारसी ।)

११ दिल वहलाव पहलाहिस्सा ‑)॥

१२ तथा दूसरा „ ॥)

१३ तथा तीसरा „ ।)॥

१४ क़िस्सा सैंडफ़ोर्डमर्टन पहला हिस्सा ।‑)

१५ तथा दूसरा „ ≡)॥

१६ तथा तीसरा „ ।)

१७ सिक्खोंकातुलूअ व गुरूव ≡)॥

१८ कुछ वयान अपनीज़वानका ।)॥

१६ क़िस्सा गुलाव चमेली ।)॥

२० कुछ हालात हिनरीकार्टकरसाहव वहादुर कमिश्नर वनारस ‑)

२१ सच्ची वहादुरी ≡)

२२ मिफ़्रअतुल् काहिलीन ‑)

२३ मज़ामीन उर्दू ।≡)

२४ हुरूफ़तहज्जी)॥

२५ हक़ायकुल्मौजूदात ≡)

२६ सवानेहउमरी कार्टकर साहव वहादुर कमिश्नर वनारस ‑)

किताबें हिन्दी

१ छोटा भूगोल हस्तामलक ≡)

२ इतिहास तिमिरनाशक पहला हिस्सा ≡)॥

३ तथा दूसरा „ ≡)

४ तथा तीसरा „ ।)॥

५ भूगोल हस्तामलक पहला हिस्सा ॥)

६ तथा दूसरा „ ॥‑)

७ तथा तीसरा „ ॥)

८ वामामनोरंजन ≡)॥

९ गुटका पहलाहिस्सा ≡)

१० तथा दूसरा „ ।)॥

११ गुटका तीसरा हिस्सा ≡)॥

१२ मानवधर्मसार ‑)॥

१३ मानवधर्मसार मय अंगरेज़ी ।≡)॥

१४ सिक्खोंकाउदयऔरअस्त ≡)

१५ वर्णमाला ‑)॥

१६ विद्यांकुर ≡)

१७ स्वयम्बोध मयउर्दू ‑)

१८ राजाभोजका स्वप्न ‑)

१९ आलसियों का कोड़ा ‑)

२० निवेदन दयानंदी मत खण्डन ‑)

२१ मोह मुद्गर भाषा टीका सहित)|||

२२ जैन और बौद्धका भेद)|||

२३ कल्पभाष्य व कल्पसूत्र ≡)।

२४ प्रेमरत्न =)

२५ गीतगोविन्दादर्श सटीक -)|||

२६ प्रश्नोत्तरमाला)|||

२७ उपनिषद्सार -)|||

२८ योगवासिष्टके कुछ चुने हुये श्लोक)|||

२९ मानवधर्मसारकासार)|||

३० लीलावती भाषा =)

किताबें अंगरेजी

१ हिस्ट्री आफ़ इंडिया पहला हिस्सा ||)

२ तथा दूसरा हिस्सा ||)

SCIENCE PRIMER

IN

HINDI

PRIMER OF PHYSICAL SCIENCE

BY

RAI BAHADUR LAKSHMI SANKAR MISRA, M. A.

Fellow of the Universities of Calcutta & Allahabad.

पदार्थ विज्ञान विटप

जिसे

राय बहादुर लक्ष्मीशंकर मिश्र एम० ए०

ने बनाया।

BENARES:

THE CHANDRAPRABHA PRESS CO. LD.

18[illegible]7.

Price 4 As.] 10th Edition. [[illegible]]

सूचीपत्र

पहिला अध्याय।

दूसरा अध्याय।

तीसरा अध्याय।

चौथा अध्याय ।

पांचवां अध्याय ।

चौथा अध्याय ।

पांचवां अध्याय ।

दिखाई नहीं देतीं और बहुत ऐसी हैं कि जिन की बड़ाई का ख़्याल करना मुशकिल हो जाता है। एक छोटा सा बीज थोड़े दिनों में कैसा बड़ा दरख़्त हो जाता है, फिर कितने तरह के दरख़्त हैं और इन में से सब एक ही मुल्क में नहीं पैदा होते कोई सर्द मुल्क में और कोई गरम में पैदा होते हैं। ज़मीन की तासीर और मुल्क की आब हवा से देखने में आता है कि दरख़्त और जानवरों में फ़रक़ होता है और यह भी देखते हैं कि कुछ देर तक सूर्य्य दिखाई देता है और तारे छिपे रहते हैं फिर कई घण्टों तक रात के वक़्त सूर्य्य नहीं नज़र आता। सिवाय इन के और बहुत सी बातें हम लोग हर रोज़ देखा करते हैं पर बहुत कम लोग ऐसे मिलेंगे जो अपने दिल में यह सवाल करें कि यह सब कैसे हुआ या यह क्या है। थोड़ा ही ग़ौर करने से पहले यह मालूम होगा कि बहुत से दो कार्य्य* इकट्ठा होते हैं यानी जब कोई एक बात देखते हैं तो हम के पीछे एक और ख़ास बात देख पड़ती है जैसे कि जब सूखी लकड़ी में आग लगाते हैं तो हमेशा यह जलती

हैं। सब विद्याओं में किसी कार्य्य के कारण को निकालना एक निहायत ज़रूरी बात है और जहां एक कार्य्य में कई एक कारण रहते हैं तो अकसर यह जानना मुशकिल होता है कि किस कारण से कितना कार्य्य हुआ। कार्य्य और कारण के संबन्ध यानी निसबत के जानने से दो या ज़ियादा कार्य्यों के एक दूसरे के बाद होने का नियम जान सकते हैं जैसे जब कि कई बार यह देखते हैं कि आग लगने से लकड़ी जलती है तो यह मालूम हुआ कि जहान में यह एक नियम है। इसी तरह से देखने और ग़ौर करने से बहुत से नियम मलूम होते हैं। जब अच्छी तरह से कारण दरियाफ़्त करने से यह मालूम हो कि दुनिया की चीज़ों में किस तरह के नियम हैं तो यह बात ज़रूर है कि इन नियमों में किसी तरह से फ़रक़ नहीं पड़ सकता। अगर कोई नई बात देखें जो किसी मालूम नियम के बमूजिब न देख पड़े तो यह ग़ौर करना चाहिये कि वह कौन सा नया सबब आ पड़ा है जिस से जैसा हम उम्मेद करते थे वैसा न हुआ। यह सबब जानने से फिर भी मालूम होगा कि सब चीज़ों की हालत या सूरत में जो कुछ फ़रक़ पड़ता है वह नियम के बमूजिब होता है। दिन और रात नियम के बमूजिब एक दूसरे के बाद आते हैं, हर एक मुल्क में नियम के बमूजिब जाड़ा गरमी वग़ैरः ऋतु बदलता है, नियम के बमूजिब दरख़्त जमते हैं और उन में फल लगते हैं, नियम के बमूजिब कितने जीव अंडे से पैदा होते और कितने बिना अंडे के। यह सोचना कि नियम के बरख़िलाफ़ दुनिया में कुछ हो सकता है निहायत ग़लत है। यह कोई कभी नहीं उम्मेद करता है कि आम का बीज बोने से अनार का दरख़्त होगा और न कोई यह उम्मेद करेगा कि पत्थर को पानी में

फेंकने से वह न डूबेगा। ऐसा ख़्याल करना असम्भव बात का सम्भव होना सोचना है क्योंकि यह बातें उन नियमों के बरख़िलाफ़ हैं जो कि इस जहान की चीज़ों में पाये जाते हैं। अगर नियम के बमूजिब दुनिया में सब बातें न हुआ करें तो लोगों का काम चलना निहायत मुशकिल हो जायगा। अगर इस का शक हो कि धान बोने से चावल अख़ीर में मिलेगा तो फिर खाना पीना मिलना कैसा मुशकिल हो जायगा। इस बात का जो यक़ीन न हो कि नियम के बमूजिब लकड़ी की नाव पानी पर चली जावेगी तो नाव के बनाने ही में लोग शकेंगे। यह अच्छी तरह से साबित है और इस के बरख़िलाफ़ कोई किसी तरह का सबूत नहीं ला सकता है कि दुनिया में सब बातें नियम के बमूजिब होती हैं। कितने नये नियम हैं जो अभी तक हम लोगों को नहीं मालूम हैं पर यह दूसरी बात है इस से यह नहीं साबित होता कि कोई ऐसी बात भी है जो नियम के बमूजिब नहीं होती। हर एक विद्या में इन नियमों का जानना और किसी कार्य का कारण निकालना निहायत ज़रूर है और इन्हीं बातों के जानने से विद्या बढ़ती है। योरप के मुल्कों में विद्या के इतना ज़ियादा हो जाने

क्योंकि नई २ बातों का जानना निहायत ज़रूर है। नई ठीक बातों के जानने की कोशिश करने से भी बड़ा फ़ायदा होता है। सब लोग देखते हैं कि पानी पर कितनी चीज़ें तैरती हैं और बहुत सी डूब जाती हैं तो यह सोचना चाहिये कि क्या सबब है कि कितनी चीज़ें तैरती हैं और क्यों और बहुत सी चीज़ें डूब जाती हैं। इस बात के सोचने से यह मतलब है कि एक ऐसा नियम जानना है जिसके बमूजिब चीज़ें डूबती या तैरती हैं। पहले एक टुकड़ा लकड़ी का पानी में फेंको तो यह देखते हो कि यह तैरने लगता है। फिर इस लकड़ी के टुकड़े के बराबर लम्बाई चौड़ाई और मोटाई का एक पत्थर का टुकड़ा फेंको तो अब देखते हैं कि वह उसी वक़्त डूब जाता है। तो अब इस बात का कारण सोचना चाहिये। पत्थर और लकड़ी दोनों के टुकड़ों की एकही लम्बाई एकही चौड़ाई और एकही मोटाई का लिया था इस से साफ़ मालूम हुआ कि चीज़ों के छोटी बड़ी होने के कारण वह न तो डूबती हैं न तैरती हैं। तो सोचो कि और किस तरह से ऐसा फ़रक़ पड़ सकता है। लकड़ी और पत्थर को अच्छी तरह से ग़ौर करके देखो तो क्या मालूम होता है? यह साफ़ है कि लकड़ी और पत्थर की बनावट में फ़रक़ है। जिन बहुत से छोटे २ टुकड़ों से पत्थर बना है वह आपस में बहुत नज़दीक हैं पर लकड़ी में के छोटे कण इतने नज़दीक नहीं हैं और इसी सबब से पत्थर का टुकड़ा भारी है पर लकड़ी का हलका है तो यह मालूम हुआ कि तैरने में बोझ के सबब से ज़रूर फ़रक़ पड़ा है। किसी और हलकी चीज़ को पानी में डालने से देखते हैं कि वह अच्छी तरह से पानी में तैरती है और लोहे के टुकड़े को पानी में डालने से देखते हैं कि वह झटपट डूब जाता है। इसी

तरह से बहुत सी चीज़ों के बराबर लम्बाई चौड़ाई और मोटाई के टुकड़ों को पानी में डालने से और फिर उनको तौलने से यह देखते हैं कि जितनी भारी चीज़ होगी उतनाही जल्द डूब जायगी। अब थोड़ा सा एक बात का नियम जान पड़ा पर पूरा नियम अभी नहीं मालूम हुआ। इसी तरह से किसी नयी बात के जानने के लिये या कोई नियम जानने के लिये चीज़ों के देखने भालने और एक चीज़ को दूसरे के नज़दीक रखने या उसमे मिलाने वग़ैर: को परीक्षा कहते हैं जैसे कि अगर पानी के नीचे इस ग़रज़ से आग लगावें कि देखें क्या असर होता है तो यह भी परीक्षा हुई। फिर जो बर्फ़ और निमक मिलावें तो ऐसी सर्दी पैदा होती है जो बर्फ़ की सर्दी से ज़ियादा है तो यहां पर एक परीक्षा की गयी और उस से एक फल या नयी बात मालूम हुई। इसी तरह से परीक्षा करने से हम लोग उन सब चीज़ों का असल हाल और तासीर जानते हैं जो हमारे चारों तरफ़ हैं। जब परीक्षा करने से हम कोई बात जानते हैं तो उसी वक़्त यक़ीन हो जाता है कि यह बात सहीह है और ऐसाही नियम है इस में कुछ शक की जगह नहीं रह जाती।

मालूम हुआ है। यह मालूम है कि किस तरह से और किस सबब से पानी बरसता है पर किसी जगह में कब बरसेगा इस में बहुत बातों की परीक्षा अभी बाक़ी है॥

ऊपर जो लिखा है उस से साफ़ मालूम होता है कि किसी विद्या में उसके नियमों को सहीह साबित करने के लिये परीक्षा करना ज़रूर है पर कितनी विद्या के नियमों के जानने के लिये परीक्षा जब चाहें तब कर सकते हैं और कितनी विद्या में परीक्षा करना हम लोगों के इख़्तियार में नहीं रहता जैसे रसायन विद्या में जो यह परीक्षा किया चाहें कि दो ख़ास चीज़ों के मिलाने से क्या नतीजा होता है तो जब चाहें तब दोनों चीज़ों को मिलाकर देख सकते हैं कि क्या हुआ। इस को जितनी बार चाहें उतनी बार देख सकते हैं कि क्या फल हुआ। निमक और बर्फ़ मिलाने से बहुत ज़ियादा सर्दी होती है तो इस बात की परीक्षा जब चाहें तब दोनों चीज़ों को मिला कर कर सकते हैं। पर ज्योतिष में अर्थात् उस विद्या में जिस में सूर्य्य और तारों का बयान है बहुत सी परीक्षा हम लोगों के इख़्तियार में नहीं है। उस वक़्त तक ठहरना पड़ता है जब तक कि सूर्य्य वग़ैरः ऐसी जगह में न आ जावें जिस से कि हमारी समझ में कुछ परीक्षा हो सके॥

अब थोड़ा २ हाल उन विद्याओं का लिखा जायगा जो संसार की पदार्थों से तअल्लुक़ रखती हैं॥

दूसरा अध्याय।

पहला पाठ।

भूमिका।

हम सब लोग यह देखते हैं कि हमारे चारों तरफ़ पदार्थ

हैं जिधर फिरो या जिधर देखो उधर कोई न कोई चीज़ दिखलाई देती है। दिन को ज़मीन पर की सब चीज़ों को देखते हैं और कभी २ बादल ऊपर दिखलाई पड़ते हैं। रात को जब बादल नहीं रहता आसमान की तरफ़ देखने से इतने तारे दिखलाई देते हैं कि उनकी गिनती नहीं हो सकती यही मालूम देता है कि इस ज़मीन के चारों तरफ़ आसमान में तारे ही हैं। बनारस से देखो या आगरे से देखो पर हर जगह से बेशुमार तारे नज़र पड़ते हैं और ऐसा मालूम देता है कि वह एक गोले पर जड़े हैं और हम उस गोले के बीचो बीच में हैं। और भी एक बात यह देखने में आती है कि पूर्णमासी के दिन बहुत कम तारे देख पड़ते हैं पर ज्यों २ चन्द्रमा की रोशनी कम होती जाती है त्यों २ ज़ियादे तारे दिखलाई देते हैं क्योंकि रोशनी के सबब से बहुत से नहीं दिखाई देते। इसी सबब से दिन को तारे नहीं दिखलाई देते क्योंकि सूर्य की रोशनी ऐसी तेज़ होती है कि इस से उनकी रोशनी छिप

सिवाय तारों और चन्द्रमा की रात को बहुत से ग्रह भी देखने में आते हैं पर दिन को सिर्फ़ सूर्य दिखाई देता है जिस की रोशनी से सब तारे वग़ैरः छिप जाते हैं ॥

दूसरा पाठ

तारे ।

तारे देखने में बहुत छोटे मालूम देते हैं पर हक़ीक़त में वह निहायत बड़े २ हैं उन के छोटे दिखाई देने का सबब यह है कि वह बहुत दूर हैं । ज़मीन ही पर यह हम लोग देखते हैं कि कई एक कोस के फ़ासले से बड़ा पहाड़ एक छोटे से टीले के इतना ऊंचा मालूम देता है पर ज्यों २ उस के नज़दीक जाते हैं त्यों २ उस की ऊंचाई बढ़ती नज़र आती है । इसी तौर पर तारे बहुत दूर होने के सबब से बहुत छोटे मालूम देते हैं पर हक़ीक़त में वह बहुत बड़े हैं । वह इतनी दूर हैं कि बरसों में उन पर की रोशनी यहां तक पहुंचती है । जो तारा कि ज़मीन से बहुत ही नज़दीक है उस से ३ बरस में रोशनी आती है । यह मालूम हुआ है कि १ सेकंड में रोशनी ८१०००० मील चलती है इसलिये हिसाब कर सकते हैं कि तीन बरस में कितनी दूर से रोशनी आई होगी । हर एक तारों के बीच का फ़ासिला भी इतना ज़ियादा है कि इस दूरी का ख़्याल करना सहल नहीं है ॥

तारे बड़े २ सूर्य की तरह हैं कितनों के चारों तरफ़ और दूसरे तारे घूमते हैं पर उनकी दूरी इतनी है कि इन सब का घूमना और चलना कुछ भी मालूम नहीं देता । सब तारे एक दूसरे की निस्बत अपनी जगह नहीं बदलते दिखलाई देते हैं । इस में शक नहीं कि कोई ख़ास तारा किसी समय में फिर ढ

ऊपर नज़र आता है और फिर पच्छिम की तरफ़ नीचे जाता हुआ मालूम देता है पर अगर रात को ख्याल करके सब तारों की जगह को और जिस तरह से वह चलते मालूम देते हैं उसे देखें तो साफ़ मालूम देगा कि सब आसमान का गोला घूमता दिखाई देता है। एक खास तारा जिसे ध्रुव तारा कहते हैं कुछ भी चलता नहीं मालूम होता इसका सबब यह है कि ज़मीन की वह कील जिस पर ज़मीन घूमती है बढ़ाने से इस तारे के नज़दीक जा पहुंचती है यह तारा उत्तर की जानिब है। इन तारों के चलते हुए दिखाई देने का सबब यह है कि ज़मीन अपनी कील पर जो उत्तर से दक्खिन को है घूमती है। इस घूमने के सबब से तारे घूमते दिखाई देते हैं। यह इसी तरह से है जैसे कि किश्ती पर चलने में अकसर किनारा चलता मलूम देता है। सब तारे पूरब से पच्छिम की तरफ़ चलते दिखाई देते हैं पर हक़ीक़त में ज़मीन अपनी कील पर पच्छिम से पूरब को घूमती है। यही सबब है कि सूर्य पच्छिम में डूब जाता है॥

आते। क़रीब ३००० तारों के ख़ाली आंख से दिखाई देते हैं और २०००००००० की क़रीब अच्छी दूरबीनों से नज़र आते हैं॥

अंधेरी रात में अगर बदली न हो तो उत्तर से दक्खिन की तरफ़ एक चौड़ी सफ़ेद लकीर देख पड़ती है जिसे अकसर आकाश गङ्गा कहते हैं। इस में इतने ज़ियादे छोटे २ तारे हैं और वह सब देखने में एक दूसरे से इतना नज़दीक मालूम पड़ते हैं कि एक तारों की धारा की शकल बन जाती है। यह तारे देखने में तो एक दूसरे के नज़दीक मालूम देते हैं पर हक़ीक़त में उन में हर एक के दरमियान का फ़ासिला बहुत ज़ियादा होगा। वह हम लोगों से इतनी दूर हैं कि उनके दरमियान का फ़ासिला बहुत ज़ियादा होने पर भी कुछ भी नहीं मालूम देता। अभी कह चुके हैं कि अच्छी २ दूरबीनों से क़रीब २००००००० तारे दिखाई देते हैं इन में से १८०००००० इसी आकाश गङ्गा के तारे हैं। दूरबीन से जब तारों को देखते हैं तो सब एकही रंग के नहीं मालूम देते कोई सफ़ेद कोई सुर्ख़ कोई हरे और कोई नीले दिखाई देते हैं। ख़ाली आंख से तारों का अलहिदा अलहिदा रंग साफ़ नहीं नज़र आता॥

यह पहले बयान कर चुके हैं कि तारे एक दूसरे की निसबत अपनी जगह नहीं बदला करते पर ज़मीन के अपनी कील पर घूमने के सबब से वह सब चलते दिखाई देते हैं। इस में शक नहीं कि वह भी चलते हैं पर वह इतनी दूर हैं कि उनका चलना हम लोगों को मालूम नहीं होता। कितने ऐसे तारे भी हैं जो एक दूसरे के चारों तरफ़ घूमा करते हैं। जैसे ज़मीन सूर्य्य के चारों तरफ़ घूमती है वैसे ही कितने तारे और दूसरे तारों के चारों तरफ़ घूमते हैं। अब तक ऐसे ८०० तारे मालूम हुए हैं॥

ऊपर नज़र आता है और फिर पच्छिम की तरफ़ नीचे जाता हुआ मालूम देता है पर अगर रात को ख़्याल करके सब तारों की जगह को और जिस तरह से वह चलते मालूम देते हैं उसे देखें तो साफ़ मालूम देगा कि सब आसमान का गोला घूमता दिखाई देता है। एक ख़ास तारा जिसे ध्रुव तारा कहते हैं कुछ भी चलता नहीं मालूम होता इसका सबब यह है कि ज़मीन की वह कील जिस पर ज़मीन घूमती है बढ़ाने से इस तारे के नज़दीक जा पहुंचती है यह तारा उत्तर की जानिब है। इन तारों के चलते हुए दिखाई देने का सबब यह है कि ज़मीन अपनी कील पर जो उत्तर से दक्खिन को है घूमती है। इस घूमने के सबब से तारे घूमते दिखाई देते हैं। यह उसी तरह से है जैसे कि किसी पर चलने में बरअक्स किनारा चलता मालूम देता है। सब तारे पूरब से पच्छिम की तरफ़ चलते दिखाई देते हैं पर दरअस्ल में ज़मीन अपनी कील पर पच्छिम से पूरब को घूमती है। यही सबब है कि सूरज पच्छिम में डूब जाता है।

यह न समझोगी कि सूर्य कितना बड़ा है। पर तुम को यह जानना चाहिये कि ज़मीन गोल है (इस का और बयान आगे होगा) और अगर घंटे में १५ कोस के हिसाब से रेलगाड़ी इस के चारो तरफ़ एक बार घूम आना चाहे तो एक महीना लगेगा पर इसी हिसाब से सूर्य पर उस के चारो तरफ़ घूमने में नौ बरस से ज़ियादा लगेगा॥

खाली आंख से सूर्य को अच्छी तरह से नहीं देख सकते पर दूरबीन में रंगीन शीशा लगाकर देखने से आंख पर कुछ ज़ोर नहीं पड़ता। इस तरह से जब सूर्य देखा जाता है तब जगह २ उस में काले दाग़ दिखाई देते हैं। इनमें किसी ख़ास दाग़ को हर रोज़ तीन चार दिन तक देखने से यह मालूम होता है कि यह एक जगह पर नहीं है पर रफ़ा २ पच्छिम को तरफ़ चलता मालूम देता है और कई एक दिन के बाद सूर्य के पीछे जा रहने से नहीं दिखाई देता। सब दाग़ों की गति पच्छिम तरफ़ होती है और वह आपस में एक दूसरे की निस्बत जगह नहीं बदलते। इस से यह साफ़ है कि सूर्य की सतह जिन पर यह दाग़ हैं घूम रही है क्योंकि कुछ दिन बाद वही दाग़ जो पच्छिम को तरफ़ छिप गया था पूरब में फिर देख पड़ता है। जहां एक ख़ास दाग़ किसी रोज़ दिखाई देता है वहीं फिर २५ रोज़ के बाद वही दाग़ नज़र आता है तो इस से यह मालूम हुआ कि सूर्य अपनी कील के चारो तरफ़ २५ दिन में एक बार घूम आया। सूर्य के कील पर घूमने के सबब से उस पर के दाग़ भी उसी के साथ घूमा करते हैं॥

सूर्य के चारो तरफ़ भी हवा की तरह की चीज़ें हैं। सूर्य से जो किरनें आती हैं उन्हें एक यंत्र से अलहिदा करने से

यह न समझोगे कि सूर्य्य कितना बड़ा है। पर तुम को यह जानना चाहिये कि ज़मीन गोल है (इस का और बयान आगे होगा) और अगर घंटे में १५ कोस के हिसाब से रेलगाड़ी इस के चारो तरफ़ एक बार घूम आना चाहे तो एक महीना लगेगा पर इसी हिसाब से सूर्य्य पर उस के चारो तरफ़ घूमने में नौ बरस से ज़ियादा लगेगा॥

खाली आंख से सूर्य्य को अच्छी तरह से नहीं देख सकते पर दूरबीन में रंगीन शीशा लगाकर देखने से आंख पर कुछ ज़ोर नहीं पड़ता। इस तरह से जब सूर्य्य देखा जाता है तब जगह २ उस में काले दाग़ दिखाई देते हैं। इनमें किसी खास दाग़ को हर रोज़ तीन चार दिन तक देखने से यह मालूम होता है कि यह एक जगह पर नहीं है पर रफ़ा २ पच्छिम की तरफ़ चलता मालूम देता है और कई एक दिन के बाद सूर्य्य के पीछे जा रहने से नहीं दिखाई देता। सब दाग़ों की गति पच्छिम तरफ़ होती है और वह आपस में एक दूसरे की निस्बत जगह नहीं बदलते। इस से यह साफ़ है कि सूर्य्य की सतह जिन पर यह दाग़ हैं घूम रही है क्योंकि कुछ दिन बाद वही दाग़ जो पच्छिम की तरफ़ छिप गया था पूरब में फिर देख पड़ता है। जहां एक खास दाग़ किसी रोज़ दिखाई देता है वहीं फिर २५ रोज़ के बाद वही दाग़ नज़र आता है तो इस से यह मालूम हुआ कि सूर्य्य अपनी कील के चारो तरफ़ २५ दिन में एक बार घूम आया। सूर्य्य के कील पर घूमने के सबब से उस पर के दाग़ भी उसी के साथ घूमा करते हैं॥

सूर्य्य के चारो तरफ़ भी हवा की तरह की चीज़ है। सूर्य्य से जो किरनें आती हैं उन्हें एक यंत्र से अलहिदा करने में

यह मालूम हुआ है कि सूर्य्य किन २ चीज़ों से बना है। जिन चीज़ों से ज़मीन बनी है उन में से क़रीब सब सूर्य्य में हैं और सिवाय इन के और कई एक नई चीज़ें हैं॥

चौथा पाठ।

ग्रह वग़ैरह का बयान।

सूर्य्य का बयान करने के बाद अब यह ज़रूर है कि तुम कुछ हाल उन सब पिण्डों का जानो जो इसके चारों तरफ़ घूमते हैं। सूर्य्य के चारों तरफ़ पृथ्वी और कई एक पिण्ड घूमते हैं और इन्हें ग्रह कहते हैं। सिवाय ग्रहों के पुच्छल तारे भी सूर्य्य लोक में पाए जाते हैं।

सब ग्रह जिन का नाम ऊपर लिख आये हैं सूर्य्य के चारो तरफ़ घूमते हैं और सब एकही तरफ़ को जाते हैं और जिन रेखा में वह घूमते हैं वह अण्डाकार हैं। इन ग्रहों में कितने ऐसे हैं कि उनके चारो तरफ़ और पिण्ड घूमते हैं जिन्हें उपग्रह कहते हैं। जैसे ज़मीन के साथ चन्द्रमा घूमता है और इसलिये यह ज़मीन का उपग्रह है। अब हर एक ग्रहों का थोड़ा २ हाल जुदा २ लिखते हैं॥

बुध

सूर्य्य से सब से नज़दीक का ग्रह बुध है पर तिस पर भी यह सूर्य्य से ३५००००००० मील की दूरी पर है। यह अकसर कभी शाम को कभी सुबह होने के थोड़ाही पहले दिखाई देता है। यह सूर्य्य के चारो तरफ़ हम लोगों के ८४ दिन में एक बार घूम आता है यह ठीक नहीं मालूम है कि इस में पानी है। यह सूर्य्य के बहुत नज़दीक है इसलिये इस में बड़ी गरमी है पर यह नहीं जानते कि इस में बादल उठते हैं या नहीं॥

शुक्र

बुध के बाद शुक्र है। यह सूर्य्य से क़रीब ८६००००००० मील है। यह हर रोज़ रात को नहीं दिखाई देता पर कभी शाम के बाद पच्छिम में नज़र आता है और कभी कुछ दिन तक सुबह होने के पहले पूरब को तरफ़ नज़र आता है। यह बहुत रोशन मालूम देता है इसलिये इस के पहचानने में कुछ दिक़्क़त नहीं होती पर यह हर रात को नहीं दिखाई देता। यह २२४ दिन में सूर्य्य के चारो तरफ़ घूम आता है और २३½ दिन में यह एक मरतबा अपनी कील पर घूमता

है इसलिये २३½ दिन शुक्र का एक दिन होता है। शुक्र की सतह का बहुत कम हाल मालूम है। बहुत अच्छी दूरबीनों से देखने से उसकी सतह पर काले दाग़ नज़र आते हैं और तअज्जुब नहीं कि इस के चारो तरफ़ बादल रहते हैं और जहां कहीं बादल खुला रहता है वहां दाग़ दिखाई देते हैं॥

पृथ्वी यानी ज़मीन

ज़मीन की सतह इतनी ज़ियादा है कि इस पर के सब से ऊंचे २ पहाड़ इस के सामने कुछ भी नहीं मालूम देते ॥

जब यह मालूम हुआ कि ज़मीन एक बड़ा भारी गोला है तब यह सवाल हो सकता है कि यह गोला ठहरा है या चलता है। देखने में तो यही मालूम होता है कि ज़मीन ठहरी है और सूर्य्य और तारे इस के चारो तरफ़ घूम रहे हैं। अगले ज़माने में लोग यही समझते थे पर अब अच्छी तरह से साबित हुआ है कि यह उन लोगों की भूल थी। तुम सब लोगों ने यह देखा होगा कि नाव पर चढ़ने से यह मालूम होता है कि नदी का किनारा चल रहा है और नाव ठहरी है पर हक़ीक़त में इस का उलटा है। कुछ २ ऐसाही हाल ज़मीन का है देखने में तो यह ठहरी मालूम देती है पर यह बात ठीक नहीं है। सूर्य्य ज़मीन के चारो तरफ़ नहीं घूमता पर ज़मीन और दूसरे ग्रह सूर्य्य के गिर्द घूमते हैं। देखने में ज़मीन पर के मकान दरख़ वग़ैरः ठहरे हैं पर यह ज़मीन के ठहरने का सबूत नहीं है क्योंकि यह तो ज़मीन के हिस्से हैं और जब सब ज़मीन चलती है तब यह भी चलते हैं। इसलिये ज़मीन के बाहर की चीज़ों को देखकर इस बात का सबूत लाना चाहिये कि यह चलती है या नहीं। तारों के देखने से इसका ठीक सबूत मिलता है। इससे यह मालूम होता है कि ज़मीन अपनी कील पर घूमती है। २४ घंटे में एक बार इस तरह से घूम जाती है और इसी घूमने के सबब से दिन रात होते हैं क्योंकि जब तक ज़मीन पर कोई जगह सूर्य्य के साम्हने रहती है तब तक वहां दिन रहता है। सिवाय इस तरह से घूमने के ज़मीन सूर्य्य के चारों तरफ़ एक बड़ी भारी अण्डाकार रेखा में भी

घूमती है। इस सबब से सूर्य्य की निस्बत ज़मीन की जगह बदलती जाती है और इसी से ऋतु यानी मौसिम में फ़र्क़ पड़ता है यानी कभी गरमी आती है और कभी जाड़ा। ३६५ दिन में ज़मीन सूर्य्य के चारों तरफ़ एक बार घूम आती है और इसी को बरस कहते हैं *॥

इस ज़मीन के चारों तरफ़ क़रीब ४५ मील ऊपर तक हवा है और इस का व्यास ७९१२ मील का है। इस के चारों तरफ़ चन्द्रमा घूमता है और चन्द्रमा को ज़मीन का उपग्रह कहते हैं॥

चन्द्रमा

साबित होता है कि चन्द्रमा पर ज़मीन के से जानवर नहीं रह सकते क्योंकि यहां के जानवर पानी और हवा के बग़ैर नहीं जी सकते। चन्द्रमा में भूडोल बहुत आते हैं और बहुत से ज्वालामुखी पहाड़ हैं पर हवा नहीं है इसलिये भूडोल से जब पहाड़ टूटते होंगे तो टूटने की आवाज़ भी नहीं सुनाई देती होगी क्योंकि बग़ैर हवा के आवाज़ नहीं सुन पड़ती॥

चन्द्रमा में उसी की रोशनी नहीं है पर वह भी सूर्य्य की रोशनी से चमकता है। चन्द्रमा जितनी देर में ज़मीन के चारो तरफ़ एक बार घूम आता है उतनी ही देर में अपनी कील पर भी घूमता है इस सबब से सिर्फ़ उस के आधे हिस्से के क़रीब हम लोगों को दिखाई देता है। चन्द्रमा ज़मीन के चारो तरफ़ क़रीब २९ दिन में घूम आता है और अपनी कील पर भी क़रीब २९ दिन में एक बार घूमता है इसलिये जैसे हम लोगों का एक दिन और रात मिला कर २४ घंटे का होता है उसी तरह से चन्द्रमा का दिन रात हम लोगों के २९ दिन के बराबर होता है यानी १४½ दिन तक बराबर एक तरफ़ धूप रहती है और दूसरी तरफ़ अंधेरा॥

ज़मीन और चन्द्रमा के घूमने के सबब से उनकी जगह में हमेशा फ़रक़ पड़ा करता है पर कभी वह इस सूरत में आ जाते हैं कि सब चन्द्रमा या उस का थोड़ा सा हिस्सा ज़मीन और सूर्य्य के बीच में आ जाता है तो ज़मीन पर से हम लोगों को सूर्य्य का वह हिस्सा नहीं दिखाई देता जो चन्द्रमा के बीच में आने से छिप जाता है। इसी को सूर्य्य का ग्रहण कहते हैं। चन्द्रमा सूर्य्य की निस्बत बहुत छोटा है पर अब यह जानना

है कि जब ग्रहण लगता है तब किस तौर से सूर्य का बड़ा पिण्ड छिप जाता है। इसका सबब यह है कि यद्यपि असल में सूर्य चन्द्रमा की निस्बत बहुत ही बड़ा है पर चन्द्रमा ज़मीन से बहुत नज़दीक है और सूर्य बहुत ही दूर है। छोटी चीज़ को आंख के साम्हने रखने से बहुत बड़ी चीज़ भी छिप सकती हैं जब कि इसे आंख के बहुत नज़दीक रखते हैं। इसी तरह से कभी जब चन्द्रमा ज़मीन से बहुत नज़दीक रहता है तब तब सूर्य में ग्रहण लग सकता है। जब ज़मीन सूर्य और चन्द्रमा के बीच में आ जाती है तब सूर्य की रोशनी चन्द्रमा पर जाने से ज़मीन के सबब से रुक रुक जाती है इस तरह पर चन्द्रमा जो कि सूर्य से रोशन है कुछ सूर्य की रोशनी के रुक जाने

कील पर २४½ घंटे में एक बार घूम आता है। यह सूर्य्य के चारो तरफ़ हम लोगों के ६८६ दिन में एक बार घूमता है। खाली आंख से देखने से मंगल कुछ २ लाल रंग का मालूम देता है इसी सबब से इसे फ़ौरन पहचान सकते हैं पर दूरबीन से यह रंग वैसाही नहीं दिखाता और इस की सतह पर कहीं कहीं रोशनी और कहीं २ अंधेरा मालूम देता है। इस अंधेरी जगह में समुद्र है। मंगल में भी बर्फ़ कहीं २ दिखाई देती है और ज्यों २ इस ग्रह में गरमी की ऋतु आती है त्यों २ यह गल कर कम होने लगती है। इस में पानी की निस्बत सूखी ज़मीन का हिस्सा चौगुना है॥

वृहस्पति

वृहस्पति सूर्य्य से ४७६०००००० मील पर है और ४३३२ दिन में सूर्य्य के चारो तरफ़ एक बार घूम आता है। यह अपनी कील पर सिर्फ़ १० घंटे में घूम जाता है। यह मालूम देता है कि इस ग्रह में बादल रहते हैं। जैसे ज़मीन का एक उपग्रह चांद है उसी तरह से वृहस्पति के चार उपग्रह हैं। उन में भी अक़सर ग्रहण लगता है॥

शनैश्चर

शनैश्चर सूर्य्य से ८७२०००००० मील पर है और क़रीब ३० बरस में एक बार सूर्य्य के चारो तरफ़ घूम आता है। यह अपनी कील पर १० दिन में घूमता है। इस में भी बहुत बादल मालूम देते हैं। इस के चारो तरफ़ अंगूठियों की शकल दिखलाई देती है। इसके आठ उपग्रह हैं।

यूरेनस

यूरेनस सूर्य्य से १७५३०००००० मील पर है यह ३०६८६ दिन में एक वार सूर्य्य के चारो तरफ़ घूमता है । इस के चार उपग्रह हैं ॥

नेप्च्यून

नेप्च्यून सूर्य्य से २७४६०००००० मील पर है और ६०१२६ दिन में एक वार सूर्य्य के चारो तरफ़ घूमता है। अभी तक इस ग्रह में सिर्फ़ एक उपग्रह दिखाई दिया है ॥

पुच्छल तारे वग़ैर:

सूर्य्य के चारो तरफ़ एक और क़िस्म के पिण्ड घूमते हैं जिन्हें पुच्छल तारा कहते हैं। ऐसे तारे बहुत से हैं और इन के घूमने की राह ऐसी है कि सब के दिखलाई देने का ठीक वक़्त नहीं जान सकते। इन में एक तारा नज़र आता है और उस में एक दुम फैल जाती है इस दुम में कोई ठोस चीज़ नहीं है पर यह एक तरह की भाप से बनी है । एक मरतबा ऐसा हुआ कि ज़मीन एक ऐसे तारे के दुम के भीतर से चली गयी और इस सबब से ज़मीन पर कुछ भी ज़रर नहीं पहुंचा। बहुत से पुच्छल तारे ऐसे हैं कि उनका हाल अच्छी तरह से मालूम हुआ है और यह भी दरियाफ़्त हुआ है कि कितने २ दिन के बाद नज़र आते हैं पर बहुत से नये २ पुच्छल तारे भी देखने में आते हैं और कितने ऐसे हैं कि जो एक वार किसी ज़माने में नज़र आये थे पर उन के फिर दिखाई देने की कुछ भी उम्मेद नहीं है ॥

सिवाय उन सब चीज़ों के जिन का बयान ऊपर कर चुके

हैं आसमान में रात को टूट कर गिरते हुए तारे दिखाई देते हैं। देखने में यह मालूम देता है कि एक तारा अपनी जगह से ज़ोर से चला और उसके पीछे रोशनी की लकीर बहुतही थोड़ी देर तक दिखाई देती है। इन में से कितने ज़मीन पर गिरे हैं और उन को देखने से मालूम हुआ है कि किन २ चीज़ों से यह अकसर बने रहते हैं। वह जब हवा के बीच में होकर ज़मीन की तरफ़ चलते हैं तो हवा की रगड़ से गरम होकर जलने लगते हैं और इसलिये रोशनी दिखाई देती है। जो छोटे रहते हैं वह हवा ही में जल जाते हैं और ज़मीन तक नहीं पहुंचते हैं॥

तीसरा अध्याय

पहला पाठ

जिन सब चीज़ों को इन्द्रियों के सबब से यानी देखने छूने वग़ैर: से जानते हैं उन्हें भौतिक पदार्थ या द्रव्य कहते हैं। जब किसी ऐसी चीज़ को लेकर हम लोग देखते हैं तो मालूम होता है कि इस के दो टुकड़े कर सकते हैं फिर इन के टुकड़े और भी छोटे हो सकते हैं। बहुत ही छोटे २ बहुत से टुकड़ों के मिलने से द्रव्य या पदार्थ बनता है। जब यह टुकड़े इतने छोटे हो जावें कि फिर उनका और छोटा करना मुमकिन न हो तो ऐसे निहायत छोटे टुकड़ों को परमाणु कहते हैं। पर यह भी सोचना चाहिये कि द्रव्य के छोटे २ हिस्से करते जावें तो कोई ऐसा छोटा हो जायगा कि फिर उस का हिस्सा न कर सकेंगे या और भी हो सकेगा। परीक्षा से इस बात का फ़ैसला नहीं कर सकते क्योंकि ऐसे बारीक यन्त्र नहीं बन सकते जिन से निहायत छोटे टुकड़े को फिर काटें पर रसायन

विद्या से यह बात बहुत सम्भव मालूम देती है कि कोई चीज़ जब बहुत छोटी सूरत की होती है यानी परमाणु बन जाती है तो फिर उसे और छोटा करना मुमकिन नहीं। इस बयान से साफ़ मालूम होगा कि दुनिया में जितने पदार्थ हैं वह सब पदार्थ परमाणुओं से बने हैं। जब तुम को यह मालूम हुआ कि सब परमाणुओं से बने हैं तो तुम्हारे दिल में यह शक हो सकता है कि यह परमाणु नष्ट हो सकते हैं या नहीं। तुम यह अच्छी तरह से समझोगे कि किसी पत्थर को तोड़ सकते हैं और निहायत छोटे२ टुकड़ों को अलग कर सकते हैं पर वह परमाणु जिन के जमा होने से पत्थर बनता है हमेशा किसी न किसी सूरत के बने रहते हैं। कोई एक परमाणु भी इस जहान में नहीं नष्ट होता देखने में सिर्फ़ सूरत और हालत बदला करती हैं। जब मोमबत्ती जलाते हैं तो यह मालूम होता है कि थोड़ी देर में सब बत्ती नहीं मालूम क्या हो गयी पर हक़ीक़त में जो परमाणु कि बत्ती में थे बदल कर हवा की सूरत पर और काजल की शकल के हो जाते हैं कोई एक परमाणु भी नष्ट नहीं होता॥

थोड़ा ग़ौर करके देखने से मालूम होगा कि सब पदार्थों में जिन्हें हम देखते हैं परमाणु एकही तरह से नहीं हैं पर परमाणुओं की दूरी और नज़दीकी और आपस के आकर्षण वग़ैर: के सबब से तरह २ के पदार्थ दिखाई देते हैं। इस तौर से तीन तरह के पदार्थ हो सकते हैं। पहले दृढ़ द्रव्य दूसरे द्रव द्रव्य और तीसरे वायु यानी हवा की तरह के द्रव्य। लकड़ी पत्थर वग़ैर: दृढ़ पदार्थ हैं इन में यह ख़ासियत है कि इनकी सूरत मुशकिल से बदलती है। द्रव द्रव्य की सूरत बहुत जल्द

बदल जाती है जैसे पानी और तेल वग़ैरः की शकल वैसीही होगी जैसे बरतन में उन्हें रखें। ऐसे द्रव्य के परमाणु अपनी जगह को बहुत जल्द बदल सकते हैं। वायु में और और सब द्रव पदार्थों में यह फ़रक़ है कि हवा के थोड़े से मिक़दार को बड़े बरतन में रखें तो वह फैल जाती है और इसी को अगर और छोटे बरतन में भरें तो वह दब जायगी। पानी तेल वग़ैरः का यह हाल नहीं है कितना ही दबाने से उनका मिक़दार इतना नहीं घटता कि साफ़ मालूम हो जावे॥

इस बात को हर शख़्स अच्छी तरह से जानता है कि जिन सब चीज़ों को हम लोग देखते हैं वह हमेशा एकही हालत में नहीं रहतीं कभी किसी चीज़ को ठहरी देखते हैं और फिर उसी को चलती देखते हैं पर यह ज़रूर है कि हर एक चीज़ या तो ठहरी रहे यानी उसकी जगह में कुछ तबदील न होती जावे या चलती रहेगी। जब कोई चीज़ ठहरी है तो वह स्थिति दशा में कहलाती है और जब चलती रहती है तब गति दशा में रहती है। इस में कुछ शक नहीं कि ज़मीन के चलने के सबब से ज़मीन पर की सब चीज़ें उसके साथ चलती हैं पर ज़मीन पर की चीज़ों की निस्बत वह नहीं चलतीं। ज़मीन के चलने के सबब से जो सब चीज़ें चलती हैं उनका हम लोग नहीं ख़्याल करते हैं और यह कहते हैं कि किसी कमरे में रखी हुई कुरसी ठहरी है और जब उसी कमरे में हम टहलते हैं तो हम चलते हैं॥

ऊपर जो लिखा गया है उससे यह साफ़ मालूम होगा कि जब किसी चीज़ की जगह में हर एक लहज़े में फ़रक़ पड़ता है तो इसे गति दशा में कहते हैं। जब कोई चीज़ चलती

रहतो है तो दो बातें देखते हैं एक तो यह कि किस दिशा में यानी किस तरफ़ गति होती है और दूसरे यह कि किस वेग यानी तेज़ी से गति होती है। पहिले यह अच्छी तरह से समझना चाहिये कि वेग से क्या मतलब है ख्याल करो कि तुम एक जगह से दूसरी जगह को जाते हो और पहले घंटे में पांच कोस चले दो घंटे के पोछे दस कोस और तीन घंटे के बाद पन्द्रह कोस पर आ पहुंचे तो इस हालत में तुम्हारा वेग हर एक घंटे में पांच कोस का है। पर यह ज़रूर नहीं है कि तुम घंटे भर या दिन भर बराबर एकही चाल से चलते रहो। अकसर लोगों ने देखा है कि जब रेल गाड़ी चलती है तो पहले धीरे २ चलती है और फिर रुकते वक्त भी धीमी हो जाती है पर बीच में ज़ोर से यानी थोड़े वक्त में बहुत दूर जाती है तो अब सवाल यह है कि इस के किसी वक्त पर के वेग किस तरह पर बयान करेंगे ? जिस वक्त पर की तेज़ी बया[illegible] करना है उसी तेज़ी से जितनी दूर एक घंटे में गाड़ी [illegible] अगर दरमियान में घंटे भर तक तेज़ी न घटे न बढ़े तो [illegible] दूरी से उस वक्त की तेज़ी नापते हैं॥

जब कि यह देखते हैं कि कोई पदार्थ चलता है और [illegible] ठहरा है तो यह ग़ौर करने की जगह है कि कैसे ठहरी [illegible]यों चलने लगती है और चलती हुई ठहर जाती है। जिस पर से ऐसा हो सकता है उसे बल कहते हैं यानी बल वह[illegible]कर्षण है जिस से किसी चीज़ को गति या स्थिति दशा में फ़रक़ तौर है। जब कोई गोला लुढ़काया जाता है तब उसे [illegible] दूसरे रोक सकते हैं यहां पर हाथ से बल लगाने से [illegible] सकती कि गति दशा में या वह स्थिति दशा में हो गया। [illegible] इनको से ठहरी चीज़ को बल से चला भी सकते हैं [illegible]त जल्द

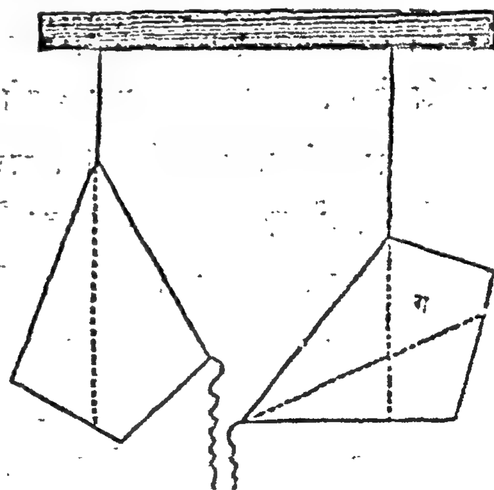
किसी ठहरी चीज़ को ढकेल कर एक जगह से दूसरी जगह ले जाते हैं तो जब तक यह चलती रहती है तब तक हाथ से बल लगाये जाने के सबब से यह गति दशा में है॥

अब तुम को यह मालूम हुआ कि बल से क्या मतलब है तो यह भी जानना चाहिये कि इस ज़मीन पर कौन २ ख़ास बल हैं और उन से क्या फ़ायदा है। पहिले ज़मीन के आकर्षण का बल तुम्हें जानना चाहिये क्योंकि ज़मीन पर जितनी चीज़ें हैं उन सब पर यह बल लगता है। ज़मीन के आकर्षण से यह मतलब है कि ज़मीन में ऐसी तासीर है कि उस के सबब से सब चीज़ें ज़मीन के केन्द्र यानी बीचोबीच की तरफ़ खिंची जाती हैं। जब कोई चीज़ तुम्हारे हाथ से गिर पड़ती है तो तुम अच्छी तरह से जानते हो कि यह ज़मीन की सतह पर जाती है आसमान की तरफ़ नहीं उड़ जाती और भी जब कि कितना हो ज़ोर से तुम ऊपर को गेंदा फेंकते हो तो थोड़ी देर के पीछे फिर गेंदा नीचे को तरफ़ यानी ज़मीन के नज़दीक आने लगता है और आख़िर को ज़मीन की सतह पर आ जाता है। जब ज़मीन के नज़दीक आने लगता है तो हम लोग कहते हैं कि गेंदा नीचे आता है और जब तक ज़मीन से दूर जाता रहता है तब तक कहते हैं कि ऊपर को जाता है। जब ऊपर को जाता है तब भी ज़मीन के आकर्षण का बल लगता है पर हाथ के बल से फेंके जाने के सबब से कुछ ऊपर जाता है और तब फिर नीचे को गिरता है। अभी यह कह चुके हैं कि ज़मीन की सब चीज़ों पर आकर्षण का बल लगता है और सब चीज़ें केन्द्र की तरफ़ खींची जाती हैं। यह बात जानने से तुम को यह शक ज़रूर होगा कि क्यों सब चीज़ें

इस आकर्षण के बल के सबब से ज़मीन के केन्द्र तक नहीं आ रहतीं। यह देखते हैं कि सब चीज़ें गिर नहीं रही हैं और जो कुछ ज़मीन की सतह पर रखा है वह और नीचे की यानी ज़मीन के बीच की तरफ़ नहीं चलता। तुम ने छत पर कुरसी रखी कई मरतबा देखा होगा और अगर कोई तुम से यह सवाल करे कि क्यों कुरसी नीचे नहीं आ जाती तो तुम उसी वक़्त जवाब दोगे कि छत है इसलिये ऊपर रुकी रहती है और अगर छत न हो तो फ़ौरन नीचे आ गिरे। इस से यह मतलब है कि जिस बल से कुरसी ज़मीन से खींची जाती है वह बल छत से रुकावट पाता है। इस बात को और अच्छी तरह से समझाने के वास्ते ख़्याल करो कि तुम एक गाड़ी को ढकेलते हो और इस सबब से जब तक सड़क पर है चली जाती है पर अगर बीच में कोई दीवाल आ मिले तो तुम कितना ही ढकेलोगे पर यह न चलेगी दीवाल से रुक जायगी। इसी तरह पर ज़मीन की सतह बीच में आ पड़ती है इसलिये आकर्षण से सब चीज़ें ज़मीन के बीच तक नहीं जा रहतीं। पर तुम को यह भी अच्छी तरह से मालूम होगा कि अगर किसी छत पर बहुत ज़ियादा बोझ रख दिया जावे या बहुत आदमी उस पर जा रहें तो कभी २ छत टूट जाती है और उस पर का सब कुछ नीचे आजाता है। अगर कोई तुम से पूछे कि छत क्यों टूटी तो शायद तुम यही कहोगे कि इस पर बहुत बोझ पड़ा इसलिये यह टूट कर गिर पड़ी। तो अब सोचना चाहिये कि इस बोझ से क्या मतलब है। अगर कोई भारी चीज़ तुम हाथ पर रखते हो तो तुम्हारा हाथ दर्द करने लगता है इस का सबब यह है कि भारी चीज़ ज़ियादा ज़ोर से ज़मीन

के केन्द्र की तरफ़ खिंच जाती है और आकर्षण के बल को तुम्हारा हाथ रोकता है। तो मालूम हुआ कि जितना ही ज़ियादा आकर्षण का बल किसी चीज़ पर होगा वह उतनी ही भारी होगी यानी बोझ आकर्षण के सबब से है॥

अभी कह चुके हैं कि आकर्षण का बल ज़मीन की सब चीज़ों पर लगता है और इसी के सबब से चीज़ों में बोझ होता है। अब यह जानना चाहिये कि किस तौर से यह ज़ोर अमल करता है। लोहे या तांबे या और किसी दूसरी चीज़ की एक छोटी सी बहुत पतली चादर लो। इस के एक कोने में एक पतली रस्सी बांध कर उसे लटका दो और उस रस्सी के सीध को बढ़ा कर उस चादर पर निशान कर दो जैसा कि शकल में किया है। फिर इसी चीज़ के दूसरे कोने में रस्सी बांधो और पहले की तरह इसे लटकाओ और उस पर निशान कर दो तो यह दोनों निशान किसी बिन्दु में मिलते हैं। उसी तरह और किसी जगह रस्सी बांध कर लटकाने से तीसरा निशान भी इसी बिन्दु पर मिलेगा। अब इसी चादर को किसी नोकदार चीज़ पर इस तरह से रखो कि ग बिन्दु जहां



सब निशान मिलते हैं नोक पर रहे तो अब यह देख पड़ता है कि इस बिन्दु पर यह चादर नोक पर रखने से ठहरी रहती है। तो ऐसे बिन्दु को गुरुत्वकेन्द्र कहते हैं। जितनी चीज़ें हैं उन सब में इस तरह का बिन्दु रहता है॥

जब तुम को यह मालूम हुआ कि ज़मीन के आकर्षण के बल से क्या मतलब है तो यह भी ख्याल करना चाहिये कि अगर ऐसा बल न होता तो क्या होता। अगर तुम ज़मीन पर ऊपर उछलते तो क्या होता? ज़मीन के आकर्षण के न होने से तुम में कुछ बोझ तो होताही नहीं इसलिये हवा में रहे रहते या इस ज़मीन से मालूम नहीं कहां बाहर चले जाते क्योंकि ज़मीन का आकर्षण तुम्हें खींच कर सतह पर रखे है और अगर तुम कूदते हो तो फिर ज़मीन खींच कर तुम्हें अपनी सतह तक ले आती है जहां कि तुम रुक रहते हो। हम लोगों के सब असबाबों का यह हाल होता है कि कोई तो ज़मीन पर रहता कोई हवा में और कितने फेंकने से ज़मीन के बाहर चले जाते॥

जो ऊपर लिखा गया है उस से यह न समझना चाहिये कि सिर्फ़ आकर्षण ही एक बल है और बहुत तरह के बल हैं उन में से दो और का बयान करते हैं। तुम लोग यह बात अच्छी तरह से जानते होगे कि जब किसी रस्सी को तोड़ना चाहते हो तो ज़ोर करना पड़ता है और मालूम देता है कि रस्सी के बहुत छोटे २ हिस्से अलहिदा होने में एक दूसरे को खींचते हैं और इसी सबब से उनको जुदा करने में यानी रस्सी को तोड़ने में ज़ोर लगता है। इसी तरह से सब दृढ़ पदार्थों के परमाणु एक दूसरे को ऐसा खींचे रहते हैं कि उन को जुदा करने में ज़ोर लगाना होता है। जो बयान हुआ है उस से तुम को यह अच्छी तरह से मालूम हुआ होगा कि इस बल में और ज़मीन के आकर्षण के बल में बड़ा फ़रक़ है। यह बल सिर्फ़ बहुत नज़दीक के परमाणुओं पर एक दूसरे के खींचने

से लगता है पर ज़मीन के आकर्षण का बल बहुत दूर की चीज़ों पर लगता है। यहां तक कि चन्द्रमा जो २५०००० मील दूर है उस पर भी पृथ्वी के आकर्षण का बल लगता है॥

अगर ऐसा बल न होता तो दृढ़ पदार्थों के परमाणु एक दूसरे से न मिले रहते और सब दृढ़ चीज़ें गर्द की तरह बनी रहतीं। हम लोगों का बदन जैसा है वैसा न रह सकता और मकान वग़ैरः का बनाना किसी तरह से न मुमकिन होता॥

तीसरा बल जिस का अभी बयान होगा रसायनिक बल कहलाता है। आगे तुम यह पढ़ोगे कि जब दो चीज़ों के मिलने से एक नयी चीज़ बनती है तो इन दोनों चीज़ों के परमाणु एक दूसरे को खींचते हैं और इसलिये यह परमाणु आपस में जा मिलते हैं जिस के सबब से दो चीज़ों के परमाणुओं के रसायनिक संयोग से एक नयी चीज़ का परमाणु बन जाता है। अगर ऐसा बल न होता तो आदमी का बदन जैसा है वैसा न रह सकता क्योंकि हम लोगों के बदन में हर वक़्त इस बल के सबब लोहू मांस वग़ैरः बना करते हैं। अगर यह बल न होता तो आग न जल सकती क्योंकि आग का जलना सिर्फ़ दो चीज़ों का रसायनिक संयोग है। इस का और बयान आगे होगा॥

जितने पदार्थ हैं उन में कितनी ऐसी ख़ासियत हैं कि सब में पायी जाती है और कितनी ख़ासियत सिर्फ़ दृढ़ पदार्थों में और कितनी सिर्फ़ द्रव में। इन्हीं के सबब से इन का फ़रक़ जानते हैं। सब पदार्थों में ऐसी शक्ति है कि दो चीज़ या परमाणु एक ही वक़्त में एक ही जगह में नहीं रह सकते। यह साफ़ ज़ाहिर है कि अगर एक गिलास में पानी अच्छी तरह से भरा रहे तो उस में जब तक पानी है तब तक और

कुछ नहीं रख सकते अगर और कोई चीज़ रखें तो थोड़ा पानी बाहर गिर जायगा यानी दो चीज़ एक ही वक़्त में एक ही जगह में नहीं रह सकती हैं। यह भी तुम अच्छी तरह से जानते होगे कि सब चीज़ों में मिक़दार रहता है यानी उन में फैलाव होता है। जिन चीज़ों को हम देख या छू सकते हैं उन में ज़रूर मिक़दार है। जितने पदार्थ हैं उन में एक और यह शक्ति रहती है कि जिस के सबब से कोई चीज़ अपनी स्थिति या गति दशा को आपही नहीं बदल सकती यानी अगर कोई चीज़ ठहरी हो तो वह तब तक ठहरी रहेगी जब तक चलाई न जावे और अगर चलती रहे तो बगैर रोके एक सीधी रेखा में चली जावेगी। यहां पर यह सवाल हो सकता है कि क्या सबब है कि जब किसी गोले को ज़मीन पर लुढ़का देते हैं तो वह थोड़ी दूर तक जाकर रुक जाता है। इस का सबब यह है कि ज़मीन के खुरखुरे होने से चलने में रुकावट होती है और जितनी ही चिकनी ज़मीन होगी उतना ही ज़ियादा दूर गोला जायगा। अगर खुरखुरापन से कुछ भी रुकावट न हो तो ज़रूर गोला बराबर चला जायगा। अब यहां पर एक और बात देखने में आयी कि दृढ़ पदार्थों में ऐसी शक्ति होती है कि जिस के सबब से अगर एक चीज़ को दूसरी पर लुढ़काते हैं तो वह रुक जाती है। यह चीज़ों के खुरखुरापन के सबब से है। सब दृढ़ पदार्थों में कुछ न कुछ खुरखुरापन ज़रूर होता है जितनी कोई चीज़ ज़ियादा चिकनी होती है उतना ही किसी और चीज़ को उस पर से ढकेलने में कम ज़ोर लगता है। अगर काठ के तख़्ते पर कोई चीज़ रखें तो उसे ढकेल कर हटाने में कुछ ज़ोर लगता है पर इसी चीज़ को अगर चिकने कांच के ऊपर रखें तो बहुत कम ज़ोर लगेगा।

इस का सबब यह है कि कांच लकड़ी से कम खुरखुरा होता है ॥

दृढ़ पदार्थों में एक और ऐसी शक्ति होती है कि जिस के सबब से जब उन को शकल में कुछ तबदील करते हैं तो वह फिर अपनी पहली सूरत पर आजाने की मायल होती हैं जैसा जब लकड़ी को थोड़ी सी टेढ़ी करते हैं तो वह फिर सीधी होने की रग़बत रखती है। यह शक्ति सब चीज़ों में एक सी नहीं रहती किसी में ज़ियादा और किसी में कम रहती है। यह भी है कि बहुत झुकाने से दृढ़ पदार्थ टूट जाते हैं मकान की छत की किसी लकड़ी पर जब ज़ियादा बोझ पड़ता है तो वह लचक जाती है और बहुत बोझ पड़ने से आख़िर को टूट जाती है। यह शक्ति जिस पदार्थ में कम होती है वह झुकाने से जल्द टूट जाता है ॥

दूसरा पाठ

द्रव पदार्थ।

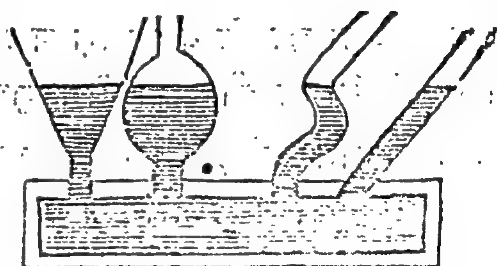
इस का बयान हो चुका है कि द्रव पदार्थ किसे कहते हैं। तुम को यह अच्छी तरह से मालूम है कि ऐसे पदार्थ में यह ख़ासियत है कि इस के परमाणु एक दूसरे की निस्बत अपनी जगह बहुत जल्द बदल सकते हैं। इस से यह मालूम होता है कि जैसे बरतन में चाहें वैसे में पानी या तेल को रख सकते हैं उस की शकल बरतन की शकल की तरह हो जायगी और फिर दूसरे बरतन में रखने से सूरत बदल जावेगी ॥

द्रव पदार्थों में एक यह ख़ासियत है कि उन के मिक़दार में बल लगाने से फ़रक़ नहीं पड़ता। एक बरतन में पानी भर

अगर दूसरे बड़े बरतन में डालो तो उस में जा रहेगा इसी को अगर छोटे बरतन में दबा कर भरना चाहें तो यह न दबेगा। इस बात के सबूत के लिये एक आसान परीक्षा करके सब कोई यह जान सकता है कि जो कहा है वह सहीह है। किसी बरतन में अच्छी तरह पानी भरो और ठीक उस के मुंह के बराबर लकड़ी या और किसी चीज़ का टुकड़ा रख कर दबाओ तो चाहो कितना ही दबाओगे पर पानी न दबेगा। इस में कुछ शक नहीं कि अगर बहुत ही ज़ियादा बल लगाया जावे तो कुछ पानी दबेगा पर उस का दबना इतना कम है कि हम लोग यही कहते हैं कि पानी दब नहीं सकता क्योंकि साधारण बल लगाने से यह दबा नहीं मालूम होता। अभी जिस परीक्षा का बयान किया है कि उस में थोड़ा फ़रक़ करने से द्रव पदार्थों की एक और ख़ासियत मालूम होगी। अगर पानी भरे बरतन के किसी और हिस्से में एक छोटा सा सूराख़ हो तो ऊपर का ढकना दबाने से इस में से पानी निकलने लगेगा। अब इस सूराख़ को किसी चीज़ से बन्द कर सकते हैं पर यह ज़रूर है कि इसे दबाना पड़ेगा नहीं तो यह पानी के दबाव से बाहर निकल जायगा। अब ग़ौर करना चाहिये कि इस परीक्षा से क्या मालूम हुआ। यह मालूम होता है कि जब पानी को जो किसी बरतन में है एक जगह पर दबाते हैं तो यह दबाव पानी के सब हिस्सों पर पहुंचता है क्योंकि जिस परीक्षा का बयान कर चुके हैं उस में ऊपर के ढकने के दबाने से जो ज़ोर लगता है वह ज़ोर पानी में से सूराख़ तक आ जाता है और इसी लिये सूराख़ पर के ढकने को जो न दबावें तो पानी निकलने लगेगा। जब तुम को यह मालूम हुआ कि द्रव पदार्थ दबता नहीं है और अगर इस में एक हिस्से

पर बल लगाया जावे तो यह बल उस के और हिस्सों में भी बराबर चला जाता है तब तुम यह ख्याल कर सकते हो कि ऐसी कलें बन सकती हैं जिन से नलियों में पानी भरने से एक जगह पर ज़ोर लगाने से उसका असर दूसरी जगह पहुंचा सकते हैं ॥

द्रव पदार्थों में एक और वस्फ़ यह है कि जब पानी या तेल वग़ैरः को किसी बरतन में रखते हैं तो वह इस तरह पर हो जाता है कि उस के ऊपर का हिस्सा बराबर चौरस रहता है यानी ऊंचा नीचा नहीं रहता। अगर किसी बरतन में पानी भर कर एक तरफ़ को नीचा करें तो उधर को ऊंची तरफ़ से पानी जा रहेगा और फ़िर सतह चौरस हो जावेगी। अगर एक बरतन ऐसी सूरत का लें जैसा कि शकल में है और उस में कुछ पानी भरें



तो यह साफ़ देखेंगे कि हर एक हिस्से में पानी बराबर ऊंचाई पर है।

अब यह जानना है कि पानी के भीतर कोई भारी चीज़ को तौलने से उस का बोझ उतना ही रहता है जितना कि हवा में तौलने से रहता है या कुछ कम ज़ियादा होता है। यह दरियाफ़्त करने के लिये एक तराज़ू लेकर एक पत्थर का टुकड़ा एक पलरे में बांध कर तौलो कि इस का क्या वज़न है । फिर तराज़ू को बाहर हवाही में रहने दो पर पलरे में बंधे पत्थर को पानी में डुबा दो और देखो कि इस का क्या बोझ है। अब इस का बोझ कम मालूम देगा। फिर जितने मिक़्दार का

पत्थर लिया था उतने ही मिक़दार के पानी का बोझ मालूम करो तो यह बात तुम को मालूम देगी कि पत्थर का पानी में वज़न और उतने ही मिक़दार पानी का वज़न मिलाकर पत्थर के असल वज़न के बराबर होगा यानी पानी में तौलने से पत्थर का वज़न घटता है और जितना वज़न कम हो जाता है वह उतने पानी के वज़न के बराबर है जो पत्थर की मिक़दार के बराबर है। अगर कोई ऐसी चीज़ हो कि उस की किसी मिक़दार का वज़न पानी के उसी मिक़दार के बराबर हो तो सोचना चाहिये कि इसे पानी में तौलने से क्या नतीजा होगा। यह कह चुके हैं कि पानी में तौलने से पानी के वज़न के बराबर चीज़ का बोझ कम हो जाता है तो इस हालत में अगर ऐसा हो तो यह साफ़ समझ में आता है कि पानी में तौलने से इस चीज़ का बोझ कुछ भी न मालूम देगा यानी पानी के भीतर छोड़ देने से यह उसी जगह रह जायगी और भारी चीज़ की तरह नीचे न जा रहेगी। इस से यह मतलब है कि पानी में तैरती रहेगी। अब इस से और हलकी चीज़ लेकर के पानी में डालो तो यह तैरने लगेगी पर इस का कुछ हिस्सा पानी के बाहर रहेगा और बाक़ी पानी के भीतर। इस सब से यह मालूम हुआ कि अगर कोई चीज़ का वज़न उसी मिक़दार के पानी के वज़न से हलका हो तो पानी के नीचे जा रहेगी। ऐसा ही क़ायदा और द्रव पदार्थों में भी दृढ़ चीज़ों के तैरने और डूबने का है॥

थोड़ा सा पानी एक बरतन में लो और एक कपड़े की बत्ती उस में इस तरह डालो कि उस के एक सिरे का थोड़ा सा हिस्सा पानी में रहे और बाक़ी पानी से बाहर रहे। तो यह देख पड़ेगा कि आहिस्ता २ पानी बत्ती में से ऊपर की तरफ़

थोड़ा सा आवेगा। इस से यह मालूम होता है कि पानी और कपड़े के दरमियान में एक ऐसी शक्ति है जिस से एक दूसरे से खिंच जाता है। इसी तरह से चिराग़ जलाने में बत्ती में से तेल कुछ ऊपर को तरफ़ चला जाता है। पर यह भी जानना चाहिये कि यह शक्ति सब द्रव पदार्थ और सब दृढ़ पदार्थ के बीच में नहीं रहती ख़ास द्रव पदार्थ ख़ास २ दृढ़ चीज़ों से खिंचते हैं। अगर पारे में कपड़े या काग़ज़ की बत्ती रखें तो पारा बत्ती में से ऊपर को न चलेगा और पारे से कपड़े का वह हिस्सा जो इस में नहीं है कभी नहीं तर होगा तो इस से मालूम होता है कि पारे और कपड़े के बीच में ऐसी आकर्षण की शक्ति नहीं है। पर पारा सोना या चांदी में इस आकर्षण से लिपट जाता है॥

तीसरा पाठ

वायु।

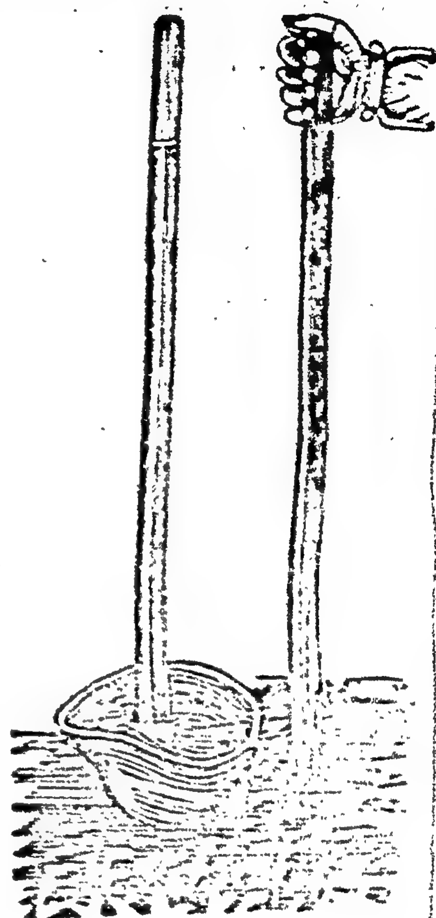
हवा की तरह की चीज़ों में और द्रव पदार्थों में बहुत सी बातें एकसां पाई जाती हैं पर कई एक बातों में उन में बड़ा फ़रक़ होता है जैसे कि एक बरतन में आधी दूर तक पानी भर सकते हैं पर यह नहीं हो सकता कि आधी दूर तक हवा रहे और ऊपर आधा ख़ाली रहे क्योंकि हवा फैल कर सब में भर जायगी। इसके सिवाय यह भी एक बात है कि एक छोटे बोतल भर हवा एक और बड़े बोतल में रख सकते हैं और इसी को फिर एक और भी छोटे बरतन में रख सकते हैं सिर्फ़ यह फ़रक़ होगा कि बड़े बरतन में रखने से उसके दर-

मागु दूर २ हो जायंगे और छोटे बरतन में रखने से फिर यह और नज़दीक आजावेंगे। यह बात पानी में नहीं पायी जाती जैसा कि पहले बयान कर चुके हैं कि पानी को दबा कर कम नहीं कर सकते। पर पानी और दूसरे द्रव और दृढ़ पदार्थों की तरह हवा में भी बोझ रहता है। इस के सबूत के लिये पहले एक हवा भरे बरतन को तौलते हैं और फिर उस बरतन में की हवा निकालते हैं और तब उसे तौलते हैं तो यह मालूम होता है कि हवा भरा बरतन ख़ाली बरतन की निस्बत भारी है इसलिये यह मालूम हुआ कि हवा में बोझ है क्योंकि देखते हैं कि इस परीक्षा में हवा निकालने से बोझ कम हो जाता है। किसी बरतन में की हवा को एक ख़ास यन्त्र के सबब से बाहर निकालकर बरतन ख़ाली कर सकते हैं। जब हवा में बोझ हुआ तो यह भी ज़रूर है कि इस का दबाव ज़मीन पर की सब चीज़ों पर पड़े। परीक्षा से यह बात जानी गयी है कि ज़मीन की सतह पर हर एक वर्ग इञ्च पर साढ़े सात सेर के क़रीब हवा का दबाव पड़ता है। इस तरह से मालूम देता है कि हम लोगों के बदन पर चारों तरफ़ से हवा का दबाव है। अब यह शुभा हो सकता है कि इस का क्या सबब है कि ऐसे बोझ और दबाव से हम लोग दब नहीं जाते। इस का बाइस यह है कि बदन के भीतर की रगों और ख़ून में फैलने का मैलान होता है और इसी हवा के दबाव के सबब से वह दबे रहते हैं। इस का सबूत यह है कि अगर किसी जानवर को एक बरतन में रखें और फिर उस में की हवा निकाल लें तो उस का बदन फट जाता है और चारों तरफ़ से ख़ून निकलने से वह मर जाता है। ज्यों २

पहाड़ के ऊपर जाते हैं त्यों २ हवा का दबाव कम होता जाता है इसलिये बहुत ऊपर पहाड़ पर जाने से निहायत तकलीफ़ होती है और कभी २ मुंह और कान से भी खून निकलता है। इस का भी बयान करना ज़रूर है कि पहाड़ के ऊपर ज़मीन की सतह की निस्बत क्यों हवा का दबाव कम है। इस का सबब बहुत सहल है। ज़मीन के ऊपर क़रीब ४५ मील ऊंचे तक हवा है इसलिये किसी जगह पर अगर एक वर्ग इञ्च लें तो उस पर ४५ मील ऊंची हवा का बोझ है पर अगर ४ मील इस जगह से ऊपर की जगह ख्याल करें तो वहां पर सिर्फ़ ४१ मील ऊंची हवा का बोझ होगा और इस वास्ते ज़रूर कम होगा। जब पहाड़ पर जाते हैं तो उस हिस्से का बोझ कम हो जाता है जो ज़मीन की सतह से पहाड़ तक है इसलिये पहाड़ पर हवा का दबाव कम रहता है॥

इस हवा के दबाव को ठीक २ नापने के लिये यन्त्र बनाये गये हैं। ऐसे एक मुख्य यन्त्र का कुछ थोड़ा सा बयान करते हैं। एक कांच की ३२ इञ्च लम्बी नली लो जिस का एक मुंह खुला हो और दूसरा बन्द हो इस में पारा भर दो तब इस को उलट कर खुले मुंह को पारे में डालो जो कि एक बरतन में रखा है तब देखना चाहिये कि क्या नतीजा होता है। नली में का पारा कुछ नीचे को आता है और ऊपर नली में शून्य हो जाता है तो अब देखते हैं कि चारों तरफ़ की हवा का दबाव बरतन में के पारे पर है और नली में के पारे के ऊपर कुछ दबाव नहीं है क्योंकि उस के ऊपर शून्य है। इस बरतन में के पारे पर के दबाव के सबब से नली में का पारा ठहरा रहता है क्योंकि जो दोनों पर कुछ दबाव न होता या बराबर दबाव होता तो दोनों की सतह बराबर होती। जितना

ऊंचा पारा नली में है उस का बोझ ठीक हवा के दबाव के बराबर है। इस तरह से हवा का बोझ या दबाव जान सकते हैं।



ऐसा यन्त्र कई कामों में आता है। इससे पहाड़ की ऊंचाई जान सकते हैं। यह बयान कर आये हैं कि पहाड़ के नीचे उसके ऊपर की निस्बत ज़ियादा हवा का दबाव रहता है क्योंकि पहाड़ के ऊपर उस हवा का बोझ कम हो जाता है जो पहाड़ की ऊंचाई तक है। इस सबब से ज्यों २ ऊपर जायंगे त्यों २ इस यन्त्र में पारा नीचे आता जायगा क्योंकि ऊपर जाने से हवा का बोझ कम होता जाता है। इस लिये इस यन्त्र से पहाड़ की ऊंचाई मालूम कर सकते हैं।

बराबर हवा का दबाव है। पानी पारे की निस्बत बहुत हलका होता है इसलिये अगर एक बड़ी नली बनाई जावे और पानी व हवा का बोझ नापा जावे तो पानी नली में बहुत ऊंचे तक उठेगा। हक़ीक़त में यह ३२ फुट के क़रीब उठता है। हवा की इसी ख़ासियत के सबब से एक यन्त्र बनाया गया है जिस से एक नली में से कूएं का पानी ऊपर चढ़ आता है। अगर एक ऐसी लोहे की नली बनाई जावे जो ३२ फुट से कम हो और इस के एक सिरे को पानी में डालें और किसी सूरत से इस में की हवा निकाल डालें तो पानी की उस सतह पर जो नली के भीतर है हवा का कुछ भी दबाव नहीं है पर उसके चारों तरफ़ नली के बाहर पानी पर हवा का दबाव है इस सबब से यह ज़रूर है कि नली के भीतर का पानी जिस पर कुछ दबाव नहीं है ऊपर को उठेगा। यह बत्तीस फुट से ज़ियादा नहीं उठ सकता क्योंकि हवा का दबाव सिर्फ़ इतने ऊंचे पानी के बोझ के बराबर है। इसी तरह से यन्त्र के द्वारा कूए में से पानी बाहर निकाल सकते हैं॥

चौथा पाठ

शब्द यानी आवाज़

अब इस बात का बयान होगा कि शब्द क्या है और किस तरह से हम लोगों को सुनाई देता है। यह जानने के लिये कि शब्द कैसे पैदा होता है और आता है नीचे लिखी हुई परीक्षा करो। लोहे या तांबे के तार का एक टुकड़ा लो और उसके एक सिरे को ज़ोर से एक हाथ में पकड़े रहो या और

बेहतर तदबीर यह है कि इस को एक भारी लकड़ी में जड़ दो। अब तार के दूसरे सिरे को खींच कर छोड़ दो या उसे किसी चीज़ से मार दो तो क्या देखते हो यह साफ़ दिखाई देगा कि तार आगे और पीछे को हिलने लगता है। इसी तरह से जब ढोलक के चमड़े पर हाथ मारते हैं तो वह भी आगे पीछे हिलने लगता है। अगर ऐसी हिलती चीज़ को रोका चाहें तो ज़रूर धक्का लगेगा। जब ऊपर की परीक्षा में तार हिलता देख पड़ता है तो सोचो कि कोई चीज़ इस के हिलने को रोकती है या नहीं। थोड़ी देर में हिलना बन्द हो जाता है। यह सब लोग देखते हैं कि हवा सब जगह ज़मीन की सतह पर है इसलिये हवा के परमाणु यानी बहुत छोटे २ टुकड़े तार के चारो तरफ़ हैं और इस सबब से तार के हिलने से हवा के उन कणों में धक्का लगता है जो उस से छुए हुए हैं। इन कणों से हवा के दूसरे कणों पर धक्का लगता है और फिर इसी तरह यह धक्का दूर तक चला जाता है आख़िर को हम लोगों के कान के नज़दीक यह धक्का पहुंचता है और कान के भीतर एक झिल्ली में लगता है और तब हम लोगों को शब्द का ज्ञान होता है। जब किसी चीज़ से हवा में एक ही बार धक्का लगता है तो एक शब्द सुन पड़ता है जैसे बन्दूक का शब्द। पर जब लगातार एक दूसरे के पीछे धक्का लगता जाता है तो शब्द का समूह सुन पड़ता है। इसी तरह से बाजे में से राग निकलते हैं। यह सब लोग जानते हैं कि एकही बाजे में कई तरह के शब्द निकलते हैं वह सिर्फ़ उस चीज़ के जल्द या देर से हिलने के सबब से होता है जिस में शब्द निकलता है। जब किसी लचीली वस्तु में जैसे कि एक सेकंड में कम बार

कोई शब्द पैदा करने वाली चीज़ हिले तो भारी शब्द सुन पड़ता है और जल्द २ हिले तो तेज़ शब्द सुनाई देता है ॥

हवा के कणों के धक्के से शब्द सुन पड़ता है इस का सबूत यह भी है कि जब कभी बहुत सी तोपें इकट्ठा छूटती हैं तो दरवाज़ों में के शीशे भी टूट जाते हैं उन में हवा का धक्का बड़े ज़ोर से लगता है इसलिये टूटते हैं। आदमी बड़े ज़ोर के शब्द के सुनने से बहिरे भी हो गये हैं क्योंकि बड़े ज़ोर से धक्का के लगने से कान में की झिल्ली फट जाती है। अब यह मालूम होता है कि अगर हवा न होती तो शब्द न सुन पड़ता क्योंकि कान में भीतर सिर्फ़ हवा के धक्के के लगने से शब्द का ज्ञान होता है। परीक्षा करने से भी इस का सबूत मिला है। जब किसी बरतन में की हवा निकाल लेते हैं और तब उस में घंटा बजाते हैं तो उसका शब्द नहीं सुनाई देता है ॥

पहले कह आये हैं कि हवा के कणों के आपस में धक्का लगने से शब्द आता है अब यह जानना चाहिये कि जब एक कण का धक्का दूसरे में लगता है तो पहला चलने नहीं लगता पर ठहर जाता है और दूसरे तीसरे को धक्का मार कर ठहरता है। यह ज़रूर है कि इस धक्के के कान तक आने में यानी शब्द के पहुंचने में कुछ वक़्त लगता है। शब्द का वेग बहुत है पर इस वेग से आने में भी वक़्त लगता है। जिस किसी ने तोप को छूटते देखा होगा उसे इस बात का सबूत तलाश करना न पड़ेगा। दूर से देखने में पहले तोप दगने की रोशनी और धूआं दिखाई देते हैं तब इस के बाद शब्द सुनाई देता है। इस का सबब यह है कि शब्द के आने में कुछ वक़्त लगता है। इसी तरह से पहले बिजली की चमक बादल में दिखाई देती है पर कुछ अरसे के बाद गरज सुनाई देता है क्योंकि रोशनी

शब्द की निस्बत ज़ियादा तेज़ी से चलती है। और यह भी है कि शब्द का वेग सब चीज़ों के बीच में आने में एक ही नहीं है जब शब्द पानी में से आता है तो कुछ और जल्द सुन पड़ता है और लकड़ी में से और भी जल्द आता है॥

नये बड़े २ मकानों में जहां कुछ असबाब न रक्खा हो और पहाड़ों के बीच में अकसर लोगों ने यह देखा होगा कि जब कुछ बोलते हैं तो थोड़े अरसे के बाद फिर वैसाही शब्द सुनाई देता है इसे प्रतिध्वनि कहते हैं। अब ग़ौर करना चाहिये कि इस का सबब क्या है। ऐसी हालत में हम कुछ बोलते हैं तो इस शब्द का धक्का हवा में से जाते जाते घर या पहाड़ में लगता है और जब शब्द इस के पार नहीं जा सकता तो फिर फिरता है और हम के कान तक फिर आने से शब्द दूसरी बार सुनाई देता है इस से मालूम पड़ता है कि शब्द का धक्का जब किसी चीज़ में लगता है तो वह फिर फिरता है पर यह ज़रूर नहीं है कि शब्द उसी जानिब फिरे जिधर से गया हो इसके आने की दिशा में उस सतह की सूरत से फ़रक़ पड़ता है जिस पर कि शब्द लगता है। इटली मुल्क में एक मकान है जहां कुछ बोलने से ४० बार उसकी प्रतिध्वनि होती है और भी कितने पहाड़ और मकान वग़ैरः हैं जहां कि दस २ बारह बारह बार किसी शब्द की प्रतिध्वनि सुनाई देती है॥

पांचवां पाठ

गरमी

एक लोहे का गोला लो और उसे तौलो फिर उसी गोले को आग में डालो और जब यह अच्छी तरह से गरम हो जाय तो फिर देखो कि उस के बोझ में कुछ फ़रक़ पड़ा या नहीं। इस तरह से मालूम होता है कि गरम करने से किसी चीज़ का बोझ नहीं घटता बढ़ता। इस से यह मालूम हुआ कि गरमी और पदार्थों की तरह नहीं है क्योंकि इस में बोझ नहीं है, यही हाल शब्द का है। गरमी सिर्फ़ परमाणुओं के आगे और पीछे एक तरह की गति के सबब से चीज़ों में होती है। जब किसी चीज़ को गरम करते हैं तब उस के सब परमाणु इधर उधर और चारो तरफ़ चलने लगते हैं। यह ऐसे छोटे हैं और इस तेज़ी से चलते हैं कि आंख से देखने में ठीक नहीं दरियाफ़्त होता कि वह चल रहे हैं। गरमी और शब्द में बहुत सी बातें एकसां पाई जाती हैं जैसा कि कह चुके हैं कि शब्द भी किसी चीज़ के हिलने से पैदा होता है और कान में एक झिल्ली पर धक्का लगने से शब्द का ज्ञान होता है॥

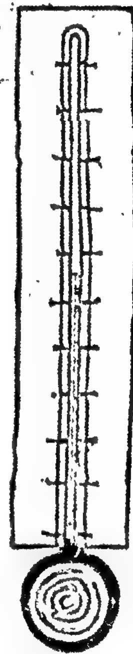
जब किसी चीज़ को गरम करते हैं तो वह फैल जाती है। इसी वस्फ़ के सबब से गरमी नापने के यन्त्र बनाये गये हैं यानी ज्यों २ गरमी बढ़ती जाती है त्यों २ वह चीज़ भी बढ़ती जाती है जिस से गरमी नापते हैं। गरमी का एक और वस्फ़ यह है कि इस के सबब से किसी चीज़ के भीतर के पानी का हिस्सा भाफ होकर बाहर निकल जाता है और वह सूख जाती है। यह बात हर किसी ने देखी होगी पर यह जानना चाहिये कि गरमी से जो पानी का हिस्सा किसी चीज़ में से निकल जाता है वह नष्ट नहीं होता क्योंकि यह अच्छी तरह से साबित हो चुका है कि किसी चीज़ का नष्ट होना मुमकिन

नहीं है सिर्फ़ हालत बदला करती है यानी पानी से कुछ भाफ हो गया यानी एक चीज़ दूसरी चीज़ हो गयी। यह नियम ऐसा ठीक है कि जब किसी तरह का बल भी किसी चीज़ पर लगाते हैं तो यह बल नहीं नष्ट हो जाता पर बदल जाता है जैसे कि अगर किसी चीज़ को हथौड़े से मारें तो बल लगा इस बल के लगने से गरमी पैदा होती है यानी बल बदल कर गरमी बना। इसी तरह से दुनिया में नष्ट होना मुमकिन नहीं है पर हर एक लहज़े में सब चीज़ों में कुछ पर कुछ तबदीली हुआ करती है। चीज़ों के बदलने में अकसर मिक़दार में फ़रक़ हो जाता है पर कोई परमाणु नष्ट नहीं होता॥

अब इस बात का सबूत देना है कि गरमी से सब चीज़ें बढ़ती हैं। यह कह चुके हैं कि द्रव्य तीन तरह के हैं या तो लोहे पीतल वग़ैर: की तरह जिन्हें दृढ़ द्रव्य कहते हैं या पानी तेल की तरह जो द्रव हैं और कितना ही दबाने से जिन का मिक़दार नहीं घटता या हवा की तरह जिस में यह ख़ासियत है कि थोड़े से मिक़दार को बड़े बरतन में रखें तो यह चीज़ फैल जाती है और उसी को अगर और छोटे बरतन में रखें तो यह दब जायगी। यह दिखलाना है कि गरमी के सबब से तीनों तरह की चीज़ें बढ़ती हैं॥

एक लोहे का गोला लो और एक लोहे में ऐसा सूराख़ बनाओ कि गोला ठीक इस में से निकल जावे। अब इस गोले को गरम करो तो फिर इसी सूराख़ में से गोला न निकलेगा। इस से साबित होता है कि गरम करने से गोले का मिक़दार बढ़ता है। फिर किसी कांच की नली में जिसका एक मुंह बन्द हो कोई द्रव पदार्थ जैसे पारा रखो और इस के नीचे कुछ

आग लगाओ तो यह द्रव द्रव्य बढ़ता दिखलाई देगा। किसी झिल्ली की थैली में आधी हवा भर कर अगर इसे गरम करें तो यह हवा के फैलने से फूलने लगेगी। चीज़ों में गरमी के सबब से जो फैलने की तासीर है उस से गरमी नापने के यन्त्र बनाये जाते हैं। इस यन्त्र के बनाने के लिये एक कांच की नली लो जिस के नीचे कुछ फैला हो। इस नली में कुछ पारा भरा जाता है। जब इसके नीचे गरमी देते हैं तो पारा फैलता है और ठंडी जगह में रखने से फिर पारा सिकुड़ जाता है। कुछ शक नहीं कि कांच भी गरमी से फैलता है पर पारा बहुत ज़ियादा फैलता है और नली इतनी पतली रहती है कि भीतर पारा थोड़ी सी गरमी से बहुत दूर तक ऊपर जा रहता है। अगर इस कांच की नली को ठंडे पानी में रखें और फिर गरम में तो पारा एकही जगह में नहीं रहता पर गरमी के बमूजिब घटता बढ़ता है। पहले इस के ऊपर का मुंह खुला रखते हैं पर आंच देने से पारा



ऊपर तक फैल जाता है तब ऊपर का मुंह कांच से इस तरह से बंद किया जाता है कि नली के भीतर हवा फिर नहीं जा सकती। फिर जब नली ठंडी हो जाती है तो पारा नीचे को आ जाता है और उस के ऊपर नली में शून्य रह जाता है। अब इस नली को किसी गलती हुई बर्फ़ में डालते हैं तो पारा नीचे को जा रहता है। जहां तक पारा नीचे को जा रहे वहां एक निशान करना चाहिये तो अब जब कभी इस यन्त्र को गलती बर्फ़ में डालेंगे तो पारा यहीं तक नीचे आवेगा। फिर

अब इस को बर्फ़ में से निकाल कर किसी धातु के बरतन में खौलते हुए पानी की भाफ में डालते हैं तब गरमी के सबब से पारा फैलता है और इसलिये पारा नली में बहुत ऊपर तक जा रहता है। फिर इस जगह निशान किया जाता है। इस यंत्र में जहां गलती हुई बर्फ़ में रखने से पारा आता है वहां ३२ लिखते हैं और जहां खौलते पानी की भाफ में रखने से चढ़ता है वहां २१२। इस के बीच की लम्बाई का १८० बराबर हिस्सा करते हैं इन में से एक २ को अंश कहते हैं तो जब पारा ३२ अंश पर पहुंचता है तो बर्फ़ के गलने की सर्दी उस जगह है जहां यंत्र रखा है। एक और प्रकार के इसी यंत्र में ३२ की जगह ० और २१२ जगह १०० रखते हैं। यानी बर्फ़ के गलने की सर्दी इस यंत्र में शून्य है और खौलते पानी की गरमी १०० है। ऐसे यंत्र को उष्णमापक यंत्र कहते हैं और अंगरेज़ी में इसे थर्मामिटर (Thermometer) कहते हैं॥

ऊपर कह चुके हैं कि गरम करने से सब चीज़ें बढ़ती हैं पर सब एकसां नहीं बढ़तीं कोई ज़ियादा कोई कम। जैसे कि जस्ता और धातुओं से ज़ियादा बढ़ जाता है। द्रव द्रव्य दृढ़ की निस्बत और ज़ियादा बढ़ते हैं और हवा इस से भी ज़ियादा। जब कोई चीज़ गरमी से बढ़ने लगे तब अगर उस को चारों तरफ़ से किसी चीज़ से दबावें तो उस पर बड़ा बल लगेगा यहां तक कि जो एक शीशे के गोल बरतन को पानी से भर कर उस का मुंह इस तरह से बन्द कर दें कि पानी न निकल सके और इसे गरम करें तो पानी के फैलने के ज़ोर से शीशे का बरतन टूट जायगा॥

जिस तरह पर गरमी से सब चीज़ें बराबर नहीं फैलतीं उसी तरह से सब चीज़ें बराबर गरमी देने से बराबर गरम नहीं होतीं। जितनी गरमी से आध सेर पानी गरमी के एक खास दरजे को पहुंचेगा उतनीही गरमी से ४½ सेर लोहा उसी दरजे को पहुंचेगा और १५ सेर सोना उसी से उतना ही गरम हो जायगा। यह ज़रूर है कि ज़ियादा गरम करने के पहले तीनों चीज़ बराबर गरम हों। इससे यह कह सकते हैं कि पानी की निस्बत सोने को गरम करने में कम गरमी देने की ज़रूरत पड़ती है॥

पहले यह कह चुके हैं कि पदार्थों की तीन हालत हैं यानी कितने दृढ़ होते हैं कितने द्रव और कितने हवा की तरह। अब देखना चाहिये कि किस तरह से गरमी के सबब से एक हालत से दूसरी हालत हो जाती है। यह सब लोग जानते हैं कि बर्फ़ गरमी से गल कर पानी हो जाती है और फिर इसी पानी को ज़ियादा गरम करने से भाफ बन जाता है यानी पानी हवा की सूरत हो जाता है। इसी तरह से और चीज़ों का भी हाल है। सोने को आग से गला देते हैं और फिर इस गले सोने को बहुत ज़ियादा गरम करने से कुछ भाफ बन जाती है। गरमी में ऐसा असर है कि इस से लोहे या फ़ौलाद को भाफ कर सकते हैं। बिजली की गरमी से जिस का बयान आगे होगा कितनी ही सख़्त चीज़ को गला सकते हैं। अगर गरम करने से दृढ़ पदार्थ द्रव हो जाता है और फिर द्रव से हवा तो इस के बरख़िलाफ़ चाहिये कि सर्दी देने से सब चीज़ें जम जावें पर इस तरह पर सब चीज़ों को दृढ़ नहीं

बना सकते कितनी चीज़ें जितनी सर्दी हम लोग दे सकते हैं उस से नहीं जमी हैं पर यह ज़रूर है कि और बहुत ज़ियादा सर्दी पैदा हो सके तो वह जम जावेंगी। पर सब पदार्थ एकही गरमी से नहीं द्रव हो जाते किसी में ज़ियादा और किसी में कम गरमी देना पड़ता है यह बात सब लोग जानते होंगे। जितनी गरमी से सोना और चांदी गलती है उस से ज़ियादा गरमी से लोहा गलता है और बर्फ़ देखो कितनी कम गरमी से गलने लगती है॥

अगर किसी बरतन में पानी रख कर उसके नीचे आग जलावें तो क्या दिखलाई देता है? पानी के ऊपर से भाफ उठती है और पानी खौलने लगता है। यह कुछ ज़रूर नहीं है कि खौलने के बाद पानी में से भाफ निकले। अकसर खौलने के पहले ही निकलती है। जब तर कपड़ा आग के नज़दीक रख कर खुश्क करते हैं तो उस में से भाफ निकलने लगती है पर उस में का पानी नहीं खौलता। ऊपर कह चुके हैं कि अगर खौलते पानी में उष्णमापकयन्त्र डालें तो पारा २१२ अंश पर जायगा पर यह भी है कि जो हवा का दबाव उस जगह कम कर दिया जावे तो २१२ अंश से कम पर पानी खौलने लगेगा और अगर दबाव बढ़ा दिया जाय तो २१२ से ज़ियादा पर खौलेगा। यह बात कई एक परीक्षा से मालूम हुई है। इस से यह भी मालूम होता है कि पहाड़ के ऊपर जाने से किसी चीज़ को पकाने के लिये कम गरमी देनी पड़ेगी क्योंकि पहाड़ के ऊपर हवा का दबाव कम रहता है॥

अब इस बात का बयान करना चाहिये कि गरमी एक जगह से दूसरी जगह कैसे जाती है और किसी चीज़ के एक सिरे को

गरम करने से कैसे बिलकुल चीज़ में गरमी फैल जाती है। यह मालूम है कि गरमी एक जगह से दूसरी तक फैल जाती है और सूर्य्य से ज़मीन तक भी चली आती है। एक लोहे का टुकड़ा लो इस के एक सिरे को हाथ में पकड़ो और दूसरे सिरे को आग में डालो तो यह देखोगे कि थोड़े अरसे में आग की गरमी तुम्हारे हाथ तक पहुंचेगी। अगर लोहे के बदले कांच या पत्थर का टुकड़ा लिये होते तो तुम्हारे हाथ में ज़ियादा गरमी जल्द न पहुंचती। इस से मालूम होता है कि सब चीज़ों के भीतर से गरमी एकही तरह से नहीं चलती कितने पदार्थों में से जल्द जाती है और बहुत सी चीज़ों में से देर में। ऊनी कपड़ों के भीतर से और पर में बहुत धीरे गरमी चलती है। इसी सबब से जाड़ा के दिनों में अकसर ऊनी कपड़ा पहना जाता है। इसी लिये बर्फ़ को कम्मल में रख कर एक जगह से दूसरी जगह ले जा सकते हैं क्योंकि इस में से बाहर की गरमी निहायत मुशकिल से बर्फ़ तक जा सकती है और इसलिये बर्फ़ जल्द नहीं गलती॥

अब एक छोटे बरतन में आधे से ज़ियादा पानी भर कर इसे आग पर रखो तो देखना चाहिये कि किस तरह से सब पानी में गरमी पहुंचती है क्योंकि सिर्फ़ पानी के नीचे के हिस्से में आंच लगने से बरतन में से होकर गरमी पहुंचती है। ज्यों २ नीचे का पानी गरम होता जाता है त्यों २ वह फैलता जाता है क्योंकि गरमी से सब चीज़ें फैलती हैं। इस फैलने से नीचे का पानी हलका हो जाता है और इस सबब से यह ऊपर को जा रहता है और ऊपर का सर्द पानी भारी होने से नीचे आ जाता है तब इस ठंडे पानी के कण गरम होकर ऊपर जाते हैं और दूसरे ऊपर के सर्द हिस्से के कण नीचे आते हैं। इस

तरह से सव पानी गरम हो जाता है। सर्द मुल्कों में नदी की सतह पर का पानी सर्दी से पहले ठंडा हो जाता है और तव इस सवव से यह कण नीचे जाते हैं और गरम पानी ऊपर जाता है यहां तक कि थोड़ी देर में सव पानी में ३९ अंश तक की सर्दी हो जाती है। उसके वाद और चीज़ों के नियम के वरखिलाफ़ और सर्दी पाने से पानी सिकुड़ने के वदले फैलता है और जव वर्फ़ वन जाती है यानी ३२ अंश पर गरमी आती है तव वर्फ़ हलकी होने के सवव से पानी की सतह पर तैरती है। अगर वर्फ़ पानी से भारी होती तो वह पानी के नीचे चली जाती और फिर ऊपर का पानी वर्फ़ हो जाता। इस तरह से सव नदी जम जाती। पर सर्द मुल्कों में सिर्फ़ नदी के ऊपर का हिस्सा वर्फ़ हो जाता है। गरमी के सवव और वहुत सी वातें भी ज़मीन पर नज़र आती हैं जैसे पानी का वरसना हवा का चलना वगैरः। इन का वयान प्राकृतिक-भूगोलचन्द्रिका में है॥

ऊपर के लिखने से मालूम होता है कि गरमी दो तरह से किसी चीज़ कि एक सिरे पर लगाने से उस चीज़ के हिस्सों में फैल जाती है। अव यह देखना चाहिये कि सूरज पर से जो गरमी आती है वह किस तरह से यहां तक पहुंचती है। इस में कुछ शक नहीं कि इन दो तरहों से नहीं आती जिनका वयान ऊपर हुआ है क्योंकि सूरज और ज़मीन के वीच में लगातार हवा या और कोई पदार्थ नहीं है और क्योंकि गरमी

यहां तक पहुंचे। सब चीज़ में से गरमी की किरणें निकलती हैं। जब आग के साम्हने खड़े होते हैं तो गरमी की किरणें आग में से निकलती हैं और इन के सबब से हम लोगों को गरमी मालूम होती है। जब कोई चीज़ गरम कियी जाती है तो पहले उस में से गरमी की काले रंग की किरणें निकलती हैं पर थोड़ी देर के बाद इसी चीज़ का रंग बदल जाता है और सुर्ख़ नज़र आता है। और ज़ियादा गरम करने से सुफ़ेद किरणें निकलती हैं और उस चीज़ का रंग भी सुफ़ेद हो जाता है॥

अब यह जानना चाहिये कि गरमी कहां से आती है और इसे किस २ तरह पैदा कर सकते हैं। यह साफ़ ज़ाहिर है कि बहुत सी गरमी सूर्य से आती है पर ज़मीन के भीतर भी गरमी है और हमेशा इस में से निकला करती है। और भी जब किसी ख़ास दो चीज़ को मिलाते हैं तो उन के मिलने से गरमी निकलती है जैसे अगर जस्ते के टुकड़ों पर गंधक का तेज़ाब डालें तो इन के मिलने से गरमी निकलती है इस से यह मतलब है कि जब कभी रसायनिक संयोग होता है तो गरमी पैदा होती है। दो चीज़ों को आपस में रगड़ने से या किसी चीज़ को दबाने से भी गरमी पैदा होती है॥

छठवां पाठ।

प्रकाश यानी रोशनी।

जब किसी चीज़ को गरम करते हैं तो थोड़ी देर के बाद उस चीज़ की रंगत ऐसी हो जाती है कि अगर उसे अंधेरे में

रखें तो वह नज़र आने लगती है यानी उस में से प्रकाश की किरणें निकलती हैं। यह ज़रूर है कि बिना प्रकाश के कोई पदार्थ नहीं दिखलाई देता। सूर्य से बहुत सी रोशनी ज़मीन पर आती है और इसी रोशनी के आने से दिन होता है। यह भी कह चुके हैं कि गरमी सूर्य से आती है इसलिये सूर्य को जानवरों की ज़िन्दगी का सबब समझ सकते हैं क्योंकि बिना गरमी और प्रकाश के जीना मुमकिन नहीं है। जब यह मालूम हुआ कि बहुत सा प्रकाश सूर्य से आता है तो यह भी सोचना चाहिये कि यह किसी निश्चित वेग से आता है या एक बारगी जिस वक़् सूर्य से चलता है उसी वक़् ज़मीन पर पहुंच जाता है। परीक्षा से मालूम हुआ है कि प्रकाश के आने में कुछ वक़् लगता है पर यह बड़े वेग से आता है। इस का वेग ऐसा है कि एक सेकंड में प्रकाश १८६००० मील जाता है और इस सबब से सिर्फ़ आठ मिनट में सूर्य से ज़मीन तक प्रकाश आता है। यह याद रखना चाहिये कि प्रकाश भी गरमी और शब्द की तरह आता है यानी यह कोई भारी पदार्थ नहीं है और न किरणें परमाणु हैं। जिस तरह से शब्द कान तक आता है उसी अन्दाज़ से प्रकाश भी आंख तक आता है और आंख के भीतर उस के लगने से रूप का ज्ञान होता है।

सब पदार्थों को इस तरह से भी तक़्सीम कर सकते हैं। बहुत से ऐसे पदार्थ हैं कि वह स्वयंप्रकाश हैं और कितने और ऐसे हैं जो दूसरे के प्रकाश से दिखलाई देते हैं। सूर्य में उसी का प्रकाश है यानी वह स्वयंप्रकाश है पर चन्द्रमा सूर्य ही के प्रकाश से दिखलाई देता है। इसी तरह से ज़मीन पर की बहुत सी चीज़ें बग़ैर और किसी पदार्थ के प्रकाश के नहीं

दिखलाई देतीं। जब कोई प्रकाश की वस्तु कहीं रखी रहती है तो उस में की किरणों के सबब से और सब चीज़ें दिखलाई देती हैं। जब प्रकाश किसी वस्तु में से निकलता है तो यह सीधी रेखाओं में हर एक तरफ़ जाता है। पर जब कोई ऐसी चीज़ बीच में आ जाती है जिस में प्रकाश नहीं है तो किरणें उस से रुक जाती हैं और इसलिये इस चीज़ के पीछे अंधेरा हो जाता है। ख्याल करो कि किसी कमरे में मोमबत्ती जलती है तो इस हालत में रोशनी की किरणें कुछ कमरे में बत्ती से निकल कर फैल जाती हैं। अगर बत्ती से थोड़ी दूर पर कोई ऐसी चीज़ रख दें जिस के भीतर से रोशनी न जा सके तो जितनी किरणें इस पर पड़ती हैं वह इस से रुकने के सबब से पीछे नहीं जा सकतीं इसलिये जहां वह नहीं पहुंचतीं वहां अंधेरा हो जाता है। जब यह अन्धकार किसी दीवाल वग़ैर: पर पड़ता है तब उसी को छाया कहते हैं। जब किरणें किसी प्रकाशित पदार्थ पर पड़ती हैं तो वह रुक कर फिरती हैं और इसी सबब से यह चीज़ दिखलाई देती है। जिस चीज़ पर किरणें पड़ती हैं वह अगर चिकनी और साफ़ हो तो किसी और चीज़ का प्रतिबिम्ब इस में दिखाई देता है यानी वैसी ही एक और चीज़ नज़र आती है॥

बहुत सी चीज़ों पर जब किरणें पड़ती हैं तो कुछ तो फिर आती हैं जिन के सबब से वह चीज़ दिखाई देती है और बहुत सी उस पदार्थ के भीतर से चली जाती हैं। जैसे अगर कोई कांच का टुकड़ा ले तो क्या दिखलाई देता है? इस पर सूर्य या और किसी प्रकाश रखने वाली चीज़ की किरणें पड़ती हैं इन में से कुछ फिर आती हैं और इसलिये कांच का टुकड़ा दिखलाई पड़ता है और बहुत सी किरणें इसके भीतर से चली

जाती हैं और इसी सबब से उस के पीछे की चीज़ें दिखलाई देती हैं। जब कोई किरण किसी चीज़ के भीतर हो कर जाती है तो अकसर उस की गति की दिशा बदल जाती है। किसी सीधी लकड़ी को पानी में इस तरह से रखो कि उस का थोड़ा सा हिस्सा पानी के भीतर रहे तो क्या नज़र आता है? यह दिखाई देगा कि पानी में डूबा हिस्सा और बाहर का हिस्सा दोनों एक सीध में नहीं हैं। अब वही सीधी लकड़ी टूटी सी नज़र पड़ती है। तो ग़ौर करना चाहिये कि इस का क्या सबब है। अगर सब लकड़ी पानी ही में रहे तो सीधी दिखाई देगी। इसलिये एक बात यह मालूम होती है कि दो चीज़ों के बीच में रहने से यह टेढ़ापन दिखाई देता है। इस का सबब यह है कि हवा में से पानी के भीतर जब प्रकाश की किरणें जाती हैं तो वह उसी दिशा में नहीं रहतीं जिस में कि हवा में जाती थीं। इस वास्ते यह फ़रक़ हो जाता है। इस परीक्षा से जो नीचे लिखते हैं यह बात और भी साफ़ मालूम होगी कि जब एक वस्तु से किरणें दूसरी में जाती हैं तो उन की दिशा बदल जाती

दिशा बदल जाती है इसलिये पानी भरने से प्रकाश आने की दिशा में कुछ फ़रक़ पड़ता है। इससे यह भी मालूम होता है कि अगर कोई तिरछी किरण पानी पर गिरे तो पानी में जाने से यह इस तौर पर झुक जाती है कि और कम तिरछी हो जाती है। पानी के भीतर से हवा में आने में इसका उलटा हो जाता है। पानी में जाने से किरण के कम तिरछी होने का सबब यह है कि पानी हवा से घना है। अगर और ज़ियादे घने पदार्थ के भीतर किरण जावे तो और भी तिरछी हो जायगी। इसी तरह से अगर एक कांच का टुकड़ा लें तो हवा में से हो कर जब कांच में किरण जाती है तो इसकी दिशा बदल जाती है और फिर कांच में से हवा में जाने पर एक मरतबा फिर दिशा बदलती है॥

एक ऐसा कांच का टुकड़ा लो जो कि फूली हुई रोटी की शकल का हो तो अब देखना चाहिये कि इस में होकर किरणें कैसे आती हैं। ख्याल करो कि अब किरणें निहायत दूर से आती हैं तो हर एक किरण जब कांच के भीतर जाकर फिर बाहर निकल आती है तो उसकी दिशा में यह फ़रक़ पड़ता है कि हर एक किरण कांच के मोटे हिस्से के साम्हने की तरफ़ झुकती है और सब एक बिन्दु में जाकर मिलती हैं। अब अगर सूर्य के प्रकाश में एक ऐसा कांच का टुकड़ा रखें और सूरज की सब किरणें उस की एक सतह पर पड़ें तो किरणें कांच के भीतर में हो कर फिर बाहर दूसरी सतह पर निकलेंगी और सब जाकर एक बिन्दु में मिलेंगी। अगर इस बिन्दु पर कुछ रुई रख दें तो वह जलने लगेगी। इसी बिन्दु पर उस चीज़ का प्रतिबिम्ब भी पड़ता है जिस में से किरणें आती हैं और कांच के बाद है

हिस्से के ज़ियादा या कम छोटा होने के बमूजिब प्रतिबिम्ब असली चीज़ से छोटा या बड़ा नज़र आता है। ऐसे ही दूसरे तरह के कांचों के सबब से बहुत से यंत्र बनाये जाते हैं। इन में से कितने यंत्रों से दूर की चीज़ें नज़दीक दिखाई देती हैं और कितने और यंत्रों से छोटी चीज़ें बहुत बड़ी नज़र आती हैं॥

यह भी जानना चाहिये कि अगर सूर्य्य के प्रकाश की एक किरण लें तो उसमें कई एक रंग की किरणें हैं और इन सब के मिलने से सुफ़ेद रंग की किरण बनती है। अब यह परीक्षा करना चाहिये। एक कांच के गोल बरतन में पानी भरो और इसे एक ऐसी जगह पर रखो कि इस पर सूरज की किरणें पड़ें। तुम सूर्य्य और बरतन के बीच में खड़े हो तो तुम को बरतन के पीछे कई रंग देख पड़ेंगे जो ठीक इन्द्रधनुष के रंग की तरह दिखाई देते हैं। इस बरतन को कुछ ऊंचा या नीचा करो तो पहले एक रंग दिखाई देगा फिर इसे और ऊंचा या नीचा करने से दूसरा रंग नज़र आवेगा। तो इस से मालूम होता है कि सूर्य्य की किरण पानी के भीतर जाने से रंगदार किरणों में अलग जाती है। इससे यह मालूम हुआ कि सूर्य्य की एक किरण जो सुफ़ेद है वह कई एक रंग की किरणों से बनी है। सूर्य्य की किरण को एक अंधेरी कोठरी में से आने देते हैं और तब एक तरह के कांच से सब रंग की किरणों को जुदा २ कर देते हैं। इस से मालूम हुआ है कि सुफ़ेद किरण में सात रंग हैं। इन्द्रधनुष में जो रंग नज़र पड़ते हैं वह भी किरणों के रंगों के जुदा २ होने से दिखाई देते हैं पर अब सवाल यह है कि यह किरणें किस चीज़ में से जाने के सबब से जुदा हो जाती हैं। सब सब लोग जानते हैं कि इन्द्रधनुष बरसात में दिखाई देता है।

तो यह ज़रूर है कि पानी के कणों में और इस में कुछ इलाक़ा है। हक़ीक़त में उन पानी के कणों में से जो हवा में से गिरते रहते हैं प्रकाश के जाने से किरण जुदा २ होकर कई रंग की हो जाती हैं। जैसा कि पहले परीक्षा में बयान किया गया है उसी तरह से इस हालत में भी जुदा २ रंग दिखाई देते हैं। पहले कहा था कि तुम को सूर्य्य और पानी भरे बरतन के बीच में रहना चाहिये। इसी तरह से धनुष उस वक़्त दिखाई देता है जब कि तुम सूर्य्य और जहां कुछ पानी बरसता है उसके बीच में रहते हो। शाम को जब सूर्य्य पश्चिम में रहता है तो इन्द्रधनुष पूरब की तरफ़ दिखाई देता है। इस हालत में पूरब की तरफ़ कुछ पानी बरसता रहता है और सूर्य्य की किरणें इस में से होकर जाने से जुदा हो जाती हैं और इसी बाइस से कई रंग दिखाई देते हैं। यह ज़रूर नहीं है कि हमेशा जब पानी के कण में से प्रकाश जावे तो किरण अलगा जावें। यह उस हालत में होता है जब कि पानी के कण, सूरज और देखनेवाले की स्थिति एक ख़ास तौर पर होती है। इसलिये जब कभी पानी बरसता है और सूर्य्य का प्रकाश पड़ता है तो धनुष हमेशा नहीं नज़र पड़ता॥

अब यह सवाल हो सकता है कि किस सबब से सब पदार्थ एक ही रंग के नहीं दिखाई देते। सूर्य्य का प्रकाश सब पदार्थों पर पड़ता है पर क्यों वह मुख़्तलिफ़ रंग के होते हैं। यह उन परमाणु की ख़ासियत के सबब से होता है जिन से पदार्थ बनते हैं। कितने पदार्थ में यह ख़ासियत है कि वह और सब तरह की किरणों को अपने भीतर खींच लेते हैं और सिर्फ़ लाल किरण उन पर से फिरती हैं और इन्हीं किरणों के फिरने से हम लोग

उन पदार्थों को देखते हैं और इसलिये वह पदार्थ लाल दिखलाई देते हैं। इसी तरह से और कोई दूसरा पदार्थ नीला दिखाई देता है और कोई दूसरा हरे रङ्ग का मालूम होता है। इस तरह से पदार्थों में उनकी मुख़्तलिफ़ ख़ासियतों के सबब से तरह २ के रंग दिखाई देते हैं। सूर्य्य का प्रकाश और दूसरी सब चीज़ों का प्रकाश एक ही रङ्ग की किरणों से नहीं बना है॥

सातवां पाठ

बिजली और चुम्बक की शक्ति।

गरमी आकर्षण वगैरः की तरह एक शक्ति है। इस से जो असर होता है उसे हम लोग जानते हैं। इसे अकसर लोग निहायत द्रव पदार्थ समझते हैं और यह ऐसी तेज़ी से चलती है कि लाख कोस के क़रीब एक सेकन्ड में जाती है॥

अब देखना चाहिये कि बिजली किस तरह से ज़ाहिर कर सकते हैं। जब एक वस्तु को दूसरी से रगड़ते हैं तो गरमी पैदा होती है पर यह भी है कि कितनी चीज़ों को किसी ख़ास चीज़ से रगड़ने से उन में एक अजीब शक्ति हो जाती है। अब एक कांच का छड़ लो और किसी गरम रेशमी कपड़े से इसे अच्छी तरह से रगड़ो तो इस के बाद अगर उस रगड़े हुए हिस्से के नज़दीक छोटे २ कागज़ के टुकड़ों को रखें तो वह कांच में जा कर चिमट जायंगे। पर कांच के सिर्फ़ रगड़े हुए हिस्से में ऐसी आकर्षण की शक्ति होगी। इस से यह मालूम हुआ कि रगड़ने से कांच में एक ऐसी शक्ति पैदा हुई जो उस में पहले न थी पर यह भी है कि यह शक्ति कुल कांच में नहीं फैल जाती जितना रगड़ा जाता है उतने ही में रहती है। पर अगर किसी पीतल के टुकड़े के एक हिस्से में ऐसी शक्ति किसी तरह से पैदा हो सके तो यह पीतल भर में फैल जाती है। इस से मालूम होता है कि बहुत से पदार्थ में यह शक्ति (यह बिजली है) फैल जाती है और बहुत में नहीं फैलती या मुशकिल से फैलती है। रेशम गंधक कांच लाह और मोम में मुशकिल से बिजली की शक्ति फैलती है पर धातु कोइला पानी और जानवरों के बदन में बहुत जल्द फैलती है॥

बिजली की शक्ति दो सूरतों में नज़र पड़ती है इन्हें अंगरेज़ी में पाज़िटिव (Positive) और नेगेटिव (Negative) कहते

है। इस के जानने के लिये यह परीक्षा करो। एक रेशम के तागे में एक कागज़ का टुकड़ा बांध कर किसी कांच में लटकाओ। अब एक कांच के टुकड़े को गरम रेशम से रगड़ो जिससे कि इस में यह शक्ति आजावे। इस से कागज़ को छुओ तो बिजली इस कागज़ के बाहर न जा सकेगी क्योंकि रेशम के भीतर मुशकिल से जाती है। पर यह नज़र आवेगा कि कागज़ कांच के छूने पर फिर उस से हट जाता है। अब एक लाख के टुकड़े को फ़लालीन से रगड़ो और इसे फिर ऐसे कागज़ के नज़दीक लाओ तो अब कागज़ भी इस से दूर नहीं हटता पर थोड़ी दूर जब रहता है तभी उसकी तरफ़ आ जाता है और उस से लिपट जाता है। इस से मालूम होता है कि कांच रगड़ने से और लाख रगड़ने से दो मुख़्तलिफ़ तरह की बिजली की शक्ति पैदा होती है।

गरमी आकर्षण वगैरः की तरह एक शक्ति है। इस से जो असर होता है उसे हम लोग जानते हैं। इसे अकसर लोग निहायत द्रव पदार्थ समझते हैं और यह ऐसी तेज़ी से चलती है कि लाख कोस के क़रीब एक सेकन्ड में जाती है॥

अब देखना चाहिये कि बिजली किस तरह से ज़ाहिर कर सकते हैं। जब एक वस्तु को दूसरी से रगड़ते हैं तो गरमी पैदा होती है पर यह भी है कि कितनी चीज़ों को किसी ख़ास चीज़ से रगड़ने से उन में एक अजीब शक्ति हो जाती है। अब एक कांच का छड़ लो और किसी गरम रेशमी कपड़े से इसे अच्छी तरह से रगड़ो तो इस के बाद अगर उस रगड़े हुए हिस्से के नज़दीक छोटे २ काग़ज़ के टुकड़ों को रखें तो वह कांच में जा कर चिमट जायंगे। पर कांच के सिर्फ़ रगड़े हुए हिस्से में ऐसी आकर्षण की ल शक्ति होगी। इस से यह मालूम हुआ कि रगड़ने से कांच र क्योंकि यह शक्ति पैदा हुई जो पहले न थी पर यह भी गो पर हवा के सबब धीरे २ बाहर फैल जाती जितना रग में यह शक्ति फैल जाती है। जितनाही अगर किसी पीतल के ो का हिस्सा रहता है उतनाही जल्द यह तरह से पैदा हो सं है इसलिये इस कल से गरमी के दिनों इस से मालूम होत से परीक्षा हो सकती है। जब किसी ऐसे बिजली है) फैल क हाथ ले जाते हैं जिस में बिजली की एक शकिल से फैलर ा इकट्ठा की गयी हो तो यह दिखाई देता है कि मुशकिल से बि चीज़ आग की तरह निकल कर पीतल की पानी और जानवरों के देखना चाहिये कि इस का सबब क्या है।

बिजली की शक्ति में दोनों तरह की बिजली है और पीतल में पाज़िटिव (P रह की यानी पाज़िटिव। तो पीतल में की

उन पदार्थों को देखते हैं और इसलिये वह पदार्थ लाल दिखाई देते हैं। इसी तरह से और कोई दूसरा पदार्थ नीला दिखाई देता है और कोई दूसरा हरे रङ्ग का मालूम होता है। इस तरह से पदार्थों में उनकी मुख़्तलिफ़ ख़ासियतों के सबब से तरह २ के रंग दिखाई देते हैं। सूर्य्य का प्रकाश और दूसरी सब चीज़ों का प्रकाश एक ही रङ्ग की किरणों से नहीं बना है॥

सातवां पाठ

बिजली और चुम्बक की शक्ति।

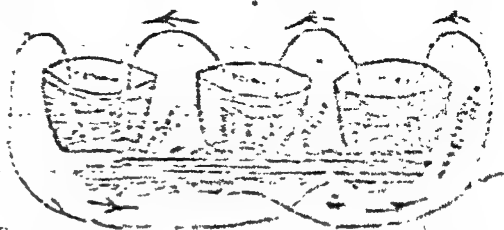
बरसात के दिन में बिजली का चमकना सब लोग देखते हैं पर बहुत कम लोग यह जानते हैं कि यह क्या है। और मुल्कों में भी आगे लोगों को यह अच्छी तरह न मालूम था कि बिजली क्या चीज़ है इस के गुण क्या हैं और किस तरह से या किस सबब से बादलों में कभी २ ऐसी रोशनी दिखाई देती है। इंगलैण्ड के मुल्क में फ्रैंकलिन साहिब ने इसका बहुत

गरमी आकर्षण वग़ैरः की तरह एक शक्ति है। इस से जो असर होता है उसे हम लोग जानते हैं। इसे अकसर लोग निहायत द्रव पदार्थ समझते हैं और यह ऐसी तेज़ी से चलती है कि लाख कोस के क़रीब एक सेकन्ड में जाती है॥

अब देखना चाहिये कि बिजली किस तरह से ज़ाहिर कर सकते हैं। जब एक वस्तु को दूसरी से रगड़ते हैं तो गरमी पैदा होती है पर यह भी है कि कितनी चीज़ों को किसी ख़ास चीज़ से रगड़ने से उन में एक अजीब शक्ति हो जाती है। अब एक कांच का छड़ लो और किसी गरम रेशमी कपड़े से इसे अच्छी तरह से रगड़ो तो इस के बाद अगर उस रगड़े हुए हिस्से के नज़दीक छोटे २ काग़ज़ के टुकड़ों को रखें तो वह कांच में जा कर चिमट जायंगे। पर कांच के सिर्फ़ रगड़े हुए हिस्से में ऐसी आकर्षण की शक्ति होगी। इस से यह मालूम
ल ले
हुआ कि रगड़ने से कांच र क्योंकि यह शक्ति पैदा हुई है इसलिये
पहले न थी पर यह भी गी पर हवा के सबब से कुछ २ बाहर
फैल जाती जितना रग में यह शक्ति फैल जाती है। जितनाही
अगर किसी पीतल के ी का हिस्सा रहता है उतनाही जल्द यह
तरह से पैदा हो स । है इसलिये इस कल से गरमी के दिनों
इस से मालूम होत से परीक्षा हो सकती है। जब किसी ऐसे
बिजली है) फैल
शकिल से फैलर क हाथ ले जाते हैं जिस में बिजली की एक
मुशकिल से बि । इकट्ठा की गयी हो तो यह दिखाई देता है कि
पानी और जानवरों के आग की तरह निकल कर पीतल की
देखना चाहिये कि इस का सबब क्या है।

बिजली की शक्ति में दोनों तरह की बिजली है और पीतल
में पाज़िटिव (P रह की यानी पाज़िटिव। तो पीतल में की

चीज़ में पहुंचा सकते हैं। एक ऐसी तदबीर अब लिखते हैं। शकल में तीन कटोरे हैं उन में पानी और गंधक का तेज़ाब



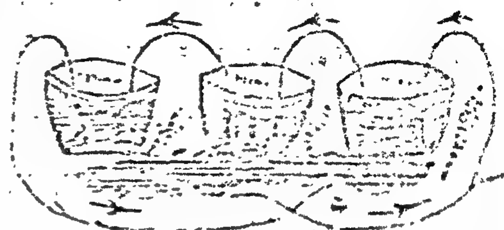
मिला कर रखा है। उन में हर एक बरतन में दो २ टुकड़े धातु के हैं। हर एक दाहिनी तरफ़ जस्ते का टुकड़ा है और बायीं तरफ़ तांबा है। पहले बरतन के तांबे का टुकड़ा और दूसरे के जस्ते का टुकड़ा एक तार से मिला दिया गया है। यही हाल दूसरे और तीसरे बरतन के तांबे और जस्ते के टुकड़ों का है। पहले और तीसरे बरतन के टुकड़ों में तार लगे हैं और वह बाहर लाकर मिलाये गये हैं। ऐसा करने से तार में हो कर द्रव द्रव्य में और जस्ते और तांबे के टुकड़ों में जा कर एक बिजली की धारा चलती है। पहले बिजली तेज़ाब और तांबे के संयोग से तीसरे बरतन के तांबे में से तार में जाती है। इस तार से पहले बरतन के जस्ते में और उस तेज़ाब में हो कर तांबे के टुकड़े में जाती है।

ऊपर कह आये हैं कि पानी को बिजली से अलगा देते हैं इस का साफ़ बयान रसायन के अध्याय में होगा। ऊपर की लिखी हुई तदबीर के ज़रिये से किसी लोहे को कुछ देर तक चुम्बक कर दे सकते हैं। यह करने के लिये एक टेढ़। घोड़े की नाल की शकल का लोहा लो और कुछ तांबे के तार में इस तरह तागा लपेटो कि तांबा न दिखाई दे। इस तार को नाल के दोनों तरफ़ लपेटो। अब इस लपेटे हुए तार के टुकड़े के एक २ सिरे को बिजली की कल के एक २ तार में बांधो यानी कल के एक तार को लोहे की नाल की एक तरफ़ के तार में और दूसरे को दूसरी तरफ़ के तार में बांधो। ऐसा करने से नाल में चुम्बक की शक्ति आ जाती है और उस के नीचे थोड़ी दूर पर सूई रखने से खिंच कर उस में जा लगती है। जब बिजली की कल के तार को हटा लेते हैं तो फिर नालदार लोहे में यह शक्ति नहीं रहती पर जिस सूई को नीचे रखा था उस में यह शक्ति आ जाती है और उस में बनी रहती है। ऐसी एक बड़ी सूई को अगर किसी चीज़ पर इस तरह से रखें कि वह अपने एक बीच के विन्दु पर घूम सके तो इस सूई का एक सिरा हमेशा उत्तर को तरफ़ रहेगा। ऐसी ही सूई से जहाज़ पर लोग हर एक दिशा को मालूम करते हैं। पर अगर इस सूई को ऐसे तार के नज़दीक लावें जिस में से बिजली की धारा चलती हो तो इस की दिशा इस तरह बदल जायगी कि उस तार और सूई के बीच का कोण समकोण होगा। बिजली का चलना बंद हो जाय तो फिर सूई का एक सिरा उत्तर को जा रहेगा॥

ऊपर के बयान से मालूम होता है कि बिजली की कल के तार की जगह को बदलने से सूई की दिशा में फ़रक़ पड़ेगा।

चीज़ में पहुंचा सकते हैं। एक ऐसी तदबीर अब लिखते हैं। शकल में तीन कटोरे हैं उन में पानी और गंधक का तेज़ाब

मिला कर रक्खा है। उन में हर एक बरतन में दो २ टुकड़े धातु के हैं। हर एक



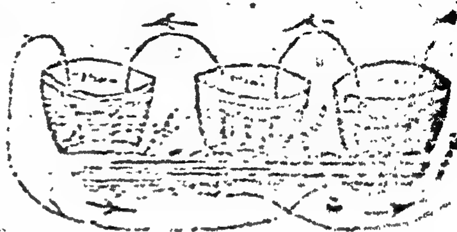
दाहिनी तरफ़ जस्ते का टुकड़ा है और बायीं तरफ़ तांबा है। पहले बरतन के तांबे का टुकड़ा और दूसरे के जस्ते का टुकड़ा एक तार से मिला दिया गया है। यही हाल दूसरे और तीसरे बरतन के तांबे और जस्ते के टुकड़ों का है। पहले और [illegible] जाते हैं। यह भी जानना [illegible] लाकर

दूसरा पाठ

आग।

ऊपर कह आये हैं कि पानी को बिजली से अलग देते हैं इस का साफ़ बयान रसायन के अध्याय में होगा । ऊपर की लिखी हुई तदबीर के ज़रिये से किसी लोहे को कुछ देर तक चुम्बक कर दे सकते हैं । यह करने के लिये एक टेढ़। घोड़े की नाल की शकल का लोहा लो और कुछ तांबे के तार में इस तरह तागा लपेटो कि तांबा न दिखाई दे । इस तार को नाल के दोनों तरफ़ लपेटो । अब इस लपेटे हुए तार के टुकड़े के एक २ सिरे को बिजली की कल के एक २ तार में बांधो यानी कल के एक तार को लोहे की नाल की एक तरफ़ के तार में और दूसरे को दूसरी तरफ़ के तार में बांधो । ऐसा करने से नाल में चुम्बक की [illegible] का खींचेगी उन चीज़ों को थोड़ी दूर पर [illegible]
[illegible] साबित हुआ कि बत्ती के जलाने से कोई [illegible] चीज़ बोतल की हवा में बन गयी कि उस के सबब चूने के रंग में फ़रक़ पड़ा । यह भी ज़ाहिर है कि इस नयी चीज़ में कुछ जल नहीं सकता क्योंकि इस के रहने पर भी बत्ती बुझ गयी । अब तुम को यह जानने की ख़्वाहिश ज़रूर होगी कि क्यों थोड़ी देर के बाद बत्ती बुझ गयी । इस का सबब यह है । जब बत्ती जलती है तो हवा के एक हिस्से के साथ जिसे आक्सिजन (प्राणप्रद वायु) कहते हैं मोमबत्ती के पदार्थों का संयोग होता है और जब बोतल में की सब ऐसी वायु जिन चीज़ों से मोमबत्ती बनी है इन से मिल चुकती है तब बत्ती का जलना बन्द हो जाता है । अगर बोतल का मुंह खुला रखते तो कुल बत्ती के जलने से पहले वह न बुझती क्योंकि ज्यों २ बोतल के भीतर की हवा में का आक्सिजन घटता जायगा त्यों २ बाहर से और हवा बोतल के भीतर आवेगी । जब बत्ती हवा में जलती है तो पानी भी बनता है । अगर एक शीशे के गिलास को उलट कर उस से जलती बत्ती को कुछ

चीज़ में पहुंचा सकते हैं। एक ऐसी तदबीर अब लिखते हैं। शकल में तीन कटोरे हैं उन में पानी और गंधक का तेज़ाब मिला कर रखा है। उन में हर एक बरतन में दो २ टुकड़े धातु के हैं। हर एक



दाहिनी तरफ़ जस्ते का टुकड़ा है और बायीं तरफ़ है। पहले बरतन के तांबे का टुकड़ा और दूसरे के जस्ते टुकड़ा एक तार से मिला दिया गया है। यही हाल दूसरे तीसरे बरतन के तांबे और जस्ते के टुकड़ों का है। पहले [illegible] जाते हैं। यह भी [illegible]

दूसरा पाठ

आग।

संयोग से एक नयी चीज़ बन गयी जो इन चीज़ों से मुख़्तलिफ़ है और जब इन में संयोग होता था तो गरमी पैदा हुई और इस से तांबा जलने लगा। ऊपर जो बयान हुआ है उस से यह साफ़ ज़ाहिर है कि जहां कहीं आग जलती है मोमबत्ती जले या मकान जले पर जलती हुई चीज़ और हवा के उस हिस्से में जिसे आक्सिजन कहते हैं रसायनिक संयोग होता है ॥

तीसरा पाठ

हवा।

यह बात सब लोग अच्छी तरह से जानते हैं कि बिना हवा के आदमी जी नहीं सकते। यह ज़मीन की सतह पर हर एक जगह है हवा का चलना सब को साफ़ मालूम होता है पर बहुत कम लोग यह जानते हैं कि यह किन-२ चीज़ों के मिलने से बनी है। हवा के ख़ास दो हिस्से हैं यानी इन्हीं दो चीज़ों से बनी है। इनको अंगरेज़ी में आक्सिजन और नैट्रोजन कहते हैं। हिन्दी में इन्हें प्राणप्रदवायु और जीवांतक वायु कह सकते हैं। आगे के बयान से मालूम होगा कि प्राणप्रदवायु के सबब से हम लोग जीते हैं। अब यह मालूम करना है कि हवा के इन दो हिस्सों को कैसे जुदा कर सकते हैं। एक छोटा टुकड़ा फ़ास्फ़रस * का लो और उसे एक छोटी सी चीनी की प्याली में रखकर पानी पर तैराओ और तब गरम लोहे से छू दो वह अब जलने लगेगा। जब यह जलने लगे तो एक शीशे के बरतन

---

* इस चीज़ का और बयान आगे होगा पर इतना जानना चाहिये कि अगर इसे हवा में रख दें तो यह फ़ौरन जलने लगेगा इसलिये यह हमेशा पानी के नीचे रखा जाता है ॥

से ढांक दो तो इस शीशे के बरतन में फ़ासफ़रस जलेगा और ज्यों २ जलता जायगा त्यों २ शीशे के बरतन में की हवा में का आक्सिजन इस में मिलता जायगा और जब सब आक्सिजन मिल चुकेगा तो जलना बन्द हो जायगा। इस के बाद बोतल में सिर्फ़ नैट्रोजन रह जायगा क्योंकि सब आक्सिजन के फ़ासफ़रस से मिलने के बाद जो बनता है वह पानी में घुल जाता है। इस बोतल में जो रह जायगा उस में कुछ रंग न रहेगा। तो तुम ज़रूर यह सवाल करोगे कि क्या सबूत है कि उस में हवा नहीं है पर और कुछ है। यह दरियाफ़ करने के लिये एक जलती हुई बत्ती लो इस बोतल में डालो तो वह डालते ही बुझ जायगी। अगर हवा होती तो ऐसा कभी न होता तो इस से यह मालूम हुआ कि हवा में से एक ऐसी चीज़ जुदा हुई कि उस में बत्ती नहीं जल [illegible] नैट्रोजन कहते हैं॥

यह [illegible] बना सकते हैं पर सन् १८७७ के दिसम्बर [illegible] फ्रांस मुल्क में दो शख़्सों ने इसे सरदी और दबाव से द्रव [illegible] किया। यह आप नहीं जलता पर इस में और चीज़ें बड़ी रोशनी से जलती हैं। इस में लोहे के तार भी जलते हैं। इस से और दूसरे तत्वों से बहुत जल्द रसायनिक संयोग होता है॥

२ हैड्रोजन

से यह हवा बाहर आती है। अब सोचना चाहिये कि यह हवा कहां से पैदा हुई। बत्ती जलने में तो बत्ती और आक्सिजन मिलने से यह बनी और तब गरमी और आग पैदा हुई। यह सवाल है कि हमारे भीतर कुछ जल तो नहीं रहा है। पहले तुम यही कहोगी कि ऐसा नहीं होता पर थोड़ा ग़ौर करोगे तो यह मालूम होगा कि हमारा बदन काठ और पत्थर से गरम है और मरे जानवरों के बदन से भी गरम है तो इसका यह सबब है कि जब हवा भीतर जाती है तो आक्सिजन से और बदन के भीतर की और चीज़ों से रसायनिक संयोग होता है और इसी से गरमी पैदा होती है। फिफड़ों में जब नाक और मुंह में होकर हवा जाती है तो आक्सिजन खून में जाता है और बदन के भीतर के कोयले की तरह की चीज़ों से मिलता है। इस में कुछ शक नहीं कि [illegible] में कोयला है क्योंकि गोश्त [illegible] हिस्सा भी [illegible] शोरे के तेज़ाब में और [illegible] है। इस कोयले रहता है। यह जानवरों के गोश्त में भी है। इस से [illegible] वायु बनती चीज़ों से मुशकिल से रसायनिक संयोग होता है। इस में जलती बत्ती डालने से वह बुझ जाती है और यह जलने नहीं लगता। इस में कोई जानवर जी नहीं सकता क्योंकि इस में गला घुट जाता है॥

४ कार्बन यानी कोयला।

कार्बन एक दृढ़ रूप का तत्त्व है यह तीन सूरतों में पाया जाता है यानी कोयला हीरा और पेंसिल के भीतर का सीसा। इसका सबूत कि यह तीनों चीज़ एकही तत्त्व तीन शकल में है यह है कि इन सब को जलाने से एकही चीज़ (कार्बोनिक वायु) बनती है। अगर कोयले के १२ तोले को जलावें तो इस में ३२ तोले आक्सिजन से रसायनिक संयोग होता है और ४४ तोला

कार्बोनिक वायु बनती है इसी तरह से १२ तोला हीरा और १२ तोला पेंसिल के सीसे को जलाने से भी ४४ तोला कार्बोनिक वायु बनती है। इस से यह साफ़ ज़ाहिर है कि यह तीनों चीज़ें एकही तत्त्व हैं। यह तत्त्व आदमी और जानवरों के जीने के लिये निहायत ज़रूर है। लकड़ी जलाने में कोयला निकलता है और गोश्त जलाने से भी कोयला बन जाता है। सब खाने की चीज़ों में यह रहता है और अगर दुनिया में यह तत्त्व न होता तो जानवर और दरख़्त न होते। इसका कुछ हिस्सा हवा में मिला रहता है और कितने पहाड़ों में भी इस का हिस्सा पाया जाता है। यह सब लोग जानते हैं कि कोयला दो तरह का होता है एक तो लकड़ी जलाने से मिलता है और दूसरा ज़मीन के नीचे से निकाला जाता है। यह भी दरख़्तों से बना है जो कि ज़मीन के नीचे हज़ारों साल से दबे हैं और जिन की शकल में ऐसा फ़रक़ पड़ गया है कि यह कोयले हो गये हैं। अगर छोटे २ कोयले को काटें तो कभी २ उस के भीतर पत्तियों की शकल नज़र आती है जिस से यह साफ़ ज़ाहिर है कि यह कोयले दरख़्तों से बने हैं। अकसर लोग योरप में आज कल इस बात को कोशिश कर रहे हैं कि कोयले से हीरा बनावें पर अभी तक कामयाब नहीं हुए हैं॥

५ क्लोरीन।

इसी लिये चूना और इसे मिला कर एक बुकनी बनती है जिस से कपड़े पर का रङ्ग छोड़ा सकते हैं॥

६ गन्धक।

गन्धक पीले रङ्ग का एक तत्त्व है। इस के जलने में नीला रङ्ग नज़र आता है और एक अजब तरह का गन्ध निकलता है। इस को दियासलाई के सिरे पर लगाते हैं और इस को कोयले और शोरे के साथ मिलाने से बारूद बनती है। यह ज़मीन के भीतर रहती है और अकसर धातुओं में मिली पाई जाती है। गन्धक जब आक्सिजन और हैड्रोजन के साथ मिल जाती है तो गन्धक का तेज़ाब बन जाता है। यह तेज़ाब बहुत से कामों में आता है। इस के पहले कई मरतबा इसी चीज़ का नाम कई एक परीक्षाओं में आ चुका है॥

७ फ़ारफ़रस।

फ़ारफ़रस यानी प्रकाशद अलग ज़मीन पर नहीं मिलता पर आक्सिजन और केलसियम से संयुक्त हड्डियों में रहता है। हड्डी को जला कर इसे निकालते हैं। यह दो तरह का मिलता है एक लाल रङ्ग का होता है और एक पीले रङ्ग का। इन दोनों क़िस्मों में यह फ़रक़ है कि पीले रङ्ग वाला हवा में आने से बहुत जल्द जल उठता है और इसी लिये यह पानी के नीचे रखा जाता है पर लाल रङ्ग वाला जल्द नहीं जलने लगता। पीले रङ्ग वाला मोम की तरह होता है और मोम की तरह जल्द कट जाता है पर यह हमेशा पानी के नीचे काटा जाता है। इस में हाथ जलने का बड़ा ख़ौफ़ रहता है। अगर पीले रङ्ग वाला किसी चीज़ से रगड़ा जावे तो फ़ौरन वह जलने लगता है। इसी सबब से यह दियासलाई के सिरे पर लगाया जाता है और इसी सबब से जब दियासलाई को किसी खुरखुरी चीज़ पर रगड़ते हैं तो सलाई जल जाती है॥

कार्बोनिक वायु बनती है इसी तरह से १२ तोला हीरा और १२ तोला पेंसिल के सीसे को जलाने से भी ४४ तोला कार्बोनिक वायु बनती है। इस से यह साफ़ ज़ाहिर है कि यह तीनों चीज़ें एकही तत्त्व हैं। यह तत्त्व आदमी और जानवरों के जीने के लिये निहायत ज़रूर है। लकड़ी जलाने में कोयला निकलता है और गोश्त जलाने से भी कोयला बन जाता है। सब खाने की चीज़ों में यह रहता है और अगर दुनिया में यह तत्त्व न होता तो जानवर और दरख़्त न होते। इसका कुछ हिस्सा हवा में मिला रहता है और कितने पहाड़ों में भी इस का हिस्सा पाया जाता है। यह सब लोग जानते हैं कि कोयला दो तरह का होता है एक तो लकड़ी जलाने से मिलता है और दूसरा ज़मीन के नीचे से निकाला जाता है। यह भी दरख़्तों से [illegible] ज़मीन में से बहुत से एस [illegible] [illegible] मुशकिल से मिलते हैं। इस पाठ में सिर्फ़ नीचे लिखे हुए ऐसे ख़ास तत्त्व का बयान होगा॥

१	सोना	२	चांदी	३	लोहा	४	जस्ता
५	तांबा	६	रांगा	७	सीसा	८	पारा
९	कैल्सियम्	१०	सोडियम्				

१ सोना।

इसी लिये चूना और इसे मिला कर एक बुकनी बनती है जिस से कपड़े पर का रङ्ग छोड़ा सकते हैं॥

६ गन्धक।

गन्धक पीले रङ्ग का एक तत्त्व है। इस के जलने में नीला रङ्ग नज़र आता है और एक अजब तरह का गन्ध निकलता है। इस को दियासलाई के सिरे पर लगाते हैं और इस को कोयले और शोरे के साथ मिलाने से बारूद बनती है। यह ज़मीन के भीतर रहती है और अकसर धातुओं में मिली पाई जाती है। गन्धक जब आक्सिजन और हैड्रोजन के साथ मिल जाती है तो गन्धक का तेज़ाब बन जाता है। यह तेज़ाब बहुत से कामों में आता है। इ... के पहले कई मरतबा इसी चीज़ का नाम कई एक परी... आ चुका है॥

...म में आता

फ़ारफ़रस।

...फ़ लोहा नहीं पाया ... ग ज़मी... मिलता पर जुदा कर लेते हैं। बग़ैर लोहे के बहुत कम औज़ार बन ...ड़ी हैं और अगर यह न होता तो हम लोगों का बड़ा हरज होता। कई ...ल्कों में अगले ज़माने में जब लोग लोहे को और चीज़ों में से जु... नहीं कर सकते थे तब तांबे और पीतल का हथियार बनाते थे ... ब कई क़िस्म का लोहा बना सकते हैं। छुड़ी कैंची वग़ैरः फ़ौलाद से बनती हैं। अगर लोहे को हवा में या आक्सिजन में जलावें तो मुर्चा बन जाता है। पानी में लोहा रखने से मुर्चा लग जाने का यही सबब है कि पानी में का आक्सिजन लोहे में मिल जाता है और तब वही मुर्चा कहलाता है। अगर एक छोटी सी शीशी में थोड़ा सा लोहे का चूर रख कर उस में पानी से मिला गन्धक का तेज़ाब डालें

* शोरे का तेज़ाब और हैड्रोक्लोरिक तेज़ाब जो कि हैड्रोजन और क्लोरैन के संयोग से बनता है।

सातवां पाठ

रसायनिक संयोग के नियम।

अब देखना चाहिये कि जो कुछ इस अध्याय में लिखा गया है उस से कौन २ खास बातें मालूम हुई हैं। पहले यह कह चुके हैं कि सिर्फ़ ६२ तत्त्व हैं और इन्हीं को आपस में एक दूसरे के साथ मिलाने से दुनिया के सब पदार्थ बनते हैं। यह तत्त्व किसी दो वस्तुओं में नहीं अलगाये जा सकते हैं और न तो किसी दो या ज़ियादे पदार्थों को मिला कर कोई तत्त्व बना सकते हैं पर इन्हीं तत्त्वों के रसायनिक संयोग से सब मिश्र द्रव्य बने हैं। इन मिश्र द्रव्यों का गुण उन तत्त्वों के गुण से मुख़्तलिफ़ हो जाता है जिन से वह रसायनिक संयोग से बने हैं। मिश्र पदार्थों से तत्त्वों को अलग निकाल सकते हैं पर इतना है कि जब दो या ज़ियादा तत्त्व के संयोग से कोई मिश्र पदार्थ बनता है तो उस पदार्थ का बोझ इन तत्त्वों के बोझ के बराबर

रखना चाहिये कि सब तत्त्व मुऐअन वज़न के मिक़्दार में संयुक्त होते हैं। जैसे पानी बनने में यह नहीं हो सकता कि २ तोला हैड्रोजन १० या १२ तोले आक्सिजन से मिले जब कभी आक्सिजन किसी और तत्त्व से संयुक्त होगा तो यह १६ या १६ को किसी अंक से गुणने से जो मिलता है उस वज़न में मिलेगा। इस तरह पर हर एक तत्त्वों के ख़ास २ अंक हैं और उन्हीं के बमूजिब उन का रसायनिक संयोग होता है। पहले कह चुके हैं कि जब पारे में आक्सिजन मिलता है तो एक सुर्ख़ बुकनी बन जाती है इस बुकनी में १६ हिस्सा आक्सिजन रहता है और २०० पारा और तब २१६ हिस्सा वज़न में यह सुर्ख़ चीज़ बनेगी यानी इस के २१६ हिस्से में आक्सिजन का १६ हिस्सा रहता है। इस तरह से यह मालूम कर सकते हैं कि अगर दो सेर आक्सिजन बनाना हो तो इस बुकनी को कितना लेंगे। हर एक तत्त्व के लिये सिर्फ़ एक २ ह[illegible] अक्षर लिखते हैं। जिन तत्त्वों का बयान पहले किया है उन के लिये जो हरफ़ लिखते हैं और जिस अंक के बमूजिब उन का संयोग होता है वह सब नीचे लिखते हैं

आक्सिजन	(अ)	१६	हैड्रोजन	(ह)	१
नैट्रोजन	(न)	१४	कार्बन	(क)	१२
क्लोरैन	(क्ल)	३५	गन्धक	(ग)	३२
फ़ास्फ़रस	(फ़)	३१	सिलिकन	(सिल)	२८
सोना	(सो)	१९७	चांदी	(च)	१०८
लोहा	(ल)	५६	जस्ता	(ज)	६५
तांबा	(त)	६३	रांगा	(र)	११८
सीसा	(सी)	२०७	पारा	(प)	२००
कैल्सियम्	(कैल)	४०	सोडियम्	(नि)	२३

राय बहादुर पंडित लक्ष्मीशंकर मिश्र की बनायी किताबें

हिन्दी

सरलत्रिकोणमिति की उपक्रमणिका	१।)
स्थितिविद्या	१)
गतिविद्या	[illegible])
वायुमण्डलविज्ञान पहला भाग	।)
वायुमण्डलविज्ञान दूसरा भाग	।)
आकृतिकभूगोलचन्द्रिका	।)
पदार्थविज्ञानविटप	।)
जीवविज्ञानविटप	।)

कवि चन्द्रशेषर कृत

हम्मीर-हठ।

जगन्नाथदास बी० ए० (रत्नाकर)

सम्पादित।

मूल्य ॥)

Nagari pracharini Granthmala Series No 7.

चन्द्रशेखर कवि विरचित

हम्मीर-हठ ।

जगन्नाथ दास बी० ए० (रत्नाकर)
द्वारा सम्पादित

और

काशी नागरीप्रचारिणी सभा
द्वारा प्रकाशित ।

उपक्रम ।

———:o:———

प्रिय पाठकगण,

आज मुझे वास्तव में बड़ी प्रसन्नता प्राप्त हुई कि सर्वशक्तिमान जगदीश्वर के अनुग्रह से ऐसा अवसर उपस्थित हुआ कि हम्मीर-हठ की पुस्तक पूरी करके आप लोगों के करकमलों में अर्पित कर सका। भाषा काव्य में शृङ्गार के तो अनेक ग्रन्थ छप भी चुके हैं और छपते भी जाते हैं परन्तु वीररस के ग्रन्थों का तो एक प्रकार से अभाव ही समझा जा सकता है। इससे यह नहीं कहा जा सकता कि हमारी मातृभाषा के कवियों ने इस अत्यावश्यक रस का काव्य किया ही नहीं वरन् इसका मुख्य कारण यह जान पड़ता है कि शृङ्गार की ओर लोगों की रुचि अधिक होने के कारण विशेष प्रचार उसी रस के ग्रन्थों का हुआ। इसमें सन्देह नहीं कि शृङ्गार के ग्रन्थ वीरादि रसप्रधान ग्रन्थों की अपेक्षा से भी अधिक और एतावता सुलभ भी हैं, परन्तु यह बात भी हम अवश्य कहेंगे कि खोज करने से वीरादि रस के भी उत्तमोत्तम ग्रन्थ प्राप्त हो सकते हैं। जैसे एक दूसरे कवि का बनाया हुआ हम्मीर-हठ,' भूषण हजारा (भूषण कवि कृत जिससे कि शिवाजी के समय की बहुत सी ऐतिहासिक बातें ज्ञात होती हैं) और फर्रुख़-सियर बादशाह के समय की लड़ाई का वर्णन (श्रीधर कवि कृत) इत्यादि ग्रन्थ मैंने स्वयं देखे हैं और यदि आपलोगों की रुचि उस ओर देखूँगा तो समयानुसार उनके सम्पादन करने का भी यत्न करूँगा। इसी प्रकार मुझको आशा है कि यदि हमारे देश के लोग खोज करें तो अनेक गुप्त रत्नों का प्राप्त होना असम्भव नहीं है।

कविता।

इस ग्रन्थ की कविता बड़ी मनोहर और उमङ्गवर्द्धिनी है। ओज, माधुर्य और प्रसाद तीनों गुण अपने अपने स्थान पर सुशोभित हैं। कवि की प्रौढ़ता अक्षरों से प्रगट होती है। बहुधा कवियों के काव्य में भोंड़ापन आजाता है, इस दूषण से भी यह ग्रन्थ रहित है। किस अवसर पर कैसे अर्थ का साधन किन शब्दों के द्वारा करना उचित है इस बात पर कविजी ने ध्यान रक्खा है और वे इस में कृतकार्य भी हुए हैं जैसे कि मीरमुहम्मद के वचन सुनने के उपरान्त हम्मीर के उत्साह प्रगट करने के हेतु इस दोहे। ["भुज फरकत हरषत सुनत सरनागत की बात। बोले बिहँसि हमीर तब उमँग न गात समात॥"] से बढ़ कर और क्या कहा जा सकता है। इसी जातीय वीरता इससे टपकी पड़ती है। इसी प्रकार मंत्रियों के समझाने पर जो उत्तर हमीर ने दिया [" धड़ नचै लोहू चढ़ै परि बोलैं सिर बोल। काटि काटि तन रन में परें तो नहिं देहु मंगोल "] उसमें शरणागत की रक्षा करने की

कारण उकताता नहीं और दूसरे यह कि बहुधा जहाँ जो उचित है वहाँ वह छन्द इस अदल बदल में पड़ जाता है।

इतना कविता की ओर ध्यान दिलाने के हेतु लिख दिया गया विशेष गुण दोष पाठक लोग स्वयं ध्यान देने से विचार सकते हैं।

———:o:———

कविजी का संक्षिप्त जीवन चरित्र।

इस हम्मीरहठ के रचयिता पण्डित चन्द्रशेषर जी वाजपेयी मिती पौष शुक्ल १० संवत् १८५५ में मौजवाबाद ज़िला फतहपुर में (असनी के निकट) उत्पन्न हुए थे। इनके पिता पण्डित मनीराम जी वाजपेयी भी अच्छे कवि थे। इनके वंश में काव्य की चरचा कई पीढ़ियों से चली आती है। पहिले इनके वंश की आजीविका हुण्डी इत्यादि की थी कविता केवल मन के उत्साह से की जाती थी पर हंसराम जी के समय से जो कि श्रीगुरुगोविन्द सिंह जी के कृपापात्र थे यही जीविका होगई। पण्डित चन्द्रशेषर जी भाषा काव्य में असनी निवासी करनेश महापात्र* के शिष्य थे। १० वर्ष की अवस्था में यह उनके पास बैठाए गए थे। हमारे कवि जी संस्कृत के भी पण्डित थे पर उनके संस्कृत के गुरु का नाम नहीं मालूम है।

विद्याध्ययन करने के पश्चात ये महाशय २२ वर्ष की अवस्था में देशाटन करने के निमित्त घर से चले उस समय इनके पिता

उचित थे और घर में भगवतभजन करते थे। पहिले चन्द्रशेखर जी दर्भङ्गा की ओर गए और उस प्रान्त के राज दरबारों में उन्होंने यथोचित प्रतिष्ठा पाई।

सात वर्ष के अनुमान उसी प्रदेश में रहे फिर २०. वर्ष की अवस्था में जोधपुर गए। उस समय वहाँ महाराज मानसिंह सिंहासन पर थे, उनकी सभा में अच्छे अच्छे चारण कवि उपस्थित थे। ये महाशय बाँकी दास चारण के द्वारा दरबार में पहुँचे और यह कवित्त पढ़ा:—

"द्वादस कला सों मारतंड ये उवैंगे चंड सिसवारी सौसबि समस्त सत्रु जलि हैं। कूटि जैहैं अचल अवास अमरेस वारो कूट जैहैं कहलि कलीसी भूमि हलि हैं। शेषर कहत अलका में कलापात ह्वैहैं पावक पिनाकी के त्रिशूल सों निकलि हैं। तू न तानि भौंहैं भानवंसी भूप मान ना तौ जानि जैहैं प्रलय पयोधि फूटि चलि हैं।"

महाराज ने प्रसन्न होकर सौ रुपया महीना उनका कर दिया और ये ८ वर्ष तक वहीं बड़ी प्रतिष्ठा पूर्वक रहे फिर महाराज मानसिंह के स्वर्गवास होने के पश्चात जब महाराज तख्तसिंह गद्दी पर बैठे तो उन्होंने किफायत करना आरम्भ किया और सब की तनख्वाहें आधी कर दीं। कवि जी को आधी तनख्वाह पर रहना स्वीकृत न हुआ और वहाँ से ये लाहौर गए और महाराज रणजीत-सिंह के पास रहे।

साहब बहुत प्रसन्न हुए और पाँच रसद पक्की इनके वास्ते कर दीं । इसके सिवा सवारी इत्यादि का प्रबन्ध ऊपर से कर दिया। फिर तो ये कवि जी वहीं रह गए और वहाँ की प्रतिष्ठा के आगे जोधपुर के सौ रुपये भूल गए। यहां तक कि जोधपुर से लाड़िलीदास मुन्शी महाराज तख्तसिंह के भेजे हुए इनको बुलाने भी आये और कहा कि आप चलिए आप की तनख़ाह आधी न की जायगी, पर इन्हों ने पटियाले के सम्मान को छोड़कर जाना उचित न समझा। तब से लेकर अन्तकाल पर्यन्त पटियाले ही में रहे। कभी कभी छुट्टी लेकर वृन्दावन जाया करते थे क्यों कि उनको वहीं का इष्ट था। वृन्दावन शतक इन्हों ने वृन्दावन ही में बनाया था। देहान्त इन का संवत् १९३२ में हुआ।

महाराज कर्मसिंह की आज्ञानुसार इन्हों ने एक नीति का बृहद् ग्रन्थ रचा। जब महाराज कर्मसिंह जी का देहान्त हुआ और उन का अस्थि संचयन हो रहा था उस समय ऐसे गुणग्राहक स्वामी के मरने के कारण यह बड़े विलाप से अश्रुपात कर रहे थे और बड़ेही उदास और मलीन थे। महाराज नरेन्द्रसिंह जी ने उनकी यह दशा देखी और दरबार में जाकर चोबदार से बुलवाकर कहा कि तुम उदास मत हो तुम्हारा वैसाही आदर सम्मान होता रहेगा। उस समय महाराज हम्मीरहठ की एक चित्रावली देख रहे थे उसे कबिजी को दे कर आज्ञा की कि तुम इस का वर्णन काव्य में बाँध लाओ। उसी आज्ञानुसार उन्हों ने यह हम्मीरहठ रचा।

चन्द्रशेखर जी के बनाए हुए इतने ग्रन्थ हैं-हम्मीरहठ, नखशिख, रसिकविनोद, वृन्दावन शतक, गुरुपंचाशिका, ज्योतिष का ताजक, माधवीबसन्त (बड़ा ग्रन्थ है) हरिभक्तिविलास (बड़ा ग्रन्थ है) और राजनीति का बृहद् ग्रन्थ (६००० श्लोक के अनुमान हैं) इनमें से नखशिख और रसिकविनोद भारतजीवन प्रेस में में छप-

या चुका है और हम्मीरहठ साहित्यसुधानिधि में प्रकाशित हुआ। परन्तु यह बहुतही अशुद्ध छपा। इसलिये इसको पुनः सम्पादित करके आज हिन्दी के काव्य प्रेमियों की भेंट करता हूं। यदि ये दो ग्रन्थ आप लोगों को रुचेंगे तो और भी समयानुसार छप जायंगे॥

इन कवि जी के पुत्र पण्डित गौरीशङ्कर जी वाजपेयी पटियाले में वर्तमान हैं। ये महाशय बड़े प्रेमी और सुहृद हैं कविता इन की बहुत चोखी और रसीली होती है। जब मैं पटियाले गया था तो मुझ से इन से प्रति दिन घंटों सतसंग रहता था। इन्हीं की कृपा से मुझे चन्द्रशेखर जी के कई ग्रन्थ प्राप्त हुए और यह जीवन-चरित्र भी मुझे इन्हीं से मिला इसलिये मैं उनका चिरबाधित हूं।

जगन्नाथदास (रत्नाकर) बी० ए०

शिवालय घाट,

बनारस।



श्री गणेशायनमः ।

हमीर-हठ ।



दोहा ।

गिरिवरधर अरु गंगधर चरनसरन सिर नाइ ।
या हमीरहठ की कथा कहौँ सबहिँ समुझाइ ॥ १ ॥
परसुराम ध्रुव भुव अचल अहिफन पर जिमि पत्र ।
श्री नरेन्द्र मृगराज नृप तब लगि तब जसछत्र ॥ २ ॥
श्री नरेन्द्र मृगपति नृपति दिनप्रति दयानिधान ।
दीन जानि कीनी कृपा मोपर परम सुजान ॥ ३ ॥
निकट बोलि दीन्हो हुकुम यह हमीरहठ जौन ।
छंदबंद करि कै रचौ कथा सुहावनि तौन ॥ ४ ॥
महाराज के हुकुम तेँ जिहि विधि चित्रचरित्र ।
सो सेखर भाषा करी दूषन करहु न मित्र ॥ ५ ॥
दक्खिन दिस रनथंभगढ़ तहँ हमीर चहुआन ।
महावीर रनधीर तेहिँ जानत सकल जहान ॥ ६ ॥
साह अलाउद्दीन उत इत हमीर हठधारि ।
भयो रायसो दुहुनि कौ जेहिँ विधि सो निरधारि ॥ ७ ॥

असी लक्ख दल बल सजै जिहिँ दिसि देखत बंक ।
तिहिँ दिसि कोप्यो काल जनु होत राव सब रंक ॥ १० ॥
सो इक दिन महलनि गयो जहाँ जनाने खास ।
सब हजूर हाजिर भईं हरमैं † सहित खवास ॥ ११ ॥

कबित्त ।

थोरी थोरी बैसवारी नवलकिसोरी सबै भोरी भोरी बातनि बिहँसि मुख मोरतीं । बसन बिभूषन बिराजित बिमल बर मदन-मरोरनि तरकि तन तोरतीं । प्यारे पातसाह * के परम अनुराग रंगी चाय भरी चायल चपल दृग जोरतीं । कामअबलासी कलाधर की कलासी चारु चंपक लतासी चपलासी चित चोरतीं ॥ १२ ॥

बेगमउवाच-सोरठा ।

आलीजा ‡ इक बार हम सब कों लै साथ मैं ।
अंगल हरिनसिकार खेलौ ये अरजैं करैं ॥

दोहा ।

अरजैं सुनि आयो सहरि पातसाह दरबार ।
यह बिचार मन में कियो सैलो और सिकार ॥
करि फुरमान उँची सबौ खानन कै चहुँ ओर ।
साज्यो साज सिकार को पातसाह सिरमौर ॥ १४ ॥

चौपाई ।

अमित रंग बरनै को औरै। उड़त कुरंग संग सब ठौरै॥
सुबरन साज जीन जरदोजी। जगमगात तन अगनित ओजी॥
साखत*पेसबन्द*अरु पूजी*। हीरन जटित हैकलैं*दूजी*॥
कलँगी*सड़क*सेत गजगाहैं*। यालनि† जटित मंजु मुकता हैं॥
अँग अंग बर बने तुरंगा। चढ़े चाव मनु चपल कुरंगा॥
बेगवंत बरजोर बखाने। सजि सजि सकल साहि ढिग आने॥

कबित्त।

सुन्दर सुसीले सब भाँतिनि सजीले खुले थान तें थँमैं न महि खँडत चलत हैं। जाम भरे जात यों जकंदत‡जमत तुरी जंग मैं न मुरत मतंगनि मलत हैं। चाय सों चपल चंचला से चमकत पातसाह के तुरंग जे कुरंगनि छलत हैं। हुंकरत हींसत फबत फुंकरत फरमंडल ॰ मँझार दल दीरघ दलत हैं॥ २०॥

दोहा।

मरदानी सब बेगमैं, आप सूर सुलतान।
हरषि तुरंगनि पैं, चढ़े गहि कर बान कमान॥ २१॥

सवैया।

खेलि सिकार रहीं सिगरी सजि साह के संग तुरंग चढ़ीं ते। स्याम सुरंग हरे पियरे पट मानहु दामिनी मेघ मढ़ीं ते॥ जेय जड़ाव के जेवर की उलहैं अति अंग उमंग बढ़ीं ते। सूरज की किरनैं मनो कोटिनु मेघन के घन फोरि कढ़ीं ते॥ २२॥ ‡

कवित्त ।

चन्द की कलासी विमलासी चढ़ीं बाजिन पै बसन बिभूखन बलित बर बेनी हैं। किंसुकी परीसी जरी हेम की छरीसी भरी जोबन अनूप रूप रति-सुख-देनी हैं॥ जोगनि नयन चित चोरति पिया को सुख मोरति बिहँसि चितवनि करि पैनी हैं। जोनी और जाति बन बीथिन में तीनों ओर हेरि हेरि मारति मृगनि मृगनैनी हैं॥ ३३॥

झूलना ।

लगी होन आखेट आरम्भ माहीं छिड़े एक तें एक तुरंग तोंगे। चढ़ें पौन के संग में गौन करें मनो बाज छूटे चला फौद तोंगे॥ चढ़ीं बेगमें साह सुलतान सारीं सबै बैस थोरी चंद रूप पोंगे। गहे बान कमान समसेर नेजे तुपी बान काने लिनी ओंग [illegible]॥३४॥

कहूँ सीखि कमान कों बान मारें मृगा जान भागे लगी धूर छोटें। कहूँ सीखि समसेर कों करि घोड़ा दौर नार कै खण्ड है भूमि लोटें॥ कहूँ मार नेजा लिये डारि कोन नहीं प्रान छूटें परे [illegible]। मनो जीव पापीन कों जमराजा दिये दण्ड [illegible] धूम घोटें॥ ३५॥

कवित्त ।

जाके जोबन तरंग मैं ॥ देख्यो तिन तहाँ मीर महिमा मँगोल † कहूँ काम तें सरस अभिराम रूप रंग मैं । हाय मिलै कैसे या कराह मुख लागी दुख लाग्यो देन अमित अनंग अंग अंग मैं ॥ २६ ॥

लाग्यो मन मीर सों न धीर धरचो जात उर भूलीसी फिरति दुख कासों कहै गात के । चित चटपटी अटपटी सब बात घात बनत न एकौ जात बनत न लात के । (?) हेर्यो तहां हरिन कुलंग * करि कूद्यो एक ताही समै साहसीक साहसन मात के (?) । तुरत तुरंग करि तातो ताहि ताजन ‡ दै फफकि फँदाय दियो बाहर कनात के ॥ २७ ॥

हेरत फिरत हरिन कों ज्यों हरिन नैनी देख्यो महिमाँ मंगोल ताके पास जाइकै । मारे दृग बान तानि भृकुटी कमान करि घायल निदान कह्यो नजर नचाइकै ॥ एरे मीत मेरे मेरी पीर के हरनहार बार एक लाजे मोहिँ उर सों लगाइकै । तपनि बुझाइ दिल दुख मिटि जाइ नेकु सुख सरसाइ मिलि मोहिँ हरषाइकै ॥ २८ ॥

मीरउवाच-सवैया ।

मीर कहै सुनि तू मरहट्ठी भई कछु बावरी बोलनि कैसी ।

---

† अलाउद्दीन, मीर मुहम्मद मंगोल नामी सरदार से अपनी बेगम से गुप्त व्यभिचार करने के संदेह पर क्रुद्ध हो गया था जो उससे भाग-कर हम्मीरदेव की शरन में चला गया था । उसी के कारन लड़ाई हुई । कवि उसी को महिमा मँगोल के नाम से लिखता है ॥

* चौकड़ी भरकर ।

‡ ताजियाना—कोड़ा ।

साहन को पतसाह बड़ो सुलतान प्रिया तिनकी तुम ऐसी ॥ प्रीत करी कि करो कछु बैर विचारत जो यह बात अनैसी ॥ डारिहैं मारि निकारिहैं मोहि कहूँ सुनिहैं जो कही तुम जैसी ॥ २९ ॥

दोहा ।

मरहट्ठी पुनि यों कह्यो सुनो मीर मंगोल ।
पातसाह की नारि मैं मेरे वचन अडोल ॥ ३० ॥
कै मेरो कह्यो करहु कै अब होहु उदास ।
बिन मेरे उर मों लगे तुम्हें न जीवन आस ॥ ३१ ॥
यह सुनि मीर ससंक चित भयो वाम निज संक ।
सुख मोटनि लूटनि लगे जनु पाई निधि रंक ॥ ३२ ॥
जुगल रसीले रसविवस सुधि भूली सब ओर ।
तब आयो तिनके निकट मीर एक निशि ठौर ॥ ३३ ॥
प्रेम पास सर बंधि रह्यो चलन न पायो चोर ।
मेर सँवारयो डोरहीं मीर एकही नीर ॥ ३४ ॥

त्रिभंगी छन्द ।

सिकारं धूम जहां । तिनसों मिलि डोलैं करैं कलोलैं गरबिन बोलैं बाम जहां ॥ ३६ ॥

सवैया ।

खेलिके साह सिकार मुर्यो हरमैं सब साथ सुहाति ललामैं । खूब खुसाल खुले हियरे करतीं हँसि हेरि करार कलामैं ॥ लै सुलतान कों मंदिरमैं अपने अपने मिलि लागि गलामैं । देतिं मुबारखी* बारहिं बार करैं सिगरी सब और सलामैं ॥ ३७ ॥

सुन्दर मन्दिर मैं सिगरी मिलि सेज सजी सब भाँति सुहाई । सोहै जहाँ सुलतानसिरोमनि साह सदा सब कौं सुखदाई ॥ गावति एक बजावति बीन प्रबीन लिए इक तास तहाँई । बैठ्यो बिनोदभर्यो दिनदूलह कंत दिली को दिमाक† सवाई ॥ ३८ ॥

चौपाई ।

चहुँ दिसि करैं चँवर छबिबाढ़ीं । लीन्हें एक मोरछल ठाढ़ीं ॥
एकै हँसैं हँसावैं एकै । साहित अदाब‡ जातिं ढिग एकै ॥ ३९ ॥
साहैं निरखि सबनि सुख ऐसें । चन्दहिं चाहि चकोरिन्हि जैसें ॥
इहिं विधि सदा संग सब वामैं । पातसाह निज करत अरामैं|| ॥४०
इक दिन साह अलाउद्दीन । सैनमदन सोवत परवीन ॥
संग मरहठी बेगम सोवै । रतिपति संग मनो रति होवै ॥४१॥
काम कला प्रगटी उर सोवत । उठ्यो साह तिय को मुख जोवत ॥
जब आनन्दसरस रसपागे । निकस्यो एक सुमूषक आगे ॥४२॥

---

* मुबारकी, बधाई ।

† दिमाग, गौरव ।

‡ आदाब विनय नम्रतादि परिपाटीयुत ।

|| आराम = सुख विहार ।

खरभर सुनत भए उठि ठाढ़े। सिथिलित अंग संग सुलगाढ़े ॥
गहि कमान छाँड़े सर चारि। मूस मारिकै दीन्हों डारि ※ ॥४३॥

दोहा।

हाजिर पास खवास जे जे नाजिर † सब धाम।
सब मिलि देतिँ नमारपी झुकि झुकि करैं सलाम ॥ ४४ ॥
जियौ बहादुर चारि जुग साह अलाउद्दीन।
यह सुनिकै सनमुख हँस्यौ सरहद्दौ मतिहीन ॥ ४५ ॥
पातसाह पूछ्यौ बहुरि कछु हँसिबे कौ हेत।
हाथ जोरि परसाति पगनि प्रगट न उत्तर देत ॥ ४६ ॥
पातसाह जब हठ पर्यौ नैन तरेरे जान।
कह्यौ आज पिय साक करि कीन्हौं अरज बिहान ॥ ४७ ॥
लिखि कागद यौ कर मैं दियो खोजा ‡ एक पठाइ।
कहि महिमा मंगोल कौ भोर होत भजि जाइ ॥ ४८ ॥

सवैया।

तुरंग मँगाइ तुरंत भयो असवार विचारत जावै । जाउँ कहाँ
के ढिग मैं इहिं औसर मैं मोहिं कौन बचावै ॥ ४९ ॥

कवित्त ।

बाजीखुरधारनि पहार करै छार गढ़ गरद मिलावै जोर जंगनि
रत है । लयावै आसमान तें पताल ते पकरि पारावार तें कढ़ावै
इ लेत न थकत है ॥ संक न करत लंकपति सो जुरत जंग जोहि
कै जमात जम छोभनि छकत है । काल तें कराल या आलाउद्दीन
पातसाह ताको चोर चारों ओर राखि को सकत है ॥ ५० ॥

सवैया ।

सोचत मीर चल्यो मग जात लखै नहि ठौर कहूँ सरने कों ।
जाउ जहा जिहि के ढिग सो न सकै छिन राखि डरै लरने को ॥
एक यहै रनथम्भ को खम्भ अहै चहुँवान अजौं अरने कों । दण्ड
भरै न हमीर हठी हर बार जुरै न मुरै मरने को ॥ ५१ ॥

दोहा ।

तब आयो रनथंभ मे चलि महिमा मंगोल ।
लखि रचना गढ़कोट की भयो अडोल अबोल ॥ ५२ ॥
जब भीतर कों पग दियो तब बोले दरबान ।
किन तें आए कौन तुम उहाँ न पैहो जान ॥ ५३ ॥

मीर मंगोलउवाच—भुजंगप्रयात छंद ।

कहाँ धाम है वीर हम्मीर केरो । उहाँ जाइबे को बड़ो काम
मेरो ॥ अरे वीर मैं मीर मंगोल भाखौं । बचै प्रान मेरे उहाँ मोहिं
राखौं ॥ ५४ ॥ सुनी प्रान के राखिबे की जु बानी । दुरै आनि पीठे
यहै बात जानी ॥ गहैं बाह एकै मिलैं औ जुहारें* । बनै पुन्य के

*सादर प्रणाम करते हैं ।

पद्धरी छन्द ।

इहि भाँति सौन महिमा सगोल। जब गयौ भाजि सरनै अडोल॥
तब पातसाह आल्लाउद्दीन। पुनि रोज दुसर खबर लीन॥६६॥
बैठो इकन्त इक ठौर जाइ। तहँ लीन तीन नरगी बुलाइ॥
तेहि आइ तुरत कीन्हौ सलाम। अति रूपवन्त मरहटी बाम॥६७॥
सनमुख निहारि पुनि नैन मोरि। बैठी समीप जुग हाथ जोरि॥
जब रही और कोऊ न पास। रहि गई चारि हाजिर खवास॥६८॥
तब पातसाह तेहि ओर देखि। बहु बात बहुरि पूछी बिसेखि॥
अति चतुर आप आल्लाउद्दीन। हँसि हँसि बैन बोले प्रवीन॥६९॥

पातसाहउवाच ।

सुनि नारि तोहि पूछौं बहोरि। तुम कहत केलि सुख लियो मोरि॥
पुनि मोहि तोर मानत निहारि। या हरषी कहा मन मैं बिचारि ७०

बेगमउवाच—दोहा ।

मार्‌यो चूहो आप. दई बधाई सबनही।
या सूरता अमाप, दृगनि देखि बाढ़ी हँसी ॥ ७५ ॥

पद्धरी छन्द।

यह सुनत चढ़ीं भौहैं कमान। दृग विषम बान से लिए तान॥
उठि आमखास❋बैठो सु आइ। हाजिर हजूर सब भए धाइ ॥७६॥
यह आप हुकुम दीन्यो सुनाइ। महिमाँ मँगोल की खबर ल्याइ॥
है कहां खोजि करि लेहु अन्त। लीजै मँगाइ ताको तुरन्त ॥७७॥
जानत सु एक तहँ रह्यो कोय। कर जोरि अरज करि उठ्यो सोय॥
साहानसाह आलमनिवाज † । रनथंभ कोट चहुंआन राज ॥७८॥
हम्मीर देव हिम्मतउदार। संग्राम सिन्धु थाहत अपार॥
महिमाँ मँगोल ताकी पनाह। बैठ्यो अडोल तिन गही बांह ॥७९॥
बरु उलटि गङ्ग पच्छिम वहाय। चूकै न बोलि चहुआन राय॥
सुनि कियो कोप अलाउद्दीन। मोल्हन* बुलाइ यह हुकुम कीन८०

पातसाहउवाच।

चढ़ि तू तुरन्त रनथंभ जाय। हम्मीरदेव चहुआन राय॥ कहियो बुझाइ गढ़वी गँवार। मत हो पतंग पावक मंझार ॥ ८१ ॥ महिमा मँगोल दीजै निकारि। पुनि सहित दंड देवल कुमारि। दीजै तुरन्त

❋ राज्य सभा।

† जगत्पालक।

* यह नाम कवि का कल्पित है क्योंकि यह शब्द फारसी अरबी का नहीं है एतावता मुसलमानों का नाम नहीं हो सकता। पादशाह के वजीर का नाम नुसरतखाँ था॥ संभव है कि किसी सर्दार का नाम मौलाबख्श रहा हो और उसी शब्द का अपभ्रंश मोल्हन कवि ने किया हो॥

दिल्ली पठाइ । मन बैर आप हार्यानि बढ़ाइ ॥ ८२ ॥ मोल्हन सलाम कीन्हो बहोरि । उठि चल्यो सामुहैं हाथ जोरि ॥ घोड़े हजार इक साथ आन । रनथंभ ओर कीन्हो पयान ॥ ८३ ॥ हिन्दू अनेक बहु मुसल्मान । गहि अस्त्र सस्त्र सज्जित जवान ॥ मोल्हन उजीर पहुंच्यो तुरन्त । रनथंभ कोट देख्यो अनंत ॥ ८४ ॥ पुनि गयो कोट भीतर उजीर । ठहराइ पौरि पर और भीर ॥ साईस एक बाजी सवार । चलि गयो आप ड्योढ़ी अगार ॥ ८५ ॥

दोहा ।

आवत देखि उजीर को, अरज करी दरवान ।
ल्याइ बेगि हाजिर करो, हरषि कही चहुआन ॥ ८६ ॥
तब उजीर हाजिर भयो, मोल्हन साथ लवाइ ।
हाथ जोरि सनमुख तहाँ, बैठ्यो आयसु पाइ ॥ ८७ ॥

सोरठा ।

लखि गढ़ रनथम्भोर, मोल्हन करन विचार मन ।
सक हमीर बर जोर, कैसहु कह्यो न मानिहै ॥ ८८ ॥

दोहा ।

मोल्हन बदन मलीन लखि, साहसीक रनधीर ।
महाराज राजन सिर, बोले बचन गंभीर ॥ ८९ ॥

राजउवाच—चौपाई ।

सहित गुमान गरव आतंक। सुनि राजा के वचन निसंक॥
तब उजीर दोऊ कर जोरि। मोल्हन बोल्यो वचन बहोरि॥९२॥

उजीरउवाच—दोहा।

महाराज सांई कुसल, सदा सहित परिवार।
पातसाह जापर करै, कृपा एक हू वार॥ ९३॥
मोहि पठायो आप पै, साह अलाउद्दीन।
चहत अरज कीन्ही सु, मैं जो कछु आयसु दीन॥ ९४॥

झूलना छन्द।

कही साह सल्लाह की बात मोसों सुन्यो भाजि आयो इहाँ मीर खूनी। इसी वास्ते आपने मोहिं भेजा उसे दीजिए वेग मंगाय हूनी (?)॥ करौ साथ कुंवारि देवल्ल ताई भरो दंड बैठे करो राज दूनो। यहै बात मेरी कही मानि लीजै नहीं नेक मैं होयगी राज सूनी॥ ९५॥

राजउवाच।

कहै वीर चहुआन हम्मीर हट्ठी सुनौ साँच उज्जीर मोल्हन्न मेरे।
गड़ा मडला * आदि उज्जैन सारी जिते कोट वंके तिते जानि मेरे॥
रहै साह राजी चहै वंब वाजी कहौं एक ना एक सौं आठ फेरे।
पर्यो मीर पाछैं धर्यो दंड डोला दिए जात नाहीं कहौं पास तेरे ९६

मोल्हनउवाच।

सुनो वीर चहुआन गुम्मान छोड़ो अहङ्कार में जात संसार सारे।
असी लच्छ सावंत औ सूर प्यादे जहीं साह गाज़ी चढ़े संग सारे।
डिगै मेरु डोलै मही भानु झंपै परै टूटि आकास में चन्द तारे।
डरै काल कुवेर सुरेस कांपै किती बात तेरो कहा कान धारे॥९७॥

---

* ये गढ़ों के नाम हैं

कबित्त ।

सकल अमीरन के आगे या सँदेसो मेरो मोल्हन सुनाइयो अलाउद्दीन गाजी कों । माँगत प्रथम गढ़ गजनी * हमीर फेरि दीजै अलीखान † सो सहीस निज बाजी कों ॥ दीजै भेजि हरम जूर मरहट्टी बेगि चाहिये जो कुशल तखत सिरताजी कों । तुम सं मलें जो पातसाह पाँच और तो हमीर गढ चक्कवै चहत रनताजी कों ॥ १०३ ॥

दोहा ।

सुनि मोल्हन चहुआन के, अचल बचन डरहीन ।
सिर नवाइ माँगी बिदा तब, नृप आयसु दीन ॥ १०४ ॥
बिदा भयो आयो तुरत, दिल्लीपति के धाम ।
हुकुम पाइ भीतर गयो, सब मिलि कियो सलाम ॥ १०५ ॥
पातसाह पूछन लगे, कहु कैसो बिरतंत ।
हाथ जोरि सिर नाइ के, मोल्हन अरज करंत ॥ १०६ ॥

मोल्हनउवाच—कबित्त ।

आलमनिवाज सिरताज पातसाहन के गाज ते दराज कोपनजर तिहारी है । जाके डर डिगत अडोल गढधारी डगमगत पहार औ डुलति महि सारी है ॥ रंक जैसो रहत ससंकित सुरेस भयो देस-देसपति मैं अतंक अति भारी है । भारो गढ़ जारी सदा जंग की तयारी धाक मानै ना तिहारी या हमीर हठधारी है ॥ १०७ ॥

---

* गज़नी का क़िला

† कवि ने पादशाह के बेटे का नाम अलीखाँ कल्पित किया है। वह नाम पादशाह के किसी बेटे का नहीं था । अलाउद्दीन के भाई का नाम अलग खां तो अलबत्तः था स्यात उसी नाम को भूल से कवि ने अलीखाँ कर लिया हो तो आश्चर्य नहीं ।

छप्पय ।

हुकुम न मानै एक मीर मंगोल न देवै ! डोला दंड न देइ कहूँ नहिं आवन सेवै ॥ मांगे उठन रिसाइ नैन राते करि हेरे । धरे मुच्छ पर हाथ बहुरि निरखैं समसेरै ॥ मान्यो न मोहिं अपजस डरनि अति गढ़पति गाढ़ो रहै । चहुआन धनी रनथम्भ को गरभ रोपि जुज्झन कहै ॥ १०८ ॥

मांगे पेठ्यो आप बहुरि तुमसों सुनिलीजै । आलीजाह को भौंज नारि मरहट्ठी दीजै ॥ गढ़ गजनी दै देहु मीर तब दिल्ली आनो । यह सँदेस मुख आप राय चहुआन बखानो ॥ सुनु पातसाह मोलहन कहै जुद्ध हेत सनमुख गयो । निरसंक संक मानै न कछु आप काटि उद्यम करो ॥ १०९ ॥

यह जवाब पातसाह आलमगीरवाज सुनि । कियो कोप मुख रक्त ओप भौंहै अनूप पुनि ॥ दियो हुकुम सावन्त सूर सेना संगारि सब । अस्त्र सस्त्र सबको जुराइ बकसो तुरन्त अब ॥ हय गय सनाह सोपति सहित करिय कूच * रनथम्भ को । मारौ हमीर डारौ उलटि कोट कठिन रनथम्भ को ॥ ११० ॥

दोहा ।

कोपि साह सेना सजी, चाहे हय गज सत्त ।
सजे सूर सावन्त सब, सुभुग समर अनुरत्त ॥ १११ ॥

कवित्त ।

कारे कद्द * भारे भीम दीरघ दँतारे जौन जलधरधारैं ज्यौं फुहारैं फुफुकारे ते। चूमैं चन्दमण्डल उदण्ड सुण्डादण्डन सौं कुंडनि ज्यौं सोखैं सिन्धु सलिल अपारे ते॥ पगन भरत मग धरनि धुजावैं धूरि लावैं निज ऊपर अतोल बलधारे ते। प्यारे श्री अलाउद्दीन पातसाह वारे पीलबाननि सँवारे ये मतंग मतवारे ते॥११३॥

भुजंगप्रयात छंद।

जरीदार बन्नात की झूल झंपै। सिरी चन्द सौं सुंड औ मुंड ढंपै॥
अँबारी कसी हेम की लाल ऐसी। मनो मेरु पै मण्डपी भानु कैसी॥११४
सजे सूर सावन्त जे सस्त्रधारी। लसै अंग संग्राम की साज सारी॥
धरे टोप कुंडी † कसे कौच अंगं। झिलिम्मैं ‡ घटाटोप पेटी अभंगं ११५
लिए खग्ग खंडा प्रचंडा दुधारे। तमंचे छुरी सेल नेजा सँभारे॥
लिये चाप तूनीर में तीर पूरे। चले साह के सङ्ग मे जङ्गसूरे॥११६
मतङ्ग मँगायो चढ्यो साह गाजी। चढ़े सूर सावंत औ वंब वाजी॥
जुझाऊ बजैं राग मारू अलापैं। चढ़ैं रङ्ग वीरं सुनें क्रूर काँपैं ११७

दोहा।

दस सहस्र सावन्त अरु, धवल सूर बहु लीन।
असी लक्ख पायक सहित, चढ्यो अलाउद्दीन॥११८॥

कवित्त।

साजि चतुरङ्ग वीररङ्ग ह्वै मतङ्ग चढ़ि चलत अलाउद्दीन दीन अरजत है। धाई धाम धाम धूम धौंसा की धुकार धूरि धाराधर धावत धरा पैं गरजत है॥ पेल परी गैल में मतङ्ग मतवारन की अड़त अडैल न तुरङ्ग तरजत है। धावत प्रबल दल धूजत धरनि फन फुंकरत फूरत फनीस लरजत है॥ ११९॥

---

* काया, आकार।

† टोप कुंडी सिर के रक्षा के निमित्त पहने जाते थे।

‡ लोहे की कड़ियों का गुथा हुआ अंगत्राण।

जहाँ तज्जत तुरंग गल्ल गज्जत गयन्दगन वज्जत निसान धुनि धावत दराज । सुनि धुक्कत धरनि मद मुक्कत महीप सब सुक्कत सुरेस सुर सहित समाज ॥ पुनि फरपनि पुञ्जनि रवि झम्पत गरद चलि चम्पत प्रबल दल दीरघ दराज । सुभ साजत सुरंग चढ़ी संगनि उमंग जय साजि चतुरंग चढ्यो साहिसिरताज ॥ १२० ॥

चलि छार सो करत खुर धारनि पहार अति तायल तुरंगम उड़त जनु बाज । गिरि विन्ध्य तें विलन्द मद झरत मदन्ध दुगिरी तें दिगदन्तिन दलत गजराज ॥ जोर ठौर ठौर होत गज गंजन के सोर घोर धौंसा की धुकारनि परत जनु गाज । छवि छैन सूरवीरगन दीरघ दराज दल साजि चतुरंग चढ्यो साहिसिरताज ॥ १२१ ॥

चौपाई ।

कियो कूच साहन सिरताज । साह सजा उद्दीन सजि साज ॥
चल्यो प्रबल दल दारुन ऐसे । उमड़त सिंधु प्रलय में जैसे ॥१२२॥
बाजे बहुत जुझाऊ बाजे । सुनत बिरद वीर मन गाजे ॥
जात नचावत चपल तुरंगा । करैं सकल सोहत सब संगा ॥१२३॥
मग डोलत मतंग मतवारे । गरजनन गिरि जाहन हारे ॥
चल्यो फहरि फहरि ओपि निसानौं । पावस घन घुमड़ि नभ मानौं ॥१२४॥
लसत सकल नगमल यह भानौं । बिज्जुछटा छूटत जनु जानौं ॥
धनक धूम धौंसन की ऐसे । गज्जत गगन घोर घन जैसे ॥१२५॥

दोहा ।

चौपाई ।

ठाढ़ो सुरुख मखमली ढेरा । लसत कनात सुरुख चहुँफेरा ॥
तनी चाँदनी राजति भारी । झुकति झालरैं मोतिनवारी॥१२९॥
बैठ्यो तहाँ साहसिरमौर । सनमुख खरे दूरि सब और ॥
बैठे सस्त्र अस्त्र कर धारी । प्रथम पौरि पर रच्छक भारी १३०॥
गहगह नौबत बाजति आगे । निज निज काज करन सब लागे ॥
सूर बीर उतरे सब ठौर । करत बिचार देखि गढ़ ओर १३१॥
सावधान डेरा करि लीन्हे । बहुरि जंग हित उद्यम कीन्हे ॥
दल में दीन्यो हुकुम पुकारी । अस्त्र सस्त्र सब धरो सँभारी ॥१३२॥

दोहा ।

बढ़ि बढ़ि बाँधे मोरचे, लाग देखि नियराइ ।
तीर तुपक की मार मैं, तोपैं दई लगाइ ॥ १३३ ॥
देखि कटक चहुआन कौं, तुरत खबर करि दीन
गढ़ घेर्‍यो सुनि हिंदपति, साह अलाउद्दीन ॥ १३४ ॥
तब हमीर देख्यो कटक, कोट निकट चहुँओर ।
जैसैं सावन मैं घुमड़ि, नभ घेरत घन घोर ॥ १३५ ॥

सोरठा ।

बैठो विहँसत धीर, मीर राखि निज सरन मैं ।
पातसाह की भीर, मैं हमीर मारौं सकल ॥ १३६ ॥
जहाँ नृपतिसिरमौर, तहँ आयो मंत्री चतुर ।
माथ नाइ कर जोर, करत अरज भूपति सुनौ ॥ १३७ ॥

चौपाई ।

पातसाह करि कोप कराल । साजि कटक आयो ततकाल ॥
घेरेउ कोट हुकुम परचण्ड । मीर सरन अरु माँगत दण्ड १३८॥

जो न देहिं तो होत बिनास। हीन्है बड़ो जगत में हास॥
दोऊ भाँति बात यह ऐसी। साँप छछूँदर की गति जैसी॥ १३९॥
बिग्रह में कछु भलो न लेखें। ख्याली सुलह होत नहिं देखें॥
महाराज दीजै फरमाय। ताको तुरतै करें उपाय॥ १४०॥

दोहा।

भुज फरकत हरखत हियें, बिहँसत बदन हमीर।
फेरि हेरि समसेर दिसि, बोले बचन गँभीर॥ १४१॥

राजोवाच।

गौरि सम्भुतनु परिहरै, अचल मेरु चल होय।
बोल्यो बचन हमीर को, चलनहार नहिं कोय॥ १४२॥
सिन्धु चलै मरजाद तजि, उलटै अवनि अनन्त।
बोल्यो बोल हमीर को, सो नहिं बहुरि चलन्त॥ १४३॥
सरनागत पालन करै, अरु बरनै सुचि नीति।
समर सत्रु सनमुख भिरै, यह छत्रिन की रीति॥ १४४॥
लखि दीनन को दुख हरै, करै प्रजा पर प्रीति।
प्रान तजै पर काज को, क्षत्री समर सजीत॥ १४५॥

कवित्त।

है रन तीरथ छत्रिन को परमारथ की परवी कहँ पावैं।
मानि जथारथ बात खरी कलिमें कवि कोविद कीरति गावैं॥ १४७
कोटिन काटि कटारिनि सों तरवारिनि मारि करौं घमसानैं।
सुण्ड विहीन वितुण्ड परैं रनरुण्ड फिरैं रज श्रोनित सानैं॥
साह कों देउँ पठै जमलोक हमीर हठी तव मोहिं बखानैं।
कै अब सूरज मंडल बेधि बसौं हरि के पुर बैठि बिमानैं॥१४८॥

दोहा।

करो तयारी कोट में, सजौ जुद्ध को साज।
भार देखि सीधी करौ, तोपैं प्रथम दराज॥ १४६॥
सावधान सब मिलि रहौ, सत्रु न आवै पैठि।
करौ जुद्ध मन सुद्ध ह्वै, निज गढ़ ऊपर बैठि॥ १५०॥
तब दिवान सिरनाइ कै, आयो बहुरि तुरन्त।
बैठि बुलाये भूप के, सूर वीर सावन्त॥ १५१॥
आइ जुहारे सुनतहीं, गहि सब सस्त्र उदार।
सावधान संगर अचल, धरें सपूती भार॥ १५२॥
जो जेहि लायक ताहि तस, करि आदर सनमान।
बहुरि सुनायो भूप को, आयसु आप दिवान॥ १५३॥

चौपाई।

भूप हुकुम दीन्ह्यो यह आज। साजो सकल जुद्ध को साज॥
साह सत्रु सिर पर चढ़ि आयो। करिये कछुक तासु मनभायो १५४॥
सुनि हरषे सब सूर घनेरे। उमगे अंग अंग सब केरे॥
भये अरुन मुख अति मन माते। बलगत बचन वीर मुख भाते १५५॥
कहौ कौन विधि करहिं लराई। मारैं सत्रु समर चरियाई॥
काटि काटि अङ्ग धरनि गिरिजावै। पै रिपु जीवत जान न पावै॥१५६॥
तब प्रधान सिगरे सँग लीन्हे। गाढ़े सकल मोरचे कीन्हे॥
लगे वीर सब निज २ थानैं। चहूँ ओर तें चढ़ीं कमानैं॥१५७॥

गुरदा * चद्दर † गंजगचारे ‡ । लिये लगाइ तीरकस § भारे ॥
तोपें दईं फेरि अति भारी । मंदर मेरु ढहायन हारी ॥ १५८ ॥
लिये तुरक जरजाल जमूरं ¶ । लै भरि भार यान बल पूरं ॥
गढ़ पर जुद्ध साज सब साजे । चलगत वचन वीर वर गाजे ॥१५९॥
सुनत सोर धुनि घोर कठोरा । खर भर परी साह दल ओरा ॥
उठि उठि सस्त्र संभारन लागे । जहँ तहँ सकल सूर भय पागे १६०॥
तुपक तोप जरजाल कगारं । भरि भरि मारु गंजगुवारं ॥
चलीं तोप कछु जाति न बरनी । कंपत आसमान अरु धरनी ॥१६१॥

छप्पय ।

धूमधाम धुंधरित भूमि असमान न सुझै ।
मनु घुमंडि घन घोर दौरि दुहुँ ओर असुझै ॥
तहँ तोड़े × चमकंत घोर गहरात गमंगें ।
तपत सोर चहुँ ओर सुनत धुनधाम धमंकें ॥
गरजंत गेग तडुपं तोडन वज्र सरिस गोला परैं ।
अल्लाउद्दीन हम्मीर की मारु परी तोपनि लरैं ॥ १६२ ॥

भारु परी दुहूँ ओर विषम बिहद्द घोर ठौर ठौर गोली वान गोला बरसत हैं। जैसे प्रलै काल मैं फनी के फनामंडल तें फैलें फूतकारनि फुलिंगैं सरसत हैं॥ बरसैं अँगारे कैधौँ टूटैं आसमान तारे कोठिन कतारे केतुवारे दरसत हैं। तोपैं औनि अम्बर कोँ कठिन कराल मानौ रुद्रनैन ज्वालन के जाल भरसत हैं॥ १६३॥

कछू सूझत न पार परी मार बेसुमार मही भूमि आसमान धूम धाम घनघोर। मनो घुमड़ि घुमाड़ि नभ घेरत उमडि घन गाजत दराज तोप बाजत बजोर॥ महताव * चमकंत रुचि रंजक उड़ंत तड़िता सी इतपंत घहरंत करि तोर। बरषत तीर गोली दल बुन्द नीर धार परैं गाज तें दराज गुरु गोला ठौर ठौर॥ १६४॥

भुजंगप्रयात छंद।

दुहूँ ओर सोँ घोर योँ तोप बाजैं। प्रलैकाल के से मनो मेघ गाजैं॥
हलै मेरु डौलै मही सेस कंपै। उठी धूमधारा धुजै भानु झंपै॥१६५
भई बान बंदूक की मार भारी। मनौ वारिधारा महामेघवारी॥
उडै सोर † प्याले निराले चमंकैं। घटाजोट मैं दामिनी सी दमंकैं६६
लगैं कोट मैं आनि कै जोर गोला। न पाषान टूटै कहूँ एक तोला॥
जहाँ साह की फौज मैं आनि लागैं। उड़ैं केतिकौ केतिकौ दूरि भागैं६७
लगैं बान गोली गिरैं सूर ऐसैं। गिरह खात पंछी गिरहबाज जैसैं॥
परी मार ऐसी दुहूँ ओर भारी। परे साह की फौज मैं खग्गधारी १६८
फटे टोप कुंडी तनंत्रान फूटे। कटे अङ्गअङ्गं नरं प्रान छूटे॥
उठावंत एकै करैं एक जंगं। लुरे एक लोटैं परं अङ्ग भंगं॥१६९॥

---

* तोप दागने के लिये गंधक इत्यादि की बनी हुई बत्तियाँ जो जलती रहती हैं।

† शोरा

दोहा ।

होत जुद्ध अति क्रुद्ध ह्वै, लरत सुभट रन धीर ।
तहँ निसंक चहुआनपति, देखत नाच हमीर ॥ १७० ॥
बाजति ताल-मृदंग-धुनि, नाचति नटी नवीन ।
लसत बीर हम्मीर तहँ, राग-रंग-रस-लीन ॥ १७१ ॥

कवित्त ।

रचित रुचिर मनिमन्दिर मैं राँच्यो रंग नानानि सुगन्ध? बार-अङ्गना निहारी हैं । मंजु मैनकासी मंजुघोषा सी सरस भरी रंभासी अनूप रूप भूषन सवाँरी हैं ॥ तालगति तानैं लेति मान सुर तीन ग्राम भाव भरी करति अलाप सुकुमारी हैं । पूरें रस पायल झनकनि झनकारी नाच देखत निसंक या हमीर हठधारी हैं ॥ १७२ ॥

सवैया ।

चढ़े नैन भृकुटी कराल मुख लाल रंग करि ।
दाबि दंत फरकंत अधर बलगंत क्रोध भरि ॥
करौं छार छन मैं पहार धरि कोट उलट्टौं ।
तुरक देस दलमलौं दलनि देसनि दहपट्टौं ॥
मारौं हमीर पल मैं पकरि संक न यह मेरी करै ।
आलाउदीन जानै न मोहिं गढ़ गँवार गाढ़ो धरै ॥१७५॥

दोहा ।

पातसाह अति क्रोध करि, दीन्यो हुकुम जरूर ।
मुगलबेग उडियान कों, हाजिर करौ हजूर ॥ १७६ ॥
हुकुम पाइ उडियान कों, हाजिर कियो तुरंत ।
करि सलाम ठाढ़ो भयो, सूर निकट सावंत ॥ १७७ ॥
साह कह्यो उडियान सों, नाचत नटी निहारि ।
ओव न एकौ देखिये, चोट तीर की मारि ॥ १७८ ॥

छप्पय ।

करि सलाम उडियान लई कर में कमान गहि ।
प्रथम करी टंकार फेरि गोसा खिचाइ नहि ॥
लियो तीर तूनीर माहिं तीछन अति जोई ।
गोंदे फोक जमाइ चाप सज्जिन करि जोई ॥
तान्यो कसीस भरि कान लगि बान बीच छाती झनो ।
नाचंत नारि भूमैं परी चौंकि चमकि चपला मनो ॥ १७९ ॥

कवित्त ।

गुननि गहीली गति लेति गरबीली अङ्ग अङ्ग दरसावति उलटि पट ओट तें । काम अबलासी कला कोटिनि करनि चंचलासी चित्त चोरति चलति लचि लोट तें ॥ लाग्यो बान छाती में अचानक

विषम दग फौंधा सो चमकि चक चौंधा लग्यो चोट ते । हेम की छरी सी मंजु सोनितनिजरीसी किन्नरीसी टूटि भूमि में परीसी परी फोट तें ॥ १८० ॥

दोहा ।

तरफराति तरुनी गिरी, सर मान्यो उडियान ।
हरषि साह साबस कही, चकित भयो चहुआन ॥ १८१ ॥

चौपाई ।

हरषे पातस्याह मन माहीं । फिरयो हमीर सोच लगि ताहीं ।
प्रथम सन्ध मान्यो कछु नाहीं । हठकरि गेह्योजंग पुमाहीं ॥ १८२ ॥
भयो उदास नेक कछु मानों । धर्म्मा थान भीर जब आनी ॥
लायो तहां तुरत मंगोल । बोल्यो हाथ जोरि मृदु बोल ॥ १८३ ॥

मीरउवाच ।

मीरउवाच ।

कहो आप उडियान सँघारौं । जासों जाइ सोच मिटि सारो ॥
हुकुम होइ साहिं तकि मारौं । छन मैं छत्र भंग करिडारौं ॥१६०॥

हम्मीरउवाच—दोहा ।

साह न मारत काठ को, जो खेलत सतरंज ।
उचित न यह जो डारिये, पातसाह प्रभु भंज ॥ १६१ ॥

सोरठा ।

छोड़ि साह के प्रान, मारि और मेरो हुकुम ।
महिमा गही कमान, सुनि आयसु चहुआनकी ॥१६२॥

दोहा ।

हाथ जोरि हम्मीर कहँ, महिमा गही कमान ।
अर्धचन्द सर साधि कै, तानी कान प्रमान ॥ १६३ ॥
बज्र सरिस छोरयो विषम, मीर तीर परचंड ।
पातसाहसिरछत्र को, दंड कियो द्वै खंड ॥ १६४ ॥
एक तीर सों काटि कै, छत्र दियो महि डारि ।
तब हमीर हर हर हँसे, सनमुख मीर निहारि ॥१६५ ॥

कवित्त ।

छत्र के पत्त मयूरी की छवि छीन भई दीन भयो वदन अला-उद्दीन साह को । पीर उठी उर में अचानक समीरन के धीरज धरै को धार भूजन सिपाह को ॥ सहमि गये हैं सबै सोचत ससंक कहैं खैर करो मालिक खुदाय सहसाह को । भयो तो दिल्ली को पति देखत फनाह आज दाह मिटि गयो तो हमीर नरनाह को ॥१९७॥

दोहा ।

पीर समीरन के उठी, धीर तज्यो सुलतान ।
तुरत मँगायो आप ढिग, छत्र सहित रिपु बान ॥ १९८ ॥
सर में बांध्यो साह तब, गहो बली कर सत्र ।
निय पदैल तरों कियो, मीर भंग सिर छत्र ॥ १९९ ॥
महिमा मीर मँगोल मैं, कर धर गहौ कमान ।
दै दुरलभ सब आपको, जियत राखियो प्रान ॥ २०० ॥

चौपाई ।

फटा होत दीसत नहीं, मारे सकत न छूटि।
कोट कटक की मार में, गयो सकल दल खूटि ॥२०७॥
छत्र भंग मेरो भयो, मरे सूर सावंत।
प्रान बचत दीसत नहीं, जानि लियो विरतंत ॥२०८॥

सवैया।

बीर हमीर हिये हरषै सर गोलिन की बरषा बरसावै। जात मरे सगरे रन सूर इतै उत एकौ मरो न लखावै॥ काटि कै छत्र दियौ महि डारि लिख्यो फिर पत्र प्रचारि सुनावै। डारिहै मारि उबारि है को मन सोच यहै सुलतान के आवै ॥ २०९ ॥

मौन भये मन ही मन मैं सुलतान बिचारत बात अनेकौ। जो लरिये मरिये इत तौ गढ़ की चढ़ि पैयत घात न एकौ ॥ नाहक जात मरे सिगरे भट आवत हाथ लखात न एकौ। लौटि चलो अपने घर कों जो भई सो भई कहि जात न एकौ ॥ २१० ॥ *

दीरघ सोच दिलीपति कें दल छीन भयो बलहीन मलीनो। सान गई अपमान अँगे निज प्रान बचै सोइ उद्यम कीनो ॥ हार लई अपने सिर मानि निदान यहै करि आयस दीनो। लै अपनो दल संग सबै उठि भाजि चल्यो सहसा भयभीनो ॥ २११ ॥

कवित्त।

मारे गढ़चकवै हमीर चहुआन चक्र डारे गोल गरद मिलाइ मद मानी के। लोटें रेत खेत एकै पाटें लेत देत एकै चोटनि समेत लड़े लाड़िले पठानी के॥ सारे डरमारे गह वसन हथ्यार डारि वाहन

सँभारै कौन भेर पैरसानी के । भाजे जात दिल्ली के अलाउद्दीनवारे दल जैसे मीन जाल तें परत छिलि पानी के ॥ २१२ ॥

भागे मीरजादे पीरजादे औ अमीरजादे भागे खानजादे प्रान मर-न बचाय कैं । भाजि गज बाजी रथ पथ न सँभारैं परैं गोलन पैं गोल सूर सहमि सकाय कैं । भाग्यो सुल्तान जान बचत न जानि बेगि बलित बितुंड पैं बिराजि बिललाय कैं । जैसें लगें जंगल में ग्रीषम की आगि चलैं भागि मृग महिष बराह बिललाय कैं ॥ २१३ ॥

भाजे जात रंक से सशंकित अमीर पैं भीरन पैं भीर धँसैं धीर न रहैं गिरे । जगर की जार मैं पहार मैं पराइ परे एकै धार धार मैं उद्धार मारि कैं परे ॥ कंपित करी पैं साह साहब अलाउ-दीन दीनदिल बदनमलीन मन मैं गिरे । प्रबल प्रचंड पौन पद्मिनी हमीर मारे बद्दल समान कुलबद्दल उड़े फिरे ॥ २१४ ॥

दोहा ।

करी तयारी सुत लै संग। कछुक व्याज करि चढ़्यो तुरंग ॥
भाज्यो जात जहाँ सुलतान। पहुँच्यो तहाँ तुरत चहुआन ॥२२०॥
हय तेँ उतरि पूत लै साथ। सनमुख चल्यौ जोरि जुग हाथ ॥
गज समीप चलि गयो वहोरि। करि सलाम बोल्यो करजोरि २२१

रनमलउवाच—दोहा।

सुनौ साह साहनसिरे, तवसत्रुन कौँ साल।
मैँ हमीर के बन्धु को, पुत्र नाम रनपाल ॥ २२२ ॥
हाजिर भयो हजूर मैँ, हार सुनी जब कान।
अरज मानि मेरी मुड़ैँ, अब ये फेर निसान ॥ २२३ ॥
चलौ आप दैहौँ तुरत, तिल तिल भेद बताइ।
खाइ सुरँग छन एक मैँ, दीजे गढ़ उलटाइ ॥ २२४ ॥
पातसाह सुनि अरज कोँ, गरज आपनी हेत।
सिरोपाव * दै सँग लियो, रनमल पुत्र समेत ॥ २२५ ॥

चौपाई।

रनमल साथ मुड़े सुलतान। बहुरि कोट दिसि गड़े निसान ॥
बहुरि मोरचेबंदी भई। खबर हमीर देव ढिग गई ॥२२६॥
सुनत उठ्यो जनु सोवत जागि। उमड़ी अंग क्रोध की आगि ॥
मारो यहै हुकम करि दीन्ह्यो। सूरन अस्त्र सस्त्र गहि लीन्ह्यो ॥२२७
दुहूँ ओर तेँ दारुन जंग। लाग्यो होन भूरि भटभंग ॥
रनमल उहाँ भेद जो दीन्ह्यो। पातसाह सो उद्यम कीन्ह्यो ॥२२८
गढ़ मैँ सोधि सुरंग लगाई। सत सहस्र मन दारू † पाई ॥
कियो बहुरि ताको बलिदान। महिष एक सत नर इक आन॥२२९

---

* पादशाहोँ के दरबार से प्रसन्न होने पर पँचो कपड़ोँ की खिल्लत मिलती थी उसे सिरोपा कहते थे।

† दारू बारूद।

दई आगि तब उड़ी सुरंग । सहित कोट गिरि कीन्यो भंग ॥
उड़्यो कोट दारू के जोर । भयो भयंकर दारुन सोर ॥२३०॥

छप्पय ।

धूमधार धुंधरित धूरि धुंधरिन धामधुव ।
डिगत कोट डगमगत कूट डोलंत भूरि भुव ॥
भयो सोर परचंड घोर चहुँ ओर दंड इक ।
खण्ड खण्ड गिरिवर विहण्डि डार्‌यो अखण्ड दिक ॥
जिमि चण्ड वात बद्दल विहद उठै घुमंडि उमंडि कै ।
तिमि उड़त कोट पब्बै सहित दल दब्बै तलछन परै ॥२३१॥

पर्‌यो सोर चहुँ ओर घोर सब विकल नारि नर ।
उठी धूर धारा अपार नभ भूमि छार भर ॥
मारतण्ड छपि अंधकार छायो दिग्भानु द्रुम ।
सोर-सोर नहि ओर छोर कहि सकै कौन क्रम ॥
फट्यो पहार खनखण्ड ह्वै अरधखण्ड गढ़ भक्कर्‌यो ।
जुग खण्ड भयो दारुन सबद चण्ड वज्र मानहु पर्‌यो ॥२३२॥

चौपाई ।

पातसाह कौं भागत जानि। तेरो बैर आगिलो मानि ॥
रनमल मिल्यो सत्रु की ओर। दियो भेद सिगरो सब ठौर२३७॥
सहसा तिन सुरंग लगवाई। दियो कोट अरु कटक उड़ाई ॥
टूट्यो कोट कटक बहु खोई। भयो हाल कहि जात न जोई२३८॥
इहि बिधि भूपहिँ अरज सुनाइ। सब मिलि रहे आपु सिर नाइ ॥
सुनि सब बात आनि उर धीर। बोल्यो वचन राय हम्मीर २३९॥

हम्मीरदेवउवाच—दोहा ।

सुनौ सपूतौ साविकौ, सबकौँ परै न रोज।
लियो जात याही समय, हित अनहित को खोज ॥ २४० ॥

रनमल तो रिपु सरन मैं, जाइ बचायो प्रान।
दियो भेद सब आपनो, जोर पर्‌यो सुलतान ॥ २४१ ॥

अब हमकौँ या कोट मैं, लरिबो बैठि निसंक।
उचित नहीँ एकौ घरी, को राजा को रंक ॥ २४२ ॥

घरभेदी रिपु के निकट, बैठ्यो करत उपाय।
अनजानत ऐसहिँ कहूँ, फेरि न देहि उड़ाय ॥ २४३ ॥

यातैँ अब कढ़ि कोट तैं, बाहिर बम्ब बजाइ।
देखौ दल सुलतान कौ, कह्यो भूप हरषाइ ॥ २४४ ॥

चौपाई ।

सुनि कै वचन भूपमुख वर के। हरषे सूर वीर भुज फरके ॥
उठि निज निज गृह गये तुरन्त। लागे सजन सूर सावन्त २४५॥
आप राय चहुवान हमीर। तुरत मँगाइ गंग को नीर ॥
करि असनान दान बहु दीन्हो। बहुरि विप्रगुरुपूजन कीन्हो २४६
लै प्रसाद पुनि बाहिर आए। भूषन वस्त्र सस्त्र मँगवाए ॥
विविध वसन भूषन तन साजै। माथे टोप मुकुट सम राजै २४७॥

कस्यौ कठिन पेटी तन त्रान । पहिरौ झिल्म भूप चहुआन ॥
कटि कटारि छूरी तरवारि । कर कमान सर गहि संभारि २४८
सज्यौ सूर छाजत छबि ऐसें । चलत काम जीतन जग जैसें ॥
है तयार नृप बाहन मांगे । बाजि तुरंग तब ल्याये आगे २४९॥
चढ़ि चहुआन बीर हरषायौ । तब देवलकुमारि ढिग आयौ ॥
देख्यौ कुँवरि तात घर आयौ । सहसा उठी सकुचि सिर नायौ २५०
करि पियार पुत्री समुझाई । पुनि हमीर सब बात सुनाई ॥
सुनि पितुबचन सोच मन आनि । बोली कुँवरि जोरि जुग पानि २५१

देवलकुमारि उवाच—दोहा ।

सुनहु तात मेरी अरज, सुत बित बारहि बार ।
होत जात नहि नरजनम, पुनि दुरलभ संसार ॥ २५२ ॥
जीव रहै तौ जग रहै, जीव गये जग जाय ।
को सुत को बित कौन के, भासत कान लगाय ॥ २५३ ॥
जीवनहीं के काज के, सुत बित सब परिवार ।
मरे न काहू को कहूँ, काहू कियो उधार ॥ २५४ ॥

छप्पय ।

हम्मीरदेवउवाच—छप्पय ।

करौं घोर घमसान घेरि दल बल दहपट्टौं
सुंडनिरहित बितुण्ड मुंड समसेरनि कट्टौं ॥
उठै रुण्ड रन रुधिर कुण्ड भरि भूत उमत्थै ।
बधौं जुत्थ निज हत्थ लुत्थ पर लुत्थ उलत्थै ॥
आलाउदीन मारौं पकरि देहुँ पठै जमलोक कौं ।
बेटी न बोलि काँचो बचन यह समयो नहिँ सोक को २५७

दोहा ।

ठाढ़े कहि गाढ़े बचन, भूप सुतैं समुझाइ ।
मिल्यो बहुरि चहुआनपति, बड़गूजर सौं जाइ ॥ २५८ ॥

चौपाई ।

जाजा बड़गूजर पै जाइ । कह्यो हमीर देव समुझाइ ॥
जाजा तुम परदेसी लोग । तुम कौं रहिवो इहाँ न जोग॥२५९
तुम अब जाहु आपने धाम । हम सौं पर्यो सत्रु सों काम ॥
सूरज अगिनि रुद्र अहि काल । जदपि कोप ये करैं कराल ॥२६०
बरषै इन्द्र घेरि घनघोर । गढ़ पर सजै प्रलय को तोर ॥
तदपि सरन तैं देहुँ न मीर । केती पातसाह की भीर ॥२६१॥
जाजा जगत जियत जो रैहैं । बहुरि बुलाइ गेह सौं लैहैं ॥
अब तुम जाहु कह्यो करि मेरो । मरिवो इहाँ उचित नहिँ तेरो६२॥
सुनि हमीर के बचन सुहाए । बड़गूजर मन एक न भाए ॥
भूप चरन में नायो माथ । बोल्यो बहुरि जोरि जुग हाथ २६३

बड़गूजरउवाच—पद्धरी छन्द ।

सुनु महाराज हम्मीर देव । भर जनम आप की करी सेव ॥
जिमि रहे बंधु गृहजन हजूर । तिमि रह्यो मान मेरो जरूर ॥२६४

दुर्लभ जहान के भोग जौन। तेरे प्रताप हम करैं तौन ॥
वाहन अनेक गज रथ तुरंग। पैदल नकीब सब चलैं संग ॥२६५॥
मनिजटित हेमभूषन अनूप। हम सजैं अंग नव रंग भूप ॥
दुर्लभ जहान में वसन जौन। हम पहिरैं रोज बदलाय तौन ॥२६६॥
षटरस मेवादि भोजन अनूप। हम करैं मौजि लै संग भूप ॥
नरलोकसदन मैं पर्यौ तौन। करि सकत अंग पखौं न गौन ॥२६७॥

दोहा।

जे जन आवें जार के, ते निज निज घर जायँ।
स्वामी संकट में तजैं, सो पलो सुख पाय ॥ २६८ ॥
स्वामी कों संकट परें, जो तजि भाजै दूर।
लोक अजस परलोक में, जमपुर जात जरूर ॥ २६९ ॥

सोरठा।

तब हमीर दोऊ कर जोरि। बोलेउ वचन विनयरस बोरि ॥
जीवनआस मोहिँ कछु नाहीँ। यह असीस तुम दीन्हि वृथाहीँ २७५
छत्री बरस बीस तें आगे। जियैँ तीस लोँ जे बड़भागे ॥
सुनौ मात मैं तेरो पूत। मेरो धरम रहै मजबूत ॥२७६॥
करि सुलतान संग संग्राम। हरिपुर करौँ बास अभिराम ॥
यह असीस दीजै परकास। जीवन की कछु मोहिँ न आस॥२७७
यह कहि पर्‍यो चरन सिरनाइ। बीर हमीरदेव हरषाइ ॥
सिर धरि हाथ बीर की माता। दई असीस उमग भरि गाता ॥२७८

माताउवाच—दोहा ।

तीराँ ऊपर तीर सहि, सेलाँ ऊपर सेल।
खग्गाँ ऊपर खग्ग सहि, रनसनमुख सुत खेल ॥ २७९ ॥
भुज मुख छाती सामुहेँ, घावाँ ऊपर घाव।
पलक न झँपै पूत की, चढ़ै चौगुनौ चाव ॥ २८० ॥
तिल तिल तन कटि कटि परै, तेगाँ मुक्ख मुवन्न (?)।
दीधी तोहिँ असीस मैं, नारी गीत गुवन्न ॥ २८१ ॥
जो जूझै तो अति भलौ, जो जीतै तौ राज।
देति पुकारैँ मैं सबै, मङ्गल गावौ आज ॥ २८२ ॥

तोटक छंद ।

जब लौँ जननी ढिग भूप गये। तब लौँ सब सूर तयार भये ॥
सजिकै घर तैं मन मोद मढ़े। बढ़ि रंग तुरंगनि माँझ चढ़े ॥२८३॥
सब अंगन सारसने सरसैं। रिपु कोँ सुनि बाघ मनो दरसैं ॥
बरछी सर चाप कमान गहे। कटितैँ सिरलोँ ढकि ढाल रहे २८४

चले जुरि जुत्थ वरुत्थ अनेक। लगे वलगै मिलि एकनि एक॥
सज्यो मद मत्त मतंग अनूप। हमीर बिराजत तापर भूप॥२९४
मनो गिरि कज्जल को मग जात। मढ़े मनि कंचन सो सव गात॥
मनो मनिमंदिर तापर मण्ड। उदै रवि आप भयो परचण्ड २९५

दोहा।

चल्यो कटक को कहि सकै, ताको विहद विवाद
चल्यो मनो परलय करन, सागर तजि मरजाद॥ २९६॥
ग्रीषम गहर गनीम को, गारन गरव झुकारि।
चढ्यौ प्रबल पावस नृपति, दल वद्दल वल धारि॥ २९७॥

छप्पय

उठी धूर धुरवान धरनि जलधर दल जुट्टैं।
धवल धजा वकपाँति अत्र छनदाछवि छुट्टै॥
घुरै वंब घनघोर विरद वन्दी पिक वोलै।
गज तुरंगरथवेग विहद हद मारुत डोलै॥
छिति अंधकार छायो सघन हग पसारि लूकै न कर। (?)
दीसै न पंथ पावस नृपति चढ्यो साजि दल जलद वर॥२९८

चौपाई

वाजे विहद जुझाऊ वाजें। निरतैं मग तुरंग गज गाजें॥
पढ़ैं विरद वन्दी वर जोर। मढ्यो राग मारू सव ठोर॥२९९
धौसानि धमक धूम छिति छाई। सुनै कौन निज वात पराई॥
चलत कटक डोलत इमि धरनी। प्रवलपवन हत जिमि लघुतरनी ३००
सहमि सुरेस संक मन माने। धनाधीस तजि धीर पराने॥
मन्दर मेरु कली सम कंपै। फाटन फन फनर्मा फन झंपै ३०१

फन्न बाजि खुर टाप पहारनि । धाँवत महि मतंग मरुधारनि ।
महाराज चहुआन हमीर । गाजत मनु सुरेस रनधीर ॥३२२॥

दोहा ।

महि कंपै चंपै चरन, रविरथ झँपै धूरि ।
चढ्यो राय हम्मीर इमि, कुहकानद भरि पूरि ॥ ३२३ ॥

छप्पय ।

उतै साह अल्लाउद्दीन हम्मीर देन इन ।
सजे कुलाहिन कुल बरनि को सकै लोग तिन ॥
दुहं दिसि सुभं निसान बंध मारू बहु बज्जैं ।
घहूं दिसि नर्चै निसोनि सुरनायक लज्जै ॥
गज तुरंग पायक प्रबल दल बिलोकि दुहूं दिसि लगै ।
कुहकानि फन्न अरजुन मनो कुरु दल बहु बिधि जगै ॥३२४॥

भुजंगप्रयात छन्द ।

ताते फरे तुरंग, अंग अंग उमगे सुभट।
चढ्यो चौगुनो रंग, सूरन के तन बदन मैं ॥ ३१० ॥

कबित्त।

आनि जुरे कटक दुहूँ दिसि तैं कोपिं मुख ओप रन सूरन के सेखी बरसत है। छाई छबि छूटै छटा निनद निसानन की बाजै वीरंबंब राग मारू सरसत है॥ आगे बढ़ि सुभट सुनावैं सिंहनादै एक एक हाकि हरषि कृपान करसत हैं। भारथ के पारथ औ भीषम समान ये हमीर औ अलाउद्दीन दोऊ दरसत हैं ॥ ३११ ॥

दोहा।

दल दीरघ दोऊ सजे, आये निकट निदान।
दुहूँ ओर सूरन हरषि, गहे सरासन बान॥ २१२॥
बंदूकै वीरनि सजीँ, द्वै द्वै गोली डारि।
रंजक दै छाती धरीँ, जलद जामि की (?)वारि ॥ ३१३॥*
हाँकि हाँकि मारन लगे, डाँटि डाँटि रन सूर।
मारु मारु दल दुहुनि मैँ, सबद रह्यो भरि पूर॥ ३१४ ॥

कबित्त।

गहर गराब नक थहरत भूमि मढ़ी गगन गरद मैं न भान सरकत हैं। बरषत गोली बरषा मे ज्यौं जलद ज्वान मारैं बान तानत कमान मरकत हैं॥ केते लोट पोट भये समर सचोट केते बाहन पैं विकल बिहाल लरकत हैं॥ फाटे परे रेजा लौं करेजा टूक टूक कढ़े छाती छेदि विसिप बिसारि करकत हैं ॥ ३१५ ॥ †

उठे मुंडनि बिहीन रन रुंड रहे धाइ। तहाँ पारथ समान पुरुषारथ निधान चहुआनसिर मुकुट हमीर दरसाइ ॥ ३२२ ॥

जुरे बाजिन सोँ बाजी औ गजनि गजराज पिले पायक प्रबल रनरोस सरसाइ। डटी ढालन सोँ ढाल करवाल करवाल बीर खंजर कटारनि हनत हरषाइ ॥ परे लुत्थन पै लुत्थ कटे विहद बरुत्थ करकत सर सूल भभकत भरि घाइ। तहाँ पारथ समान पुरुषारथ करत चहुआन सिर मुकुट हमीर दरसाइ ॥ ३२३ ॥

कटी कूँडी टोप कवच सनाह टूक टूक परी झूमि झूमि भूमि मैं झिलिमि भहराइ। परे झूंडन के झूंड कटे बीर बरबंड कहूँ रुंड कहूँ मुंड कहू तुंड तलफाइ। भिरे भूत भीम भैरव भ्रमत रन रुद्र जुरि जोगिनी जगावत मसान जस गाइ। होत जंग मन मुदित उमंग सरसाइ हेर हनत विपच्छिनि हमीर हरषाइ ॥ ३२४ ॥

चलीं खेत रनथंभ के विषम तरवार मार मार मुख कढ़त मढ़त तन घाइ। परे अंग कटि सुभट तुरंग न चलत चरवी के चहले में चलि सकत न पाइ ॥ भरे कुंडनि रुधिर रन रुंडन की रासि भर्ये मास खग जंबुक पिसाच समुदाइ। तहाँ बीर बलवान चहुआन रनधीर खग्ग बाहत हमीर हठधारी हरषाइ ॥ ३२५ ॥

खेत रनथंभ के हमीर रनधीर बली सेना पातसाह की कृपान मुख मारी है। लुत्थन पै लुत्थ परे घायल बरुत्थ परे हत्थ कहूँ मत्थ खात आमिष अहारी हैं ॥ लोहू के अलेल में गलेल देत भूत भिरे रुंडन कोँ प्रेत औ पिसाच सहचारी हैं। तारी देत कालिका किलकि किलकारी दे कै भारी मुंडमालिका महेसउर डारी है॥३२६॥

लरे पातसाह औ हमीर रनथम्भ खेत वीरता बखानै कौन सुभट अरेजे हैं। हाँकि हाँकि दलनि दबाइ दहपट्टि हने बाजी औ वितुण्ड सुण्ड झूमत खरेजे हैं ॥ मारे रन मुगल पठान पीरजादे अफगान

फेर लोटत पठान वे लरे जे हैं। पार भये नेजे घूमि भूमि में परे जे
करे टूक टूक रेजे तरे रेजे से करेजे हैं॥ ३२७॥

सवैया।

धीर हमीर इतै रनधीर लरैं उत सौं सुलतान सुहेलैं।
मार परी तरवारिन की बरसैं सर सूल भयंकर मेलैं॥
टोप कटे कुलही * तनत्रान मची घमसान भये दल मेलैं।
लोहू लथायल है रहे हायल घूमत घायल फाग सी खेलैं॥ ३२८॥

छप्पय।

नाचैं निहारि जुरि जोगिनी सुभट जच्छ कन्या वरैं ।
रनभुम्मि भये कायर बिमुख सूर समर साका करै ॥३३१॥

दोहा ।

भयो जुद्ध दिन सात लौं, रातदिवस इकसार ।
रुण्ड मुंड परि खेत मे, परगट भयो पहार ॥ ३३२ ॥
कढ़ी कुटिल गति कोट तें, श्रोनित सरित अपार ।
मज्जन करत पिसाच गन, रुद्र सहित परिवार ॥ ३३३ ॥

भुजंगप्रयात छंद ।

परे मत्त दन्ती मरे सुंडखंडे । उभै ओर ते कूल राजै प्रचंडे ॥
वहै लाल लोहू लसै वारिधारा । मनौ कौल फूले कलंगी अपारा३३४
परे अंग भंगं तुरंगं अनेकं । तिरैं ग्राह मानो गहे एक एकं ॥
फटे रुण्ड मुंडं कटे केस छूटे । मनो पाज(?)को पाय सेवाल जूटे
परे खग्ग खण्डा प्रचंडा दुधारे । फिरैं धार मैं ज्यो महा व्याल कारे
तनं त्रान फूटे फटे टोप ढालें । परे नीर मैं ज्यों महा जंत्र जालं ॥
बहे वस्त्र फेनं फँसे अत्र मीनं । महा मक्र से सूर सावंत पीनं ॥
चली जोर वेगं महा थोर धारा । गिरे गर्व वृच्छं प्रतच्छं अपारा ३३७
लसैं भौ र से भीम है चक्र जामैं । कलध्यन्त सूर तरंगं ललामैं ॥
करैं कोलि काली कपाली समेतं । करैं पान केते तृषावंत प्रेतं ३३८
भिरैं भूत भैरव भरे गात धोवैं । कलोलैं तिरैं जोगिनी ताप खोवैं ॥
परैं गीध आकास तें आनि टूटे । विना सोक कोकावलीहंस जूटे ३३६
महा भीम भारी नदी यों गंभीरं । करो जुद्ध मैं वीर हम्मीर धीरं ॥
तहाँ कोप कै साह आलाउदीनं । गही हाथ कम्मान सौं बानलीनं३४०

छप्पय ।

गहि कमान कर तानि साह आलाउद्दीन दमि ।
करै बानवरषा अपार सर धारिधार जिमि ।

गिरें वीर रनधीर भिरें सनमुख दल दोऊ।
पीछें देत न पाँव फेरि फिर सकत न कोऊ॥
मोड़ें न बाग छोड़ें न छिति अड़ि घोड़े जड़ गति रहे।
श्रोणित अन्हाइ घायल सभटतन घायल जकि थकि रहे॥३४१॥

दोहा।

भूर सूर करनी करैं, टरैं न तजि रन खेत।
सात दिवस संगर भयो, निसदिन रहा न चेत॥ ३४२॥

सोरठा।

बरषत सर सुलतान, विकल देखि दल आपनो।
गहि कृपान चहुआन, पर्‍यो मृगन में सिंह ज्यों॥३४३॥
नागन कों खगराज, बाज बटेरनि ज्यों हनै।
त्यों हमीर गलगाज, हन्यो साह दल आपही॥ ३४४॥

मोतीदाम छन्द।

गही करवाल हमीर हकारि। दलं दहपट्ट दियो महि डारि॥
करे जुग खंड विहंडि विहंडि। दिये जमदूतन कों जनु बंडि३४५
करें रनरंग तुरंगनि भंग। चरें मनु केहरि कोपि कुरंग॥
परें रनसूर फलत्थ फलत्थ। कहूं धड़ सत्थ कहूं पग हत्थ३४६
फिरें रन घूमत घायल सूर। अघायल श्रोनित घायल चूर॥
फटे तन त्रान फटे सिर टोप। लटे रिपुरंग मिटी मुखओप ३४७
लगे रन धावन रुंड अपार। बही पुनि दारुन श्रोनितधार॥
उठे अति कोपि कबंध उदार। भई यह भूमि भयंकर भार ३४८
लह्यो चहुआन नहीं समसेर। छिये सब सत्रुन के मुख फेर॥
बच्यो गज भाजन फौज निहारि। तहीं सुलतान गयो हिय हारि॥

दोहा।

छप्पय ।

भयो जुद्ध अति घोर राम रावन रन जुज्झे ।
पुनि पारथ अरु करन कोपि कुरुषेत अरुज्झे ॥
लऱ्यो भीम गहि गदा गाजि दुरजोधन माऱ्यो ।
पुहुमि राय सो जुद्ध काल चहुआन सँघाऱ्यो (?) ॥
सुलतान गरब गंज्यो समर तिमि हमीर सूरनि सजे ।
निरतंत रुद्र नारद निरखि डिमि डिमि डिमि डमरू बजे ॥३५१॥

सोरठा ।

भयो घोर घमसाम, परे खेत सिगरे सुभट ।
दल सब आयो काम, रहे नषत ज्यों भोर के ॥३५२॥
दल बल सान गँवाइ, दै हमीर कों सुजस वर ।
भग्यो साह सिर नाइ, पील चढ्यो जितातित लखत ३५३

चौपाई ।

भागी सेन साह की ऐसें । वधिक जाल तें पच्छी जैसें ॥
सूखे अधर वदन कुम्हिलाने । खोई सान सकल सनमाने ॥३५४॥
झुके सीस सब सस्तर डारे । परत न पग मग में मन मारे ॥
भयो साह तन बदन मलीनो । ज्यों रविउदै चन्द द्युतिहीनो ३५५
जब हमीर नृप जीत्यो जंग । सूरनि चढ्यो चौगुनो रंग ॥
बढ़ि बढ़ि बहकि वीर चहुआन । छीनि साह के लिये निसान ॥३५६॥
जूझे सूर वीर रनधीर । पाई फ़ते राय हम्मीर ॥
राय खेत जब झारन लागे । झुके निसान गये बढ़ि आगे ॥३५७॥
होनहार भावी बलवन्त । विधि को केहूँ न पायो अन्त ॥
तुरितै आइ महल ते बूझी । दई सुनाइ मतिहिं अनबूझी ३५८
झुके निसान कोट दिसि आवें । और न कोऊ संग लखावें ॥
सुनिसबहिनिबिचारयह कीन्यो । रन में महाराज श्रम लीन्यो ३५९

रन तें मुड्यो न छत्री आन। गढ़ दिसि आवत मुड़े निसान॥
अब रिपु फते खेत में पाई। लैहैं लूटि कोट बरियाई॥३६०॥
यातें हुकुम भूप कर जौन। आज उचित करिबो है तौन॥
य६ बिचार सब रानिन कीन्ह। करि असनान दान बहु दीन्ह॥

दोहा।

है पवित्र नृपबचन गुनि, सब रानिन रनिवास।
बिन कारन जौहर भयो, बिधि अनरथ परकास॥ ३६२॥
होनहार सो है रह्यो, बिन कारन बिन जोग।
जैसें या रनथंभ को, जौहर को उपयोग॥ ३६३॥
छुरी खंड अरु खङ्ग लै, मरीं कटारी खाइ।
केतिक दारू में जरीं, दारू जेर बिछाइ॥ ३६४॥
एकैं साहस में भरीं, परीं कूप में दौरि।
कोऊ गिरि गिरि गेह में, मरीं आप सिर फोरि॥ ३६५॥
दस हजार जौहर भयो, छिन में लगी न बेरि।
तब उलट्यो रनथंभगढ़, नृप हमीर दल फेरि॥ ३६६॥
जीति जंग सुलतान सों, चल्यो रंग चहुआन।
भरि उमंग आवत चल्यो, गहगह बजत निसान॥ ३६७॥
आवत भूप उमंग भरि, सुन्यो कुलाहल कान।
पूछ्यो तब काहू कह्यो, सब बिरतंतबखान॥ ३६८॥
दस सहस्र जौहर भये, सुनि हमीर चहुआन।
सुनि अंदेस आवत चले, गढ़ादिस मुके निसान॥ ३६६॥

चौपाई।

जो विधि चहै करैहै सोई। मेटनहार और नहिं कोई॥
जो चाही कीन्हीं विधि तौन। हरष शोक यामैं कहु कौन ३७२
होनहार सो टरै न टारे। शिव श्रीपति विरंचि पचि हारे॥
कोटि उपाय करै किन कोई। बरबस होनहार सो होई॥३७३॥

कबित्त।

भावी बस भूमि जल पावक अकास पौन भावी हरतार करतार प्रभु लेषिये। भावी बस अंगिरा वासिष्ट मुनि नारद औ सनक सनन्दन सनातन बिसेषिये॥ भावीबस सेस औ सुरेस औ बरुन जम काल ससि सूरज असुर अवरेषिये। भावी चहै जोई सोई करै औ करावै जग भावीबस ईस औ अनन्त विधि देषिये॥ ३७४॥

दोहा।

गावन गुन आगम निगम, निसि दिन लहत न अन्त।
तीन काल जुग चार में, है भावी बलवन्त॥ ३७५॥
हानि लाभ जीवन मरन, चर अरु अचर समान।
विधि प्रपंच परगट जगत, भावीबस सब जान॥ ३७६॥
है हरता करतार प्रभु, कारन करन अखेद।
यह बिचारि चहुआन के, मन उपज्यो निरवेद॥ ३७७॥
समर जीति जौहर सदन, सब ईश्वर परपंच।
कीन्हो यह निरधार मन, हरष सोक नहिं रंच॥ ३७८॥
झूठो जग बस और के, स्वबस बात नहिं एक।
निहचै करि हम्मीर नृप, बोले सहित बिबेक॥ ३७९॥

चौपाई।

सब मिलि सुनो बात दै कान। है मेरो यह वचन प्रमान॥
मैं रिपु जंग भंग मैं कीन्यो। सुजस राखि सरनागत लीन्यो॥३८०॥

समर जीति सब सत्रु भगाये । सुजस समेत लौटि गढ़ आए ॥
इन सबहिनि मिलि तजे परान । मेरो वचन न दीन्यो जान ॥३८१॥
समर जीति जौहर को हान । जो अहचरज भयो यह तान ॥
अब विलोकि मेरे मन आई । है प्रधान ईश्वर सब ठाई ॥३८२॥
जग में लह्यो सुजस बहुतेरो । गयो गेह छिन में मिटि मेरो ॥
उभै तमासे नैननि जोहि । उपज्यो तत्व ज्ञान अब मोहि ३८३
यह जग इन्द्रजाल सम जानौ । करनहार नट सरिस बखानौ ॥
छिन में करत और को और । देखि न परै रहै सब ठौर ॥३८४॥
कारन करन आप सब जोई । सिरजनहार जगत को सोई ॥
ताकी सरन आज मैं जैहौं । राजभार सुत के सिर दैहौं ॥३८५

दोहा ।

जाहि आनि रन में सन्यो, जन्यो सकल परिवार ।
छन भर उचित न जीवनो, ताकों इहिं संसार ॥ ३८६ ॥

कवित्त ।

दाने दीने द्विजनि दारिद्र करि दूरि भूरि दंड दीने खलनि प्रचंडनि उताल में । हार दीनो अरिनि बिडारि तरवारि मुख न्याइ दीने सकल निपाटि सुनि हाल में ॥ तात मात सुन्दरी सकल परिवार सुत दीने मैं हमीर हठधारी सब काल में । राज दैहौं सुतकों समाज सब साजि आज सीस दैहौं अरपि गिरीस जू की माल में ॥ ३८७ ॥

सवैया ।

साजि कै राज को साज सबै सुत के सिर आप दियो करि टीको । गंग के नीर कियो असनान दियो बहु दान दुजातिनही को॥ लै अपने कर मैं करवाल नरेस हमीर हठी अति नीको । काटि दियो सिर ईस के हाथ भयो सुरलोक मैं नाथ सची को ॥ ३८६ ॥

सीस चढ़ाय दयो नरनाथ हमीर हठी जग जानत सारे । देव बधू बरषैं बर फूल बजैं नभ नौबत ढोल नगारे ॥ जात बिमान चढ़्यो चहुआन ढुरै सिर चौंर दुहूँ दिसि भारे । आनि गही उठि श्रीपति बांह भये हरि सेवक सेवनहारे ॥ ३९० ॥

दोहा ।

जीवत अरि दल दलमल्यो, मरि लीन्यो हरिधाम ।
धन हमीर छितिछत्रपति, अमर तिहारो नाम ॥ ३९१ ॥

कबित्त ।

माने देव दुज सनमाने साधु संत हित सहित पिछाने सुख साने बाम धाम को । लाले सुतवाले प्रतिपाले या पुहुमि पर घाले मुख काले कै निकाले चोर चाम को ॥ लीने जग सुजस हमीर करि साके बीर कीने लोक अमर जसोले निज नाम को । मारे अरि समर सुरेस दुख टारे आज फारि रविमंडल सिधारे सुरधाम को ॥३९२॥

दोहा ।

देखि सोच बस सक्र कों, निज मत हँसे हमीर । *
... ... ॥३९३॥
को या धरती में भयो, तुव समान चहुआन ॥
अरि मार्‍यो तन परिहर्‍यो, वचन न दीन्यो जान ॥ ३९४ ॥

---

* यहां का एक तुक छूट गया है ।

बलि बावन कुन्ती करन, ज्यों नृप सिबी कपोत।
त्यों हमीर औ मीर को, कलि मैं सुजस उद्योत ॥ ३९५
छत्रिन के कुल को भयो, छिति पर भानु हमीर।
किया सुजस परताप सों, जगत उज्यारो बीर ॥ ३९६ ॥
बहुरि गयो बैकुंठ कों, नृप हमीर चहुआन।
कियो राज ताको तनय, जानत सकल जहान ॥ ३९७ ॥
यह हमीर को रायसो, चित्रलिख्यो लखि सार।
छंदबंद सेखर कियो, निज मति के अनुसार ॥३९८॥
महाराज के हुकुम तें, सिद्ध होत सब काज।
भयो ग्रंथ जिन की कृपा, परिपूरन सुभ आज ॥ ३९९ ॥
कर नभ रस अरु आतमा, संवत फागुन मास। *
कृष्णपच्छ तिथि चौथ रवि, जेहि दिन ग्रंथ प्रकास ॥४००॥
राधावर, के जगत मैं, श्रीनरेन्द्र मृगराज।
सेखर को प्रभु लोकमति, दूजो लखत न आज ॥४०१॥
मोहिं भरोसो रावरो, महाराज सिरमौर।
करो कृपा द्विज दीन पैं, निरखि आपनी ओर ॥४०२॥
जौलों ससि सूरज रहैं, सुरपुर सक्र समाज।
चिरंजीव तबलों रहौ, श्रीनरेन्द्र मृगराज ॥४०३॥

इति श्रीहम्मीरहठ चन्द्रशेखर कवि कृत संपूर्णम् ।

शुभमस्तु ।

श्रीः ।

अथ विश्वकर्मविद्याप्रकाशस्यानुक्रमणिका ।

इति विश्वकर्मविद्याप्रकाशस्यानुक्रमणिका समाप्ता ।